1 स्वदेश

अभ्यास-प्रश्नोत्तर

पाठ से

आइए, अब हम इस कविता को थोड़ा और विस्तार से समझते हैं। नीचे दी गई गतिविधियाँ इस कार्य में आपकी सहायता करेंगी।

मेरी समझ से

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उपयुक्त उत्तर के सम्मुख तारा (☆) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।

1. ''वह हृदय नहीं है पत्थर है'' इस पंक्ति में हृदय के पत्थर होने से तात्पर्य है–

- सामाजिकता से
- संवेदनहीनता से
- कठोरता से
- नैतिकता से

उत्तर– संवेदनहीनता से।

2. निम्नलिखित में से कौन-सा विषय इस कविता का मुख्य भाव है?

- देश की प्रगति
- देश के प्रति प्रेम
- देश की सुरक्षा
- देश की स्वतंत्रता

उत्तर– देश के प्रति प्रेम।

3. ''हम हैं जिसके राजा-रानी''– इस पंक्ति में 'हम' शब्द किसके लिए आया है?

- देश के प्राकृतिक संसाधनों के लिए
- देश की शासन व्यवस्था के लिए
- देश के समस्त नागरिकों के लिए
- देश के सभी प्राणियों के लिए

उत्तर– देश के समस्त नागरिकों के लिए।

4. कविता के अनुसार कौन-सा हृदय पत्थर के समान है?

- जिसमें साहस की कमी है
- जिसमें स्नेह का भाव नहीं है
- जिसमें देश-प्रेम का भाव नहीं है
- जिसमें स्फूर्ति और उमंग नहीं है

उत्तर– जिसमें देश-प्रेम का भाव नहीं है।

(ख) हो सकता है कि आपके समूह के साथियों ने अलग-अलग उत्तर चुने हों। अपने मित्रों के साथ विचार कीजिए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने?

उत्तर–1. संवेदनहीनता – "वह हृदय नहीं है पत्थर है" इस पंक्ति में ऐसे व्यक्ति के बारे में बताया गया है जिसके हृदय में देशप्रेम नहीं है अर्थात् वह व्यक्ति संवेदनहीन है। अत: हृदय के पत्थर होने से आशय संवेदनहीनता से है।

2. देश के प्रति प्रेम – कवि ने 'स्वदेश' कविता में देशप्रेम के भाव को व्यक्त किया है क्योंकि यहाँ सबसे बड़ा मूल्य देश के प्रति प्रेम को माना गया है।

3. देश के समस्त नागरिकों के लिए- "हम हैं जिसके राजा-रानी" इस पंक्ति में 'हम' से तात्पर्य देश के नागरिकों से है क्योंकि देश का प्रत्येक नागरिक देश के बराबर का अधिकारी है। अत: प्रत्येक नागरिक देश का राजा अथवा रानी है। यह पंक्ति नागरिक अधिकार और उत्तरदायित्व की प्रतीक है।

4. जिसमें देशप्रेम का भाव नहीं है- कविता के अनुसार वह हृदय पत्थर के समान है जिसमें देश-प्रेम का भाव नहीं है। हृदय की सच्ची सार्थकता प्रेम, समर्पण तथा संवेदनशीलता से है, बिना इसके हृदय पाषाण सदृश है। इसलिए कवि ने यहाँ हृदय को पत्थर देशप्रेम रहित जीवन से माना है।

मिलकर करें मिलान

कविता में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे स्तंभ 1 में दी गई हैं। उन पंक्तियों के भाव या संदर्भ स्तंभ 2 में दिए गए हैं। पंक्तियों का उनके सही अर्थ या संदर्भों से मिलान कीजिए।

क्रम	स्तंभ 1		स्तंभ 2
1.	जिसने साहस को छोड़ दिया, वह पहुँच सकेगा पार नहीं।	1.	जिस देश की ज्ञान-संपदा से समूचा विश्व प्रभावित है।
2.	जो जीवित जोश जगा न सका, उस जीवन में कुछ सार नहीं।	2.	जिस प्रकार युद्ध में तोप और तलवार की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार मनुष्य की प्रगति के लिए साहस और इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है।
3.	जिस पर ज्ञानी भी मरते हैं, जिस पर है दुनिया दीवानी।	3.	जिसने किसी कार्य को करने का साहस छोड़ दिया हो वह किसी लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकता।
4.	सब कुछ है अपने हाथों में, क्या तोप नहीं तलवार नहीं।	4.	जो स्वयं के साथ ही दूसरों को भी प्रेरित और उत्साहित नहीं कर सकते उनका जीवन निष्फल और अर्थहीन है।

उत्तर– 1. (3) 2. (4) 3. (1) 4. (2)

पंक्तियों पर चर्चा

कविता से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपने समूह में साझा कीजिए और लिखिए।

(क) ''निश्चित है निस्संशय निश्चित,
है जान एक दिन जाने को।
है काल-दीप जलता हरदम,
जल जाना है परवानों को।।''

उत्तर–यह पद्यांश मृत्यु की निश्चितता और जीवन की क्षणभंगुर प्रकृति पर जोर देता है। यह बताता है कि जिस प्रकार एक पतंगा कालदीप की ओर आकर्षित होता है और उसमें भस्म हो जाता है उसी प्रकार जीवन का भी अंत होना तय है। यह एक दिन आत्मा के चले जाने की अनिवार्यता की बात करता है।

(ख) ''सब कुछ है अपने हाथों में,
क्या तोप नहीं तलवार नहीं।
वह हृदय नहीं है, पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।।''

उत्तर–यह पद्यांश आत्मनिर्भरता की शक्ति और देशभक्ति के महत्व पर प्रकाश डालता है। यह प्रश्न करता है कि जब सब कुछ व्यक्ति की मुट्ठी में है तो उसके पास औजारों (जैसे तोप या तलवार, जो शक्ति और साधन के प्रतीक हैं) का अभाव क्यों होगा? इसके बाद यह घोषणा की गई है कि अपनी मातृभूमि के प्रति प्रेम से रहित हृदय पत्थर के समान, निर्जीव और संवेदनहीन हैं।

(ग) ''जो भरा नहीं है भावों से,
बहती जिसमें रस-धार नहीं।
वह हृदय नहीं है पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।।''

उत्तर–ये पंक्तियाँ अपने राष्ट्र के प्रति भावनाओं और प्रेम के महत्व पर जोर देती हैं। इसमें कवि ने कहा है कि जो हृदय भावनाओं से भरा नहीं है और जीवन के सार (रसधार) से प्रवाहित नहीं होता, वह सच्चा हृदय नहीं है, बल्कि मात्र पत्थर है, विशेषकर जिसमें अपने देश के प्रति प्रेम का अभाव हो।

सोच-विचार के लिए

कविता को पुनः ध्यान से पढ़िए, पता लगाइए और लिखिए।

(क) ''हम हैं जिसके राजा-रानी'' पंक्ति में राजा-रानी किसे और क्यों कहा गया है?

उत्तर–''हम हैं जिसके राजा-रानी'' देश के समस्त नागरिकों के लिए कहा गया है। उन्हें राजा-रानी इसलिए कहा है क्योंकि वे अपने देश को अपना मानते हैं और देश का संपूर्ण प्रभुत्व उनके हाथों में है

(ख) 'संसार-संग' चलने से आप क्या समझते हैं? जो व्यक्ति 'संसार-संग' नहीं चलता, संसार उसका क्यों नहीं हो पाता है?

उत्तर–संसार संग चलने से तात्पर्य है- संसार के रीति-रिवाजों, मूल्यों, प्रगति के साथ कदम मिलाकर

चलना। जो व्यक्ति ऐसा नहीं कर पाते, समाज से भिन्न हो जाते हैं और वे संसार का हिस्सा नहीं बन पाते।

(ग) ''उस पर है नहीं पसीजा जो/क्या है वह भू का भार नहीं।'' पंक्ति से आप क्या समझते हैं? बताइए।

उत्तर—इस पंक्ति में कवि का भाव है कि जिस व्यक्ति के हृदय में दूसरों के प्रति दया या करुणा नहीं है। वह इस धरती पर केवल एक बोझ के समान है। ऐसे व्यक्ति का जीवन निरर्थक है, क्योंकि वह समाज या किसी के लिए भी उपयोगी नहीं है।

(घ) कविता में देश-प्रेम के लिए बहुत-सी बातें आई हैं। आप 'देश-प्रेम' से क्या समझते हैं? बताइए।

उत्तर—देश-प्रेम का अर्थ है- अपने देश के प्रति निष्ठा, भक्ति और समर्पण का भाव। यह अपने देश की संस्कृति, परंपराओं, लोगों और भूमि से प्यार करने का भाव है और उसके विकास, सुरक्षा व सम्मान के लिए हर संभव प्रयास करना है।

(ङ) यह रचना एक आह्वान गीत है, जो हमें देश-प्रेम के लिए प्रेरित और उत्साहित करती है। इस रचना की अन्य विशेषताएँ ढूँढ़िए और लिखिए।

उत्तर—यह रचना एक आह्वान गीत है जो हमें देश-प्रेम के लिए प्रेरित और उत्साहित करती है। इस रचना की अन्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

प्रेरणादायक भाव, पाठकों को देश के प्रति कर्तव्य निभाने के लिए प्रेरित करता है।

प्राकृतिक संसाधन, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर, शिक्षा और ज्ञान, सामाजिक मूल्य और परंपराएँ, पारिवारिक मूल्य, त्योहार, रीति-रिवाज आदि का संरक्षण करके ही सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखा जा सकता है।

अनुमान और कल्पना से

अपने समूह में मिलकर चर्चा कीजिए और लिखिए—

(क) ''जिसने कि खजाने खोले हैं'' अनुमान करके बताइए कि इस पंक्ति में किस प्रकार के खजाने की बात की गई होगी?

उत्तर—इस पंक्ति में खजाने का तात्पर्य केवल धन-संपत्ति से नहीं, बल्कि ज्ञान, शिक्षा, संस्कृति, कला, इतिहास और प्राकृतिक सौंदर्य जैसी अमूल्य धरोहरों से हो सकता है, जो किसी स्थान या व्यक्ति द्वारा संरक्षित और प्रकट किए गए हों।

(ख) ''जिसकी मिट्टी में उगे बढ़े'' पंक्ति में 'उगे-बढ़े' किसके लिए और क्यों कहा गया होगा?

उत्तर—उगे-बढ़े शब्द का प्रयोग उन नागरिकों के लिए किया गया होगा जिन्होंने भारतभूमि में जन्म लिया है और यहीं की मिट्टी में पले हैं। क्योंकि उन्होंने इस धरती पर जन्म लिया है और उनका भावनात्मक लगाव भी इस धरती से है यानि वे अपनी मातृभूमि की गहराइयों से जुड़े हैं।

(ग) ''वह हृदय नहीं है पत्थर है'' पंक्ति में 'हृदय' के लिए, 'पत्थर' शब्द का प्रयोग क्यों किया गया होगा?

उत्तर—इस पंक्ति में 'हृदय' के लिए 'पत्थर' शब्द का प्रयोग किसी ऐसे व्यक्ति के लिए किया गया होगा जो संवेदनहीन, कठोर, निर्दय या भावहीन हो। यानी यहाँ 'हृदय' की सार्थकता करुणा और दयावान होने से है जबकि 'पत्थर' का आशय भावविहीन और निर्ममता से है।

(घ) कल्पना कीजिए कि पत्थर आपको अपनी कथा बता रहा है। वो आपसे क्या-क्या बातें करेगा और आप उसे क्या-क्या कहेंगे?
(संकेत—पत्थर— जब मैं नदी में था तो नदी की धारा मुझे बदलती भी थी।...)

उत्तर—(संवादात्मक)

मैं – तुम इतने शांत और कठोर क्यों हो?

पत्थर – क्योंकि मैंने समय की धाराओं को सहा है। नदी की तेज धार ने मुझे घिसा, आकार बदला, पर मैं टूटा नहीं।

मैं – तुम्हारा जीवन तो प्रेरणा से भरा है।

पत्थर – हाँ, मैंने सीखा है— संयम के साथ, टिके रहो और उपयोगी बनो।

मैं – तुम्हारी सहनशीलता से मैं भी धैर्य सीखूँगा/सीखूँगी।

(ङ) देश-प्रेम की भावना देश की सुरक्षा से ही नहीं, बल्कि संरक्षण से भी जुड़ी होती है। अनुमान

करके बताइए कि देश के किन-किन संसाधनों या वस्तुओं आदि को संरक्षण की आवश्यकता है और क्यों?

उत्तर—देश-प्रेम की भावना सिर्फ देश की सुरक्षा से नहीं, बल्कि उसके संपूर्ण विकास और संरक्षण से भी जुड़ी होती है। देश के प्राकृतिक संसाधन (जैसे— जल, वन, भूमि, खनिज आदि), सांस्कृतिक धरोहरों (जैसे— ऐतिहासिक स्थल, मंदिर, स्मारक, पुरानी इमारतें) पारिस्थितिकी और पर्यावरण, जनसंख्या और मानव संसाधन, भाषा, कला और साहित्य आदि को भी संरक्षण की आवश्यकता है क्योंकि ये संसाधन देश की आर्थिक स्थिति, देश की पहचान, स्वस्थ्य जीवन, सांस्कृतिक विरासत आदि को सहेजते हैं। देश की विविधता में एकता को दर्शाते हैं। देश-प्रेम केवल सीमाओं की रक्षा नहीं, बल्कि देश की आत्मा- उसके संसाधनों, परंपराओं और लोगों की रक्षा एवं विकास में निहित है।

कविता की रचना

''जिसकी मिट्टी में उगे बढ़े,
पाया जिसमें दाना-पानी।
हैं माता-पिता बंधु जिसमें,
हम हैं जिसके राजा-रानी।।''

इन पंक्तियों के अंतिम शब्दों को ध्यान से देखिए।

'दाना-पानी' और 'राजा-रानी' इन शब्दों की अंतिम ध्वनि एक-सी है। इस विशेषता को 'तुक मिलाना' कहते हैं। अब नीचे दिए गए प्रश्नों पर पाँच-पाँच के समूह में मिलकर चर्चा कीजिए और उनके उत्तर लिखिए।

(क) शब्दों के तुक मिलाने से कविता में क्या विशेष प्रभाव पड़ा है?

उत्तर—शब्दों के तुक मिलाने से कविता में संगीतात्मकता आ गई है, जिससे उसे पढ़ने या सुनने में आनंद आता है। यह कविता अधिक आकर्षक है, साथ ही अपने प्रवाह को भी पुनः प्राप्त करती है।

(ख) कविता को प्रभावशाली बनाने के लिए और क्या-क्या प्रयोग किए गए हैं?

उत्तर—कविता को प्रभावशाली बनाने के लिए इसमें सरल और सहज भाषा का प्रयोग किया गया है जो आसानी से समझ में आता है। साथ ही 'दाना-पानी' और 'राजा-रानी' जैसे दो शब्दों का प्रयोग भी कविता को अधिक प्रभावशाली बनाता है, जो एक विशिष्ट अर्थ और भावना को व्यक्त करता है।

आपकी कविता

देश-प्रेम से जुड़े अपने विचारों को आधार बनाते हुए कविता को आगे बढ़ाइए—

वह हृदय नहीं है पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।

उत्तर—मानव तन पुण्यों का फल है
क्षण भर का कोई व्यापार नहीं।
त्याग बिना ही जीता जाए
देश हित में सोच न पाए
वह हृदय नहीं है पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।

भाषा की बात

(क) शब्द से जुड़े शब्द

नीचे दिए गए रिक्त स्थानों में 'स्वदेश' से जुड़े शब्द अपने समूह में चर्चा करके लिखिए। फिर मित्रों से मिलाकर अपनी सूची बढ़ाइए—

उत्तर—

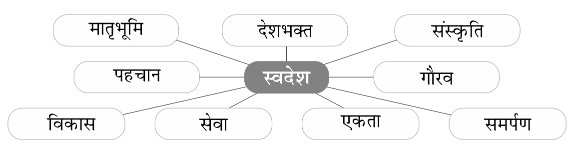

(ख) विराम चिह्नों को समझें

''जो चल न सका संसार-संग''
''बहती जिसमें रस-धार नहीं''
''पाया जिसमें दाना-पानी''
''हैं माता-पिता बंधु जिसमें''
''हम हैं जिसके राजा-रानी''
''जिससे न जाति-उद्धार हुआ''

कविता में आई हुई उपर्युक्त पंक्तियों को ध्यानपूर्वक पढ़िए। इनमें कुछ शब्दों के बीच एक चिह्न (-) लगा है। इसे योजक चिह्न कहते हैं। योजक चिह्न दो शब्दों में परस्पर संबंध स्पष्ट करने तथा उन्हें जोड़कर लिखने

के लिए प्रयोग किए जाते हैं। कविता में संदर्भ के अनुसार योजक चिह्नों के स्थान पर **का**, **की**, **के** और **में** से कौन-से शब्द जोड़ेंगे जिससे अर्थ स्पष्ट हो सके। लिखिए। (संकेत– 'जो चल न सका संसार <u>के</u> संग')

उत्तर– 1. रस <u>की</u> धार। 2. दाना <u>और</u> पानी 3. माता <u>और</u> पिता। 4. राजा <u>और</u> रानी 5. जाति <u>का</u> उद्धार

(ग) शब्द-मित्र

''है जान एक दिन जाने को''

''है काल-दीप जलता हरदम''

उपर्युक्त पंक्तियों पर ध्यान दीजिए। इन दोनों पंक्तियों में 'है' शब्द पहले आया है, जिसके कारण कविता में लयात्मकता आ गई है। यदि 'है' का प्रयोग पंक्ति के अंत में किया जाए तो यह गद्य जैसी लगने लगेगी, जैसे–

'जान एक दिन जाने को है।'

'काल-दीप हरदम जलता है।'

- अब आप कविता में ऐसी पंक्तियों को चुनिए जिनमें 'है' शब्द का प्रयोग पहले हुआ है। चुनी हुई पंक्तियों में शब्दों के स्थान बदलकर पुनः लिखिए।

उत्तर– 1. हैं माता-पिता बंधु जिसमें
माता-पिता बंधु जिसमें हैं।

2. हम हैं जिसके राजा-रानी।
हम जिसके राजा-रानी हैं।

3. जिस पर है दुनिया दीवानी।
जिस पर दुनिया दीवानी है।

4. उस पर है नहीं पसीजा जो।
उस पर नहीं पसीजा जो है।

5. क्या है वह भू का भार नहीं।
क्या वह भू का भार नहीं है।

6. सब कुछ है अपने हाथों में।
सब कुछ अपने हाथों में है।

- अब नीचे दी गई पंक्तियों में 'है, हैं' शब्द का प्रयोग पहले करके पंक्तियों को पुनः लिखिए और देखिए कि इससे पंक्तियों के सौंदर्य में क्या परिवर्तन आया है। अपने साथियों से चर्चा कीजिए।

''जिस पर ज्ञानी भी मरते हैं,

जिस पर है दुनिया दीवानी।।''

उत्तर–''हैं जिस पर ज्ञानी भी मरते
है जिस पर दुनिया दीवानी''

जब पंक्तियों में 'है' और 'हैं' शब्दों का प्रयोग पहले किया जाता है तो वाक्य का सौन्दर्य और प्रभाव बढ़ जाता है, जिससे कथन अधिक दृढ़ और प्रभावी लगता है। छात्र इस प्रकार की चर्चा अपने साथियों से करें।

(घ) समानार्थी शब्द

कविता से चुनकर कुछ शब्द निम्न तालिका में दिए गए हैं। दिए गए शब्दों से इनके समानार्थी शब्द ढूँढ़कर तालिका में दिए गए रिक्त स्थानों में लिखिए।

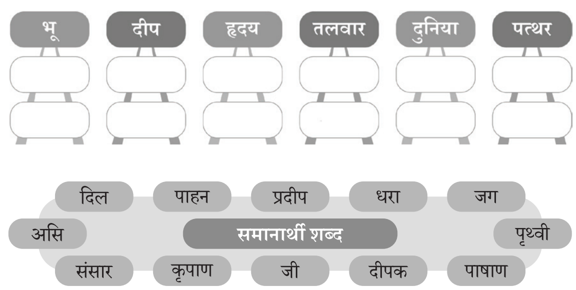

उत्तर–भू– धरा, पृथ्वी। दीपक– दीप, प्रदीप। हृदय– दिल, जी। तलवार– कृपाण, असि। दुनिया– संसार, जग। पत्थर– पाषाण, पाहन।

कविता का शीर्षक

''वह हृदय नहीं है पत्थर है,

जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।''

इस कविता का शीर्षक है 'स्वदेश'। कई बार कवि कविता की किसी पंक्ति को ही कविता का शीर्षक बनाते हैं। यदि आपको भी इस कविता की किसी एक पंक्ति को चुनकर नया शीर्षक देना हो तो आप कौन-सी पंक्ति चुनेंगे और क्यों?

उत्तर–'हृदय नहीं है पत्थर है' यह शीर्षक चुनने का कारण स्वदेश कविता का पूरा भाव ही है। जिस देश

की मिट्टी में जन्म लेकर पले-बढ़े हैं, वहाँ की हवा, अन्न, जल, अपनापन, सुरक्षा, आदि व्यवस्था को पाने के बाद भी जिस हृदय में अपने देश से प्रेम नहीं हो पाता, अपने देश के भले के लिए नहीं सोच पाता, वह हृदय पत्थर अर्थात् पाषाण के समान ही हो सकता है क्योंकि हृदयवान, व्यक्ति को अपने देश की मिट्टी से बढ़कर कुछ भी प्रिय नहीं होता।

पाठ से आगे

आपकी बात

(क) नीचे कुछ चित्र दिए गए हैं। उन चित्रों पर सही (✓) का चिह्न लगाइए जिन्हें आप 'स्वदेश प्रेम' की श्रेणी में रखना चाहेंगे?

1

2

3

4

5

6

7

8.

9.

10.

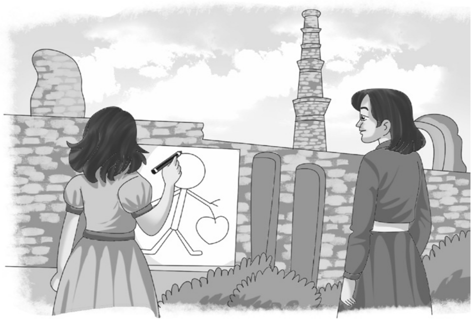

11.

12.

13.

14.

15.

उत्तर—चित्र– 1, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 10, 11, 12, 13, 15 (✓)

(ख) अब आप अपने उत्तर के पक्ष में तर्क भी दीजिए।

उत्तर—चित्र–1. पौधों को पानी देना प्रकृति संरक्षण को दर्शाता है।

चित्र–3. कुश्ती लड़ना एक खेल प्रेतियोगिता को दर्शाता है।

चित्र–4. सहयोग और एकता की भावना को दर्शाता है।

चित्र–5. सैनिक सम्मान देशरक्षा के अति आभार को व्यक्त करता है।

चित्र–6. बच्चे द्वारा साफ-सफाई स्वच्छता अभियान को दर्शाता है।

चित्र–7. किसान का खेत जोतना–कृषि प्रधानता को दर्शाता है।

चित्र–8. वृद्ध को सड़क पार करवाना परोपकार जैसे नैतिक मूल्य को दर्शाता है।

चित्र–9. बुजुर्गों से कहानी सुनना संचार सवंर्धन को बताता है।

चित्र–11. 'राष्ट्रगान' देश के झण्डे के सम्मान को दर्शाता है।

चित्र–12. पंक्तिबद्धता नियम पालन को दर्शाता है।

चित्र–13. 'फूल न तोड़ो' प्रकृति संरक्षण को दर्शाता है।

चित्र–15. नैतिक कर्तव्यों का पालन करना हम सबकी जिम्मेदारी है। नियमों का उल्लंघन नीति विरुद्ध है।

हमारे अस्त्र-शस्त्र

(क) ''सब कुछ है अपने हाथों में,
क्या तोप नहीं तलवार नहीं।''

देश की सीमा पर सैनिक सुरक्षा प्रहरी की भाँति खड़े रहते हैं। वे बुरी भावना से अतिक्रमण करने वाले का सामना तोप, तलवार, बंदूक आदि से करते हैं।

आप बताइए कि निम्नलिखित स्वदेश प्रेमियों के अस्त्र-शस्त्र क्या होंगे?

विद्यार्थी, अध्यापक, कृषक, चिकित्सक, वैज्ञानिक, श्रमिक, पत्रकार

उत्तर— ● विद्यार्थी– पुस्तकें, ज्ञान, कलम और अनुशासन।

● अध्यापक– ज्ञान, कलम, शिक्षा, पुस्तकें और शिक्षण।

● कृषक–हल, बीज, कड़ी मेहनत और कृषि उपकरण।

● चिकित्सक– आला, दवाइयाँ और उपकरण।

● वैज्ञानिक– अनुसंधान, प्रयोग, ज्ञान और समर्पण।

● श्रमिक– फावड़ा, कड़ी मेहनत, उपकरण, समर्पण।

● पत्रकार– समाचार, कलम, नोटबुक, सत्य और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता।

अपनी भाषा अपने गीत

(क) कक्षा में सभी विद्यार्थी अपनी-अपनी भाषा में देश-प्रेम से संबंधित कविताओं और गीतों का संकलन करें।

उत्तर—1. मेरा भारत देश प्यारा,
हम सबको प्राणों से प्यारा।। (कविता)

2. ऐ मेरे वतन के लोगो
जरा आँख में भर लो पानी
जो शहीद हुए हैं उनकी
जरा याद करो कुर्बानी (देशभक्ति गीत)

3. नन्हा-मुन्ना राही हूँ
देश का सिपाही हूँ
बोलो मेरे संग,
जय हिन्द, जय हिन्द, जय हिन्द।

नोट– छात्र अपनी-अपनी पसंद अनुसार स्वयं संकलित करें।

(ख) किसी एक गीत की कक्षा में संगीतात्मक प्रस्तुति स्वयं भी करें।

उत्तर—छात्र वाद्य यंत्र (हारमोनियम) पर कक्षा में किसी एक गीत जैसे- 'है प्रीत जहाँ की रीति सदा.....' की संगीतात्मक प्रस्तुति दे सकते हैं।

तिरंगा झंडा–कब प्रसन्न और कब उदास

राष्ट्रीय ध्वज (तिरंगा झंडा) देश का सम्मान है। किसी एक दिन सोने से पहले अपने पूरे दिन के कार्यों को याद कीजिए और विचार कीजिए कि आपके किन कार्यों से तिरंग झंडा उदास हुआ होगा और किन कार्यो से तिरंगे झंडे को प्रसन्नता हुई होगी।

उत्तर—यह एक भावनात्मक और प्रतीकात्मक प्रश्न है। इसका उत्तर भाव के आधार पर इस प्रकार हो सकता है।

देश के नागरिकों द्वारा भ्रष्टाचार, भेदभाव, हिंसा, सैनिकों का अपमान, राष्ट्रीय ध्वज का अपमान आदि इसी प्रकार के कार्य हैं जब तिरंगा झंडा उदास होता है तथा जब देश के नागरिक देशभक्ति से ओतप्रोत होते हैं। लोग खेल, विज्ञान, रक्षा, सैनिक सम्मान, एकता, शांति, भाईचारा, नैतिक मूल्यों आदि बातों का तथा नियमों का पालन करते हैं तब तिरंगा झण्डा खुशहाल/प्रसन्न होता है जब उसे पूरे सम्मान और मर्यादा के साथ फहराया जाता है।

साझी समझ

आपने 'स्वदेश' कविता और 'खादी गीत' का उपर्युक्त अंश पढ़ा। स्वतंत्रता आंदोलन के समय लिखी गई दोनों कविताओं में देश-प्रेम किस प्रकार अभिव्यक्त हुआ है? साथियों के साथ मिलकर चर्चा कीजिए। साथ ही 'खादी गीत' पूरी कविता को पुस्तकालय या इंटरनेट से ढूँढ़कर पढ़िए।

उत्तर–'स्वदेश' कविता में देशप्रेम की भावना उजागर होती है कि हमारे हृदय में स्वदेश प्रेम होना चाहिए। खादी गीत में खादी वस्त्र भारत की पहचान हैं। खादी निर्मित करने वाली माँ, बहनों, भाइयों का प्रेम झलकता है। अपनेपन का अहसास होता है। यही अहसास देश-प्रेम का रूप है।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. 'स्वदेश' कविता की रचना किसने की है?
(अ) जयशंकर प्रसाद
(ब) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
(स) गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही'
(द) सुमित्रानंदन पंत

2. 'सनेही' किस काल के प्रमुख कवि थे?
(अ) आदिकाल (ब) भक्तिकाल
(स) रीतिकाल (द) आधुनिक काल

3. 'स्वदेश' कविता में कवि किस भावना को व्यक्त करते हैं?
(अ) आश्चर्य (ब) भक्ति
(स) देशभक्ति (द) उदासी

4. 'स्वदेश' कविता की भाषा शैली कैसी है?
(अ) ब्रजभाषा (ब) अवधी
(स) खड़ी बोली (द) राजस्थानी

5. 'स्वदेश' कविता का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(अ) प्रकृति का वर्णन करना
(ब) प्रेम का संदेश देना
(स) राष्ट्र-प्रेम की भावना जाग्रत करना
(द) सामाजिक कुरीतियों को दूर करना

उत्तर– 1. (स) **2.** (द) **3.** (स) **4.** (स) **5.** (स)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' का जन्म स्थान ····· है।

2. 'सनेही' के काव्य में ·················· और ·················· दोनों का सुंदर समन्वय मिलता है।

3. 'स्वदेश' कविता में कवि देश की ·················· और ·················· का गुणगान करते हैं।

4. 'सनेही' को उनकी रचनाओं के लिए ················ युग के कवियों में से एक माना जाता है।

5. 'स्वदेश' कविता में कवि ने देश की महिमा का ············ वर्णन किया है।

उत्तर– 1. उन्नाव **2.** देशभक्ति और शृंगार **3.** संस्कृति, परंपरा **4.** द्विवेदी **5.** ओजस्वी

सत्य/असत्य

1. 'स्वदेश' कविता की रचना जयशंकर प्रसाद ने की थी। ( )

2. गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' एक देशभक्त कवि थे। ( )

3. 'स्वदेश' कविता में प्रकृति का वर्णन प्रमुखता से किया गया है। ( )

4. 'सनेही' ने अपनी रचनाओं में अवधी भाषा का प्रयोग किया है। ( )

5. 'स्वदेश' कविता में कवि ने भारत की संस्कृति और परंपरा का बखान किया है। ( )

उत्तर– 1. असत्य **2.** सत्य **3.** असत्य **4.** असत्य **5.** सत्य

सही मिलान कीजिए

स्तंभ (अ)	स्तंभ (ब)
1. नवरत्न दिये हैं	**(अ)** दीवानी
2. जिस पर है दुनिया	**(ब)** लासानी
3. है जान एक दिन	**(स)** जलता हरदम
4. है काल-दीप	**(द)** जाने को

उत्तर— 1. (ब) **2.** (अ) **3.** (द) **4.** (स)

अतिलघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' का उपनाम क्या है?

उत्तर— 'सनेही'।

2. 'स्वदेश' कविता का केंद्रीय भाव क्या है?

उत्तर— देशभक्ति और राष्ट्रीय गौरव।

3. 'सनेही' के किन्हीं दो अन्य काव्य-संग्रहों के नाम बताइए।

उत्तर— 'कृषक-क्रंदन' और 'त्रिशूल-तरंग'।

4. 'जो जीवित जोश जगा न सका' पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

उत्तर— अनुप्रास अलंकार।

5. 'सनेही' किस साहित्यिक पत्रिका के संपादक थे?

उत्तर— 'सुकवि' पत्रिका के संपादक थे।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. 'स्वदेश' कविता में कवि ने देश की क्या-क्या विशेषताएँ बताई हैं? संक्षेप में लिखिए।

उत्तर—'स्वदेश' कविता में कवि ने देश की प्राकृतिक सुंदरता, ऐतिहासिक गौरव, समृद्ध संस्कृति और उच्च नैतिक मूल्यों की विशेषताएँ बताई हैं। उन्होंने भारत को एक ऐसा देश बताया है जहाँ ज्ञान और त्याग की परंपरा रही है।

2. गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' के काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ क्या थीं?

उत्तर—'सनेही' जी के काव्य की प्रवृत्तियाँ हैं— देशभक्ति, राष्ट्रीय चेतना, शृंगार रस का चित्रण और सामाजिक कुरीतियों के प्रति आक्रोश।

3. 'स्वदेश' कविता के माध्यम से कवि ने किस प्रकार की भावनाएँ जाग्रत करने का प्रयास किया है?

उत्तर—इस कविता के माध्यम से कवि ने राष्ट्रीय एकता, देश के प्रति प्रेम और बलिदान की भावनाएँ जाग्रत करने का प्रयास किया है। उनका उद्देश्य लोगों को अपने देश के गौरवशाली अतीत और उज्ज्वल भविष्य के प्रति जागरूक करना था।

4. 'सनेही' को अपने समय में एक अग्रणी कवि क्यों माना जाता था?

उत्तर—क्योंकि उनकी कविताओं ने जनमानस में देशभक्ति की भावना को विकसित किया। उनकी रचनाएँ सीधे दिल को छूती थीं और लोगों को एकजुट होने के लिए प्रेरित करती थीं।

5. 'स्वदेश' कविता की भाषा शैली की दो प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर— दो विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

1. खड़ी बोली का सरल और सहज प्रयोग।

2. ओज और माधुर्य गुणों का सुंदर मिश्रण, जिससे कविता प्रभावशाली बनती है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. 'स्वदेश' कविता का सारांश और केंद्रीय भाव विस्तार से लिखिए। यह कविता आज के संदर्भ में भी क्यों प्रासंगिक है?

उत्तर—'स्वदेश' का सारांश यह है कि कवि गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' ने भारत की महानता का वर्णन किया है। वह देश की प्राकृतिक सुंदरता, गौरवशाली इतिहास, समृद्ध संस्कृति और त्यागपूर्ण परंपराओं का गुणगान करते हैं। कविता का केंद्रीय भाव यह है कि भारत एक ऐसा राष्ट्र है, जिसकी मिट्टी में वीरता, ज्ञान और बलिदान की गाथाएँ छिपी हैं। यह कविता आज भी इसलिए प्रासंगिक है क्योंकि यह हमें अपनी जड़ों से जोड़े रखती है, राष्ट्रीय गौरव का एहसास कराती है और देश के प्रति अपने कर्तव्यों का स्मरण कराती है।

भूमंडलीकरण के इस दौर में भी यह कविता हमें अपनी संस्कृति और पहचान बनाए रखने की प्रेरणा देती है।

2. गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' के साहित्यिक योगदान का मूल्यांकन कीजिए। उनकी काव्यगत विशेषताओं और 'स्वदेश' कविता में उनके विचारों के संबंध को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर— साहित्यिक योगदान और काव्यगत विशेषताएँ— गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' का साहित्यिक

योगदान बहु-आयामी है। उन्होंने देशभक्ति के साथ-साथ सामाजिक सुधार और श्रृंगार रस की रचनाएँ भी कीं। उनकी काव्यगत विशेषताएँ सरल भाषा, सशक्त अभिव्यक्ति और सामाजिक जागरूकता से परिपूर्ण थीं। 'स्वदेश' कविता में उनके ये विचार स्पष्ट रूप से झलकते हैं। इसमें वह देश के गौरव को अपनी सरल और ओजपूर्ण भाषा में व्यक्त करते हैं। उनकी कविताएँ केवल मनोरंजन नहीं करतीं, बल्कि पाठकों को सोचने पर मजबूर करती हैं और उनमें राष्ट्रप्रेम का गहरा भाव भरती हैं। 'सनेही' ने हिंदी साहित्य में देशभक्ति काव्य की एक महत्वपूर्ण परम्परा को आगे बढ़ाया।

2 दो गौरैया

अभ्यास-प्रश्नोत्तर

पाठ से

आइए, अब हम इस कहानी को थोड़ी और स्पष्टता से समझते हैं। नीचे दी गई गतिविधियाँ इस कार्य में आपकी सहायता करेंगी।

मेरी समझ से

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उपयुक्त उत्तर के सम्मुख तारा (☆) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।

1. पिताजी ने कहा कि घर सराय बना हुआ है क्योंकि–

- घर की बनावट सराय जैसी बहुत विशाल है
- घर में विभिन्न पक्षी और जीव-जंतु रहते हैं
- पिताजी और माँ घर के मालिक नहीं हैं
- घर में विभिन्न जीव-जंतु आते-जाते रहते हैं

उत्तर– घर में विभिन्न पक्षी और जीव-जंतु रहते हैं।

2. कहानी में 'घर के असली मालिक' किसे कहा गया है?

- माँ और पिताजी को जिनका वह मकान है
- लेखक को जिसने यह कहानी लिखी है
- जीव-जंतुओं को जो उस घर में रहते थे
- मेहमानों को जो लेखक से मिलने आते थे

उत्तर– जीव-जंतुओं को जो उस घर में रहते थे।

3. गौरैया के प्रति माँ और पिताजी की प्रतिक्रियाएँ कैसी थीं?

- दोनों ने खुशी से घर में उनका स्वागत किया
- पिताजी ने उन्हें भगाने की कोशिश की लेकिन माँ ने मना किया।
- दोनों ने मिलकर उन्हें घर से बाहर निकाल दिया
- माँ ने उन्हें निकालने के लिए कहा लेकिन पिताजी ने घर में रहने दिया

उत्तर–पिताजी ने उन्हें भगाने की कोशिश की लेकिन माँ ने मना किया।

4. माँ बार-बार पिताजी की बातों पर मुसकराती और मजाक करती थीं। इससे क्या पता चलता है?

- माँ चाहती थीं कि गौरैयाँ घर से भगाई न जाएँ
- माँ को पिताजी के प्रयत्न व्यर्थ लगते थे
- माँ को गौरैयों की गतिविधियों पर हँसी आ जाती थी
- माँ को दूसरों पर हँसना और उपहास करना अच्छा लगता था

उत्तर–माँ चाहती थी कि गौरैयाँ घर से भगाई न जाएँ। माँ को पिताजी के प्रयत्न व्यर्थ लगते थे।

5. कहानी में गौरैयों के बार-बार लौटने को जीवन के किस पहलू से जोड़ा जा सकता है?

- दूसरों पर निर्भर रहना
- असफलताओं से हार मान लेना
- अपने प्रयास को निरंतर जारी रखना
- संघर्ष को छोड़कर नए रास्ते अपनाना

उत्तर– अपने प्रयास को निरंतर जारी रखना।

(ख) हो सकता है कि आपके समूह के साथियों ने अलग-अलग उत्तर चुने हों। अपने मित्रों के साथ विचार कीजिए कि आपने ये उत्तर क्यों चुने?

उत्तर–1. पिताजी घर को इसलिए सराय कहते हैं क्योंकि वहाँ विभिन्न प्रकार के जीव-जन्तु–गौरैयाँ, तोते, बिल्ली आदि आते रहते हैं, इससे उन्हें घर सराय-सा लगता है।

2. जीव-जन्तुओं को घर के मालिक इसलिए कहा है क्योंकि जीव-जन्तुओं ने घर में इस कदर डेरा जमा रखा है कि वे स्वयं के मेहमान सा महसूस करते हैं।

3. कहानी में पिताजी बार-बार गौरैयों को भगाने का प्रयास करते हैं जिस पर माँ व्यंग्य कसती है और हँसती है। इस तरह के माँ के व्यवहार से पता चलता है कि माँ गौरैया के जोड़े को नहीं भगाना चाहतीं।

4. कहानी में माँ बार-बार पिताजी के गौरैयों को भगाने पर हँसती हैं और उनका मजाक बनाती हैं। इन बातों से साबित होता है कि माँ चाहती है कि गौरैयाँ घर में बनी रहें, इसीलिए उन्हें पिताजी की गतिविधियाँ व्यर्थ लगती हैं। अत: ये विकल्प सार्थक साबित होते हैं।

5. गौरैयों के बार-बार लौटने को कहानी के अनुसार अपने प्रयास को निरंतर जारी रखने से जोड़ा जा सकता है। यह जीवन के सार्थक पहलू को दर्शाता है कि व्यक्ति को अंत तक डटे रहना चाहिए, हार नहीं मान लेनी चाहिए।

मिलकर करें मिलान

(क) पाठ में से चुनकर कुछ वाक्य नीचे दिए गए हैं। प्रत्येक वाक्य के सामने दो-दो अर्थ दिए गए हैं। अपने समूह में इन पर चर्चा कीजिए और इन्हें इनके सबसे उपयुक्त अर्थ से मिलाइए।

क्र.	वाक्य		अर्थ
1.	वह शोर मचता है कि कानों के पर्दे फट जाएँ, पर लोग कहते हैं कि पक्षी गा रहे हैं।	(क)	पक्षियों का शोर बहुत तेज होता है, लेकिन लोग उसे संगीत की तरह सराहते हैं।
		(ख)	पिताजी को पक्षियों का चहकना शोर जैसा लगता था लेकिन लोगों को वह संगीत जैसा लगता था।
2.	आँगन में आम का पेड़ है। तरह-तरह के पक्षी उस पर डेरा डाले रहते हैं।	(क)	आम के पेड़ पर अलग-अलग प्रकार के पक्षी हर समय निवास करते हैं।
		(ख)	पक्षी पेड़ पर तंबू लगाकर रहते हैं जैसे किसी मेले में डेरा डाला जाता है।
3.	वह धमा-चौकड़ी मचती है कि हम लोग ठीक तरह से सो भी नहीं पाते।	(क)	पिताजी की भागदौड़ और शोर इतना होता है कि घर के चूहे चैन से सो नहीं पाते।
		(ख)	चूहों की भागदौड़ और शोर इतना होता है कि घर के लोग चैन से सो नहीं पाते।
4.	वह समझते हैं कि माँ उनका मजाक उड़ा रही हैं।	(क)	पिताजी माँ का मजाक समझ जाते हैं।
		(ख)	पिताजी को ऐसा भ्रम होने लगता है कि माँ उनकी चेष्टाओं का उपहास कर रही हैं।

5. पिताजी ने लाठी दीवार के साथ टिकाकर रख दी और छाती फैलाए कुर्सी पर आ बैठे।	(क)	पिताजी ने लाठी एक ओर रख दी और गर्व से, विजयी मुद्रा में बैठ गए।
	(ख)	पिताजी की छाती और साँस फूलने लगी और उन्होंने लाठी एक ओर रख दी।
6. इतने में रात पड़ गई।	(क)	रात किसी भारी चीज की तरह ऊपर से गिर पड़ी।
	(ख)	कहानी की घटनाओं के बीच धीरे-धीरे रात हो गई और अँधेरा छा गया।
7. जब हम लोग नीचे उतरकर आए तो वे फिर से मौजूद थीं और मजे से बैठी मल्हार गा रही थीं।	(क)	गौरैयाँ फिर से लौट आई थीं और शांत व प्रसन्न भाव से चहचहा रही थीं जैसे कोई राग गा रही हों।
	(ख)	गौरैयाँ शास्त्रीय संगीत का अभ्यास कर रही थीं और 'राग मल्हार' गा रही थीं।

उत्तर—1. (ख) 2. (क) 3. (ख) 4. (ख) 5. (क) 6. (ख) 7. (क)

(ख) अपने उत्तर को अपने मित्रों के उत्तर से मिलाइए और विचार कीजिए कि आपने कौन-से अर्थ का चुनाव किया है और क्यों?

उत्तर—हमने अपने उत्तरों को अपने साथियों के उत्तरों से मिलाया और पाया कि जो उत्तर हमने चुने वही उन्होंने भी चुने हैं। हमने उत्तर के रूप में उपयुक्त उत्तरों का चुनाव किया है क्योंकि कहानी के आधार पर यही उत्तर सार्थक हैं।

पंक्तियों पर चर्चा

पाठ में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इसका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपने समूह में साझा कीजिए और लिखिए।

(क) ''अब तो ये नहीं उड़ेंगी। पहले इन्हें उड़ा देते, तो उड़ जातीं। अब तो इन्होंने यहाँ घोंसला बना लिया है।''

उत्तर—यह कथन स्थायित्व और अपनत्व को दर्शाता है। पहले गौरयाँ केवल मकान का निरीक्षण कर रही थीं, इसलिए उन्हें हटाना आसान होता, पर अब उन्होंने घर में अपना घोंसला बना लिया है अर्थात् उन्होंने इसे अपना घर मान लिया है। अब उन्हें वहाँ से हटाना कठिन है। यह बात पक्षियों, मनुष्यों सभी पर लागू होती है।

(ख) ''एक दिन अंदर नहीं घुस पाएँगी तो घर छोड़ देंगी।''

उत्तर—यह वाक्य पिताजी की रणनीति और उनके विचारों को दर्शाता है। वे सोचते हैं कि अगर एक दिन गौरैयों को घर के अंदर आने से रोक दिया जाए, तो वे खुद ही दूसरी जगह चली जाएँगी। यह पंक्ति इस गलत सोच की ओर इशारा करती है कि स्थायी परिवर्तन रोकथाम से आ जाएगा, जबकि वास्तविकता इसके विपरीत है।

(ग) ''किसी को सचमुच बाहर निकालना हो तो उनका घर तोड़ देना चाहिए।''

उत्तर—यह कथन क्रूर निर्णय और अंतिम उपाय को दर्शाता है। पिताजी अब थक-हारकर यह मानते हैं कि अगर गौरैयों को सचमुच हटाना है, तो केवल डराने या भगाने से काम नहीं चलेगा– उनका घोंसला यानी उनका घर ही तोड़ देना होगा। यह एक गहरी बात है– कोई भी जीव अपने घर से जुड़ा होता है, और घर तोड़ना केवल उसका निवास स्थान नहीं, बल्कि उसके अस्तित्व पर चोट करना होता है।

सोच-विचार के लिए

पाठ को पुनः ध्यान से पढ़िए, पता लगाइए और लिखिए।

(क) आपको कहानी का कौन-सा पात्र सबसे अच्छा लगा—घर पर रहने आई गौरैयाँ, माँ, पिताजी, लेखक या कोई अन्य प्राणी? आपको उसकी कौन-कौन सी बातें अच्छी लगीं और क्यों?

उत्तर—मुझे कहानी में माँ का पात्र सबसे अच्छा लगा। वे संयमित, संवेदनशील और व्यावहारिक हैं। उनमें जानवरों और पक्षियों के प्रति करुणा है। साथ ही, वे व्यंग्य और हास्य के माध्यम से कठिन परिस्थितियों को हल्का बना

देती हैं। पिताजी की चिड़चिड़ाहट और गुस्से के बीच वे धैर्यपूर्वक सब कुछ सहती हैं और अंत तक मानवीय भावनाओं को बनाए रखती हैं।

(ख) लेखक के घर में चिड़िया ने अपना घोंसला कहाँ बनाया? उसने घोंसला वहीं क्यों बनाया होगा?

उत्तर—लेखक के घर में चिड़िया ने बैठक की छत में लगे पंखे के गोले में अपना-घोंसला बनाया। उसने घोंसला वहाँ इसलिए बनाया होगा क्योंकि वह स्थान ऊँचाई पर सुरक्षित, गर्म और अज्ञात था। वहाँ इंसानों की सीधी पहुँच नहीं थी और उन्हें यह जगह अंडे देने और बच्चों को पालने के लिए उपयुक्त लगी होगी।

(ग) क्या आपको लगता है कि पशु-पक्षी भी मनुष्यों के समान परिवार और घर का महत्व समझते हैं? अपने उत्तर के समर्थन में कहानी से उदाहरण दीजिए।

उत्तर—हाँ, कहानी से यह स्पष्ट होता है कि पशु-पक्षी भी घर और परिवार का महत्व समझते हैं। गौरैयों ने घर की ठीक तरह से जाँच की, फिर उसमें घोंसला बनाया और अंडे दिए। जब उनके बच्चे निकले, तो वे बार-बार खतरे के बावजूद लौटकर उन्हें चुग्गा देने आईं। अंत में जब बच्चे ''चीं-चीं'' करके अपने माता-पिता को पुकारते हैं, तो दोनों गौरैयाँ तुरंत लौट आती हैं। यह ममतापूर्ण व्यवहार, परिवार और घर के प्रति उनके जुड़ाव को दर्शाता है।

(घ) ''अब मैं हार मानने वाला नहीं हूँ।'' इस कथन से पिताजी के स्वभाव के कौन-से गुण उभरकर आते हैं?

उत्तर—इस कथन से पिताजी के हठी, जिद्दी और उग्र स्वभाव का पता चलता है। वे बार-बार यही कहते हैं कि वह हार नहीं मानने वाले हैं, जिससे यह साफ है कि वे अपनी बात मनवाने पर अड़े रहते हैं, चाहे परिस्थिति जैसी भी हों। वे गौरैयों को निकालने के लिए बार-बार प्रयास करते हैं लेकिन जब हार मानते हैं, तो शांति से बैठ जाते हैं।

(ङ) कहानी में गौरैयों के व्यवहार में कब और कैसा बदलाव आया? यह बदलाव क्यों आया? (संकेत—कहानी में खोजिए कि उन्होंने गाना कब बंद कर दिया?)

उत्तर—गौरैयों के व्यवहार में बदलाव तब आया, जब उनके घोंसले को तोड़ने की कोशिश की गई और उन्होंने अपने बच्चों को जन्म दे दिया। पहले वे चहकती थीं और मल्हार गाती थीं, पर जब उनके बच्चे व्याकुल होने लगे, तो वे गुमसुम हो गईं और दुबली व काली पड़ गईं। यह बदलाव उनकी चिंता, थकान और बच्चों की सुरक्षा को लेकर हुआ।

(च) कहानी में गौरैयों ने किन-किन स्थानों से घर में प्रवेश किया था? सूची बनाइए।

उत्तर—गौरैयों ने निम्न स्थानों से घर में प्रवेश किया था—

- दरवाजों के नीचे के खाली स्थान से
- टूटे हुए रोशनदान से
- किचन के खुले दरवाजे से
- कभी-कभी अन्य दरवाजों या खिड़कियों से भी घर में प्रवेश किया।

(छ) इस कहानी को कौन सुना रहा है? आपको यह बात कैसे पता चली?

उत्तर—इस कहानी को स्वयं लेखक सुना रहा है, इसका पता हमें बार-बार आने वाले ''मैं'' शब्द से चलता है। जैसे—

- ''मैंने भागकर दोनों दरवाजे बंद कर दिए।''
- ''मैंने सिर उठाकर ऊपर की ओर देखा।''
- ''मैंने देखा, पिताजी स्टूल से उतर आए हैं।''

इन वाक्यों से स्पष्ट है कि लेखक इस कहानी का प्रेक्षक और कथावाचक दोनों है।

(ज) माँ बार-बार क्यों कह रही होंगी कि गौरैयाँ घर छोड़कर नहीं जाएँगी।

उत्तर—माँ बार-बार इसलिए कह रही होंगी कि गौरैयाँ घर छोड़कर नहीं जाएँगी, क्योंकि उन्होंने यहाँ घोंसला बना लिया था और उसमें अंडे भी दे दिए थे। माँ जानती थीं कि जब कोई जीव अपने बच्चों के साथ होता है, तो वह किसी भी खतरे के बावजूद अपना घर नहीं छोड़ता। साथ ही, माँ प्रकृति के इस व्यवहार को समझती थीं और पक्षियों के साथ सहानुभूति रखती थीं।

अनुमान और कल्पना से

(क) कल्पना कीजिए कि आप उस घर में रहते हैं जहाँ चिड़ियाँ अपना घर बना रही हैं। अपने घर में उन्हें देखकर आप क्या करते?

उत्तर—अपने घर में उन्हें घोंसला बनाते देखकर बहुत आनंदित होता/होती, उनकी चहचहाहट से सुबह मेरी नींद खुलती और मुझे प्रकृति के करीब होने का एहसास होता। उनके घोंसले बनाने और बच्चों को पालने की प्रक्रिया देखना बहुत ही प्रेरणादायक और सुखद होता। हो सकता है उनके पंख और तिनके घर में बिखरे होते, जिनकी मुझे नियमित सफाई करनी पड़ती। मुझे उनके घोंसले का ध्यान रखना पड़ता। मेरे किसी काम से उन्हें नुकसान या असुरक्षा का भाव उत्पन्न न हो। कुल मिलाकर यह सुखद व जिम्मेदारी भरा अनुभव होता।

(ख) मान लीजिए कि कहानी में चिड़िया नहीं, बल्कि नीचे दिए गए प्राणियों में से कोई एक प्राणी घर में घुस गया है। ऐसे में घर के लोगों का व्यवहार कैसा होगा? क्यों?

(प्राणियों के नाम– चूहा, कुत्ता, मच्छर, बिल्ली, कबूतर, कॉकरोच, तितली, मक्खी)

उत्तर—ऐसे में घर के लोगों का व्यवहार इनके प्रति नकारात्मक होगा क्योंकि ये सभी बीमारियों का कारण हैं, इसलिए लोग इन्हें तुरंत भगाते हैं।

(ग) ''मैं अवाक् उनकी ओर देखता रहा।'' लेखक को विस्मय या हैरानी किसे देखकर हुई? उसे विस्मय क्यों हुआ होगा?

उत्तर—लेखक अवाक् चिड़ियों एवं उनके बच्चों की ओर देखता रहा। उसे उनके आपसी प्रेम एवं उनकी ममता को देखकर हैरानी हुई। यही देखकर उसे विस्मय हुआ होगा, क्योंकि माँ की ममता और बच्चों की पुकार ने लेखक के पिताजी के हठ पर विजय प्राप्त कर ली थी।

(घ) ''माँ मदद तो करती नहीं थीं, बैठी हँसे जा रही थी।'' माँ ने गौरैयों को निकालने में पिताजी की सहायता क्यों नहीं की होगी?

उत्तर—माँ ने गौरैयों को निकालने में पिताजी की सहायता इसलिए नहीं की होगी, क्योंकि पिताजी जिद्दी स्वभाव के थे और माँ शायद गौरैयों को निकालने के पक्ष में नहीं थीं। इसीलिए वे पिताजी की गतिविधियों पर व्यंग्य करती रहीं। न उन्होंने पिताजी से कुछ कहा और न ही मदद की।

(ङ) ''एक चूहा अँगीठी के पीछे बैठना पसंद करता है, शायद बूढ़ा है उसे सर्दी बहुत लगती है।'' लेखक ने चूहे के विशेष व्यवहार से अनुमान लगाया कि उसे सर्दी लगती होगी। आप भी किसी एक अपरिचित व्यक्ति या प्राणी के व्यवहार को ध्यान से देखकर अनुमान लगाइए कि वह क्या सोच रहा होगा, क्या करता होगा या वह कैसा व्यक्ति होगा आदि।

(संकेत–आपको उसके व्यवहार पर ध्यान देना है, उसके रंग-रूप या वेशभूषा पर नहीं)

उत्तर—एक दिन मैंने देखा कि एक पेड़ के पास दो चिड़ियाँ चीं-चीं करती उड़ रही हैं। उनका उड़ना और अनायास चीं-चीं करना मुझे कुछ अजीब-सा लगा और मैंने अनुमान लगाया कि शायद कोई बात है। पास जाकर देखा तो एक सर्प चिड़ियों के घोंसले की ओर बढ़ रहा था। मैंने तुरंत उसे पत्थर मारकर भगाया।

(च) ''पिताजी कहते हैं कि यह घर सराय बना हुआ है।'' सराय और घर में कौन-कौन से अंतर होते होंगे?

उत्तर—पिताजी का घर को सराय कहना प्रतीत होता है जैसे घर में बहुत सारे लोग आ-जा रहे हैं, कोई स्थायित्व या अनुशासन नहीं है, घर का वातावरण अस्थिर या अस्त-व्यस्त हो गया है जैसे किसी सराय का होता है। इनमें प्रमुख अंतर इस प्रकार हैं–

घर	सराय
• घर वह स्थान है जहाँ एक परिवार रहता है और एक-दूसरे से भावनात्मक जुड़ाव होता है।	• सराय वह जगह होती है जहाँ लोग अस्थायी रूप से ठहरते हैं और आते-जाते रहते हैं।
• घर में आत्मीयता, अपनापन और नियम होते हैं।	• सराय में न कोई अपनापन होता है, न ही कोई स्थायी संबंध।
• घर में सफाई, व्यवस्था और अनुशासन होता है।	• सराय में अक्सर अव्यवस्था और भीड़-भाड़ होती है
• घर निजी स्थान होता है।	• सराय सार्वजनिक स्थान होता है।
• घर को परिवार के सदस्य मिलकर सजाते व सँवारते हैं।	• सराय में लोग कुछ समय बिताते हैं और फिर चले जाते हैं।

संवाद और अभिनय

नीचे दी गई स्थितियों के लिए अपने समूह में मिलकर अपनी कल्पना से संवाद लिखिए और बातचीत को अभिनय द्वारा प्रस्तुत कीजिए–

(क) ''वे अभी भी झाँके जा रही थीं और चीं-चीं करके मानो अपना परिचय दे रही थीं, हम आ गई हैं। हमारे माँ-बाप कहाँ हैं'' नन्हीं-नन्हीं दो गौरैया क्या-क्या बोल रही होंगी?

उत्तर–पहली नन्हीं गौरैया– ''मुझे तो आज बहुत भूख लग रही है।''

दूसरी नन्हीं गौरैया– हाँ! तुम ठीक कह रही हो। पता नहीं, माँ-बाप कहाँ हैं?''

पहली नन्हीं गौरैया– ''कहीं उन्हें कुछ हो तो नहीं गया?''

(ख) ''चिड़ियाँ एक-दूसरे से पूछ रही हैं कि वह आदमी कौन है और नाच क्यों रहा है'' घोंसले से झाँकती गौरैयाँ क्या-क्या बातें कर रही होंगी?

उत्तर–पहली चिड़िया– अरे! ये आदमी तो गाना गा रहा है और नाच भी रहा है।''

दूसरी चिड़िया– ''लगता है इसे हमारे लौट आने की बहुत खुशी है।''

पहली चिड़िया– ''हाँ, शायद इसे पुराने दिन याद आ गए होंगे... जब हम सब साथ रहते थे।

दूसरी चिड़िया– ''चलो, यह तो अच्छा है... कोई तो हमारी कद्र करता है।''

(ग) ''एक दिन दो गौरैया सीधी अंदर घुस आईं और बिना पूछे उड़-उड़कर मकान देखने लगीं।'' जब उन्होंने पहली बार घर में प्रवेश किया तो उन्होंने आपस में क्या बातें की होंगी?

उत्तर–पहली गौरैया– ''देखो! यह तो वही घर है जहाँ पहले हमारा घोंसला था?''

दूसरी गौरया– ''हाँ, पर अब तो बहुत कुछ बदल गया है... ये नए पर्दे और फर्नीचर कहाँ से आ गए?

पहली गौरया– ''मुझे डर लग रहा है... पर मुझे अपना घोंसला फिर से यहीं बनाना है।''

दूसरी गौरैया– हाँ, हम तैयार हैं। इसे जीता-जागता घर बना देंगे।''

(घ) ''उनके माँ-बाप झट से उड़कर अंदर आ गए और चीं-चीं करते उनसे जा मिले और उनकी नन्हीं-नन्हीं चोंचों में चुग्गा डालने लगे।'' गौरैयों और उनके बच्चों ने क्या-क्या बातें की होंगी?

उत्तर–पहला बच्चा– माँ! आप कहाँ चली गई थीं? हमें बहुत भूख लगी थी।''

गौरैया (माँ)– बेटा, तुम्हारा पसंदीदा चुग्गा लाए हैं।

दूसरी बच्चा– पापा! आप भी आ गए। अब अच्छा लग रहा है।

गौरया (पिता)– अब हम सब फिर से एक साथ हैं। हमारा घोंसला फिर से आबाद हो गया है।

बदली कहानी

मान लीजिए कि घोंसले में अंडों से बच्चे न निकले होते। ऐसे में कहानी आगे कैसे बढ़ती? यह बदली हुई कहानी लिखिए।

उत्तर–यदि घोंसले में अंडों से बच्चे न निकले होते तो चिड़ियों का घोंसला लेखक के पिता नष्ट कर देते।

कहने के ढंग/क्रिया विशेषण

''माँ <u>खिलखिलाकर</u> हँस दी।''

इस वाक्य में 'खिलखिलाकर' शब्द बता रहा है कि माँ कैसे हँसी थीं। कोई कार्य कैसे किया गया है, इसे बताने वाले शब्द 'क्रिया विशेषण' कहलाते हैं। 'खिलखिलाकर' भी एक क्रिया विशेषण शब्द है।

अब नीचे दिए गए रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए। इन शब्दों का प्रयोग करते हुए अपने मन से वाक्य बनाइए।

(क) पिताजी ने <u>झिड़ककर</u> कहा, ''तू खड़ा क्या देख रहा है?''

(ख) ''देखो जी, चिड़ियों को मत निकालो'', माँ ने अबकी बार <u>गंभीरता</u> से कहा।

(ग) ''किसी को सचमुच बाहर निकालना हो, तो उसका घर तोड़ देना चाहिए'', उन्होंने <u>गुस्से</u> में कहा।

अब आप इनसे मिलते-जुलते कुछ और क्रिया विशेषण शब्द सोचिए और उनका प्रयोग करते हुए कुछ वाक्य बनाइए।

(संकेत– धीरे से, जोर से, अटकते हुए, चिल्लाकर, शरमाकर, सहमकर, फुसफुसाते हुए आदि।)

उत्तर–(क) झिड़ककर– नानाजी ने मुझसे झिड़ककर कहा– तुम इधर आओ।

(ख) गंभीरता से– आज मैं माताजी की बात बड़ी गंभीरता से सुन रहा था।

(ग) गुस्से में– पिताजी गुस्से में घर से बाहर निकले।

अन्य शब्द के प्रयोग से वाक्य रचना इस प्रकार है–

धीरे से– उसने धीरे से दरवाजा बंद किया।

जोर से– माँ जोर से हँसने लगी।

अटकते हुए– मैं झाड़ियों में अटकते हुए गिर पड़ा।

चिल्लाकर– उसने चिल्लाकर कहा– वहाँ मत जाओ।

शरमाकर– लड़का शरमाकर चला गया।

सहमकर– आज वह सहमकर रह गया।

फुसफुसाते हुए– वे दोनों फुसफुसाते हुए बातें कर रहे थे।

घर के प्राणी

कहानी में आपने पढ़ा कि लेखक के घर में अनेक प्राणी रहते थे। लेखक ने उनका वर्णन ऐसे किया है जैसे वे भी मनुष्यों की तरह व्यवहार करते हैं। कहानी में से चुनकर उन प्राणियों की सूची बनाइए और बताइए कि वे मनुष्यों जैसे कौन-कौन से काम करते थे?

(क) बिल्ली– 'फिर आऊँगी' कहकर चली जाती है।

उत्तर–(ख) चूहे– एक चूहा अँगीठी के पीछे बैठना पसंद करता है।

(ग) चमगादड़– रात होते ही पर फैलाए कसरत करने लगते हैं।

(घ) कबूतर– दिन भर गुटरगूँ का संगीत सुनाई देता है।

(ङ) गौरैयाँ– बिना पूछे उड़-उड़कर मकान देखने लगती हैं।

हेर-फेर मात्रा का

''माँ <u>और</u> पिताजी दोनों सोफे पर बैठे उनकी <u>ओर</u> देखे जा रहे थे।''

''पहले इन्हें <u>उड़ा</u> देते, तो <u>उड़</u> जातीं।''

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए। आपने ध्यान दिया होगा कि शब्द में एक मात्रा-भर के अंतर से उसके अर्थ में परिवर्तन हो जाता है। अब नीचे दिए गए शब्दों की मात्राओं और अर्थों के अंतर पर ध्यान दीजिए। इन शब्दों का प्रयोग करते हुए अपने मन से वाक्य बनाइए।

- नाच-नाचा-नचा
- चूक-चुक
- हार-हरा-हारा
- नीचा-नीचे
- पिता-पीता
- सहसा-साहस

उत्तर– नाच-नाचा-नचा।

वाक्य– श्रीकृष्ण ने कालिया नाग के फन पर नाच नाचा और उसको भी नचाया।

• हरर–हरा-हारा

वाक्य– हारा खिलाड़ी हरा हार पहने था।

• पिता– पीता

वाक्य– रमेश का पिता पानी पीता है।

• चूक– चुक–

वाक्य– न जाने किस चूक से उसका हिसाब चुकाया।

नीचा– नीचे–

वाक्य– किसी को नीचा दिखाने से कोई नीचे नहीं जाता।

• सहसा– साहस–

वाक्य– शेर को देखकर मैंने सहसा अपने साहस का प्रयोग किया।

वाद-विवाद

कहानी में माँ द्वारा कही गई कुछ बातें नीचे दी गई हैं–

''अब तो ये नहीं उड़ेंगी। पहले इन्हें उड़ा देते, तो उड़ जातीं।''

''एक दरवाजा खुला छोड़ो, बाकी दरवाजे बंद कर दो। तभी ये निकलेंगी।''

''देखो जी, चिड़ियों को मत निकालो। अब तो इन्होंने अंडे भी दे दिए होंगे। अब यहाँ से नहीं जाएँगी।''

कक्षा में एक वाद-विवाद गतिविधि का आयोजन कीजिए। वाद-विवाद का विषय है–

''माँ चिड़ियों को घर से निकालना चाहती थीं।''

कक्षा में आधे समूह इस कथन के पक्ष में और आधे समूह इसके विपक्ष में तर्क देंगे।

उत्तर–वाद-विवाद विषय

''माँ चिड़ियों को घर से निकालना चाहती थीं।''

पक्ष– (समर्थन में तर्क)

1. स्वच्छता और सुरक्षा– घर में घोंसला होने से गंदगी और कीड़ों का खतरा बढ़ जाता है, जो सेहत के लिए हारिकारक है।

2. संपत्ति की रक्षा– चिड़ियों के बार-बार आने-जाने से घर की दीवार, छत या सामान को नुकसान हो सकता है।

3. संभावित बीमारी का खतरा– पक्षियों के पंखों और बीट में बीमारी फैलाने वाले जीवाणु हो सकते हैं।

4. बच्चों की सुरक्षा– चिड़ियाँ डरकर हमला कर सकती हैं या बच्चे चिड़ियों को छेड़ सकते हैं, जिससे चोट लगने का डर है।

5. लंबी अवधि की परेशानी– अगर आज घोंसला नहीं हटाया गया तो आने वाले मौसम में और चिड़ियाँ आने लगेंगी।

विपक्ष (विरोध में तर्क)

1.जीवन का अधिकार–सभी जीवों को जीने का समान अधिकार है, चिड़ियों का घोंसला उनका घर है।

2. मानव-पशु सह अस्तित्व– प्रकृति में सभी को स्थान मिलना चाहिए, हमें चिड़ियों के साथ रहना सीखना चाहिए।

3. पर्यावरण संतुलन– चिड़ियाँ कीड़े-मकोड़े खाकर पर्यावरण साफ रखती हैं यह हमारे लिए लाभदायक है।

4. नैतिकता और करुणा– मासूम जीवों को उनके बच्चों समेत निकालना क्रूरता है, जो नहीं करनी चाहिए।

5. सांस्कृतिक और धार्मिक दृष्टि– भारतीय संस्कृति में पक्षियों को पालना और उनकी रक्षा करना शुभ माना गया है।

कहानी की रचना

''कमरे में फिर से शोर होने लगा था, पर अबकी बार पिताजी उनकी ओर देख-देखकर केवल मुसकराते रहे।''

इस पंक्ति में बताया गया है कि पिताजी का दृष्टिकोण कैसे बदल गया। इस प्रकार यह विशेष वाक्य है। इस तरह के वाक्यों से कहानी और अधिक प्रभावशाली बन जाती है।

(क) आपको इस कहानी में ऐसी अनेक विशेषताएँ दिखाई देंगी। उन्हें अपने समूह के साथ मिलकर ढूँढ़िए और उनकी सूची बनाइए।

उत्तर– कहानी की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

- बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन– पिताजी कहते हैं कि यह घर सराय बना हुआ है। हम तो यहाँ मेहमान हैं।
- तुलनात्मक वर्णन– वह शोर मचता है कि कानों के पर्दे फट जाएँ, पर लोग कहते हैं कि पक्षी गीत गा रहे हैं।
- मानवीकरण का प्रयोग– मन आया तो अंदर आकर दूध पी गई, न मन आया तो बाहर से ही 'फिर आऊँगी' कहकर चली जाती है।
- हँसी-मजाक का वर्णन– चिड़ियाँ एक-दूसरे से पूछ रही हैं कि यह आदमी कौन है और नाच क्यों रहा है?

आपकी बात

(क) इस कहानी की कुछ विशेषताओं को नीचे दिया गया है। इनके उदाहरण कहानी में से चुनकर लिखिए।

कहानी की विशेषताएँ	कहानी में से उदाहरण
1. किसी बात को कल्पना से बढ़ा-चढ़ाकर कहना	जो भी पक्षी पहाड़ियों-घाटियों पर से उड़ता हुआ दिल्ली पहुँचता है, पिताजी कहते हैं वही सीधा हमारे घर पहुँच जाता है, जैसे हमारे घर का पता लिखवाकर लाया हो।

उत्तर–

कहानी की विशेषताएँ	कहानी में से उदाहरण
2. हास्य यानी हँसी-मजाक का उपयोग किया जाना	माँ को ऐसे मौकों पर मजाक सूझता है। हँसकर बोलीं, ''चिड़िया एक-दूसरे से पूछ रही हैं कि यह आदमी कौन है और नाच क्यों रहा है?''

3. सोचा कुछ और, हुआ कुछ और	पिताजी के हाथ ठिठक गए। यह क्या? गौरैया के घोंसले से नन्हें बच्चे निकल आए, पिताजी का हृदय पिघल गया।
4. दूसरों के मन के भावों का अनुमान लगाना	नन्हीं-नहीं दो गौरैयाँ! वे अभी भी झाँके जा रही थीं और चीं-चीं करके मानो अपना परिचय दे रही थीं, हम आ गई हैं। हमारे माँ-बाप कहाँ हैं?
5. किसी की कही बात को उसी के शब्दों में लिखना	जैसे माँ का पिताजी से कहना, ''तुम तो जैसे कोई युद्ध जीत रहे हो।''
6. किसी प्राणी या उसके कार्य को कोई अन्य नाम देना	कहानी में गौरैया को चिड़ियाँ, पखेरू आदि नाम से भी संबोधित किया गया है।
7. किसने किससे कोई बात कही, यह सीधे- सीधे बताए बिना उस संवाद को लिखना	''अब मुझे और बर्दाश्त नहीं होगा'', कहकर पिताजी ने घोंसला तोड़ने का फैसला किया। यह बात उन्होंने गुस्से में कही थी लेकिन यह सीधे संवाद के रूप में प्रस्तुत नहीं की गई है।

पाठ से आगे

(क) ''गौरैयों ने घोंसले में से सिर निकालकर नीचे की ओर झाँककर देखा और दोनों एक साथ 'चीं-चीं' करने लगीं।'' आपने अपने घर के आस-पास पक्षियों को क्या-क्या करते देखा है? उनके व्यवहार में आपको कौन-कौन से भाव दिखाई देते हैं?

उत्तर–मैंने अपने घर के आस-पास कई पक्षियों को उड़ते, दाना-पानी खाते आदि रूपों में देखा है; जैसे– गौरैया, कबूतर, तोते और कौवे। उनके व्यवहार में निम्न भाव दिखाई देते हैं; जैसे– उत्सुकता, सतर्कता, सामाजिकता, प्रसन्नता, संतोष, शांति, धैर्य, एकता, भय, खेलकूद, खुशी, चालाकी आदि भाव देखे जा सकते हैं। (छात्र स्वयं उत्तर भी दे सकते हैं।)

(ख) ''कमरे में फिर से शोर होने लगा था, पर अबकी बार पिताजी उनकी ओर देख-देखकर केवल मुसकराते रहे।'' कहानी के अंत में पिताजी गौरैयों का अपने घर में रहना स्वीकार कर लेते हैं। क्या आप भी कोई स्थान या वस्तु किसी अन्य के साथ साझा करते हैं? उनके बारे में बताइए। साझेदारी में यदि कोई समस्या आती है तो उसे कैसे हल करते हैं?

उत्तर– हाँ, मैं भी कई बार अपनी वस्तुएँ दूसरों के साथ साझा करता/करती हूँ। उदाहरण के लिए– किताबें, खिलौने, कमरा आदि।

साझेदारी में आने वाली समस्याएँ और उनका समाधान–

- वस्तुओं के उपयोग को लेकर विवाद
- व्यक्तिगत स्थान साझा करने पर गोपनीयता या आराम का अभाव
- वस्तुओं के खराब होने/खोने का डर
- वस्तुओं को प्रथम प्रयोग करने की समस्या आदि।

इन समस्याओं के समाधान हेतु नियम, समय, ईमानदारी से निर्धारित करना अति आवश्यक व उचित समाधान है।

साझेदारी में समस्याओं का हल करने का सबसे अच्छा तरीका खुली और ईमानदारी से बातचीत, आपसी समझ और नियमों का पालन करना है।

(ग) परिवार के लोग गौरैयों को घर से बाहर भगाने की कोशिश करते हैं किन्तु गौरैयों के बच्चों के कारण उनका दृष्टिकोण बदल जाता है। क्या आपके साथ कभी ऐसा हुआ है कि किसी को देखकर या किसी से मिलकर आपका दृष्टिकोण बदल गया हो?

उत्तर– हाँ, मेरे साथ भी ऐसा कई बार हुआ है कि किसी को देखकर या किसी से मिलकर मेरा दृष्टिकोण बदल गया हो।

जैसे– मुझे कड़वेपन के कारण करेले पसंद नहीं थे लेकिन माँ ने नये तरीके से बनाए मुझे खाने पर स्वादिष्ट लगे और मेरी सोच करेले के कड़वेपन की तरफ से बदल गई। स्वादिष्ट सब्जियों में उनकी भी गिनती हो गई।

चिड़ियों का घोंसला

घोंसला बनाना चिड़ियों के जीवन का एक सामान्य हिस्सा है। विभिन्न पक्षी अलग-अलग तरह के घोंसले बनाते हैं। इन घोंसलों में वे अपने अंडे देते हैं और अपने चूजों को पालते हैं।

(क) अपने आस-पास विभिन्न प्रकार के घोंसले ढूँढ़िए और उन्हें ध्यान से देखिए और नीचे दी गई तालिका को पूरा कीजिए।

(सावधानी– उन्हें हाथ न लगाएँ अन्यथा पक्षियों, उनके अंडों और आपको भी खतरा हो सकता है)

उत्तर–

क्रम संख्या	घोंसले को कहाँ देखा	घोंसला किन चीजों से बनाया गया था	घोंसला खाली था या नहीं	घोंसला किस पक्षी का था
1.	नीम के पेड़ पर	घास-फूस टहनियाँ	खाली नहीं था	कौए का
2.	पीपल के पेड़ पर	सुतली, रुई-घास	खाली था	कबूतर का
3.	बबूल के पेड़ पर	घास-फूस	खाली था	गौरैया का
4.	आम के पेड़ पर	टहनियाँ, घास-फूस	खाली था	कोयल
5.	दीवार में	सुतली, रुई-घास	खाली नहीं था	गिलहरी

(ख) विभिन्न पक्षियों के घोंसले के संबंध में एक प्रस्तुति तैयार कीजिए। उसमें आप चाहें तो उनके चित्र और थोड़ी रोचक जानकारी सम्मिलित कर सकते हैं।

उत्तर– घोंसले पक्षियों का घर होते हैं। घोंसले पक्षी अपने अंडे देने, पालन करने, शिकारियों से सुरक्षा के लिए बनाते हैं।

घोंसले कप के आकार, लटकने वाले, सुरंग वाले, प्लेटफॉर्म, छिद्र वाले कई प्रकार के होते हैं।

घोंसला बनाने के लिए टहनियाँ, घास, पत्तियाँ, पंख, बाल, धागे आदि सामग्री का उपयोग होता है।

कुछ पक्षी हर साल नए घोंसले बनाते हैं, जबकि कुछ पुराने घोंसलों का पुनः उपयोग करते हैं।

- बया पक्षी अपने जटिल व बुने हुए घोंसलों के लिए प्रसिद्ध है।
- कठफोड़वा पेड़ के तनों में छेद करके घोंसले बनाते हैं।
- कोयल अपने अंडे दूसरों के घोंसले में देती है।

हास्य-व्यंग्य

'छोड़ो जी, चूहों को तो निकाल नहीं पाए, अब चिड़ियों को निकालेंगे! माँ ने व्यंग्य से कहा।''

आप समझ गए होंगे कि इस वाक्य में माँ ने पिताजी से कहा है कि वे चिड़ियों को नहीं निकाल सकते। इस प्रकार से कही गई बात को 'व्यंग्य करना' कहते हैं।

व्यंग्य का अर्थ होता है—हँसी-मजाक या उपहास के माध्यम से किसी कमी, बुराई या विडंबना को उजागर करना।

व्यंग्य में बात को सीधे न कहकर **उलटा या संकेतात्मक** ढंग से कहा जाता है ताकि उसमें **चुटकीलापन** भी हो और **गंभीर सोच** की संभावना भी बनी रहे। अनेक बार व्यंग्य में हास्य भी छिपा होता है।

(क) आपको इस कहानी में कौन-कौन से वाक्य पढ़कर हँसी आई? उन वाक्यों को चुनकर लिखिए।

उत्तर– यथा–

- ''छोड़ो जी, चूहों को तो निकाल नहीं पाए, अब चिड़ियों को निकालेंगे!''
- ''चिड़ियाँ एक-दूसरे से पूछ रही हैं कि यह आदमी कौन है और नाच क्यों रहा है?''
- ''चलो, दो तिनके तो निकल गए''

(ख) अब चुने हुए वाक्यों में से कौन-कौन से वाक्य 'व्यंग्य' कहे जा सकते हैं? उन पर सही का चिह्न लगाइए।

उत्तर–छात्र स्वयं चिह्न लगाएँ। यथा– जो भी वाक्य चुने गए हैं वे सभी वाक्य व्यंग्यपूर्ण हैं। ये सभी व्यंग्य में कहे जा सकते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. 'दो गौरैया' कहानी के लेखक कौन हैं?
(अ) प्रेमचंद (ब) भीष्म साहनी
(स) जयशंकर प्रसाद
(द) हरिवंश राय 'बच्चन'

2. कहानी में पिता किस चीज को हटाना चाहते हैं?
(अ) पेड़ (ब) गमला
(स) गौरैयों का घोंसला (द) पंखा

3. पिता घोंसला क्यों हटाना चाहते हैं?
(अ) वह पुराना हो गया था
(ब) पंखा टूट रहा था
(स) कालीन पर गंदगी गिरती थी
(द) गौरैयाँ चहचहाती थीं

4. कहानी में कितनी गौरैयाँ थीं?
(अ) एक (ब) दो
(स) तीन (द) चार

5. कहानी का मुख्य संदेश क्या है?
(अ) सफाई जरूरी है
(ब) पक्षियों से दया और प्रेम रखना चाहिए
(स) माँ की बात माननी चाहिए
(द) घर में पंखा नहीं लगाना चाहिए

उत्तर– 1. (ब) **2.** (स) **3.** (स) **4.** (ब) **5.** (ब)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. घोंसला .... ने हटाया।
2. पिताजी ने घोंसला हटाने के लिए .... का प्रयोग किया।
3. माँ ने पिताजी पर .... किया।
4. गौरैया .... से चहचहा रही थीं।
5. पिताजी लाठी उठाए .... डंडे की ओर लपके।

उत्तर– 1. पिताजी **2.** डंडे **3.** व्यंग्य **4.** बेचैनी **5.** पर्दे के

सत्य/असत्य

1. 'दो गौरैया' कहानी के लेखक भीष्म साहनी हैं। ( )
2. कहानी में तीन गौरैयाँ थीं। ( )
3. घोंसले में दो बच्चे थे। ( )
4. गौरैया बेचैनी से चहचहा रही थीं। ( )
5. कहानी का संदेश है– पक्षियों के साथ क्रूरता नहीं करनी चाहिए। ( )

उत्तर– 1. सत्य **2.** असत्य **3.** सत्य **4.** सत्य **5.** सत्य

सही मिलान

स्तंभ (अ)	स्तंभ (ब)
1. भीष्म साहनी	**(अ)** घोंसला हटाया
2. पिताजी	**(ब)** सहृदया
3. माँ	**(स)** लेखक
4. डंडा	**(द)** बेचैनी से चहचहाना
5. गौरैया	**(य)** घोंसला गिराने का साधन

उत्तर– 1. (स) **2.** (अ) **3.** (ब) **4.** (य) **5.** (द)

अतिलघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. भीष्म साहनी का जन्म कब हुआ?
उत्तर– 8 अगस्त, 1915 ई. में।

2. भीष्म साहनी की माता का नाम बताइए।
उत्तर– श्रीमती लक्ष्मी देवी।

3. पंजाब विश्वविद्यालय से भीष्म साहनी ने क्या प्राप्त किया?
उत्तर– पी-एच.डी. की उपाधि।

4. कहानी में कितनी गौरैयों का उल्लेख है?
उत्तर– दो।

5. अँगीठी के पीछे कौन बैठ जाता था?
उत्तर– एक बूढ़ा चूहा।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. पिताजी ने घर को सराय क्यों कहा?
उत्तर–क्योंकि उनके घर में अनेक तरह के जीव-जंतु (जैसे– गौरैया, कबूतर, चमगादड़, चूहे, छिपकलियाँ) बिना रोक-टोक के आते-जाते रहते थे।

2. पिताजी बार-बार गौरैयों को घर से क्यों भगा रहे थे?

उत्तर—पिताजी को घर में चिड़ियों का शोर-शराबा और उनके घोंसले से गिरते तिनके पसंद नहीं थे। वे घर को साफ-सुथरा रखना चाहते थे, इसलिए गौरैयों को भगा रहे थे।

3. माँ पिताजी की कोशिशों पर क्यों हँस रही थीं?

उत्तर—माँ को पिताजी की कोशिश व्यर्थ लग रही थी क्योंकि गौरैयाँ बार-बार भगाने पर भी वापस आ जाती थीं। माँ को चिड़ियों की मासूम हरकतें भी प्यारी लग रही थीं।

4. 'मल्हार' शब्द का कहानी में क्या अर्थ है?

उत्तर—'मल्हार' भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक राग है। कहानी में इसका उपयोग व्यंग्य के रूप में किया गया है। जब पिताजी गौरैयों को भगाते हैं और वे वापस आकर चीं-चीं, करती हैं, जिसे लेखक 'मल्हार' गाना कहता है। मल्हार बरसात के समय में गाई जाती हैं।

5. कहानी में घर के 'असली मालिक' किसे कहा गया है?

उत्तर—कहानी में व्यंग्य में घर के 'असली मालिक' उन जीव-जंतुओं और पक्षियों को कहा गया है, जिन्होंने घर पर अपना अधिकार जमा रखा है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. 'दो गौरैया' कहानी के माध्यम से लेखक क्या संदेश देना चाहता है?

उत्तर—'दो गौरैया' कहानी के माध्यम से लेखक हमें प्रकृति के छोटे-छोटे जीवों के प्रति सहानुभूति का संदेश देना चाहता है। यह कहानी दिखाती है कि कैसे एक व्यक्ति जो सबसे पहले घर बनाना चाहता था, बाद में उनके प्रति भावनात्मक रूप से जुड़ जाता है। पिताजी का चिड़ियों को भगाने का प्रयास और माँ का उन्हें रोकने का प्रयास, दोनों ही मानवीय दृष्टिकोणों को दर्शाते हैं। अंत में पिताजी का हृदय दिखाता है कि प्रेम और करुणा से ही हम प्रकृति के द्वारा सामंजस्य स्थापित कर सकते हैं। यह कहानी सिखाती है कि प्रकृति के हर प्राणी का अपना महत्व है और हमें उनके जीवन का सम्मान करना चाहिए।

2. कहानी में पिताजी और माँ के स्वभाव में क्या अंतर है? दोनों के चरित्रों की तुलना कीजिए।

उत्तर—कहानी में पिताजी का स्वभाव थोड़ा कठोर और सफाई प्रिय है। वे घर को साफ-सुथरा और शांत रखना चाहते हैं, इसलिए उन्हें घर में पक्षियों व जानवरों की मौजूदगी पसंद नहीं है। वे उन्हें भगाने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं।

माँ का स्वभाव संवेदनशील, कोमल और विनोदी है। उन्हें प्रकृति और जानवरों से प्रेम है। वह पिताजी की बातों पर हँसती हैं तथा गौरैयों को घर में रहने देना चाहती हैं। माँ का चरित्र करुणा से भरा हुआ है।

3 एक आशीर्वाद

अभ्यास-प्रश्नोत्तर

पाठ से

आइए, अब हम इस कविता को थोड़ा और विस्तार से समझते हैं। नीचे दी गई गतिविधियाँ इस कार्य में आपकी सहायता करेंगी।

मेरी समझ से

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उपयुक्त उत्तर के सम्मुख तारा (☆) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।

1. कविता में किसे संबोधित किया गया है?

- युवा वर्ग को
- नागरिकों को
- बच्चों को
- श्रमिकों को

उत्तर— बच्चों को।

2. "तेरे स्वप्न बड़े हों" पंक्ति में 'स्वप्न' से क्या आशय है?

- कल्पना की उड़ान भरना

- आकांक्षाएँ और रुचियाँ रखना
- बहुत-सी उपलब्धियाँ पाना
- बड़े लक्ष्य निर्धारित करना

उत्तर— बड़े लक्ष्य निर्धारित करना

3. ''उँगली जलाएँ'' पंक्ति में उँगली जलाने का भाव है—

- चुनौतियों को स्वीकार करना
- प्रकाश का प्रसार करना
- अग्नि के ताप का अनुभव करना
- कष्टों से नहीं घबराना

उत्तर— कष्टों से नहीं घबराना/चुनौतियों को स्वीकार करना।

4. ''अपने पाँवों पर खड़े हों'' पंक्ति का क्या आशय है?

- अपने पैरों पर खड़े होना
- सफलता प्राप्त करना
- कठिनाइयों का सामना करना
- आत्मनिर्भर होना

उत्तर— आत्मनिर्भर होना।

(ख) हो सकता है कि आपके समूह के साथियों ने अलग-अलग उत्तर चुने हों। अपने मित्रों के साथ विचार कीजिए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने?

उत्तर—1.बच्चों को— कविता में कवि बच्चों को आशीर्वाद देते हुए जीवन में उन्नति करने हेतु संबोधित करता है।

2.बड़े लक्ष्य निर्धारित करना—कविता में कवि बच्चे को आशीर्वाद देता है कि 'जा, तेरे स्वप्न बड़े हों' पानी तू कामयाबी की ऊँचाइयों को छू और लक्ष्य निर्धारित कर। यहाँ 'स्वप्न' का अर्थ कल्पना से है जो उसे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेगा।

3. • चुनौतियों को स्वीकार करना

• कष्टों से नहीं घबराना—कविता में बताया गया है कि जीवन में 'उँगली जलाएँ' यानी कामयाबी हासिल करने हेतु कष्टों से बिना घबराए चुनौतियों का सामना करना चाहिए।

4. आत्मनिर्भर होना— अपने पैरों पर खड़े होना, यह एक मुहावरा है, जो आत्मनिर्भर बनने की ओर संकेत करता है।

मिलकर करें मिलान

कविता में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे स्तंभ 1 में दी गई हैं। उन पंक्तियों के भाव या संदर्भ स्तंभ 2 में दिए गए हैं। पंक्तियों का उनके सही अर्थ या संदर्भों से मिलान कीजिए।

क्रम स्तंभ 1	स्तंभ 2
1. भावना की गोद से उतरकर जल्द पृथ्वी पर चलना सीखें	**1.** विविध ज्ञान के प्रति आकृष्ट होना और उसे पाने की ललक होना
2. हर दीये की रोशनी देखकर ललचाएँ	**2.** सपनों को आनंद और मुस्कुराहटों में बदलें। कठिन परिस्थितियों में भी मनोबल बनाए रखें।
3. चाँद-तारों-सी अप्राप्य सच्चाइयों के लिए रूठना-मचलना सीखें	**3.** भावनाओं में न बहकर वास्तविकता का सामना करना।
4. ...हँसें/मुस्कराएँ/गाएँ	**4.** असंभव से लगने वाले लक्ष्यों के लिए हठ और प्रयास करना।

उत्तर— 1. (3) 2. (1) 3. (4) 4. (2)

पंक्तियों पर चर्चा

पाठ से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार समूह में साझा कीजिए और लिखिए—

(क) ''जा,
तेरे स्वप्न बड़े हों''

उत्तर— बड़े लक्ष्यों को चुनें और उन्हें पूरा करने के लिए लगातार प्रयास करें।

(ख) ''जल्द पृथ्वी पर चलना सीखें''

उत्तर— व्यक्ति को कल्पनाएँ करके ही नहीं रहना चाहिए बल्कि उन पर काम भी करना चाहिए।

(ग) ''चाँद-तारों-सी अप्राप्य सच्चाइयों के लिए रूठना-मचलना सीखें''

उत्तर– कठिन लक्ष्यों की पूर्ति के लिए लगातार सीखना, उन्हें पाने की लालसा बनाए रखना और परिश्रम करना तथा उन्हें पाने का हर संभव प्रयास करना चाहिए।

अनुमान और कल्पना से

अपने समूह में मिलकर चर्चा कीजिए–

(क) कविता में सपनों के बड़े होने की बात की गई है। आपके अनुसार बड़े सपने कौन-कौन से हो सकते हैं और क्यों?

उत्तर– मेरे अनुसार बड़े सपने वे हो सकते हैं, जो न केवल हमारे जीवन को सफल बनाते हैं, बल्कि दूसरों के लिए भी उपयोगी होते हैं। जैसे– डॉक्टर, वैज्ञानिक, शिक्षक, समाज सेवी बनना आदि।

क्योंकि बड़े सपने हमें सिर्फ अपने लिए नहीं, बल्कि समाज और देश के लिए सोचने की प्रेरणा देते हैं। ऐसे सपनों को पूरा करने के लिए परिश्रम, ईमानदारी और लगन की जरूरत होती है।

(ख) ''हर दीये की रोशनी देखकर ललचाएँ/उँगली जलाएँ'' पंक्ति में सपनों और लक्ष्यों को पूरा करने के लिए ललक की बात की गई है। ललक के साथ और क्या-क्या होना आवश्यक है और क्यों? (संकेत–योजना, प्रयास आदि)

उत्तर– सपनों को पूरा करने के लिए केवल ललक (इच्छा) होना ही काफी नहीं है, उसके साथ कुछ और गुणों का होना भी बहुत जरूरी होता है; जैसे– कड़ी मेहनत, धैर्य, साहस, दृढ़ निश्चय, समय का प्रबंधन आदि।

क्योंकि केवल चाहने से कुछ नहीं होता, जब तक हम उस चाह के लिए संघर्ष न करें। ललक हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा देती हैं, लेकिन सफलता पाने के लिए मेहनत, धैर्य और संकल्प का साथ होना बहुत आवश्यक है।

(ग) कल्पना कीजिए कि आपका सपना ही आपका मित्र है। आपको उससे बातचीत करनी हो तो क्या बात करेंगे?
(संवाद रूप में)

उत्तर– मैं– नमस्ते मेरे प्यारे सपने! तुम कैसे हो?

सपना– मैं तो ठीक हूँ, पर तुम मुझे कितना याद करते हो?

मैं– हर दिन याद करता हूँ, परिश्रम भी कर रहा हूँ। लेकिन रास्ते में कई मुश्किलें आती हैं।

सपना– मुश्किलें तो हर रास्ते में होती हैं, लेकिन जो डरते नहीं, वही मुझे पा सकते हैं।

नोट– अगर हमारा सपना, हमारा मित्र बन जाए, तो वह हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा देगा। हमारी गलतियों को सुधारेगा और हमें कभी अकेला महसूस नहीं होने देगा।

(घ) यदि आप किसी को आशीर्वाद देना चाहते हो तो आप किसे और क्या आशीर्वाद देंगे और क्यों?

उत्तर– यदि मुझे किसी को आशीर्वाद देने का अवसर मिले, तो मैं अपने छोटे भाई/बहन को आशीर्वाद दूँगा/दूँगी कि–

''तुम हमेशा खुश रहो, मन लगाकर पढ़ाई करो और जीवन में सफलता प्राप्त करो।''

क्योंकि मेरा छोटा भाई/बहन मेरे दिल के बहुत करीब है। मैं चाहता/चाहती हूँ कि वह हमेशा मुस्कराता रहे, अच्छे संस्कारों वाला बने और अपने जीवन में कुछ बड़ा करे।

कविता की रचना

इस कविता में सपने को मनुष्य की तरह हँसते, मुस्कराते, गाते हुए बताया गया है। ध्यान से देखें तो इस कविता में इस प्रकार की अन्य विशेषताएँ भी दिखाई देंगी। उन्हें लिखिए और कक्षा में उन पर चर्चा कीजिए।

उत्तर– कविता की अन्य विशेषताएँ–

1.सपनों को मानवीय रूप देना– कवि सपनों को मनुष्य की तरह प्रस्तुत करता है।

2.सपनों की भावनात्मक और संवेदनशीलता– रूठना, मचलना सीखें कहकर कवि सपनों को भावनात्मक और संवेदनशील रूप से जोड़ता है।

3.सपनों का संघर्षशील रूप दिखाया है।

4.सपनों को प्रेरणादायक शक्ति के रूप में निरूपित किया है।

5.सपनों की निस्वार्थता के बारे में बताया है। सपने स्वर्ग रहित होकर सबको लाभ पहुँचाने वाले हैं।

कविता का शीर्षक

इस कविता का शीर्षक 'एक आशीर्वाद' है जो कविता में कहीं भी प्रयुक्त नहीं हुआ है। यदि इस कविता की ही किसी पंक्ति या शब्द को कविता का शीर्षक बनाना हो तो आप कौन-सी पंक्ति या शब्द चुनेंगे और क्यों?

उत्तर– यदि मुझे शीर्षक बनाना हो तो मैं शीर्षक दूँगा–

'जा तेरे स्वप्न बड़े हों।'

क्योंकि यह कविता की सबसे सारगर्भित पंक्ति है, जो पूरे आशीर्वाद का सार व्यक्त करती है। इस पंक्ति में दिशा, प्रेरणा, आशा और प्रेम सभी भाव समाहित हैं।

भाषा की बात

(क) नीचे दिए गए रिक्त स्थानों में 'स्वप्न' से जुड़े शब्द अपने समूह में चर्चा करके लिखिए–

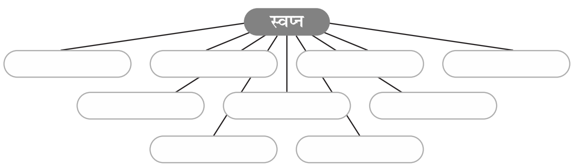

उत्तर–

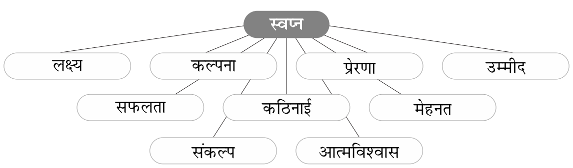

(ख) कविता में से चुनकर कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं और उनके सामने कुछ अन्य शब्द भी दिए गए हैं। उन शब्दों पर घेरा बनाइए जो समान अर्थ न देते हों–

शब्द	अन्य शब्द			
पृथ्वी	धरा	वसुधा	अवनि	सुता
चाँद	मधुकर	शशि	निशाकर	मयंक
तारे	नक्षत्र	सोम	तारक	उडुगण
रोशनी	प्रकाश	लालिमा	उजाला	आलोक
स्वप्न	सपना	इच्छा	यथार्थ	कल्पना
दीया	दीन	ज्योति	दीपक	प्रदीप

उत्तर–

शब्द	अन्य शब्द			
पृथ्वी	धरा	वसुधा	अवनि	सुता
चाँद	मधुकर	शशि	निशाकर	मयंक
तारे	नक्षत्र	सोम	तारक	उडुगन
रोशनी	प्रकाश	लालिमा	उजाला	आलोक
स्वप्न	सपना	इच्छा	यथार्थ	कल्पना
दीया	दीन	ज्योति	दीपक	प्रदीप

आना-जाना

'आना' और 'जाना' दो महत्वपूर्ण क्रियाएँ हैं। कक्षा में दो समूह बनाइए। एक समूह का नाम 'आना' और दूसरे समूह का नाम 'जाना' होगा। अब अपने-अपने समूह में इन दोनों क्रियाओं का प्रयोग करते हुए सार्थक वाक्य बनाइए और उन्हें चार्ट पेपर पर चिपकाकर अपनी कक्षा में लगाइए।

उत्तर–'आना' समूह

1. वह हर मंगलवार को मंदिर आता है।
2. मयंक मेरी जन्मदिन पार्टी में आया।
3. बारिश के बाद ठंडी हवा आई।
4. पिताजी ने बुलाया तो मैं तुरंत आया।
5. वह आज पूरे गणवेश में विद्यालय आया।

'जाना' समूह

1. मैं कल नाना-नानी के घर गया।
2. बच्चे खेलने जा रहे हैं।
3. हम कल पिकनिक पर जाएँगे।
4. मेघा रोज स्कूल जाती है।
5. अँधेरा होने से पहले हम घर चले गए।

पाठ से आगे

आपकी बात

(क) कविता के माध्यम से बड़े लक्ष्य निर्धाारित करने और उन्हें पूरा करने का आशीर्वाद दिया गया है। दिन-प्रतिदिन के जीवन में आपको अपने माता-पिता, अध्यापक एवं परिजनों से किस तरह के आशीर्वाद मिलते हैं? अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए।

उत्तर– उनके आशीर्वाद आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं, जो निम्न हैं–

1. माता-पिता से– 'हमेशा खुश रहो', तुम्हारा भविष्य उज्ज्वल हो, आदि।

2. अध्यापकों से– 'तुम पढ़ाई में आगे बढ़ो'। 'अच्छे इंसान बनो' आदि।

अपने माता-पिता, स्कूल सबका नाम रोशन करो।

3. परिजनों से–(दादा-दादी, चाचा-चाची आदि)

'हमेशा स्वस्थ रहो', 'नेक राह पर चलो' आदि।

ये आशीर्वाद मेरी जिन्दगी के मजबूत आधार हैं।

(ख) आप भी अपने से छोटों के प्रति किसी न किसी प्रकार से शुभेच्छा प्रकट करते हैं, उन्हें लिखिए।

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

हमारे सपने

आपके माता-पिता या अभिभावक आपकी आवश्यकताओं और इच्छाओं को जानते-समझते हैं। वे उन्हें पूरा करने के लिए यथासंभव प्रयत्न करते हैं। अपने माता-पिता या अभिभावक से उनके द्वारा देखे गए सपने और इच्छाओं के बारे में पूछिए कि वे क्या-क्या करना चाहते हैं? नीचे दी गई तालिका में उन सपनों को लिखिए। आप इस तालिका को और बढ़ा सकते हैं।

उत्तर– हमारे सपने

	घर के सदस्यों के सपने
माता	माँ का सपना होता है कि उनके बच्चे पढ़-लिखकर अच्छे इंसान बनें।
पिता	वे अपने परिवार को हर सुख-सुविधा दे सकें। बच्चों को अच्छी शिक्षा और उनका भविष्य उज्ज्वल बनाएँ।
दादा	पूरा परिवार मिल-जुलकर प्यार से रहें।
दादी	हमारे बच्चे ऊँचाइयों तक पहुँचे, उनका नाम रोशन करे।
नाना	परिवार उनकी मेहनत का सम्मान करे।
नानी	बच्चों में अच्छे संस्कार हों।
बहन	वह कुछ बनकर दिखाए। माता-पिता को गर्व महसूस कराए।
भाई	माता-पिता की जिम्मेदारियाँ बाँटे और जीवन में सफलता पाए।

सबके सपने

प्रतिदिन की आवश्यकताओं को पूरा करने में बहुत-से लोग सहयोग देते हैं, जैसे–शाक विक्रेता, स्वच्छताकर्मी, रिक्शाचालक, सुरक्षाकर्मी आदि। इनमें से किसी एक से साक्षात्कार कीजिए और उनके सपनों के विषय में जानिए। साक्षात्कार के समय कौन-कौन से प्रश्न हो सकते हैं? उनकी एक सूची भी बनाइए।

उत्तर–स्वच्छताकर्मी से साक्षात्कार–

स्थान– विद्यालय परिसर

समय– प्रातः 9:30 बजे

साक्षात्कारकर्ता– कक्षा 8 की छात्रा/छात्र

साक्षात्कृत व्यक्ति– श्रीमती कुसुम देवी (स्वच्छताकर्मी)

प्रश्न 1. नमस्ते कुसुम देवी, आप कब से इस विद्यालय में कार्यरत हैं?

उत्तर– नमस्ते बेटा, मैं पिछले 7 वर्षो से यहाँ काम कर रही हूँ।

प्रश्न 2. परीक्षा के दिनों में आपकी जिम्मेदारी में क्या-क्या बदलाव आते हैं?

उत्तर– उन दिनों मैं विशेष ध्यान देती हूँ कि कक्षाएँ पूरी तरह साफ हों, बच्चों को कोई परेशानी न हो। टॉयलेट और बरामदों की सफाई बार-बार करनी पड़ती है।

प्रश्न 3. आप इस काम को करते हुए कैसा महसूस करती हैं?

उत्तर– मुझे खुशी मिलती है कि मेरी सफाई से बच्चे अच्छा महसूस करते हैं और सब ठीक से पढ़ाई कर पाते हैं।

प्रश्न 4. आपके अपने कोई सपने हैं?

उत्तर– हाँ, मैं चाहती हूँ कि मेरी बेटी पढ़-लिखकर अध्यापिका बने ताकि वह समाज में सम्मान पाए।

प्रश्न 5. बच्चों के लिए आपका क्या संदेश है?

उत्तर– पढ़ाई पर ध्यान दो और कभी भी किसी के काम को छोटा मत समझो।

नोट– स्वच्छताकर्मी हमारे विद्यालय का अभिन्न हिस्सा हैं। वे परीक्षा के दौरान शांति और स्वच्छ वातावरण बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हमें उनके कार्य का सम्मान करना चाहिए।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. 'एक आशीर्वाद' कविता के रचयिता कौन हैं?
(अ) हरिवंश राय बच्चन
(ब) मैथिलीशरण गुप्त
(स) दुष्यंत कुमार
(द) रामधारी सिंह दिनकर

2. कविता में कवि ने किसे ''जा'' कहकर संबोधित किया है?
(अ) माता-पिता को (ब) शिक्षक को
(स) बच्चे या युवा को (द) मजदूर को

3. कवि ने किस प्रकार के सपने देखने को कहा हैं?
(अ) छोटे (ब) डरावने
(स) बुरे (द) बड़े

4. 'भावना की गोद से उतरकर' पंक्ति का तात्पर्य क्या हैं?
(अ) सो जाना
(ब) कल्पनाओं से निकलकर वास्तविकता में आना
(स) गाना-गाना
(द) खेलना

5. इस कविता में कवि किसका आशीर्वाद दे रहे हैं?
(अ) सफलता पाने का
(ब) संघर्ष करने और बढ़ने का
(स) धन कमाने का
(द) प्रसिद्धि पाने का

उत्तर– 1. (स) **2.** (स) **3.** (द) **4.** (ब) **5.** (ब)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. जा, ... बड़े हों।
2. भावना की गोद से .... ।
3. जल्द पृथ्वी पर .... सीखें।
4. चाँद-तारों-सी .... सच्चाइयों के लिए।
5. रूठना .... सीखें।

उत्तर– 1. तेरे स्वप्न **2.** उतरकर **3.** चलना, **4.** अप्राप्य **5.** मचलना

सत्य/असत्य

1. कविता में कवि ने बच्चे को उड़ने की प्रेरणा दी है।
2. कवि चाहता है कि बच्चे के स्वप्न बड़े हों।
3. कविता में चाँद-तारों का उल्लेख मंजिलों के रूप में किया गया है।
4. कवि कहता है कि भावना की गोद में ही रहो।
5. ''उँगली जलाएँ'' पंक्ति कष्ट सहने की प्रतीक है।

उत्तर– 1. असत्य **2.** सत्य **3.** सत्य **4.** असत्य **5.** सत्य

सही मिलान

स्तंभ (अ)	स्तंभ (ब)
1. जा	(अ) कल्पना और कोमलता
2. तेरे स्वप्न बड़े हों	(ब) यथार्थ को अपनाना
3. भावना की गोद	(स) कठिन ऊँचे लक्ष्य
4. पृथ्वी पर चलना	(द) ऊँचे लक्ष्य की प्रेरणा
5. चाँद-तारों-सी मंजिलें	(य) आज्ञा और स्नेह का संकेत

उत्तर– 1. (य) **2.** (द) **3.** (अ) **4.** (ब) **5.** (स)

अति लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. सपने देखने से ज्यादा क्या जरूरी है?

उत्तर– उन्हें पूरा करने के लिए कड़ी मेहनत करना/ हकीकत में बदलना।

2. बड़े लक्ष्य रखकर भी हमें कैसे रहना चाहिए?

उत्तर– जमीन से जुड़े रहना चाहिए।

3. जीवन में आने वाले छोटे से छोटे अवसर को भी कैसे जीना चाहिए?

उत्तर– खुशी से जना चाहिए।

4. कविता का शीर्षक 'एक आशीर्वाद' से क्या प्रेरणा मिलती है?

उत्तर– कठिनाइयों का सामना करने की और सफलता की ओर बढ़ने की।

5. इस कविता के माध्यम से कवि क्या कर रहा है?

उत्तर– इच्छाशक्ति को जगा रहा है।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. पूरी कविता में अचम्भे की क्या बात है?

उत्तर–'एक आशीर्वाद' कविता में आशीर्वाद शब्द कहीं भी नहीं आया है लेकिन पूरी कविता में बेटी/बालक को बड़े सपनों को देखने व पूरा करने के लिए मेहनत करने, चुनौतियों का डटकर सामना करने, आत्मनिर्भर बनने को प्रेरित किया गया है।

2. कवि 'जा', 'तेरे स्वप्न बड़े हों' पंक्ति से क्या आशीर्वाद देना चाहते हैं?

उत्तर–कवि 'जा', 'तेरे स्वप्न बड़े हों' पंक्ति से यह आशीर्वाद देना चाहते हैं कि व्यक्ति के सपने बड़े और ऊँचे होने चाहिए, ताकि वह जीवन में कुछ महान कार्य करने की प्रेरणा पा सके। यह पंक्ति व्यक्ति को महत्वाकांक्षी बनने और बड़े लक्ष्य निर्धारित करने के लिए प्रेरित करती है।

3. 'भावना की गोद से उतरकर' जल्द पृथ्वी पर चलना सीखें का क्या अर्थ है?

उत्तर–इस पंक्ति का अर्थ है कि व्यक्ति को केवल भावनाओं या कल्पनाओं में ही नहीं खोए रहना चाहिए, बल्कि यथार्थ की दुनिया में आकर व्यावहारिक रूप से जीना और समस्याओं का सामना करना सीखना चाहिए। यह भावनाओं से निकलकर कर्मठ बनने का आह्वान है।

4. कवि हँसने, मुस्कराने और गाने को क्यों महत्वपूर्ण मानते हैं?

उत्तर–कवि हँसने, मुस्कराने और गाने को इसलिए महत्वपूर्ण मानते हैं क्योंकि ये जीवन में सकारात्मकता और खुशी बनाए रखने के लिए आवश्यक है। ये क्रियाएँ व्यक्ति को तनावमुक्त रखती हैं और उसे जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए मानसिक शक्ति प्रदान करती हैं।

5. 'हर दीये की रोशनी देखकर ललचाएँ' से कवि क्या संदेश देना चाहते हैं?

उत्तर–इस पंक्ति से कवि यह संदेश देना चाहते हैं कि व्यक्ति को दूसरों की सफलता या प्रगति (दीये की रोशनी) से ईर्ष्या करने के बजाय उससे प्रेरणा लेनी चाहिए। यह दूसरों की उपलब्धियों से सीखने और अपनी राह पाने की प्रेरणा देता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. कविता 'एक आशीर्वाद' में कवि ने जीवन में संघर्ष और आत्मनिर्भरता का क्या महत्व बताया है?

उत्तर–कविता 'एक आशीर्वाद' में कवि दुष्यंत कुमार यह संदेश देते हैं कि जीवन में केवल बड़े सपने देखना ही काफी नहीं है, बल्कि उन्हें पूरा करने के लिए परिश्रम और संघर्ष भी जरूरी होता है। कवि यह नहीं चाहता कि व्यक्ति सिर्फ कल्पनाओं में जीए, बल्कि वह सच्चाई की धरती पर उतरकर अनुभवों से सीखे और आगे बढ़े। कवि का भाव है कि जब हम ऊँचे लक्ष्य बनाते हैं, तो उनके रास्ते में कठिनाइयाँ आती हैं उनसे डरने के बजाय उनसे लड़ना व सीखना चाहिए।

कवि अपने आशीर्वाद में व्यक्ति को यह सिखाते हैं कि उसे आत्मनिर्भर बनना चाहिए– त्याग और परिश्रम के बिना सफलता नहीं मिलती। इस प्रकार यह कविता हमें जीवन में संघर्ष, आत्मबल और आत्मनिर्भरता का महत्व सिखाती है।

2. दुष्यंत कुमार की कविता 'एक आशीर्वाद' में कवि ने किस प्रकार के जीवन की कल्पना की है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–इस कविता में कवि एक ऐसे जीवन की कल्पना करते हैं जिसमें इंसान के सपने बहुत बड़े हों, केवल कल्पनाओं में व्यक्ति न खोया रहे, बल्कि सच्चाई की जमीन पर उतरकर जीवन के कठिन रास्तों पर चलना सीखें।

कवि चाहता है कि वह अपने अनुभवों से सीखें, लक्ष्य

प्राप्त करने के लिए कभी हठ करे, कभी मुस्कराए, कभी अपने दर्द में भी गीत गाए। कवि कहता है कि प्रेरणा लेने के लिए दीपक की रोशनी को देखना चाहिए और जरूरत पड़े तो त्याग भी करना चाहिए।

अंत में कवि उसे आत्मनिर्भर बनने का आशीर्वाद देता है। वह अपने सपनों को साकार करके एक मजबूत इंसान बने। यह कविता संघर्ष, प्रेरणा व आत्मनिर्भरता का संदेश देती है। यह कविता कठिनाइयों का सामना करने की ताकत देती है और सफलता की ओर बढ़ते रहने के लिए प्रेरित करती है।

4 हरिद्वार

अभ्यास-प्रश्नोत्तर

पाठ से

आइए, अब हम इस पत्र को थोड़ा और विस्तार से समझते हैं। नीचे दी गई गतिविधियाँ इस कार्य में आपकी सहायता करेंगी।

मेरी समझ से

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उपयुक्त उत्तर के सम्मुख तारा (☆) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।

1. ''सज्जन ऐसे कि पत्थर मारने से फल देते हैं'' का क्या अर्थ है?
   - लेखक के अनुसार सज्जन लोग बिना पूछे स्वादिष्ट रसीले फल देते हैं।
   - लेखक फलदार वृक्षों की उदारता को मानवीय रूप में व्यक्त कर रहे हैं।
   - लेखक का मानना था कि हरिद्वार के सभी दुकानदार बहुत सज्जन थे।
   - लेखक को पत्थर मारकर पके हुए फल तोड़कर खाना पसंद था।

उत्तर— लेखक के अनुसार सज्जन लोग बिना पूछे स्वादिष्ट रसीले फल देते हैं।

2. ''वैराग्य और भक्ति का उदय होता था'' इस कथन से लेखक का कौन-सा भाव प्रकट होता है?
   - शारीरिक थकान और मानसिक बेचैनी
   - आर्थिक संतोष और मानसिक विकास
   - मानसिक शांति और आध्यात्मिक अनुभव
   - सामाजिक सद्भाव और पारिवारिक प्रेम

उत्तर— मानसिक शांति और आध्यात्मिक अनुभव।

3. ''पत्थर पर का भोजन का सुख सोने की थाल से बढ़कर था'' इस वाक्य का सर्वाधिक उपयुक्त निष्कर्ष क्या है?
   - संतुष्टि में सुख होता है।
   - सुखी लोग पत्थर पर भोजन करते हैं।
   - लेखक के पास सोने की थाली नहीं थी।
   - पत्थर पर रखा भोजन अधिक स्वादिष्ट होता है।

उत्तर— संतुष्टि में सुख होता है।

4. ''एक दिन मैंने श्री गंगा जी के तट पर रसोई करके पत्थर ही पर जल के अत्यंत निकट परोसकर भोजन किया।'' यह प्रसंग किस मूल्य को बढ़ावा देता है?
   - अंधविश्वास और लालच
   - मानवता और देशप्रेम
   - सादगी और आत्मनिर्भरता
   - स्वच्छता और प्रकृति प्रेम

उत्तर— सादगी और आत्मनिर्भरता। स्वच्छता और प्रकृति प्रेम।

5. लेखक का हरिद्वार अनुभव मुख्यत: किस प्रकार का था?
   - राजनीतिक
   - आध्यात्मिक

- सामाजिक
- प्राकृतिक

उत्तर— आध्यात्मिक। प्राकृतिक।

6. पत्र की भाषा का एक मुख्य लक्षण क्या है?
- कठिन शब्दों का प्रयोग और बोझिलता
- मुहावरों का अधिक प्रयोग
- सरलता और चित्रात्मकता
- जटिलता और संक्षिप्तता

उत्तर— सरलता और चित्रात्मकता।

(ख) हो सकता है कि आपके समूह के साथियों ने अलग-अलग उत्तर चुने हों। अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुनें?

उत्तर— छात्र स्वयं करें।

मिलकर करें मिलान

पाठ से चुनकर कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। आपस में चर्चा कीजिए और इनके उपयुक्त संदर्भों से इनका मिलान कीजिए—

क्र.	शब्द		संदर्भ
1.	हरिद्वार	(क)	मान्यताओं के अनुसार दुर्गा का एक रूप।
2.	गंगा	(ख)	यह अठारह पुराणों में से सर्वप्रसिद्ध एक पुराण है। इसमें अधिकांश श्रीकृष्ण संबंधी कथाएँ हैं।
3.	भगीरथ	(ग)	यह भारत के उत्तराखंड राज्य में एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान है। यहाँ से गंगा पहाड़ों को छोड़कर मैदान में आती है।
4.	चण्डिका	(घ)	यह एक पेड़ का नाम है। यह दक्षिण भारत में बहुतायत से मिलता है। इस पेड़ की सुगंधित छाल दवा और मसाले के काम में आती है। इसे दारचीनी भी कहते हैं।
5.	भागवत	(ङ)	यह भारतवर्ष की एक प्रधान नदी है जो हिमालय से निकलकर लगभग 1560 मील पूर्व की ओर बहकर बंगाल की खाड़ी में गिरती है। इसके अनेक नाम हैं, जैसे—भागीरथी, त्रिपथगा, अलकनंदा, मंदाकिनी, सुरनदी आदि।
6.	दालचीनी	(च)	ये अयोध्या के प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा थे। कहा जाता है कि ये घोर तपस्या करके गंगा को पृथ्वी पर लाए थे। इसीलिए गंगा का एक नाम ''भागीरथी'' भी है।

उत्तर— 1. (ग) 2. (ङ) 3. (च) 4. (क) 5. (ख) 6. (घ)

मिलकर करें चयन

(क) पाठ से चुनकर कुछ वाक्य नीचे दिए गए हैं। प्रत्येक वाक्य के सामने दो-दो निष्कर्ष दिए गए हैं—एक सही और एक भ्रामक। अपने समूह में इन पर विचार कीजिए और उपयुक्त निष्कर्ष पर सही का चिह्न लगाइए।

क्रम	पंक्ति		निष्कर्ष
1.	पर्वतों पर अनेक प्रकार की वल्ली हरी-भरी सज्जनों के शुभ मनोरथों की भाँति फैलकर लहलहा रही है।	(क)	लताओं का फैलना सज्जनों की शुभ इच्छाओं की तरह सौम्यता और सुंदरता को दर्शाता है।
		(ख)	सज्जनों की शुभ इच्छाएँ लताओं के समान फैल जाती हैं।
2.	बड़े-बड़े वृक्ष भी ऐसे खड़े हैं मानो एक पैर से खड़े तपस्या करते हैं और साधुओं की भाँति घाम, ओस और वर्षा अपने ऊपर सहते हैं।	(क)	वृक्षों की स्थिति साधुओं जैसी है जो हर मौसम को सहने के लिए विवश हैं।
		(ख)	वृक्षों की स्थिति साधुओं जैसी है जो हर मौसम को सहते हुए तपस्या करते हैं।

3. इन वृक्षों पर अनेक रंग के पक्षी चहचहाते हैं और नगर के दुष्ट बधिकों से निडर होकर कल्लोल करते हैं।	(क) यहाँ के पक्षी प्रकृति में सुरक्षित अनुभव करते हैं इसलिए वे निडर होकर कल्लोल करते हैं। (ख) यहाँ के पक्षी नगर से डरकर इस जगह आ गए हैं इसलिए वे कल्लोल करते हैं।	
4. जल यहाँ का अत्यंत शीतल है और मिष्ट भी वैसा ही है मानो चीनी के पने को बरफ में जमाया है।	(क) गंगाजल की ठंडक और मिठास का अनुभव बहुत मनोहारी है। (ख) गंगाजल की शीतलता और मिठास से शक्कर और बरफ बनाई जा सकती है।	
5. एक दिन मैंने श्री गंगा जी के तट पर रसोई करके पत्थर ही पर जल के अत्यंत निकट परोसकर भोजन किया।	(क) लेखक ने भोजन इसलिए बनाया क्योंकि गंगा का पानी बहुत गरम था और वह पकाने में सहायक था। (ख) लेखक ने गंगा के समीप बैठकर भोजन किया, जिससे उनकी प्रकृति से निकटता झलकती है।	
6. निश्चय है कि आप इस पत्र को स्थानदान दीजिएगा।	(क) लेखक चाहता है कि पत्र को महत्व देकर कहीं स्थान दिया जाए, यानी इसे पढ़ा और सँजोया जाए। (ख) लेखक चाहता है कि पत्र को महत्व देकर प्रकाशित किया जाए।	

उत्तर– 1. (क) 2. (ख) 3. (क) 4. (क) 5. (ख) 6. (ख)

पंक्तियों पर चर्चा

पाठ से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपने समूह में साझा कीजिए और लिखिए।

(क) ''यहाँ की कुशा सबसे विलक्षण होती है जिसमें से दालचीनी, जावित्री इत्यादि की अच्छी सुगंध आती है। मानो यह प्रत्यक्ष प्रगट होता है कि यह ऐसी पुण्यभूमि है कि यहाँ की घास भी ऐसी सुगंधमय है।''

उत्तर– ये पंक्तियाँ यह दर्शाती हैं कि जिस स्थान का वर्णन किया गया है वह अत्यंत पवित्र और विशेष है। वहाँ की कुशा में सुगंधित वस्तुओं की खुशबू आती है, जो यह सिद्ध करती है कि वह भूमि किसी पुण्य या दैवीय प्रभाव से युक्त है, जहाँ प्रकृति भी अलौकिक गुणों से संपन्न है।

(ख) ''अहा! इनके जन्म भी धन्य हैं जिनसे अर्थी विमुख जाते ही नहीं। फल, फूल, गंध, छाया, पत्ते, छाल, बीज, लकड़ी और जड़; यहाँ तक कि जले पर भी कोयले और राख से लोगों का मनोर्थ पूर्ण करते हैं।''

उत्तर– ये पंक्तियाँ प्रकृति की उदारता और परोपकारिता को व्यक्त करती हैं। इनमें उन वनस्पतियों और वृक्षों का वर्णन है जिनका हर अंग-फल, फूल, सुगंध, छाया, पत्ते, छाल, बीज, लकड़ी और जड़– यहाँ तक कि जलने के बाद कोयला और राख भी दूसरों के काम आता है और लोगों की इच्छाओं को पूरा करता है। यह उनके जीवन की सार्थकता और निस्वार्थ सेवाभाव को दर्शाता है।

सोच-विचार के लिए

पाठ को पुन: ध्यान से पढ़िए, पता लगाइए और लिखिए।

(क) ''और संपादक महाशय, मैं चित्त से तो अब तक वहीं निवास करता हूँ...''

लेखक का यह वाक्य क्या दर्शाता है? क्या आपने कभी किसी स्थान को छोड़कर ऐसा अनुभव किया है? कब-कब?

उत्तर– इस वाक्य में उल्लेख है कि लेखक शारीरिक रूप से भले ही उस स्थान से दूर चला आया हो, लेकिन मानसिक रूप से उसकी यादें और भावनाएँ अभी भी जहाँ-तहाँ अटकी हुई हैं। वे उस स्थान को पसंद वहीं कर रहे हैं और लगातार उसके बारे में सोच रहे हैं।

(ख) ''पंडे भी यहाँ बड़े विलक्षण संतोषी हैं। एक पैसे को लाख करके मान लेते हैं।''

लेखक का यह कथन आज के समाज में कितना सच है? क्या अब भी ऐसे संतोषी लोग मिलते हैं? अपने विचार उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर– आज के समाज में यह वर्णन आंशिक रूप से ही सच है। कुछ लोग अभी भी संतोषी प्रवृत्ति के हैं और वे सदा संतोष में ही रहते हैं, लेकिन भौतिकवादी युग में ऐसे लोगों की संख्या कम हो रही है।

(ग) ''मैं दीवान कृपा राम के घर के ऊपर के बंगले पर टिका था। यह स्थान भी उस क्षेत्र में टिकने योग्य ही है।'' आपके विचार से लेखक ने उस स्थान को 'टिकने योग्य' क्यों कहा है? उस स्थान में कौन-कौन सी विशेषताएँ होंगी जो उसे 'टिकने योग्य' बनाती होंगी?

(संकेत– केवल आराम, सुविधा या कोई और कारण भी।)

उत्तर– लेखक ने उस स्थान को टिकने योग्य इसलिए कहा क्योंकि वहाँ उन्हें शांति, आराम, सुविधा या कोई विशेष आकर्षण नहीं मिला होगा, जो उन्हें वहाँ के लिए प्रेरित कर रहा था।

उस स्थान की विशेषताएँ हो सकती हैं– प्राकृतिक शांत वातावरण, आश्रय, आवास, अच्छा आतिथ्य या कोई ऐतिहासिक/सांस्कृतिक महत्व।

(घ) ''फल, फूल, गंध, छाया, पत्ते, छाल, बीज, लकड़ी और जड़; यहाँ तक कि जले पर भी कोयले और राख से लोगों का मनोर्थ पूर्ण करते हैं।''

इस वाक्य के माध्यम से आपको वृक्षों के बारे में कौन-कौन सी बातें सूझ रही हैं?

उत्तर– इस वाक्य के माध्यम से वृक्षों के महत्व के बारे में निम्न बातें सूझ रही हैं–

बहूपयोगिता– वृक्षों का हर भाग-फल-फूल, पत्ते, पेड़, बीज, लकड़ी, जड़-किसी भी रूप में मनुष्य के लिए उपयोगी है।

जीवनदायिनी– वे हमें भोजन (फल), औषधि (फल, छाल, जड़) जंगल (लकड़ी, कोयला) और जीव के लिए आवश्यक ऑक्सीजन प्रदान करते हैं।

लाभ– वे छाया देते हैं, वायु को शुद्ध करते हैं और मिट्टी के कटाव को रोकते हैं।

त्याग और परोपकार– वृक्ष नि:स्वार्थ भाव से अपना सब कुछ कल्याण के लिए समर्पित कर देते हैं, यहाँ तक कि जलने के बाद भी वे कोयला और राख के रूप में उपयोगी होते हैं।

अनुमान और कल्पना से

(क) ''यह भूमि तीन ओर सुंदर हरे-हरे पर्वतों से घिरी है।''

कल्पना कीजिए कि आप हरिद्वार में हैं। आप वहाँ क्या-क्या करना चाहेंगे?

उत्तर– यदि हम हरिद्वार में होंगे तो गंगा नदी में पवित्र स्नान, हरि की पैड़ी पर गंगा आरती, मंदिरों के दर्शन, स्थानीय बाजारों में घूमना, प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेना चाहेंगे।

(ख) ''जल के छलके पास ही ठंढे-ठंढे आते थे।''

कल्पना कीजिए कि आप गंगा के तट पर हैं और पानी के छींटे आपके मुँह पर आ रहे हैं। अपने अनुभवों को अपनी कल्पना से लिखिए।

उत्तर– विद्यार्थी स्वयं करें।

(ग) ''सज्जन ऐसे कि पत्थर मारने से फल देते हैं।''

यदि पेड़-पौधे सच में मनुष्यों की तरह व्यवहार करने लगें तो क्या होगा?

उत्तर– पेड़-पौधे अपनी हरियाली और फल-फूलों से नि:स्वार्थ भाव से मनुष्यों की सेवा करते हैं। वे हमें छाया, ऑक्सीजन, फल व औषधियाँ प्रदान करते हैं। यदि मनुष्य की तरह पेड़-पौधे भी व्यवहार करें तो मनुष्य को फल, फूल, औषधियाँ, छाया, सुरक्षा आदि सारी प्राकृतिक सुविधा देना बन्द कर सकते हैं। इससे मनुष्यों और प्रकृति के बीच का संतुलन बिगड़ सकता है।

(घ) ''यहाँ पर श्री गंगा जी दो धारा हो गई हैं–एक का नाम नील धारा, दूसरी श्री गंगा जी ही के नाम से।''

इस पाठ में 'गंगा' शब्द के साथ 'श्री' और 'जी' लगाया गया है। आपके अनुसार उन्होंने ऐसा क्यों किया होगा?

उत्तर– 'श्री' और 'जी' दोनों ही सम्मानसूचक शब्द हैं, जो किसी व्यक्ति या वस्तु के प्रति आदर प्रकट करने के लिए उपयोग किए जाते हैं। गंगा नदी को भारत में एक पवित्र देवी और जीवनदायिनी के रूप में पूजा जाता है। इसलिए इन शब्दों का प्रयोग उसके प्रति गहरा सम्मान दर्शाता है। गंगा को केवल एक नदी ही नहीं बल्कि एक देवी के रूप में देखा जाता है। 'श्री' और 'जी' लगाकर उसकी पवित्रता को प्रकट किया गया है।

(ङ) कल्पना कीजिए कि आप हरिद्वार एक श्रवणबाधित या दृष्टिबाधित व्यक्ति के साथ गए हैं। उसकी यात्रा को अच्छा बनाने के लिए कुछ सुझाव दीजिए।

उत्तर– सुझाव निम्नलिखित हैं–

- दृश्य संकेतों का अधिक उपयोग करना।
- शांत जगह पर बातचीत कर शांति के विषय में बताना।
- हवा की शीतलता का अनुभव कराना।

लिखें संवाद

(क) "मेरे संग कल्लू जी मित्र भी परमानंदी थे।" लेखक और कल्लू जी के बीच हरिद्वार यात्रा पर एक काल्पनिक संवाद लिखिए।

उत्तर– लेखक और कल्लू जी के बीच हरिद्वार यात्रा पर एक काल्पनिक संवाद।

लेखक– कल्लू जी हरिद्वार की ये सुबह कितनी शांत और मनमोहक है। गंगा का यह प्रवाह देखकर मन को असीम शांति मिल रही है।

कल्लू जी– बिलकुल लेखक साहब! यह बात आज सच लग रही है। इस पवित्र भूमि पर आकर तो हर कण में आनंद का अनुभव होता है।

लेखक– और ये घाटों पर आरती का दृश्य, मंत्रों की गूँज ऐसा लगता है जैसे समय यहीं थम गया हो।

कल्लू जी– सही कहा आपने। यहाँ की आध्यात्मिकता और प्राकृतिक सौंदर्य का संगम अद्भुत है। सच में, यह यात्रा अविस्मरणीय रहेगी।

(ख) "यह भूमि तीन ओर सुंदर हरे-हरे पर्वतों से घिरी है।" लेखक और प्रकृति के बीच एक कल्पनात्मक संवाद तैयार कीजिए– जैसे पर्वत बोल रहे हों।

उत्तर– लेखक और प्रकृति (पर्वतों) के बीच एक कल्पनात्मक संवाद–

लेखक– हे विशाल पर्वतो, तुम्हारी ये अडिगता और हरियाली मन को मोह लेती है। तुम कितने रहस्य अपने अन्दर समेटे हुए हो।

पर्वत– (कल्पना में) मनुष्य, 'यह भूमि तीन ओर सुंदर हरे-हरे पर्वतों से घिरी है– यह मेरा ही रूप है। मैं तुम्हें स्थिरता, शांति और जीवन का संदेश देता हूँ।

लेखक– तुम्हारी चुप्पी में भी कितनी गहरी बातें छिपी हैं। तुम सदियों से खड़े हो, बदलते मौसमों को सहते हुए, फिर भी अडिग।

पर्वत (कल्पना से)**–** मैं प्रकृति का एक हिस्सा हूँ, जो तुम्हें जीवन का संतुलन सिखाता है। मेरी ऊँचाइयों में तुम्हें अपने लक्ष्य प्राप्त करने की प्रेरणा मिलेगी और मेरी शांति में तुम्हें आत्मिक सुख।

'है' और 'हैं' का उपयोग

इन वाक्यों में रेखांकित शब्दों के प्रयोग पर ध्यान दीजिए–

विशेष आश्चर्य का विषय यह है कि यहाँ केवल गंगा जी ही देवता हैं, दूसरा देवता नहीं।

- यों तो वैरागियों ने मठ मंदिर कई बना लिए हैं।

आप जानते ही हैं कि एकवचन संज्ञा शब्दों के साथ 'है' का प्रयोग किया जाता है और बहुवचन संज्ञा शब्दों के साथ 'हैं' का। सोचिए, 'गंगा' एकवचन है, फिर भी इसके साथ 'हैं' क्यों लिखा गया है?"

इसका कारण यह है कि कभी-कभी हम आदर-सम्मान प्रदर्शित करने के लिए एकवचन संज्ञा शब्दों को भी बहुवचन के रूप में प्रयोग करते हैं। इसे 'आदरार्थ बहुवचन' प्रयोग कहते हैं। उदाहरण के लिए–

- मेरे पिता जी सो रहे हैं।
- भारत के प्रधानमंत्री भाषण दे रहे हैं।

अब 'आदरार्थ बहुवचन' को ध्यान में रखते हुए उपयुक्त शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. प्रधानाचार्य जी विद्यालय में नहीं ...., वे अभी सभा में उपस्थित .... ।
2. माता-पिता हमारे जीवन के मार्गदर्शक होते ... ., हमें उनका कहना मानना चाहिए।

3. मेरी बहन बाजार जा रही .... वहाँ से किताबें ले आएगी।
4. बाहर फेरीवाला ....। .... बुला लाओ।
5. डाकिया जी आए ....। उन्हें भी बुला लाओ।
6. आप तो बहुत दिन बाद ...., ... का स्वागत है।
7. डॉक्टर साहब बहुत विद्वान ...., ... से परामर्श लेना चाहिए।
8. आपके माता-पिता कहाँ ....? क्या मैं .... से मिल सकता हूँ?
9. ये हमारे हिंदी के अध्यापक ...., हम .... से बहुत-कुछ सीखते-समझते हैं।
10. बंदर पेड़ पर उछल-कूद कर ....।

उत्तर– 1. हैं, हैं। 2. हैं 3. है 4. आया, है, उसे 5. हैं 6. आए हैं, आपका 7. हैं, उन 8. हैं, उन 9. हैं, उन 10., रहे हैं।

भावों की पहचान

प्रेम, संतोष, भक्ति, श्रद्धा, वैराग्य, आश्चर्य, करुणा, हास्य, शांति, परोपकार, दया, दुख

नीचे कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं। सोचिए कि इनमें कौन-सा भाव प्रकट हो रहा है? पहचानिए और चुनकर लिखिए–

1. उस समय के पत्थर पर का भोजन का सुख सोने की थाल के भोजन से कहीं बढ़ के था।
2. चित्त में बारंबार ज्ञान, वैराग्य और भक्ति का उदय होता था।
3. पंडे भी यहाँ बड़े विलक्षण संतोषी हैं।
4. हर तरफ पवित्रता और प्रसन्नता बिखरी हुई थी।
5. सज्जन ऐसे कि पत्थर मारने से फल देते हैं।

उत्तर– 1. संतोष, शांति 2. वैराग्य, भक्ति 3. संतोष 4. शांति, प्रेम 5. परोपकार।

काल की पहचान

''यहाँ हरि की पैड़ी नामक एक पक्का घाट है और यहीं स्नान भी होता है।''

आप जानते ही होंगे कि काल के तीन भेद होते हैं– भूतकाल, वर्तमान काल और भविष्य काल। परस्पर चर्चा करके पता लगाइए कि ऊपर दिए गए वाक्य में कौन-सा काल प्रदर्शित हो रहा है? सही पहचाना, यह वाक्य वर्तमान काल को प्रदर्शित कर रहा है।

(क) नीचे दी गई पाठ की इन पंक्तियों को पढ़कर बताइए, इनमें क्रिया कौन-से काल को प्रदर्शित कर रही है? (भूतकाल/वर्तमान/भविष्य)

1. निश्चय है कि आप इस पत्र को स्थानदान दीजिएगा।
2. यह भूमि तीन ओर सुंदर हरे-हरे पर्वतों से घिरी है।
3. वृक्ष ऐसे हैं कि पत्थर मारने से फल देते हैं।
4. चित्त में बारंबार ज्ञान, वैराग्य और भक्ति का उदय होता था।
5. मैं दीवान कृपा राम के घर के ऊपर के बंगले पर टिका था।

उत्तर– 1. भविष्यकाल 2. वर्तमान काल 3. वर्तमान काल 4. भूतकाल 5. भूतकाल।

(ख) अब इन वाक्यों के काल को अन्य कालों में बदलकर लिखिए और नए वाक्य बनाइए।

उत्तर–1. निश्चित है कि आप इस पत्र को स्थानदान दीजिएगा।

भूतकाल– निश्चित था कि आप इस पत्र को स्थान देते।

वर्तमान काल– निश्चित है कि आप इस पत्र को स्थान दान देते हैं।

2. यह भूमि तीन ओर सुन्दर हरे-हरे पर्वतों से घिरी है।

भविष्य काल– यह भूमि तीन ओर सुंदर हरे-हरे पहाड़ों से घिरेगी।

भूतकाल– यह भूमि तीन ओर सुन्दर हरे-हरे पर्वतों से घिरी हुई थी।

3. वृक्ष ऐसे हैं कि पत्थर मारने से फल देते हैं।

भूतकाल– वृक्ष ऐसे थे कि पत्थर मारने से फल देते थे।

भविष्यकाल– वृक्ष ऐसे होंगे कि पत्थर मारने से फल देंगे।

4. चित्त में बारंबार ज्ञान, वैराग्य और भक्ति का उदय होता था।

वर्तमानकाल– चित्त में बारंबार ज्ञान, वैराग्य और भक्ति का उदय होता है।

भविष्यकाल– चित्त में बारम्बार ज्ञान, वैराग्य और भक्ति का उदय होगा।

5. मैं दीवान कृपा राम के घर के ऊपर बंगले पर टिका था।

वर्तमानकाल– मैं दीवान कृपा राम के घर के ऊपर बंगले पर टिका हूँ।

भविष्यकाल– मैं दीवान कृपा राम के घर के ऊपर बंगले पर टिकूँगा।

पत्र की रचना

''और संपादक महाशय, मैं चित्त से तो अब तक वहीं निवास करता हूँ...

इस पंक्ति में लेखक संपादक महोदय को संबोधित करके अपनी बात लिख रहे हैं। आप जानते ही होंगे कि पत्र जिस व्यक्ति के लिए लिखा जाता है, उसे संबोधित किया जाता है। पत्र के अंत में अपना नाम लिखा जाता है ताकि पत्र पाने वाले को पता चल सके कि पत्र किसने लिखा है।

नीचे इस पत्र की कुछ विशेषताएँ दी गई हैं। अपने समूह के साथ मिलकर इन विशेषताओं से जुड़े वाक्यों से इनका मिलान कीजिए–

क्र. पत्र की विशेषताएँ		पत्र से उदाहरण
1. **व्यक्तिपरकता–** पत्र लेखन में लेखक के विचार, अनुभव और भावनाएँ प्रमुख होते हैं।	(i)	''ग्रहण में बड़े आनंदपूर्वक स्नान किया...
2. **संवादात्मकता–** पत्र संवाद का रूप है; पाठक से सीधा संवाद होता है।	(ii)	श्रीमान कविवचन सुधा संपादक महामहिम मित्रवरेषु!
3. **स्वाभाविक शैली–** भाषा कृत्रिम नहीं होती; भावनाओं के अनुरूप होती है।	(iii)	आपका मित्र– यात्री
4. **व्यक्तिगत अनुभवों का वर्णन–** जहाँ लेखक अपने वास्तविक अनुभव को साझा करता है।	(iv)	मुझे हरिद्वार का समाचार लिखने में बड़ा आनंद होता है...
5. **अभिवादन या संबोधन–** पत्र का आरंभ, जिसमें संबोधित व्यक्ति को आदरपूर्वक संबोधित किया जाता है।	(v)	हरिद्वार की प्राकृतिक सुंदरता, धार्मिकता, साधु-संन्यासियों का जीवन, नदी, पर्वत, जल, गंगा स्नान आदि का अत्यंत विस्तार से वर्णन। जैसे–''यह भूमि तीन ओर सुंदर हरे-हरे पर्वतों से घिरी है...''
6. **हस्ताक्षर–** लेखक अपने नाम या संबंध से पत्र को समाप्त करता है।	(vi)	और संपादक महाशय, मैं चित्त से तो अब तक वहीं निवास करता हूँ... निश्चय है कि आप इस पत्र को स्थानदान दीजिएगा।
7. **उपसंहार और निवेदन–** लेखक पत्र समाप्त करता है और अपनी इच्छा या निवेदन प्रकट करता है।	(vii)	एक दिन मैंने श्री गंगा जी के तट पर रसोई करके...
8. **मुख्य विषय-वस्तु**	(viii)	और संपादक महाशय, मैं चित्त से तो अब तक वहीं निवास करता हूँ...

आप एक विशेषता को एक से अधिक वाक्यों से भी जोड़ सकते हैं।

उत्तर–1. (iv) 2. (vi) 3. (v) 4. (vii) 5. (ii) 6. (iii) 7. (viii) 8. (i)

पत्र

आपने जो यात्रा-वर्णन पढ़ा है, इसे भारतेंदु हरिश्चंद्र ने एक संपादक को पत्र के रूप में लिखकर भेजा था। आप भी अपनी किसी यात्रा के विषय में अपने किसी परिचित को पत्र लिखकर बताइए।

उत्तर–

प्रिय साक्षी

सप्रेम नमस्कार!

आशा करती हूँ कि तुम कुशलपूर्वक होगी, यहाँ सब ठीक है। आज मैं तुम्हें हरिद्वार यात्रा के अनुभव के बारे में बताने जा रही हूँ, जो हाल ही में परिवार के साथ की।

हम लोग गर्मी की छुट्टियों में हरिद्वार गए। यह उत्तराखण्ड राज्य में गंगा नदी के किनारे बसा एक पवित्र तीर्थ स्थल है। हरिद्वार का वातावरण बहुत ही शांत और आध्यात्मिक था। सबसे पहले हमने हरि की पैड़ी जाकर गंगा मैया के दर्शन किए और पवित्र जल में स्नान किया। ऐसा माना जाता है कि यहाँ स्नान करने से पाप मिट जाते हैं।

शाम को गंगा आरती का दृश्य मन को बहुत भाया। हजारों दीपक गंगा में तैरते हुए बहुत सुंदर लग रहे थे। भजन-कीर्तन की गूँज, घंटियों की आवाज और श्रद्धालुओं की आस्था ने माहौल को भक्तिमय बना दिया था।

हमने वहाँ मनसा देवी और चंडी देवी के मंदिरों के दर्शन भी किए। रोपवे से मंदिर जाना एक नया अनुभव था। वहाँ की हरियाली, पर्वतीय दृश्य और गंगा का कल-कल करता जल देखकर मन प्रसन्न हो गया।

हरिद्वार में शुद्ध भोजन, रंग-बिरंगी दुकानें और साधु-संतों की उपस्थिति से सब कुछ अद्भुत लग रहा था। यह यात्रा मेरे जीवन के यादगार पलों में से एक बन गई।

तुम भी कभी वहाँ घूमने जाना। तुम्हें पसंद आयेगा। शेष शुभ है।

तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा में

तुम्हारी सखी

रेनू

शब्द से जुड़े शब्द

नीचे दिए गए स्थानों में 'हरिद्वार' से जुड़े शब्द अपने मन से या पाठ से चुनकर लिखिए–

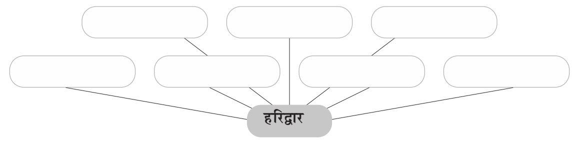

उत्तर–

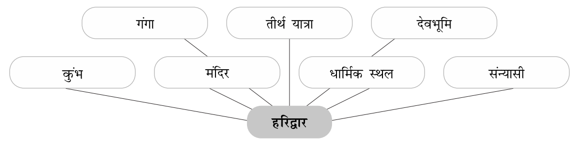

लेखन के अनोखे तरीके

(क) 'हरिद्वार' पाठ में लेखक ने हरिद्वार के अपने अनुभवों को बहुत ही साहित्यिक और कल्पनाशील भाषा में प्रस्तुत किया है जिसमें कई स्थानों पर उन्होंने तुलनात्मक वाक्यों के माध्यम से दृश्यों का वर्णन किया है। जैसे– हरी-भरी लताओं की तुलना सज्जनों से इस प्रकार की गई है–

"पर्वतों पर अनेक प्रकार की वल्ली हरी-भरी सज्जनों के शुभ मनोरथों की भाँति फैलकर लहलहा रही है।"

नीचे कुछ तुलनात्मक वाक्य दिए गए हैं। पाठ में ढूँढ़िए कि इन तुलनात्मक वाक्यों को लेखक ने किस प्रकार विशिष्ट तरीकों से लिखा है यानी विशिष्टता प्रदान की है–

1. वृक्षों की तुलना साधुओं से की गई है।
2. गंगाजल की मिठास की तुलना चीनी से की गई है।
3. हरियाली की तुलना गलीचे से की गई है।
4. नदी की धारा की तुलना राजा भगीरथ के यश (कीर्ति) से की गई है।

उत्तर– (1) वाक्य– बड़े-बड़े वृक्ष भी ऐसे खड़े हैं मानो एक पैर से खड़े तपस्या करते हैं और साधुओं की भाँति घाम, ओस और वर्षा अपने ऊपर सहते हैं।

विशिष्टता– लेखक ने वृक्षों को साधुओं से तुलना करके उनकी तपस्या और सहनशीलता को दर्शाया है।

यह चित्रात्मक और आध्यात्मिक शैली में लिखा गया है।

(2) वाक्य– जल यहाँ का अत्यंत शीतल है और मिष्ट भी वैसा ही है मानो चीनी के पने को बरफ में जमाया है।

विशिष्टता– गंगाजल की मिठास और शीतलता को चीने के घोल और बर्फ से तुलना करके लेखक ने इसे बहुत जीवंत और स्वादिष्ट रूप में प्रस्तुत किया है।

(3) वाक्य– वर्षा के कारण सब ओर हरियाली ही दिखाई पड़ती थी मानो हरे गलीचा का जात्रियों के विश्राम के हेतु बिछायत बिछी थी।

विशिष्टता– हरियाली को गलीचे से तुलना करके लेखक ने प्रकृति की सुंदरता और मेहमाननवाजी को चित्रित किया है।

(4)वाक्य– एक ओर त्रिभुवन पावनी श्री गंगा जी की पवित्र धारा बहती है जो राजा भगीरथ के उज्ज्वल कीर्ति की लता-सी दिखाई देती है।

विशिष्टता– गंगा की धारा को भगीरथ की कीर्ति की लता से तुलना करके लेखक ने गंगा की पवित्रता और भगीरथ में तप को जोड़ा है।

(ख) "मैं उस पुण्य भूमि का वरण करता हूँ जहाँ प्रवेश करने ही से मन शुद्ध हो जाता है।"

"पंडे भी यहाँ बड़े विलक्षण संतोषी हैं। एक पैसे को लाख करके मान लेते हैं।"

उपरोक्त पंक्तियों को ध्यान से देखिए, ये आज की हिंदी की तरह नहीं लिखी गई हैं। इसे लेखक ने न केवल अपनी शैली में लिखा है, अपितु इसमें प्राचीन हिंदी भाषा की छवि भी दिखाई देती है। नीचे कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं, आप इन्हें आज की हिंदी में लिखिए।

1. "इन वृक्षों पर अनेक रंग के पक्षी चहचहाते हैं और नगर के दुष्ट बधिकों से निडर होकर कल्लोल करते हैं।"

उत्तर– आज की हिंदी– इन वृक्षों पर कई रंगों के पक्षी चहचहाते हैं और शहर के शिकारियों से बिना डरे शोर मचाते हैं।

2. "वर्षा के कारण सब ओर हरियाली ही दृष्टि पड़ती थी मानो हरे गलीचा की जात्रियों के विश्राम के हेतु बिछायत बिछी थी।"

उत्तर– आज की हिंदी– बारिश के कारण चारों ओर हरियाली ही दिखाई देती थी, जैसे यात्रियों के आराम के लिए हरा कालीन बिछा हो।

3. "यह ऐसा निर्मल तीर्थ है कि क्रोध की खानि जो मनुष्य हैं सो वहाँ रहते ही नहीं।"

उत्तर– आज की हिंदी– यह इतना पवित्र तीर्थ है कि इच्छा और क्रोध से भरे लोग वहाँ टिकते ही नहीं।

4. "मेरा तो चित्त वहाँ जाते ही ऐसा प्रसन्न और निर्मल हुआ कि वर्णन के बाहर है।"

उत्तर– आज की हिंदी– मेरा मन वहाँ जाते ही इतना खुश और शुद्ध हुआ कि उसका वर्णन नहीं किया जा सकता।

5. "यहाँ रात्रि को ग्रहण हुआ और हम लोगों ने ग्रहण में बड़े आनंदपूर्वक स्नान किया और दिन में श्री भागवत का पारायण भी किया।"

उत्तर– आज की हिंदी– यहाँ रात को ग्रहण हुआ था हमने बड़े आनंद से स्नान किया, साथ ही दिन में श्री भागवत का पाठ भी किया।

6. "उस समय के पत्थर पर का भोजन का सुख सोने की थाल के भोजन से कहीं बढ़ के था।"

उत्तर– आज की हिंदी– उस समय पत्थर पर खाए भोजन का सुख सोने की थाली के भोजन से कहीं बेहतर था।

7. "निश्चय है कि आप इस पत्र को स्थानदान दीजिएगा।"

उत्तर– आज की हिंदी– मुझे विश्वास है कि आप इस पत्र को प्रकाशित करेंगे।

(ग) इस रचना में हरिश्चंद्र जी ने कहीं-कहीं प्राचीन वर्तनी का प्रयोग किया है, जैसे– शिखर के लिए शिषर, यात्रियों के लिए जात्रियों। ऐसे शब्दों की सूची बनाइए। आप इन शब्दों को कैसे लिखते हैं? कक्षा में चर्चा कीजिए।

उत्तर–

प्राचीन वर्तनी	आज की वर्तनी
शिषर	शिखर
जात्रियों	यात्रियों
बिछायत	बिछाया
मनोर्थ	मनोरथ
दृष्टि पड़ती	दिखाई देती

पाठ से आगे

आपकी बात

1. "मैंने गंगा जी के तट पर रसोई करके... भोजन किया।"

   क्या आपने कभी खुले वातावरण में या प्रकृति के पास भोजन किया है? वह अनुभव घर के खाने से कैसे भिन्न था?

उत्तर— हाँ, मैंने एक बार पार्क में पिकनिक के दौरान खाना खाया था। खुली हवा, पेड़ों की छाया और पक्षियों की आवाज ने उस अनुभव को बहुत खास बनाया। घर के खाने से यह अलग था क्योंकि प्राकृतिक वातावरण में खाना-खाने से मन को शांति और ताजगी मिली।

2. "उस समय के पत्थर पर का भोजन का सुख सोने की थाल के भोजन से कहीं बढ़ के था।"

   आपके जीवन में ऐसा कोई क्षण आया, जब किसी सामान्य-सी वस्तु ने आपको गहरा सुख दिया हो? उसके बारे में बताइए।

उत्तर— एक बार मैंने अपने ही दोस्त के साथ साइकिल चलाते हुए रास्ते में एक साधारण चाय की दुकान पर चाय पी। उस चाय का स्वाद और दोस्त के साथ हँसी-मजाक ने मुझे बहुत खुशी दी।

3. "हर तरफ पवित्रता और प्रसन्नता बिखरी हुई थी।"

   आपको किस स्थान पर पवित्रता और प्रसन्नता का अनुभव होता है? क्या कोई ऐसा स्थान है जहाँ जाते ही मन शांत हो गया हो? उस स्थान की कौन-सी बातें आपको अच्छी लगीं?

उत्तर— मुझे अपने गाँव के मंदिर में बहुत शांति मिलती है, वहाँ की शांत हवा, फूलों की सुगन्ध और घंटियों की आवाज मुझे बहुत अच्छी लगती है।

4. पाठ में वर्णित है, "वहाँ के फूल, फल, गंध. .. जले पर भी कोयले और राख से लोगों का मनोर्थ पूर्ण करते हैं।"

   आपके जीवन में कोई पेड़, फूल या प्राकृतिक वस्तु है, जिससे आप विशेष जुड़ाव महसूस करते हैं? क्यों?

उत्तर— मेरे घर के पास एक आम का पेड़ है। मुझे उसकी छाया और फल बहुत पसंद हैं। गर्मियों में उसकी छाया में बैठना और आम खाना मुझे बहुत खुशी देता है।

स्वास्थ्य और योग

"चित्त में बारंबार ज्ञान, वैराग्य और भक्ति का उदय होता था।"

अनेक लोग आज भी मन की शांति, स्वास्थ्य-लाभ और भक्ति के लिए तीर्थ और पर्वतीय स्थानों की यात्रा करते हैं। मन की शांति और स्वास्थ्य के लिए हमारे देश में हजारों वर्षों से योग भी किया जाता रहा है।

(क) 5 मिनट ध्यान लगाकर या मौन बैठकर अपने आस-पास की ध्वनियों को सुनिए, अपनी श्वास पर ध्यान दीजिए तथा ध्यान को केन्द्रित करने का प्रयास कीजिए। इस अनुभव के विषय में एक अनुच्छेद लिखिए।

उत्तर— मैंने 5 मिनट तक शांत बैठकर ध्यान लगाया। मैंने पक्षियों की चहचहाहट, हवा की सरसराहट और दूर से आती बच्चों की आवाजें सुनीं। अपनी साँसों पर ध्यान केंद्रित करने से मेरा मन शांत हुआ मुझे बहुत सुकून देने वाला लगा।

(ख) अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में अपने विद्यालय के कार्यक्रमों को बताने के लिए एक 'सूचना' लिखिए जिसे सूचना-पट पर लगाया जा सके।

उत्तर—सूचना

दिनांक :

विषय: अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम

प्रिय विद्यार्थियो,

आपको सूचित किया जाता है कि हमारे विद्यालय में 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाएगा। इस अवसर पर सुबह 7 बजे से 8 बजे तक योग सत्र आयोजित होगा, जिसमें सभी विद्यार्थी भाग लेंगे। कृपया अपने योग्य मैट और आरामदायक कपड़े पहनकर आए। योग के बाद एक छोटा व्याख्यान भी होगा।

प्रधानाचार्य

अपने शब्द

"शीतल वायु... स्पर्श ही से पावन करता हुआ संचार करता है।"

आइए, एक रोचक गतिविधि करते हैं। 'शीतल' शब्द को केंद्र में रखिए और उसके चारों ओर ये चार बातें लिखिए–

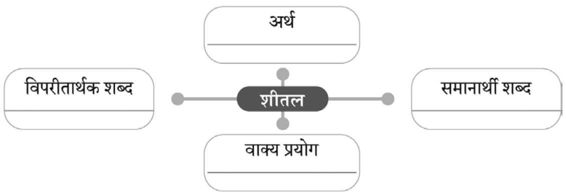

अब इसी प्रकार आपके समूह का प्रत्येक सदस्य इस पत्र से एक-एक शब्द चुनकर उसके लिए ऐसा ही शब्द-चित्र बनाए।

उत्तर–

यात्रा के व्यय की गणना

इस पत्र में आपने हरिद्वार की एक यात्रा का वर्णन पढ़ा है। मान लीजिए कि आपको अपने मित्रों या अभिभावकों के साथ अपनी रुचि के किसी स्थान की यात्रा करनी है। उस स्थान को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) मान लीजिए कि यात्रा के लिए आपको ₹1000 दिए गए हैं। यात्रा, खाना आदि सब मिलाकर एक व्यय विवरण बनाइए।

उत्तर–

खर्च का प्रकार	अनुमानित राशि
यात्रा का किराया	400
भोजन व नाश्ता	250
प्रवेश शुल्क व दर्शनीय स्थल	100
स्मृति चिह्न	150
आकस्मिक खर्च	100
कुल	1000

(ख) मान लीजिए कि आप इस यात्रा में एक छोटी वस्तु (स्मृति चिह्न) खरीदना चाहते हैं। आप क्या खरीदेंगे और क्यों?
(संकेत– सोचिए, क्या वह आवश्यक है? बजट कैसे संभालेंगे?)

उत्तर– मैं एक छोटी गंगा माता की मूर्ति खरीदूँगा/खरीदूँगी। यह मेरी यात्रा की याद दिलाएगी और मेरे लिए आध्यात्मिक महत्व रखती है। मैं इसे अपने बजट में रु. 1000 में खरीद लूँगा।

यात्रा सबके लिए

(क) कल्पना कीजिए कि कुछ मित्रों का समूह एक यात्रा पर जा रहा है। आप एक मार्गदर्शक या टूरिस्ट गाइड हैं। आप इन सबकी यात्रा को सुविधाजनक बनाने के लिए किन-किन बातों का ध्यान रखेंगे?

उपर्युक्त चित्र में सबकी अलग-अलग आवश्यकताएँ हो सकती हैं। इन्हें ध्यान में रखते हुए सोचिए कि वहाँ पहुँचने, घूमने, भोजन आदि में आप कैसे सहायता करेंगे?

उत्तर– यात्रा को सुविधाजनक बनाने के लिए निम्न बातों का ध्यान रखेंगे–

1. यात्रा की योजना

यात्रा से पहले सभी सदस्यों को यात्रा का कार्यक्रम समझाऊँगा/समझाऊँगी।

- आने-जाने के साधनों, ठहरने की व्यवस्था, भोजन आदि की जानकारी दूँगा/दूँगी।
- मार्ग, मौसम और स्थान से जुड़ी आवश्यक जानकारी साझा करूँगा/करूँगी।

2. विशेष आवश्यकताओं का ध्यान

- यदि किसी यात्री को विशेष जरूरतें हैं (जैसे– दृष्टिबाधित, श्रवणबाधित, वृद्धजन), तो उनके अनुसार अलग-अलग सहायता की व्यवस्था करूँगा।
- व्हीलचेयर, संकेत भाषा, श्रव्य गाइड आदि की तैयारी रखूँगा।

3. सुरक्षा का ध्यान

- सभी को आपातकालीन नम्बर स्थान की सीमाएँ और सावधानियों के बारे में बताऊँगा/गी।
- समूह को एक साथ रखने का प्रयास करूँगा/करूँगी, ताकि कोई खो न जाए।
- जितने लोग यात्रा पर हैं सबका एक गुप बनाकर (एस.एम.एस, कॉल सुविधा के लिए) रखूँगा/रखूँगी।

4. भोजन और पानी की व्यवस्था

- शुद्ध और पौष्टिक भोजन की व्यवस्था सुनिश्चित करूँगा/ करूँगी।
- सभी के लिए पीने का साफ पानी उपलब्ध रहेगा।

5. भाषा और जानकारी

- जिन स्थानों की यात्रा की जा रही है, वहाँ के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व की जानकारी सरल भाषा में दूँगा/गी।

6. स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण

- समूह को पर्यावरण का महत्व समझाते हुए साफ-सफाई बनाए रखने के लिए प्रेरित करूँगा।/ करूँगी।
- कचना न फैलाएँ, धरोहरों को नुकसान न पहुँचाएँ यह समझाऊँगा/समझाऊँगी।

7. यात्रा को आनंददायक बनाना

- मनोरंजन के लिए बीच-बीच में रोचक किस्से, लोककथाएँ या गीत साझा करूँगा/करूँगी।
- बच्चों, युवाओं और वृद्धों– सभी को शामिल करते हुए गतिविधियाँ करवाऊँगा/करवाऊँगी।

(ख) अपने किसी मित्र के साथ बिना बोले संवाद कीजिए– संकेतों से। अब सोचिए कि यात्रा में श्रवणबाधित व्यक्ति के लिए क्या-क्या आवश्यक होगा?

उत्तर– बिना बोले संवाद करने के लिए हम इशारों, हावभाव, चेहरे के भाव और हाथों की गतिविधियों को प्रयोग कर सकते हैं। यह ''संकेत भाषा'' कहलाती है।

(ग) यात्रा करते हुए ऐतिहासिक धरोहरों या भवनों की सुरक्षा के लिए आप किन-किन बातों का ध्यान रखेंगे?

उत्तर– ● कचरा न फैलाएँ। ● दीवारों पर कुछ न लिखें। ● ऐतिहासिक वस्तुओं को छूने से बचें। ● गाइड के निर्देशों का पालन करें।

आज की पहेली

पाठ में से शब्द खोजिए और नीचे दिए गए रिक्त स्थानों में लिखिए–

उत्तर–

क्र.	शब्द	संदर्भ
1.	एक मसाले का नाम	दालचीनी
2.	कपास से जुड़ा एक शब्द	बिछायत
3.	जहाँ स्नान होता है	हर की पैड़ी
4.	वृक्ष के किसी अंग का नाम	जड़
5.	एक नगर या तीर्थ का नाम	हरिद्वार
6.	व्यापार से जुड़ा स्थान	कनखल व ज्वालापुर
7.	एक नदी का नाम	गंगा
8.	एक पर्वत का नाम	विल्व पर्वत
9.	एक धार्मिक ग्रंथ का नाम	श्री भागवत

झरोखे से

भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा लिखे एक और पत्र का एक अंश नीचे दिया गया है। इसे पढ़िए और आपस में विचार कीजिए।

हरिद्वार के मार्ग में

हरिद्वार के मार्ग में अनेक प्रकार के वृक्ष और पक्षी देखने में आए। एक पीले रंग का पक्षी छोटा बहुत मनोहर देखा गया। बया एक छोटी चिड़िया है उसके घोंसले बहुत मिले। ये घोंसले सूखे बबूल काँटे के वृक्ष में हैं और एक-एक डाल में लड़ी की भाँति बीस-बीस, तीस-तीस लटकते हैं। इन पक्षियों की शिल्पविद्या तो प्रसिद्ध ही है, लिखने का कुछ काम नहीं। इसी से इनका सब चातुर्य प्रगट है कि सब वृक्ष छोड़ के काँटे के वृक्ष में घर बनाया है। इसके आगे ज्वालापुर और कनखल और हरिद्वार हैं, जिसका वृत्तांत अगले नंबरों में लिखूँगा।

उत्तर–भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा लिखे गए इस पत्र के अंश में यह स्पष्ट होता है कि वे प्रकृति के प्रति अत्यंत संवेदनशील और सजग व्यक्ति थे। हरिद्वार के मार्ग में उन्होंने जो देखा, उसका उन्होंने सजीव और संवेदनात्मक चित्र प्रस्तुत किया है।

वृक्ष और पक्षियों का मनोहारी दृश्य– उन्होंने पीले रंग के सुंदर पक्षी और विशेष रूप से बया पक्षी का उल्लेख किया है, जिनके घोंसले काँटे वाले बबूल के पेड़ पर लटकते हुए पाए गए। यह दृश्य उन्हें बहुत ही आकर्षक और चमत्कारी लगा।

बया की शिल्प विद्या की प्रशंसा– ये बया पक्षियों का घोंसला बनाने की कलात्मक कुशलता की बहुत प्रशंसा करते हैं और मानते हैं कि उनके घोंसलों से उनकी प्रतिभा झलकती है।

प्रकृति के गूढ़ संकेतों की ओर ध्यान– ये इस बात पर भी विचार करते हैं कि बया जैसे पक्षी काँटों वाले वृक्षों पर घर क्यों बनाते हैं, जो इस बात को दर्शाता है कि वे सुरक्षा और विवेकपूर्ण चुनाव करते हैं।

आगे के स्थानों का संकेत– अंत में वे बताते हैं कि वे आगे ज्वालापुर, कनखल और हरिद्वार पहुँचेंगे और उनका वर्णन अगले पत्रों में करेंगे। इससे यह स्पष्ट होता है कि वे यात्रा को चरणबद्ध ढंग से वर्णित करना चाहते हैं।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. 'हरिद्वार' पाठ के लेखक कौन हैं?
(अ) शुक्ल (ब) जयशंकर प्रसाद
(स) दिनकर (द) भारतेन्दु हरिश्चंद्र

2. वैराग्य शब्द का क्या अर्थ है?
(अ) मोह (ब) भय
(स) त्याग की भावना (द) लालच

3. लेखक ने साधुओं की वेशभूषा को कैसे वर्णित किया?
(अ) चमकदार (ब) विलक्षण
(स) साधारण (द) गंदी

4. लेखक को हरिद्वार में कौन से वृक्ष दिखाई दिए?
(अ) नीम और पीपल
(ब) देवदार और चीड़
(स) गुलमोहर (द) बबूल

5. ''मौनावलम्बन'' का क्या अर्थ है?
(अ) शोर मचाना (ब) मौन रहना
(स) भाग जाना (द) पूजा करना

उत्तर– 1. (द) **2.** (स) **3.** (ब) **4.** (ब) **5.** (ब)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. हरिद्वार .... नदी के किनारे बसा है।
2. लेखक ने हर की पैड़ी को .... स्थान बताया है।
3. .... का जल लेखक को .... लगा।
4. साधुओं को .... साधना करते देखा।
5. गंगा में .... करने से मन को .... मिलती है।

उत्तर– 1. गंगा **2.** पावन **3.** गंगा, निर्मल और शीतल **4.** मौन **5.** स्नान, शांति।

सत्य/असत्य

1. हरिद्वार में लेखक को वैराग्य की भावना महसूस हुई।
2. हर की पैड़ी में संध्या आरती होती है।
3. हरिद्वार लेखक को पुण्यभूमि नहीं लगी।
4. लेखक ने हरिद्वार के पंडों को विलक्षण कहा है।
5. साधु ध्यान मग्न और मौन धारण किए थे।

उत्तर– 1. सत्य **2.** सत्य **3.** असत्य **4.** सत्य **5.** सत्य।

सही मिलान

स्तंभ (अ)	स्तंभ (ब)
1. आरती	**(अ)** गंगा की पूजा
2. मौनावलंबन	**(ब)** खुशबू से भरा स्थान
3. शिखर	**(स)** नदी का किनारा
4. तट	**(द)** पर्वत की चोटी
5. सुगंधमय वातावरण	**(य)** चुप रहकर साधना करना

उत्तर– 1. (अ) **2.** (य) **3.** (द) **4.** (स) **5.** (ब)।

अति लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. हरिद्वार में चारों ओर कैसी पवन आती है?
उत्तर– शीतल।

2. हरिद्वार कहाँ स्थित है?
उत्तर– उत्तराखण्ड में, गंगा के तट पर।

3. गंगा का जल कैसा प्रतीत होता है?
उत्तर– निर्मल और स्वच्छ।

4. यहाँ की कुशा कैसी है?
उत्तर– विलक्षण।

5. हरिद्वार को लेखक ने क्या कहा है?
उत्तर– पुण्यभूमि।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. हरिद्वार कहाँ स्थित है और यह क्यों प्रसिद्ध है?
उत्तर– हरिद्वार उत्तराखण्ड में गंगा नदी के तट पर स्थित है। यह एक प्रमुख धार्मिक नगर है। यह हिंदुओं का पवित्र तीर्थ स्थल है। यहाँ लाखों श्रद्धालु गंगा स्नान कर पुण्य कमाने आते हैं। यह जगह अपनी धार्मिकता, हर की पैड़ी, गंगा आरती और साधु-संतों की उपस्थिति के लिए प्रसिद्ध है।

2. हर की पैड़ी का लेखक ने क्या वर्णन किया है?
उत्तर– लेखक के अनुसार हर की पैड़ी हरिद्वार का सबसे पवित्र और आकर्षक स्थल है। यह गंगा नदी के किनारे स्थित है, जहाँ श्रद्धालु गंगा स्नान करते हैं। शाम की आरती अत्यंत भव्य होती है। लेखक वहाँ की निर्मल धारा को अत्यंत पवित्र बताते हैं।

3. गंगा का जल लेखक को कैसा प्रतीत हुआ?
उत्तर– गंगा जल लेखक को अत्यंत निर्मल, शीतल और पावन प्रतीत हुआ। उसकी बहती हुई धारा से कलकल की मधुर ध्वनि मन को शांति और भक्ति से भरने वाली लगती है। लेखक को यह जल केवल शरीर ही नहीं, मन को भी पवित्र करने वाला लगता है।

4. हरिद्वार की वायु में लेखक को क्या विशेषता दिखती है?
उत्तर– वहाँ की वायु पवित्र, शुद्ध, भक्तिपूर्ण महसूस होती है। उसे वहाँ के वातावरण में आत्मिक शांति और वैराग्य की सुगंध मिलती है। वह अनुभव करता है कि यहाँ की वायु साँसों के साथ मन को भी निर्मल कर देती है।

5. लेखक ने साधुओं का किस रूप में वर्णन किया है?
उत्तर– लेखक ने साधुओं को वैराग्य और साधना का प्रतीक बताया है। वे कहते हैं कि कुछ साधु चुपचाप बैठे ध्यान में लीन थे। कुछ जप कर रहे थे और कुछ मौन व्रत में थे। उनके शरीर पर गेरुआ वस्त्र और चेहरे पर शांति की झलक थी। इन साधुओं की उपस्थिति में लेखक को सच्चे त्याग और अध्यात्म की अनुभूति होती है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. गंगा नदी को लेखक ने पुण्य सलिला क्यों कहा है?
उत्तर– क्योंकि वह हिन्दू धर्म में पवित्रता की प्रतीक मानी जाती है। लेखक के अनुसार गंगा केवल एक नदी नहीं, बल्कि एक आत्मिक अनुभूति है। इसकी धाराओं में स्नान कर व्यक्ति न केवल शारीरिक रूप से, बल्कि मानसिक और आत्मिक रूप से भी शुद्ध होता है। इसके स्पर्श मात्र से मन में भक्ति और वैराग्य की भावना जाग उठती है। गंगा किनारे साधु-संतों की तपस्या और भक्ति वातावरण को और भी पवित्र बना देती है। इसी कारण लेखक ने गंगा को पुण्य देने वाली 'पुण्य सलिला' कहा है।

2. हरिद्वार में लेखक ने किस प्रकार के लोगों को देखा और उनके बारे में क्या अनुभव किया?
उत्तर– लेखक ने हरिद्वार में विविध प्रकार के लोगों को देखा– साधु-संत, भक्तजन, तीर्थयात्री, बच्चे, बूढ़े और महिलाएँ। सभी के मन में श्रद्धा थी। कोई सिर पर गंगाजल चढ़ाकर ध्यान में बैठा था, तो कोई केवल शांति का अनुभव कर रहा था। सभी में भक्ति की भावना थी, लेखक ने अनुभव किया कि धर्म का बंधन सबको जोड़ता है। जाति, उम्र या स्थिति की कोई दीवार नहीं थी। हर कोई धर्म लाभ के लिए आया था। विल्वेश्वर महादेव जी की मूर्ति, हरि की पैड़ी श्रद्धालुओं की श्रद्धा को और भी बढ़ाने वाली है। यह दृश्य लेखक के मन को अत्यंत छू गया और उन्हें जीवन के असली उद्‌देश्य की ओर प्रेरित किया।

5 कबीर के दोहे

अभ्यास-प्रश्नोत्तर

पाठ से

आइए, अब हम इन दोहों को थोड़ा और विस्तार से समझते हैं। नीचे दी गई गतिविधियाँ इस कार्य में आपकी सहायता करेंगी।

मेरी समझ से

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उपयुक्त उत्तर के सम्मुख तारा (☆) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।

1. ''गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागौ पाँय। बलिहारी गुरु आपने गोविंद दियो बताय।।'' इस दोहे में किसके विषय में बताया गया है?

- श्रम का महत्व
- गुरु का महत्व
- ज्ञान का महत्व
- भक्ति का महत्व

उत्तर– गुरु का महत्व।

2. ''अति का भला न बोलना अति का भला न चूप। अति का भला न बरसना अति की भली न धूप।।'' इस दोहे का मूल संदेश क्या है?
   - हमेशा चुप रहने में ही हमारी भलाई है
   - बारिश और धूप से बचना चाहिए
   - हर परिस्थिति में संतुलन होना आवश्यक है
   - हमेशा मधुर वाणी बोलनी चाहिए

उत्तर– ☆ हर परिस्थिति में संतुलन होना आवश्यक है

3. ''बड़ा हुआ तो क्या हुआ जैसे पेड़ खजूर। पंथी को छाया नहीं फल लागै अति दूर।।''– यह दोहा किस जीवन कौशल को विकसित करने पर बल देता है?
   - समय का सदुपयोग करना
   - दूसरों के काम आना
   - परिश्रम और लगन से काम करना
   - सभी के प्रति उदार रहना

उत्तर– ☆ दूसरों के काम आना।

4. ''ऐसी बानी बोलिए मन का आपा खोय। औरन को सीतल करै आपहुँ सीतल होय।।'' इस दोहे के अनुसार मधुर वाणी बोलने का सबसे बड़ा लाभ क्या है?
   - लोग हमारी प्रशंसा और सम्मान करने लगते हैं
   - दूसरों और स्वयं को मानसिक शांति मिलती है
   - किसी से विवाद होने पर उसमें जीत हासिल होती है
   - सुनने वालों का मन इधर-उधर भटकने लगता है

उत्तर– ☆ दूसरों और स्वयं को मानसिक शांति मिलती है।

5. ''साँच बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप। जाके हिरदे साँच है ता हिरदे गुरु आप।।'' इस दोहे से क्या निष्कर्ष निकाला जा सकता है?
   - सत्य और झूठ में कोई अंतर नहीं होता है
   - सत्य का पालन करना किसी साधना से कम नहीं है
   - बाहरी परिस्थितियाँ ही जीवन में सफलता तय करती हैं
   - सत्य महत्वपूर्ण जीवन मूल्य है, जिससे हृदय प्रकाशित होता है

उत्तर– ☆ सत्य का पालन करना किसी साधना से कम नहीं है।

☆सत्य महत्वपूर्ण जीवन मूल्य है, जिससे हृदय प्रकाशित होता है।

6. ''निंदक नियरे राखिए आँगन कुटी छवाय। बिन पानी साबुन बिना निर्मल करै सुभाय।।'' यहाँ

जीवन में किस दृष्टिकोण को अपनाने की सलाह दी गई है?

- आलोचना से बचना चाहिए
- आलोचकों को दूर रखना चाहिए
- आलोचकों को पास रखना चाहिए
- आलोचकों की निंदा करनी चाहिए

उत्तर— ☆ आलोचकों को पास रखना चाहिए।

7. ''साधू ऐसा चाहिए जैसा सूप सुभाय। सार-सार को गहि रहै थोथा देइ उड़ाय।।'' इस दोहे में 'सूप' किसका प्रतीक है?

- मन की कल्पनाओं का
- सुख-सुविधाओं का
- विवेक और सूझबूझ का
- कठोर और क्रोधी स्वभाव का

उत्तर— ☆ विवेक और सूझबूझ का।

(ख) हो सकता है कि आपके समूह के साथियों ने अलग-अलग उत्तर चुने हों। अपने मित्रों के साथ विचार कीजिए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने?

उत्तर— (1) मैंने यह उत्तर 'गुरु का महत्व' इसलिए चुना क्योंकि इस दोहे में गुरु का महत्व बताया गया है।

(2) 'हर परिस्थिति में सन्तुलन होना' यह उत्तर मैंने इसलिए चुना क्योंकि दोहे का मूल संदेश है किसी भी बात में 'अति' अच्छी नहीं होती। हमेशा सन्तुलन ही अच्छा होता है।

(3) मैंने यह उत्तर 'दूसरों के काम आना' इसलिए चुना क्योंकि यह दोहा जीवन-कौशल को विकसित करने पर जोर देता है कि आप अपने गुणों और व्यवहारों से दूसरों के लिए कितने उपयोगी बन सकते हो।

(4) मधुर वाणी बोलने का सबसे बड़ा लाभ यह है कि दूसरों और स्वयं को मानसिक शान्ति मिलती है। यह दोहा मानसिक संतुलन और सद्भावना की बात करता है।

(5) सत्य महत्वपूर्ण जीवन मूल्य है। यह सबसे बड़ी साधना है जिससे हृदय प्रकाशित होता है, इस दोहे से निकाला गया सही निष्कर्ष है। मैंने ये उत्तर इसलिए चुने क्योंकि इस दोहे में सत्य को जीवन का मुख्य मूल्य बताया गया है।

(6) 'आलोचकों को अपने पास रखना चाहिए' यह उत्तर मैंने इसलिए चुना क्योंकि कबीरदास जी का कहना बिल्कुल सही है कि आलोचकों के द्वारा की गई आलोचना से हमें अपनी कमियों और गलतियों का पता चल जाता है और हम उसमें सुधार कर सकते हैं।

(7) मैंने 'विवेक और सूझबूझ' उत्तर इसलिए चुना क्योंकि 'सूप' विवेक और सूझबूझ का प्रतीक है। जैसे सूप काम की चीज (अच्छे अनाज) को रखता है और बेकार की चीजों (छोटे कंकड़-मिट्टी) को उड़ा देता है, वैसे ही संत या सज्जन पुरुष सार्थक बातें ग्रहण करते हैं और निरर्थक बातों का त्याग कर देते हैं।

मिलकर करें मिलान

(क) पाठ में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे स्तंभ 1 में दी गई हैं। स्तंभ 2 में दिए गए इनके सही अर्थ या संदर्भ से मिलाइए। इसके लिए आप शब्दकोश, इंटरनेट या अपने शिक्षकों की सहायता ले सकते हैं।

क्रम	स्तंभ 1	स्तंभ 2
1.	गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागौं पाँय।	1. सत्य का पालन कठिन है और झूठ पाप के समान है।
2.	अति का भला न बोलना, अति का भला न चूप।	2. बड़ा होने के साथ व्यक्ति को उदार भी होना चाहिए।
3.	ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय।	3. गुरु शिष्य का मार्गदर्शन करते हैं और शिष्य गुरु का आदर करते हैं।
4.	निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।	4. मन को नियंत्रित करना और सही दिशा में ले जाना महत्वपूर्ण है।
5.	साधू ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।	5. जीवन में संतुलन महत्वपूर्ण है।
6.	कबिरा मन पंछी भया, भावै तहवाँ जाय।	6. हमें मधुर वाणी बोलनी चाहिए जिससे मन को शांति प्राप्त हो सके।
7.	साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।	7. विवेकशील व्यक्ति को अच्छे और बुरे की पहचान होती है।

8. बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।	**8.** आलोचकों को अपने पास रखना चाहिए। वे हमें हमारी गलतियाँ बताते हैं।

उत्तर– 1. (3) 2. (5) 3. (6) 4. (8) 5. (7) 6. (4) 7. (1) 8. (2)

(ख) नीचे स्तंभ 1 में दी गई दोहों की पंक्तियों को स्तंभ 2 में दी गई उपयुक्त पंक्तियों से जोड़िए–

क्रम स्तंभ 1	स्तंभ 2
1. गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागौं पाँय।	**1.** बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करै सुभाय।।
2. अति का भला न बोलना, अति का भला न चूप।	**2.** औरन को सीतल करै, आपहुँ सीतल होय।।
3. ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय।	**3.** जाके हिरदे साँच है, ता हिरदे गुरु आप।।
4. निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।	**4.** सार सार को गहि रहै, थोथा देइ उड़ाय।।
5. साधू ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।	**5.** पंथी को छाया नहीं, फल लागै अति दूर।।
6. कबिरा मन पंछी भया, भावै तहवाँ जाय।	**6.** अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप।।
7. बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर	**7.** जो जैसी संगति करै, सो तैसा फल पाय।।
8. साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।	**8.** बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय।।

उत्तर– 1. (8) 2. (6) 3. (2) 4. (1) 5. (4) 6. (7) 7. (5) 8. (3)

पंक्तियों पर चर्चा

पाठ से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपने समूह में साझा कीजिए और लिखिए–

(क) ''कबिरा मन पंछी भया भावै तहवाँ जाय।
जो जैसी संगति करै सो तैसा फल पाय''

उत्तर– इन पंक्तियों का अर्थ है कि व्यक्ति का मन चंचल होता है, वह जहाँ चाहे वहाँ भटक जाता है। मन अपनी संगति के अनुसार ही उसी रंग का हो जाता है। जैसी संगत मिलेगी, वैसा ही प्रभाव मन पर पड़ेगा अर्थात् अच्छी संगति हमें अच्छा बनाती है और बुरी संगति बुरा। अतः मन को सही दिशा में ले जाना चाहिए।

(ख) ''साँच बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदे साँच है ता हिरदे गुरु आप।।''

उत्तर– यहाँ कहा गया है कि सत्य से बड़ा कोई तप नहीं है और झूठ से बड़ा कोई पाप नहीं है। जिसके मन में सत्य की भावना होती है, उसका मन स्वयं ही उसका गुरु बन जाता है यानी सच्चा व्यक्ति बिना बाहरी मार्गदर्शन के सही मार्ग चुन सकता है। सत्य को अपनाना सबसे बड़ी भक्ति है।

सोच-विचार के लिए

पाठ को पुनः ध्यान से पढ़िए, पता लगाइए और लिखिए–

(क) ''गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागौं पाँय।'' इस दोहे में गुरु को गोविंद (ईश्वर) से भी ऊपर स्थान दिया गया है। क्या आप इससे सहमत हैं? अपने विचार लिखिए।

उत्तर– हाँ, मैं इस दोहे से सहमत हूँ। गुरु का महत्व भगवान से भी बड़ा बताया गया है क्योंकि गुरु ही हमें भगवान तक पहुँचने का मार्ग दिखाता है। गुरु के बिना सही मार्गदर्शन, सच्चे ज्ञान तथा भगवान की प्राप्ति करना कठिन है। गुरु न केवल शिक्षा प्रदान करता है, बल्कि हमारे जीवन में सत्य तथा सही दिशा को स्थापित करता है। आत्मज्ञान और भक्ति का मार्ग गुरु के बिना अधूरा रह जाता है, इसलिए गुरु को सर्वोच्च स्थान दिया गया है।

(ख) ''बड़ा हुआ तो क्या हुआ जैसे पेड़ खजूर।'' इस दोहे में कहा गया है कि सिर्फ बड़ा या संपन्न होना ही पर्याप्त नहीं है। बड़े या संपन्न होने के साथ-साथ मनुष्य में और कौन-कौन सी विशेषताएँ होनी चाहिए? अपने विचार साझा कीजिए।

उत्तर– इस दोहे में कबीर ने समझाया है कि सिर्फ

बड़ा या सम्पन्न होना ही व्यक्ति के लिए पर्याप्त नहीं है। व्यक्ति में मनुष्यता, विनम्रता, सहृदयता, दूसरों की सहायता करने की भावना और उपयोगिता जैसे गुण भी होने चाहिए। जैसे खजूर का पेड़ ऊँचा तो है लेकिन उसकी छाया और फल किसी की जरूरत पूरी नहीं कर सकते हैं, वैसे ही व्यक्ति में सिर्फ बड़प्पन है, पर वह दूसरों के लिए उपयोगी नहीं है तो उसका बड़ा होना बेकार है। व्यक्ति में सच्ची महानता तभी है जब व्यक्ति समाज और जरूरतमंदों के लिए लाभकारी बने।

(ग) ''ऐसी बानी बोलिए मन का आपा खोय।'' क्या आप मानते हैं कि शब्दों का प्रभाव केवल दूसरों पर ही नहीं स्वयं पर भी पड़ता है? आपके बोले गए शब्दों ने आपके या किसी अन्य के स्वभाव या मनोदशा को कैसे परिवर्तित किया? उदाहरण सहित बताइए।

उत्तर– हाँ, शब्दों का उत्तर न केवल दूसरों पर होता है, बल्कि बोलने वाले के मन और स्वभाव पर भी पड़ता है। जब हम मधुर, शान्त और सकारात्मक शब्दों का प्रयोग करते हैं तो हमारे अन्दर गुस्सा, अहंकार की भावना कम हो जाती है और हमारे विचार भी सकारात्मक रहते हैं।

उदाहरण– यदि किसी व्यक्ति ने मुझसे गुस्से में बात की और मैंने शान्त शब्दों में जवाब दिया तो माहौल शान्त हो गया और मेरी भी मनोदशा अच्छी रही। इसी तरह जब मैं किसी मित्र की प्रशंसा करता हूँ तो न केवल वह खुश होता है, बल्कि मेरे सम्बन्ध भी मजबूत होते हैं और मुझे भी अच्छा लगता है। इसलिए शब्दों का चयन सोच-विचार करके करना चाहिए।

(घ) ''जो जैसी संगति करै सो तैसा फल पाय।।'' हमारे विचारों और कार्यों पर संगति का क्या प्रभाव पड़ता है? उदाहरण सहित बताइए।

उत्तर– हमारे विचारों और कार्यों पर संगति (साथ या संग) का बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। यदि हम अच्छे और सकारात्मक व्यक्तियों की संगति में रहते हैं तो हमारे विचार भी सकारात्मक और अच्छे बन जाते हैं। वहीं, यदि बुरी संगति में रहें तो हमारे विचार और आदतें भी बुरी हो जाती हैं।

उदाहरण– अगर कोई छात्र मेहनती और ईमानदार छात्र के साथ मित्रता करता है तो वह भी पढ़ाई में रुचि लेगा और कक्षा में अच्छा प्रदर्शन करेगा। दूसरी ओर अगर छात्र आलसी या गलत संगत के छात्र के साथ मित्रता करता है, तो वह भी वैसा हो जाएगा और उसके जैसे कार्य करेगा। इसलिए संगति सोच और व्यवहार को निध ारित करती है।

दोहे की रचना

''अति का भला न बोलना, अति का भला न चूप।
अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप।।''

इन दोनों पंक्तियों पर ध्यान दीजिए। इन दोनों पंक्तियों के दो-दो भाग दिखाई दे रहे हैं। इन चारों भागों का पहला शब्द है 'अति'। इस कारण इस दोहे में एक विशेष प्रभाव उत्पन्न हो गया है। आप ध्यान देंगे तो इस कविता में आपको ऐसी कई विशेषताएँ दिखाई देंगी, जैसे– दोहों की प्रत्येक पंक्ति को बोलने में एक-समान समय लगता है। अपने-अपने समूह में मिलकर पाठ में दिए गए दोहों की विशेषताओं की सूची बनाइए।

(क) दोहों की उन पंक्तियों को चुनकर लिखिए जिनमें–

(1) एक ही अक्षर से प्रारंभ होने वाले (जैसे– राजा, रस्सी, रात) दो या दो से अधिक शब्द एक साथ आए हैं।

(2) एक शब्द एक साथ दो बार आया है। (जैसे– बार-बार)

(3) लगभग एक जैसे शब्द, जिनमें केवल एक मात्रा भर का अंतर है (जैसे– जल, जाल) एक ही पंक्ति में आए हैं।

(4) एक ही पंक्ति में विपरीतार्थक शब्दों (जैसे– अच्छा-बुरा) का प्रयोग किया गया है।

(5) किसी की तुलना किसी अन्य से की गई है। (जैसे– दूध जैसा सफेद)

(6) किसी को कोई अन्य नाम दे दिया गया है। (जैसे–मुख चंद्र है)

(7) किसी शब्द की वर्तनी थोड़ी अलग है। (जैसे– 'चुप' के स्थान पर 'चूप)

(8) उदाहरण द्वारा कही गई बात को समझाया गया है।

उत्तर– (1) एक ही अक्षर से प्रारंभ होने वाले दो या दो से अधिक शब्द एक साथ आए हैं–

- गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागौं पाँय।

- ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय।
- निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।
- जो जैसी संगति करै, सो तैसा फल पाय।
- साधू ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।

(2) एक शब्द एक साथ दो बार आया है–
सार सार को गहि रहै, थोथा देइ उड़ाय।

(3) लगभग एक जैसे शब्द जिसमें मात्र एक मात्रा का अन्तर हो– अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप। (भला-भली)

(4) एक ही पंक्ति में विपरीतार्थक शब्दों का प्रयोग–
(अ) साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप (साँच, झूठ)
(ब) अति का भला न बोलना, अति का भला न चूप (बोलना, चूप)

(5) किसी की तुलना किसी अन्य से की गई है–
(अ) बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर। (बड़े की खजूर के पेड़ से तुलना)
(ब) साधू ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय (साधू की, सूप से तुलना)

(6) किसी को कोई अन्य नाम दे दिया गया है– कबिरा मन पंछी भया, भावै तहवाँ जाय (मन, पंछी)

(7) किसी शब्द की वर्तनी थोड़ी अलग है–
(अ) अति का भला न बोलना, अति का भला न चूप (चूप सामान्यत: चुप)
(ब) जाके हिरदे साँच है, ता हिरदे गुरु आप। (हिरदे-हृदय)

(8) उदाहरण द्वारा कही गई बात को समझाया गया है–
(अ) बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर (खजूर के पेड़ का उदाहरण)
(ब) साधू ऐसा चहिए, जैसा सूप सुभाय (सूप का उदाहरण)

(ख) अपने समूह की सूची को कक्षा में सबके साथ साझा कीजिए।

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

अनुमान और कल्पना से

अपने समूह में मिलकर चर्चा कीजिए–

(क) ''गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागौं पाँय।''

- यदि आपके सामने यह स्थिति होती तो आप क्या निर्णय लेते और क्यों?

उत्तर– मैं गुरु के चरणों में प्रणाम करता क्योंकि गुरु ही हमें भगवान तक पहुँचने का मार्ग दिखाते हैं। मेरे गुरु ने मुझे सत्य-असत्य का ज्ञान दिया, जिससे मैं बेहतर निर्णय ले सका।

- यदि संसार में कोई गुरु या शिक्षक न होता तो क्या होता?

उत्तर– यदि संसार में कोई गुरु या शिक्षक न होता तो बिना गुरु या शिक्षक के लोग भटक जाते सत्य-असत्य (सही-गलत) का ज्ञान नहीं होता और समाज के अन्दर अज्ञानता बढ़ जाती। परिणामत: मनुष्य और पशु में कोई भेद न रह जाता।

(ख) ''अति का भला न बोलना, अति का भला न चूप।''

- यदि कोई व्यक्ति बहुत अधिक बोलता है या बहुत चुप रहता है तो उसके जीवन पर क्या प्रभाव पड़ सकता है?

उत्तर– बहुत अधिक बोलने से व्यक्ति उसे गंभीरता से नहीं लेते और बहुत चुप रहने से वह अपनी बात व्यक्त नहीं कर पाता। दोनों ही स्थिति में सन्तुलन की कमी से आपसी रिश्ते खराब हो सकते हैं।

- यदि वर्षा आवश्यकता से अधिक या कम हो तो क्या परिणाम हो सकते हैं?

उत्तर– अधिक वर्षा से बाढ़ आ सकती है और कम वर्षा से सूखा पड़ सकता है, जिससे फसलें खराब हो सकती हैं।

- आवश्यकता से अधिक मोबाइल या मल्टीमीडिया का प्रयोग करने से क्या परिणाम हो सकते हैं?

उत्तर– आवश्यकता से अधिक मोबाइल या मल्टीमीडिया का प्रयोग करने से समय बर्बाद होता है, आँखें खराब हो सकती हैं तथा पढ़ने में पिछड़ सकते हैं।

(ग) ''साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।''

- झूठ बोलने पर आपके जीवन पर क्या प्रभाव पड़ सकता है?

उत्तर– झूठ बोलने से लोग हम पर भरोसा नहीं करते हैं, इसके कारण हमें पछताना पड़ता है। उदाहरण के लिए, यदि मैं गृहकार्य न करने का झूठ बोलता हूँ तो गुरु या शिक्षक को पता चलने पर सजा मिल सकती है।

- कल्पना कीजिए कि आपके शिक्षक ने आपके किसी गलत उत्तर के लिए अंक दे दिए हैं, ऐसी परिस्थिति में आप क्या करेंगे?

उत्तर– मैं शिक्षक को सत्य बताऊँगा और गलती सुधारने की कोशिश करूँगा क्योंकि सत्य बात कहने से मन शान्त रहता है।

(घ) ''ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय।''

- यदि सभी मनुष्य अपनी वाणी को मधुर और शांति देने वाली बना लें तो लोगों में क्या परिवर्तन आ सकते हैं?

उत्तर– यदि सभी लोग मधुर और शान्ति देने वाली वाणी बोलना प्रारम्भ कर दें तो समाज में आपसी सम्मान, सद्भाव, शान्ति का माहौल बन जायेगा। यह झगड़े, तनाव तथा द्वेष की भावना को कम कर देगा। लोग एक-दूसरे की भावनाओं का सम्मान करेंगे। इससे आपसी रिश्ते मजबूत होंगे और झगड़े व गलतफहमियाँ कम होंगी।

- क्या कोई ऐसी परिस्थिति हो सकती है जहाँ कटु वचन बोलना आवश्यक हो? अनुमान लगाइए।

उत्तर– हाँ! कभी-कभी ऐसी स्थिति हो सकती है; जैसे– असत्य, अन्याय, अत्याचार या भ्रष्टाचार के विरोध में जहाँ कटु वचन आवश्यक हो सकते हैं। तब सत्य और न्याय के पक्ष में बोलना जरूरी है लेकिन वहाँ भी मर्यादा और संयम बनाए रखना चाहिए।

(ङ) ''बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।''

- यदि कोई व्यक्ति अपने बड़े होने का अहंकार रखता हो तो आप इस दोहे का उपयोग करते हुए उसे 'बड़े होने या संपन्न होने' का क्या अर्थ बताएँगे या समझाएँगे?

उत्तर– अगर कोई व्यक्ति अपने बड़े या सम्पन्न होने पर अहंकार रखता है, तो इस दोहे के माध्यम से मैं उसे समझाऊँगा कि सिर्फ बड़ा या ऊँचा होना लाभकारी नहीं है, जैसे– खजूर का पेड़ बहुत ऊँचा होता है लेकिन न तो उसकी छाया राहगीरों को मिलती है और न ही उसके फल आसानी से मिलते हैं। दूसरों के काम आने में सच्ची महानता है, न सिर्फ बड़ा या ऊँचा पद होने में।

- खजूर, नारियल आदि ऊँचे वृक्ष अनुपयोगी नहीं होते हैं। वे किस प्रकार से उपयोगी हो सकते हैं? बताइए।

उत्तर– खजूर के फल खाने योग्य और पौष्टिक होते हैं। नारियल से तेल, पानी और उसका छिलका भी अनेक कामों में आता है। ये पेड़ पर्यावरण के लिए भी महत्वपूर्ण हैं। इन पेड़ों की लकड़ी भी काम आती है।

- आप अपनी कक्षा का कक्षा नायक या नायिका (मॉनीटर) चुनने के लिए किसी विद्यार्थी की किन-किन विशेषताओं पर ध्यान देंगे?

उत्तर– मैं कक्षा में मॉनीटर चुनते समय निम्नलिखित विशेषताओं पर ध्यान दूँगा–

(1) ईमानदारी और निष्पक्षता।

(2) जिम्मेदारी और अनुशासनप्रिय।

(3) सहयोगी तथा अच्छा व्यवहार करने वाला।

(4) आत्मविश्वासी, घमंडरहित।

(5) पढ़ाई में भी अच्छा तथा अनुकरणीय।

(6) समस्याओं को शान्तिपूर्वक हल करने की क्षमता।

(च) ''निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।''

- यदि कोई आपकी गलतियों को बताता रहे तो आपको उससे क्या लाभ होगा?

उत्तर– जब कोई हमारी गलतियों की ओर इशारा करता है तो हम अपनी गलतियों को सुधार सकते हैं, अपनी कमियों को पहचान सकते हैं और एक बेहतर व्यक्ति बन सकते हैं। यह बिन साबुन और पानी के स्वभाव को निर्मल करने जैसा है।

- यदि समाज में कोई भी एक-दूसरे की गलतियाँ न बताए तो क्या होगा?

उत्तर– यदि समाज में कोई भी एक-दूसरे की गलतियाँ न बताए तो लोग अपनी गलतियों को कभी नहीं समझ पाएँगे और समाज में सुधार नहीं हो पाएगा । इससे सामाजिक प्रगति में रुकावट आ जाएगी तथा समाज में बुराइयाँ बढ़ेंगी।

(छ) ''साधू ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।''

- कल्पना कीजिए कि आपके पास 'सूप' जैसी विशेषता है तो आपके जीवन में कौन-कौन से परिवर्तन आएँगे?

उत्तर– अगर मुझमें 'सूप' जैसी विशेषता (अर्थात् सार को ग्रहण करना, तथ्यों को अलग करना) आ जाए तो मैं–

(1) सत्य-असत्य को पहचान पाऊँगा।

(2) जीवन के निर्णय सही तथा विवेकपूर्ण तरीके से लूँगा।

(3) मुझे दूसरों से सीखने तथा उनकी अच्छाई अपनाने की शक्ति मिलेगी।

(4) अनावश्यक तथा हानिकारक बातों से बच सकूँगा।

(5) मेरा आत्मविश्वास बढ़ जायेगा और मानसिक रूप से मजबूत बनूँगा।

- यदि हम बिना सोचे-समझे हर बात को स्वीकार कर लें तो उसका हमारे जीवन पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

उत्तर– अगर हम बिना सोचे-समझे हर बात को स्वीकार कर लें तो उसका हमारे जीवन पर निम्नवत् प्रभाव पड़ेगा; जैसे–

(1) जीवन में गलत फैसले लेने की आशंका बढ़ जाएगी।

(2) इससे गलत मार्गदर्शन का शिकार हो सकते हैं।

(3) चिंतन शक्ति घट जाएगी।

(4) बहकावे में आ सकते हैं।

(5) अपनी पहचान व सोच खो सकते हैं।

(ज) ''कबिरा मन पंछी भया, भावै तहवाँ जाय।''

- यदि मन एक पंछी की तरह उड़ सकता तो आप उसे कहाँ ले जाना चाहते और क्यों?

उत्तर– अगर मन एक पंछी की तरह उड़ सकता तो मैं उसे प्रकृति की गोद में ले जाना चाहता, क्योंकि प्रकृति की गोद में शान्ति और मन को सुकून मिलता, तनाव कम होता और मन को नई ऊर्जा मिलती। शान्त वातावरण में जाकर अपने विचारों को सँवारना और जीवन में प्रकृति की सुन्दरता को महसूस करना मुझे अच्छा लगता है।

- संगति का हमारे जीवन पर क्या-क्या प्रभाव पड़ सकता है?

उत्तर– संगति का हमारे जीवन पर अलग-अलग प्रभाव पड़ सकता है। अच्छी संगति से हम अच्छे गुण, अनुशासन और सकारात्मक सोच अपनाते हैं, वहीं बुरी संगति में हम गलत मार्ग पर चलते हुए गलत आदतें तथा असभ्य व्यवहार अपनाते हैं। हमारी सोच, व्यवहार और आदतें काफी हद तक हमारी संगति का परिणाम होते हैं, इसलिए सही साथ चुनना आवश्यक है।

वाद-विवाद

''अति का भला न बोलना, अति का भला न चूप।
अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप।।''

(क) इस दोहे का आज के समय में क्या महत्व है? इसके बारे में कक्षा में एक वाद-विवाद गतिविधि का आयोजन कीजिए। एक समूह के साथी इसके पक्ष में अपने विचार प्रस्तुत करेंगे और दूसरे समूह के साथी इसके विपक्ष में बोलेंगे। एक तीसरा समूह निर्णायक बन सकता है।

उत्तर– ● **पक्ष–** आज के समय में वाणी पर संयम रखना बहुत आवश्यक है। सोशल मीडिया पर बिना सोचे-समझे लोग कुछ भी बोल देते हैं, जिससे विवाद होते हैं। रिश्ते को बेहतर बनाने के लिए सन्तुलित बात करनी चाहिए क्योंकि सन्तुलित बोलने से ही बेहतर रिश्ते बन सकते हैं।

● **विपक्ष–** आज के समय में अत्यधिक चुप रहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि गलतफहमियाँ अपनी बात न कहने से बढ़ सकती हैं। उदाहरण के लिए, यदि कोई गलत बात हो रही हो, तो चुप रहना सही नहीं है।

निष्कर्ष (तीसरा समूह)– दोनों पक्षों से यह स्पष्ट है कि सन्तुलन सबसे महत्वपूर्ण है। न अधिक बोलना चाहिए, न ही पूरी तरह चुप रहना चाहिए।

(ख) पक्ष और विपक्ष के समूह अपने-अपने मत के लिए तर्क प्रस्तुत करेंगे, जैसे–

- पक्ष– वाणी पर संयम रखना आवश्यक है।

उत्तर– पक्ष में– वाणी पर संयम रखना आवश्यक है, अधिक बोलने से कई बार अनजाने में किसी का दिल टूट जाता है। आपसी मनमुटाव पैदा हो जाते हैं। सन्तुलित वाणी में बोलना व्यक्ति को समाज में आदर दिलाता है। सोच-समझकर अपनी बात को कहना सभ्य होने की निशानी है।

- **विपक्ष–** अत्यधिक चुप रहना भी उचित नहीं है।

उत्तर– विपक्ष में– हर समय चुप रहना उचित नहीं है, क्योंकि हर समय चुप रहना अपने विचारों और भावनाओं को दबाना है। कभी-कभी चुप्पी भी समस्याएँ बढ़ा देती है। दूसरों के गलत कार्यों पर चुप रहना समाज के लिए अच्छा नहीं है। खुलकर बोलने से रचनात्मक

चर्चा होती है और मन में आत्मविश्वास बढ़ता है तथा नए विचार आते हैं।

(ग) पक्ष और विपक्ष में प्रस्तुत तर्कों की सूची अपनी लेखन-पुस्तिका में लिख लीजिए।

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

शब्द से जुड़े शब्द

नीचे दिए गए स्थानों में कबीर से जुड़े शब्द पाठ में से चुनकर लिखिए और अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए–

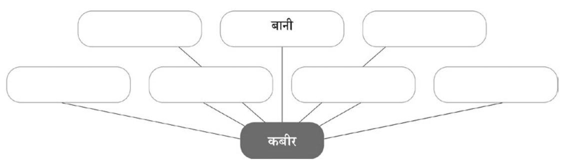

उत्तर– बलिहारी, बानी, सूप, पंथी, साधू, हिरदे, आपा।

दोहे और कहावतें

''कबिरा मन पंछी भया, भावै तहवाँ जाय।
जो जैसी संगति करै, सो तैसा फल पाय।''

इस दोहे को पढ़कर ऐसा लगता है कि वह बात तो हमने पहले भी अनेक बार सुनी है। यह दोहा इतना अधिक प्रसिद्ध और लोकप्रिय है कि इसकी दूसरी पंक्ति लोगों के बीच कहावत– ''जैसा संग वैसा रंग' (व्यक्ति जिस संगति में रहता है, वैसा ही उसका व्यवहार और स्वभाव बन जाता है।) की तरह प्रयुक्त होती है। कहावतें ऐसे वाक्य होते हैं जिन्हें लोग अपनी बात को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए प्रयोग करते हैं। इसमें सामान्यत: जीवन के गहरे अनुभवों सरल और संक्षेप में बता दिया जाता है।

- अब आप ऐसी अन्य कहावतों का प्रयोग करते हुए अपने मन से कुछ वाक्य बनाकर लिखिए।

उत्तर– कहावतें–

(1) जैसी संगत, वैसी रंगत– शीलू को पढ़ने में कुछ नहीं आता था, लेकिन जब से उसने होशियार रिया का साथ पकड़ा तब से वह भी होशियार हो गई है। ठीक ही किसी ने कहा है– जैसी संगत वैसी रंगत।

(2) जैसी करनी वैसी भरनी– राम ने दूसरों की मदद नहीं की, जब उसे खुद मदद की जरूरत पड़ी तो कोई साथ नहीं आया। सच ही है– जैसी करनी, वैसी भरनी।

(3) अपनी पगड़ी अपने हाथ– अपने से छोटे से भी अच्छा व्यवहार करना चाहिए अन्यथा वे भी अपमान कर सकते हैं। सही कहावत है– अपनी पगड़ी अपने हाथ।

(4) एक मुँह दो बात– पहले आप कह रहे थे कि मैं तुम्हें पाँच हजार रुपये वाली साड़ी दिलाऊँगा, अब कह रहे हो पाँच सौ रुपये वाली साड़ी ले लो, ये तो आप एक मुँह से दो बात वाली बात कह रहे हो।

(5) कर सेवा खा मेवा– रवि ने कृष्ण से कहा, ''मेहनत से प्रकाशन में कार्य करो तरक्की पा जाओगे। कहावत सच है– कर सेवा खा मेवा।''

पाठ से आगे

आपकी बात

(क) ''गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागौं पाँय।'' क्या आपके जीवन में कोई ऐसा व्यक्ति है जिसने आपको सही दिशा दिखाने में सहायता की हो? उस व्यक्ति के बारे में बताइए।

उत्तर– हाँ, मेरे संस्कृत शिक्षक ने मुझे सही दिशा दिखाई। जब मैं संस्कृत में कमजोर था। उन्होंने मुझे विसर्ग, हलन्त के महत्व और लगाने के तरीके को आसान तरीके से समझाया और प्रोत्साहन दिया, जिससे मेरे अंक बेहतर हुए।

(ख) ''निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।'' क्या कभी किसी ने आपकी कमियों या गलतियों के विषय में बताया है जिनमें आपको सुधार करने का अवसर मिला हो? उस अनुभव को साझा कीजिए।

उत्तर– हाँ, मेरे भाई ने बताया कि मैं जल्दी गुस्सा हो जाती हूँ। उसकी आलोचना से मैंने अपने गुस्से पर काबू करना सीखा और अब शान्त रहने की कोशिश करती हूँ।

(ग) ''कबिरा मन पंछी भया, भावै तहवाँ जाय।'' क्या आपने कभी अनुभव किया है कि आपकी संगति (जैसे–मित्र) आपके विचारों और आदतों या व्यवहारों को प्रभावित करती है? अपने अनुभव साझा कीजिए।

उत्तर– हाँ, संगति हमारे विचारों और आदतों या व्यवहारों को बहुत प्रभावित करती है। उदाहरण के लिए, मेरा मित्र पढ़ाई के प्रति गम्भीर है तो मैं भी पढ़ाई के प्रति जागरूक हूँ और मेहनत करता हूँ। अगर मेरे मित्र

समय की कद्र नहीं करते या अनावश्यक बातें करते तो मेरा मन भी भटकने लगता। इसलिए अच्छी संगति अच्छे विचार और आदतें लाने में मदद करती है। यह अनुभव हर किसी को कभी-न-कभी होता ही है। यही बात कबीर ने अपने इस दोहे में कही है।

सृजन

(क) ''साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।'' इस दोहे पर आधारित एक कहानी लिखिए, जिसमें किसी व्यक्ति ने कठिन परिस्थितियों में भी सत्य का साथ नहीं छोड़ा। (संकेत– किसी खेल में आपकी टीम द्वारा नियमों के उल्लंघन का आपके द्वारा विरोध किया जाना)

उत्तर– गौरव एक फुटबॉल टीम का हिस्सा था। एक दिन फुटबॉल मैच में उनकी टीम हार के कगार पर थी। टीम के कप्तान ने कहा– ''चलो फुटबॉल से छेड़छाड़ कर दें ताकि हम जीत जाएँ।'' लेकिन गौरव ने मना कर दिया। उसने कहा, ''नहीं यह गलत है। सच बोलना और नियमों का पालन करना ही सही है।'' हम ने मिलकर उसे डराया कि बिना इस चीज के वे जीत नहीं पाएँगे, लेकिन गौरव अडिग रहा। आखिर में टीम ने बिना धोखाधड़ी के खेला और हार गयी। पर गौरव को सुकून मिला। बाद में लोग उसकी ईमानदारी की तारीफ करने लगे और उसे सम्मान मिला। गौरव ने सीखा कि सत्य का साथ कभी व्यर्थ नहीं जाता।

(ख) ''गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागौं पाँय।'' इस दोहे को ध्यान में रखते हुए अपने किसी प्रेरणादायक शिक्षक से साक्षात्कार कीजिए और उनके योगदान पर एक निबंध लिखिए।

उत्तर– साक्षात्कार (काल्पनिक)

मैंने अपने शिक्षक श्रीमान हरिशंकर शर्मा से बात की।

मैंने पूछा– आपने हम सबको क्या सिखाया?

श्रीमान हरिशंकर शर्मा– मैंने तुम्हें मेहनत, ईमानदारी और मिल- जुलकर काम करना सिखाया।

मैंने पूछा– सबसे बड़ी खुशी आपके लिए क्या है?

श्रीमान हरिशंकर शर्मा– जब मेरे छात्र सफल होते हैं और मेरे सामने उच्च शिखर पर पहुँचते हैं।

निबन्ध– मेरे प्रेरणादायक शिक्षक श्रीमान हरिशंकर शर्मा हैं। वे हमें केवल किताबी ज्ञान ही नहीं, बल्कि जीवन के प्रति निष्ठावान रहने का सबक भी सिखाते हैं। उन्होंने मुझे मेहनत और ईमानदारी का महत्व समझाया। जब मैं परीक्षा में असफल रहा, तब उन्होंने मुझे हिम्मत दी और मेरा सही मार्गदर्शन किया। उनके कारण मैंने मेहनत शुरू की और परीक्षा में सफलता अच्छे अंकों के साथ प्राप्त की। वे मेरे गुरु हैं, जो मुझे लक्ष्य तक पहुँचने का मार्ग दिखाते हैं। उनका योगदान ही है, जो आज मैं पढ़ाई का तथा सत्य का महत्व समझ सका।

कबीर हमारे समय में

(क) कल्पना कीजिए कि कबीर आज के समय में आ गए हैं। वे आज किन-किन विषयों पर कविता लिख सकते हैं? उन विषयों की सूची बनाइए।

उत्तर– वे निम्नलिखित विषयों पर कविता लिख सकते हैं–

(1) शिक्षा और ईमानदारी
(2) पर्यावरण प्रदूषण
(3) भ्रष्ट राजनीति
(4) सोशल मीडिया का दुरुपयोग
(5) तकनीक का दुरुपयोग
(6) सामाजिक एकता

(ख) इन विषयों पर आप भी दो-दो पंक्तियाँ लिखिए।

उत्तर– (1) शिक्षा और ईमानदारी पर (कविता)–

शिक्षा का प्रसार करें, ईमानदारी बने आधार।
जीवन हो सकुशल, खुशियों से महके संसार।।

(2) पर्यावरण प्रदूषण–

पेड़ काटे तो धरती रोए,
जीवन का आधार खोए।

(3) भ्रष्ट राजनीति पर–

अब का नेता न नेता कहलाने का अधिकारी है।
धवल वसन केवल है ऊपर अंदर से भ्रष्टाचारी है।।

(4) सोशल मीडिया का दुरुपयोग–

मन को फेसबुक, ट्विटर भटकाए, सत्य से दूर ले जाए।
सोशल मीडिया पर सत्य की बातें करें, झूठी खबर न फैलाए।

(5) तकनीक का दुरुपयोग–

डूबा मन मोबाइल में, खोया जीवन का सुख-चैन।
तकनीकी उपयोगों के कारण मानव भटक रहा दिन-रैन।।

(6) सामाजिक एकता–

ऊँच-नीच का भेद मिटाओ, सबको गले लगाओ।
रूढ़िवाद के बंधन तोड़ो, जीवन खुशहाल बनाओ।।

साइबर सुरक्षा और दोहे

नीचे दिए गए प्रश्नों पर कक्षा में विचार-विमर्श कीजिए और साझा कीजिए–

(क) ''अति का भला न बोलना, अति का भला न चूप।'' इंटरनेट पर अनावश्यक सूचनाएँ साझा करने के क्या-क्या संकट हो सकते हैं?

उत्तर– इंटरनेट पर अनावश्यक सूचनाएँ साझा करने से साइबर ठगी का खतरा रहता है तथा गोपनीयता भंग हो सकती है। व्यक्तिगत जानकारी चोरी हो सकती है; जैसे– नाम, पता या फोटो। ऑनलाइन ठगी या हैकिंग का खतरा बढ़ जाता है, जो नुकसान पहुँचा सकते हैं। इसलिए सोच-समझकर ही इंटरनेट पर कोई भी जानकारी साझा करनी चाहिए।

(ख) ''साधू ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।'' किसी भी वेबसाइट, ईमेल या मीडिया पर उपलब्ध जानकारी को 'सूप' की तरह छानने की आवश्यकता क्यों है? कैसे तय करें कि कौन-सी सूचना उपयोगी है और कौन-सी हानिकारक?

उत्तर– ''साधू ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।'' सूचना को परखने की आवश्यकता वेबसाइट, ईमेल या मीडिया पर आई जानकारी हमेशा सही हो जरूरी नहीं। 'सूप' की तरह छानने का मतलब है–

(1) सही व आवश्यक बातों को रखना, बेकार या झूठी बातों को हटाना।

(2) स्रोत की जाँच करें– क्या जानकारी सरकारी, प्रामाणिक या भरोसेमंद स्रोत से है।

(3) तथ्यों की पुष्टि– क्या हमारे स्रोत भी वही कह रहे हैं।

(4) अपुष्ट खबर या अफवाह फैलाने से बचें।

इस तरह केवल सही, सुरक्षित व उपयोगी सूचना ग्रहण करें।

आज के समय में

नीचे कुछ घटनाएँ दी गई हैं। इन्हें पढ़कर आपको कबीर के कौन-से दोहे याद आते हैं? घटनाओं के नीचे दिए गए रिक्त स्थान पर उन दोहों को लिखिए–

- अमित का मन पढ़ाई में नहीं लगता था और वह गलत संगति में चला गया। कुछ समय बाद जब उसके अंक कम आए तो उसे समझ में आया– ''संगति का असर जीवन पर पड़ता है।''

उत्तर– कबिरा मन पंछी भया, भावै तहवाँ जाय।
जो जैसी संगति करै, सो तैसा फल पाय।।

- एक विद्यार्थी इंटरनेट पर लगातार सूचनाएँ खोज रहा था। उसके पिता ने कहा– ''हर जानकारी सही नहीं होती, सही बातों को चुनो और बेकार छोड़ दो।''

उत्तर– साधू ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।
सार सार को गहि रहै, थोथा देइ उड़ाय।।

- आपका एक मित्र आपकी किसी गलत बात पर आपकी आलोचना करता है। आप पहले परेशान होते हैं, लेकिन फिर आपने सोचा– ''आलोचना मुझे सुधरने का मौका देती है, मुझे इन बातों का बुरा नहीं मानना चाहिए। इसे सकारात्मक रूप से लेना चाहिए।''

उत्तर– निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।
बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करै सुभाय।।

- रीमा ने अपने गुस्से में सहकर्मी को बुरा-भला कह दिया, जिससे वातावरण बिगड़ गया। बाद में उसने समझा कि अगर वह शांति से बात करती तो समस्या हल हो जाती।

उत्तर– ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय।
औरन को सीतल करै, आपहुँ सीतल होय।।

- कक्षा में मोहन ने बहुत अधिक बोलकर सबको परेशान कर दिया, जबकि रमेश बिल्कुल चुप रहा। गुरुजी ने कहा–''बोलचाल में संतुलन आवश्यक है, न अधिक बोलो, न अधिक चुप रहो।''

उत्तर–अति का भला न बोलना, अति का भला न चूप।
अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप।।

- सुरेश को जब 'प्रतिभा सम्मान' मिला तो उसने

कहा– ''इसमें मेरे परिश्रम के साथ मेरे गुरुजनों का मार्गदर्शन भी सम्मिलित है।''

उत्तर– गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागौं पाँय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय।।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. ''साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप'' इस दोहे का मुख्य संदेश क्या है?
(अ) सत्य ही सबसे बड़ा धर्म है
(ब) झूठ बोलना आवश्यक है
(स) झूठ ही सब कुछ है
(द) तपस्या व्यर्थ है

2. कबीर ने 'निंदक नियरे राखिए' दोहे में निंदक को पास रखने की सलाह क्यों दी है?
(अ) निंदक ही अच्छे मित्र होते हैं
(ब) निंदक कमियाँ दूर करने का अवसर देते हैं
(स) निंदक हमें ईश्वर से दूर ले जाते हैं
(द) ताकि अपनी बुराइयों को सुना जा सके

3. ''पंथी को छाया नहीं''– पंक्ति में किसकी व्यर्थता बताई गई है?
(अ) नदी की
(ब) सूर्य की
(स) बिना उपयोग के ऊँचाई की
(द) बिना उपयोग के निचाई की

4. ''स्वभाव को निर्मल'' कौन करता है?
(अ) तपस्वी (ब) निंदक
(स) आचार्य (द) गुरु

5. कबीर के दोहों में सबसे अधिक किस चीज की आलोचना की गई है?
(अ) आडंबर और झूठ (ब) पूजा-पाठ
(स) धर्म (द) शिक्षा

उत्तर– 1. (अ) **2.** (ब) **3.** (स) **4.** (ब) **5.** (अ)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. साँच बराबर .... नहीं, झूठ बराबर पाप।
2. बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ .... ।
3. ऐसी .... बोलिए, मन का आपा खोय।
4. बिन पानी साबुन बिना, ... करै सुभाय।
5. साधू ऐसा चाहिए, जैसा .... सुभाय।

उत्तर– 1. तप **2.** खजूर **3.** बानी **4.** निर्मल **5.** सूप।

सत्य/असत्य

1. कबीरदास जी मन की तुलना पेड़ से करते हैं। ( )
2. व्यक्ति को अपनी संगति का चुनाव बहुत सोच-समझकर करना चाहिए। ( )
3. एक साधू को सूप के स्वभाव जैसा होना चाहिए। ( )
4. निंदक को दूर रखना चाहिए। ( )
5. हमें हमेशा विनम्र और मधुर वाणी का प्रयोग करना चाहिए। ( )

उत्तर– 1. असत्य **2.** सत्य **3.** सत्य **4.** असत्य **5.** सत्य

सही मिलान

स्तंभ (अ)	स्तंभ (ब)
1. कबिरा मन पंछी भया	(अ) जैसा सूप सुभाय
2. साधू ऐसा चाहिए	(ब) आपहुँ सीतल होय
3. निंदक नियरे राखिए	(स) अति की भली न धूप
4. औरन को सीतल करै	(द) भावै तहवाँ जाय
5. अति का भला न बरसना	(य) आँगन कुटी छवाय

उत्तर– 1. (द) **2.** (अ) **3.** (य) **4.** (ब) **5.** (स)।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. ''बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर'' में 'खजूर' किस प्रतीक के रूप में आया है?

उत्तर– 'खजूर' निरर्थक बड़प्पन के प्रतीक रूप में आया है।

2. ''गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागौं पाँय'' में कबीर जी किस दुविधा को व्यक्त करते हैं?

उत्तर— इस दोहे में कबीर जी इस दुविधा को व्यक्त करते है कि गुरु और ईश्वर में पहले किसके पैर छुएँ।

3. ''ऐसी बानी बोलिए'' दोहे में कबीर किस प्रकार की वाणी की वकालत करते हैं?

उत्तर— इस दोहे में कबीर जी मधुर और विनम्र वाणी की वकालत करते हैं।

4. कबीर के अनुसार हमें कैसा स्वभाव बनाने की कोशिश करनी चाहिए?

उत्तर— कबीर के अनुसार हमें निर्मल स्वभाव बनाने की कोशिश करनी चाहिए।

5. अच्छी संगति हमें कैसे संस्कार देती है?

उत्तर— अच्छी संगति हमें अच्छे संस्कार देती है।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. कबीरदास जी कैसी वाणी बोलने की बात कहते हैं?

उत्तर— कबीरदास जी कहते हैं कि ऐसी वाणी बोलनी चाहिए जो मन के अहंकार को खत्म करे और दूसरों को शीतलता प्रदान करे।

2. कबीर के अनुसार सत्य क्या है?

उत्तर— कबीर के अनुसार, सत्य ही ईश्वर है और सत्य बोलना सबसे बड़ा तप है। झूठ बोलना सबसे बड़ा पाप है।

3. कबीर के अनुसार, गुरु का महत्व क्या है?

उत्तर— कबीर के अनुसार, गुरु का स्थान भगवान से भी ऊपर है क्योंकि गुरु ही अपने शिष्य को भगवान तक पहुँचने का मार्ग दिखाते हैं। गुरु के बिना ज्ञान प्राप्त करना असंभव है।

4. सच और झूठ में क्या अन्तर है?

उत्तर— सच बोलने के समान कोई तपस्या नहीं है। सच्चा आदमी नेक होता है। झूठ बोलने या झूठे व्यवहार से बढ़कर कोई पाप या बुरा कर्म नहीं है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. हमें खजूर के पेड़ से क्या शिक्षा मिलती है?

उत्तर— खजूर का पेड़ बेशक बहुत बड़ा होता है लेकिन न तो वह किसी को छाया देता है और फल भी बहुत ऊँचाई पर लगते हैं। इसी तरह सिर्फ आकार में बड़े होने से कुछ नहीं होता, लम्बे होने से भी फायदा नहीं। अगर हम किसी का भला नहीं कर पा रहे हैं तो ऐसे बड़े होने से भी कोई फायदा नहीं है। खजूर के पेड़ से यही सीख मिलती है।

2. मधुर वाणी बोलने से औरों को सुख और अपने मन को शीतलता कैसे प्राप्त होती है?

उत्तर— मधुर वाणी बोलने से औरों को सुख और अपने मन को शीतलता प्राप्त होती है, क्योंकि मधुर वाणी बोलने से मन का अहंकार समाप्त हो जाता है। यह हमारे मन को शीतलता प्रदान करती है तथा सुनने वालों को भी सुख की तथा प्रसन्नता की अनुभूति कराती है। इसलिए हमेशा हमें मधुर वाणी बोलनी चाहिए।

6 एक मिट्टी भर टोकरी

अभ्यास-प्रश्नोत्तर

पाठ से

आइए, अब हम इस पाठ पर विस्तार से चर्चा करें। नीचे दी गई गतिविधियाँ इस कार्य में आपकी सहायता करेंगी।

मेरी समझ से

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उपयुक्त उत्तर के सम्मुख तारा (☆) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।

1. ज़मींदार को झोंपड़ी हटाने की आवश्यकता क्यों लगी?

- झोंपड़ी जर्जर हो चुकी थी
- झोंपड़ी रास्ते में बाधा थी
- वह अहाते का विस्तार करना चाहता था
- वृद्धा से उसका कोई पुराना झगड़ा था

उत्तर— ☆ झोंपड़ी रास्ते में बाधा थी।

☆ वह अहाते का विस्तार करना चाहता था।

2. वृद्धा ने मिट्टी ले जाने की अनुमति कैसे माँगी?

- क्रोध और झगड़ा करके
- अदालत से अनुमति लेकर
- विनती और नम्रता से
- चुपचाप उठाकर ले गई

उत्तर— ☆ विनती और नम्रता से

3. वृद्धा की पोती का व्यवहार किस भाव को दर्शाता है?

- दया
- लगाव
- गुस्सा
- डर

उत्तर— ☆ लगाव

4. कहानी का अंत कैसा है?

- दुखद
- सुखद
- प्रेरणादायक
- सकारात्मक

उत्तर— ☆ सुखद ☆ प्रेरणादायक ☆ सकारात्मक

(ख) हो सकता है कि आपके समूह के साथियों ने अलग-अलग उत्तर चुने हों। अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुनें?

उत्तर— ● सभी मित्रों के उत्तर समान हैं।

● पाठ के आधार पर इन प्रश्नों के उत्तर यहीं बनते हैं।

● ये उत्तर इन प्रश्नों के लिए सटीक हैं।

मिलकर करें मिलान

(क) पाठ में से चुनकर कुछ वाक्य नीचे दिए गए हैं। प्रत्येक वाक्य के सामने दो-दो निष्कर्ष दिए गए हैं। अपने समूह में इन पर चर्चा कीजिए और इन्हें इनके सर्वाधिक उपयुक्त निष्कर्षों से मिलाइए।

क्र. वाक्य	निष्कर्ष
1. अब यही उसकी पोती इस वृद्धाकाल में एकमात्र आधार थी।	● वृद्धावस्था में वृद्धा का सहारा उसकी पोती ही थी। ● वृद्धावस्था में पोती का सहारा वृद्धा थी।
2. बाल की खाल निकालने वाले वकीलों की थैली गरम कर उन्होंने अदालत से उस झोंपड़ी पर अपना कब्जा कर लिया।	● ज़मींदार ने वकीलों से सलाह लेकर झोंपड़ी पर न्यायपूर्वक कब्जा किया। ● ज़मींदार ने वकीलों को पैसे देकर कानूनी दावपेंच से झोंपड़ी पर कब्जा किया।
3. आपने एक टोकरी भर मिट्टी नहीं उठाई जाती और इस झोंपड़ी में तो हजारों टोकरियाँ मिट्टी पड़ी हैं।	● वृद्धा ने ज़मींदार को कमजोर साबित करने के लिए टोकरी उठाने को कहा। ● वृद्धा ने टोकरी को प्रतीक बनाकर ज़मींदार को उसके अन्याय का अनुभव कराया।
4. ज़मींदार साहब धन-मद से गर्वित हो अपना कर्तव्य भूल गए थे।	● धन और अहंकार ने ज़मींदार को मानवीयता और करुणा से दूर कर दिया था। ● संपत्ति के घमंड को भूलकर ज़मींदार अपने कर्तव्यों को पूरा कर रहे थे।
5. कृतकर्म का पश्चाताप कर उन्होंने वृद्धा से क्षमा माँगी।	● वृद्धा ने अपने व्यवहार पर पछताकर ज़मींदार से क्षमा माँगी। ● अपने द्वारा किए अन्याय पर पछताकर जमीदार ने क्षमा माँगी।

6. उसका भार आप जन्म-भर कैसे उठा सकेंगे?	● वृद्धा ने प्रतीकात्मक रूप से कहा कि अन्याय का नैतिक भार उठाना आसान नहीं है। ● वृद्धा ने ज़मींदार की उम्र और शक्ति पर व्यंग्य करते हुए बात कही।
7. कृपा करके इस टोकरी को ज़रा हाथ लगाइए जिससे कि मैं उसे अपने सिर पर धर लूँ।	● वृद्धा ने चतुराई से ज़मींदार को शर्मिंदा करने की योजना बनाई। ● वृद्धा ने टोकरी उठाने में सहायता के लिए ज़मींदार से विनम्र निवेदन किया।
8. उसे पुरानी बातों का स्मरण हुआ और उसकी आँखों से आँसू की धारा बहने लगी।	● झोंपड़ी में प्रवेश करते ही वृद्धा पुराने दिनों के कारण भावुक हो गई। ● झोंपड़ी में जाकर वृद्धा डर गई कि ज़मींदार उसे फिर से बाहर निकाल देगा और रोने लगी।

उत्तर–

क्र. पंक्ति	**निष्कर्ष**
1. अब यही उसकी पोती इस वृद्धाकाल में एकमात्र आधार थी।	● वृद्धावस्था में वृद्धा का सहारा उसकी पोती ही थी।
2. बाल की खाल निकालने वाले वकीलों की थैली गरम कर उन्होंने अदालत से उस झोंपड़ी पर अपना कब्जा कर लिया।	● ज़मींदार ने वकीलों को पैसे देकर कानूनी दावपेंच से झोंपड़ी पर कब्जा कर लिया।
3. आपसे एक टोकरी भर मिट्टी नहीं उठाई जाती और इस झोंपड़ी में तो हजारों टोकरियाँ मिट्टी पड़ी है।	● वृद्धा ने टोकरी को प्रतीक बनाकर ज़मींदार को उसके अन्याय का अनुभव कराया।
4. ज़मींदार साहब धन-मद से गर्वित हो अपना कर्तव्य भूल गए थे।	● धन और अहंकार ने ज़मींदार को मानवीयता और करुणा से दूर कर दिया था।
5. कृतकर्म का पश्चाताप कर उन्होंने वृद्धा से क्षमा माँगी।	● अपने द्वारा किए अन्याय पर पछताकर जमींदार ने क्षमा माँगी।
6. उसका भार आप जन्म-भर कैसे उठा सकेंगे?	● वृद्धा ने प्रतीकात्मक रूप से कहा कि अन्याय का नैतिक भार उठाना आसान नहीं है।
7. कृपा करके इस टोकरी को जरा हाथ लगाइए जिससे कि मैं उसे अपने सिर पर धर लूँ।	● वृद्धा ने टोकरी उठाने में सहायता के लिए ज़मींदार से विनम्र निवेदन किया।
8. उसे पुरानी बातों का स्मरण हुआ और उसकी आँखों से आँसू की धारा बहने लगी।	● झोंपड़ी में प्रवेश करते ही वृद्धा पुराने दिनों के कारण भावुक हो गई।

(ख) अपने मित्रों के उत्तर से अपने उत्तर मिलाइए और चर्चा कीजिए कि आपने कौन-से निष्कर्षों का चुनाव किया है और क्यों?

उत्तर– संकेत– मिलान करने पर मेरे व मेरे मित्रों के सभी उत्तर समान थे। केवल बिंदु 7 का उत्तर भिन्न था। हमने इन सभी निष्कर्षों का चुनाव पाठ में निहित भावों के आधार पर किया।

मेरे एक मित्र ने बिंदु 7 का भिन्न निष्कर्ष इसलिए चुना– उसे लगता था कि वृद्धा पूर्व नियोजित योजना के

अनुसार अपनी झोंपड़ी से मिट्टी लेने आई थी, जिससे वह ज़मींदार से अपनी झोंपड़ी वापस पा सके।

पंक्तियों पर चर्चा

पाठ से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपने समूह में साझा कीजिए और लिखिए।

(क) ''आपसे एक टोकरी भर मिट्टी नहीं उठाई जाती और इस झोंपड़ी में तो हजारों टोकरियाँ मिट्टी पड़ी है। उसका भार आप जन्म-भर कैसे उठा सकेंगे?''

उत्तर– ज़मींदार ने अहंकार में आकर विधवा वृद्धा की झोंपड़ी पर अपना कब्जा कर लिया था किन्तु विधवा को अपनी झोंपड़ी से बहुत लगाव था। यह झोंपड़ी उसके परिश्रम और परिवार जनों की स्मृतियों का केन्द्र थी। वह झोंपड़ी से एक टोकरी मिट्टी नहीं, अपनी कुछ स्मृतियाँ ले जा रही थी। इसलिए ज़मींदार जब वह टोकरी नहीं उठा पाया, तब वृद्धा ने सांकेतिक रूप में कहा कि उसकी झोंपड़ी ऐसी ही अनेक स्मृतियों का ढेर है। जब वह जरा-सी मिट्टी (स्मृतियों) का बोझ नहीं उठा पा रहा, तब वह इतनी सारी स्मृतियों का भार जीवन-भर कैसे उठाएगा, जिसे उसने वृद्धा से छीन लिया है।

(ख) ''ज़मींदार पहले तो बहुत नाराज हुए, पर जब वह बार-बार हाथ जोड़ने लगी और पैरों पर गिरने लगी तो उनके भी मन में कुछ दया आ गई। किसी नौकर से न कहकर आप ही स्वयं टोकरी उठाने को आगे बढ़े। ज्यों ही टोकरी को हाथ लगाकर ऊपर उठाने लगे त्यों ही देखा कि यह काम उनकी शक्ति के बाहर है।''

उत्तर– मिट्टी की वह टोकरी सांकेतिक रूप से वृद्धा की स्मृतियों और ज़मींदार के अन्याय और अहंकार का प्रतीक है। यही कारण कि ज़मींदार इस टोकरी को उठाने में असमर्थ रहा। क्योंकि व्यक्ति अपने घमंड और पापों का भार नहीं उठा पाता है।

सोच-विचार के लिए

पाठ को पुनः ध्यान से पढ़िए, पता लगाइए और लिखिए।

(क) आपके विचार से कहानी का सबसे प्रभावशाली पात्र कौन है और क्यों?

उत्तर– वृद्धा इस कहानी की सबसे प्रभावशाली पात्र है। क्योंकि वह अपनी विनम्रता और बुद्धि से ज़मींदार को प्रभावित करके उससे अपनी झोंपड़ी वापस भी लेती है। साथ ही, ज़मींदार के अहम् को भी दूर करके उसे एक अच्छा व्यक्ति बनाती है।

(ख) वृद्धा की पोती ने खाना क्यों छोड़ दिया था?

उत्तर– वृद्धा की पोती बहुत छोटी है। उसे अपनी झोंपड़ी की याद आती है। वह वापस उसी झोंपड़ी में जाना चाहती थी इसलिए उसने खाना छोड़ दिया था।

(ग) ज़मींदार ने झोंपड़ी पर कब्जा कैसे किया?

उत्तर– ज़मींदार ने पैसों के लालची कुछ वकीलों को पैसे देकर अदालत में कागजी कार्यवाही में घपला करके झोंपड़ी को अपने हिस्से में सिद्ध कर दिया। अदालत के माध्यम से उसने झोंपड़ी पर कब्जा कर लिया।

(घ) ''महाराज, क्षमा करें तो एक विनती है। ज़मींदार साहब के सिर हिलाने पर उसने कहा...। यहाँ'' ज़मींदार द्वारा सिर हिलाने की इस क्रिया का क्या अर्थ है?

उत्तर– इस क्रिया का अर्थ है– ज़मींदार ने वृद्धा को अपनी बात कहने की स्वीकृति दी।

(ङ) ''किसी नौकर से न कहकर आप ही स्वयं टोकरी उठाने आगे बढ़े।'' यहाँ ज़मींदार के व्यवहार में परिवर्तन का आरंभ दिखाई देता है। पहले ज़मींदार का व्यवहार कैसा था? इस घटना के बाद उसके व्यवहार में क्या परिवर्तन आया?

उत्तर– पहले ज़मींदार को अपने पैसे का घमंड था। किन्तु जब वृद्धा ने उससे बार-बार प्रार्थना की, तब उसका व्यवहार बदल गया और वह स्वयं वृद्धा की सहायता करने के लिए तत्पर हो गया।

(च) ''उन्होंने वृद्धा से क्षमा माँगी और उसकी झोंपड़ी वापस दे दी।'' ज़मींदार ने ऐसा क्यों किया?

उत्तर– ज़मींदार को अपनी गलती का एहसास हो गया था कि वह धन के घमंड में आकर इंसानियत भूल गया और एक वृद्धा से उसका बसेरा छीन बैठा। यह बात समझ आते ही उसने वृद्धा से क्षमा माँगकर उसे उसकी झोंपड़ी वापस दे दी।

अनुमान और कल्पना से

(क) यदि वृद्धा की पोती ज़मींदार से स्वयं बात करती तो वह क्या कहती?

उत्तर– वह कहती कि वह उसकी झोंपड़ी उसे वापस कर दें। यह झोंपड़ी ही उसका घर है। उसे अपनी झोंपड़ी की बहुत याद आ रही है। उसे दूसरी जगह रहना अच्छा नहीं लग रहा है। अत: वह उसकी झोंपड़ी वापस कर दे।

(ख) यदि आप ज़मींदार की जगह होते तो क्या करते?

उत्तर– यदि मैं ज़मींदार की जगह होता तो वृद्धा की झोंपड़ी कभी नहीं छीनता अपितु उसकी स्थिति ज्ञात होने के बाद उसकी यथा संभव सहायता करने की कोशिश करता।

(ग) ज़मींदार को टोकरी उठाने में सफलता क्यों नहीं मिली होगी?

उत्तर– ज़मींदार को वह टोकरी बहुत भारी लगी, इसलिए उसे टोकरी उठाने में सफलता नहीं मिली होगी। अथवा अपने गलत कार्यों के कारण वह वृद्धा के परिश्रम का भार नहीं उठा पाया।

(घ) ''झोंपड़ी में तो हजारों टोकरियाँ मिट्टी पड़ी हैं।...''। यहाँ केवल मिट्टी की बात की जा रही है या कुछ और बात भी छिपी है?

(संकेत– मिट्टी किस बात की प्रतीक हो सकती है? मिट्टी के बहाने वृद्धा क्या कहना चाहती है?)

उत्तर– यहाँ केवल मिट्टी की बात नहीं की जा रही है। यहाँ वृद्धा के परिश्रम और स्मृतियों का प्रतीक है। मिट्टी के बहाने वृद्धा यह कहना चाहती है कि ज़मींदार ने अन्यायपूर्वक उससे उसकी स्मृतियों को छीन लिया है और वह जीवन भर इसका भार नहीं उठा पाएगा।

(ङ) यह कहानी आज से लगभग सवा सौ साल पहले लिखी गई थी। इस कहानी के आधार पर बताइए कि भारत में स्त्रियों को किन-किन चुनौतियों का सामना करना पड़ता होगा?

उत्तर– भारत में सवा सौ साल पहले महिलाओं को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता था विशेषकर विधवाओं को। उनकी स्थिति बहुत दयनीय थी। उन्हें समाज में सम्मान की दृष्टि से नहीं देखा जाता था। वे आर्थिक रूप से कमजोर होती थीं और अक्सर सामाजिक अन्याय का शिकार होती थीं।

बदली कहानी

कल्पना कीजिए कि कहानी कैसे आगे बढ़ती–

- यदि ज़मींदार टोकरी उठाने से मना कर देता।

उत्तर– तब वृद्धा को मजबूरन वह टोकरी वहीं छोड़कर जानी पड़ती अथवा वह उसे घसीटकर ले जाती। इस स्थिति में ज़मींदार का हृदय परिवर्तन नहीं होता और वृद्धा को अपनी झोंपड़ी कभी वापस नहीं मिलती। वृद्धा वहाँ से निराश होकर लौट जाती।

- यदि ज़मींदार टोकरी उठा लेता।

उत्तर– ज़मींदार टोकरी उठाकर वृद्धा के सिर पर रख देता। वह वृद्धा को वहाँ से जाने के लिए कहता और उसकी झोंपड़ी कभी वापस नहीं करता। वृद्धा आँसू बहाती हुई चुपचाप चली जाती।

- यदि ज़मींदार मिट्टी देने से मना कर देता।

उत्तर– तो वृद्धा को वहाँ से खाली हाथ वापस लौटना पड़ता। इस स्थिति में उसे न मिट्टी मिलती और इस प्रकार झोंपड़ी वापस पाने की सभी संभावनाएँ ही समाप्त हो जातीं।

- यदि ज़मींदार एक स्त्री होती।

उत्तर– तो शायद वह कभी वृद्धा की झोंपड़ी नहीं छीनती और यदि ले भी लेती तो उसकी स्थिति देखकर वह जल्दी वापस कर देती।

- यदि पोती ज़मींदार से अपनी झोंपड़ी वापस माँगती।

उत्तर– इस स्थिति में शायद ज़मींदार का दिल पसीज जाता और वह बिना देरी किए उसकी झोंपड़ी उसे लौटा देता।

(अपने समूह के साथ इनमें से किसी एक स्थिति को चुनकर चर्चा कीजिए। इस बदली हुई कहानी को मिलकर लिखिए।)

उत्तर– वृद्धा अपनी टोकरी लेकर ज़मींदार के पास अपनी झोंपड़ी से मिट्टी लेने के लिए जाती है। ज़मींदार उसकी झोंपड़ी के ही पास खड़ा हुआ था। वृद्धा ज़मींदार से विनती करते हुए बोली, ''महाराज! यदि आप आज्ञा दें तो इस झोंपड़ी से एक टोकरी मिट्टी ले लूँ।'' ज़मींदार

उसकी प्रार्थना को अनसुना कर देता है। बेचारी वृद्धा बहुत अनुनय-विनय करती है, किन्तु ज़मींदार अपने घमंड में उसके दु:ख और मजबूरी को नहीं समझना चाहता है। वृद्धा दु:खी होकर अपने नए निवास पर लौट जाती है। जहाँ उसकी छोटी-सी पोती आशा लिए उसका इंतजार कर रही थी। अपनी पोती को देखते ही वृद्धा की आँखों में आँसू आ जाते हैं।

'कि' और 'की' का उपयोग

इन वाक्यों में रेखांकित शब्दों के प्रयोग पर ध्यान दीजिए–

इससे भरोसा है कि वह रोटी खाने लेगी।	यहाँ ''कि'' एक संयोजक के रूप में प्रयोग हुआ है। संयोजक का अर्थ होता है मिलाने वाला। संयोजक शब्दों या वाक्यों को जोड़ने के लिए प्रयोग किए जाते हैं। यह हमें बताता है–क्या कहा गया, क्या सोचा गया, क्या देखा गया आदि।

जमींदार के महल के पास एक गरीब, अनाथ वृद्धा की झोंपड़ी थी।	यहाँ ''की'' एक संबंधसूचक कारक शब्द है। इसका प्रयोग संज्ञा या सर्वनाम का किसी अन्य शब्द के साथ संबंध बताने के लिए किया जाता है। अन्य संबंधकारक शब्द हैं–का और के।

अब नीचे दिए गए वाक्यों में इन दोनों शब्दों का उपयुक्त प्रयोग कीजिए–

1. वृद्धा ने कहा .... वह झोंपड़ी को लेने नहीं आई है।
2. वह अपनी पोती.......चिंता में दु:खी हो गई थी।
3. वृद्धा ने प्रार्थना ...., ... टोकरी को जरा हाथ लगाइए।
4. पोती हमेशा कहती थी .... वह अपने घर में ही खाना खाएगी।
5. झोंपड़ी .... मिट्टी से वृद्धा चूल्हा बनाना चाहती थी।
6. उसे विश्वास था .... मिट्टी का चूल्हा देखकर पोती खाना खाने लगेगी।
7. वृद्धा .... आँखों से आँसुओं .... धारा बहने लगी।
8. उसने यह सोचा .... झोंपड़ी से मिट्टी ले जाकर चूल्हा बनाऊँगी।
9. वृद्धा के मन .... पीड़ा उसकी बातों में झलक रही थी।
10. ज़मींदार इतने लज्जित हुए .... टोकरी उठाने की बात मान ली।
11. उस झोंपड़ी .... हर दीवार वृद्धा .... यादों से भरी थी।

उत्तर–1. वृद्धा ने कहा कि वह झोंपड़ी को लेने नहीं आई है।

2. वह अपनी पोती की चिंता में दु:खी हो गई थी।

3. वृद्धा ने प्रार्थना की, कि टोकरी को जरा हाथ लगाइए।

4. पोती हमेशा कहती थी कि वह अपने घर में ही खाना खाएगी।

5. झोंपड़ी की मिट्टी से वृद्धा चूल्हा बनाना चाहती थी।

6. उसे विश्वास था कि मिट्टी का चूल्हा देखकर पोती खाना खाने लगेगी।

7. वृद्धा की आँखों से आँसुओं की धारा बहने लगी।

8. उसने यह सोचा कि झोंपड़ी से मिट्टी ले जाकर चूल्हा बनाऊँगी।

9. वृद्धा के मन की पीड़ा उसकी बातों में झलक रही थी।

10. ज़मींदार इतने लज्जित हुए कि टोकरी उठाने की बात मान ली।

11. उस झोंपड़ी की हर दीवार वृद्धा की यादों से भरी थी।

मुहावरे

''बाल की खाल निकालने वाले वकीलों की थैली गरम कर उन्होंने अदालत से झोंपड़ी पर अपना कब्जा कर लिया।''

(क) इस वाक्य में मुहावरों की पहचान करके उन्हें रेखांकित कीजिए।

उत्तर– ''बाल की खाल निकालने वाले वकीलों की थैली गरम कर उन्होंने अदालत से झोंपड़ी पर अपना कब्जा कर लिया।''

(ख) 'बाल' शब्द से जुड़े निम्नलिखित मुहावरों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए।

- बाल बाँका न होना– कुछ भी कष्ट या हानि न पहुँचना। पूर्ण रूप से सुरक्षित रहना।
- बाल बराबर– बहुत सूक्ष्म। बहुत महीन या पतला।
- बाल बराबर फर्क होना– जरा-सा भी भेद होना। सूक्ष्मतम अन्तर होना।
- बाल-बाल बचना– कोई विपत्ति आने या हानि पहुँचने में बहुत थोड़ी कमी रह जाना।

उत्तर–● गहरे गड्ढे में गिरने पर भी बच्चे का बाल बाँका न हुआ।

● मीना ने दूर रहते हुए भी अपनी मित्रता में बाल बराबर भी दूरी नहीं आने दी।

● राम और मोहन दोनों की लिखावट में बाल बराबर फर्क नहीं है।

● सड़क दुर्घटना में सुदेश बाल-बाल मरने से बचा।

काल

नीचे दिए गए वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़िए–

- इस झोंपड़ी में से एक टोकरी भर मिट्टी लेकर उसी का चूल्हा बनाकर रोटी पकाऊँगी।
- इस झोंपड़ी में से एक टोकरी भर मिट्टी लेकर उसकी का चूल्हा बनाकर रोटी पकाई।
- इस झोंपड़ी में से एक टोकरी भर मिट्टी लेकर उसी का चूल्हा बनाकर रोटी पका रही हूँ।

यहाँ रेखांकित शब्दों से पता चल रहा है कि कार्य होने का समय या काल क्या है। क्रिया के जिस रूप से यह पताचले कि कोई कार्य कब हुआ, हो रहा है या होने वाला है, उसे काल कहते हैं।

काल के तीन भेद होते हैं–

1. भूतकाल–यह बताता है कि कार्य पहले ही हो चुकी है।
2. वर्तमान कला–यह बताता है कि कार्य अभी हो रहा है या सामान्य रूप से होता रहता है।
3. भविष्य काल–यह बताता है कि कार्य आने वाले समय या भविष्य में होगा।

नीचे दिए गए वाक्यों को वर्तमान और भविष्य काल में बदलिए–

(क) वह गिड़गिड़ाकर बोली।

(ख) श्रीमान् ने आज्ञा दे दी।

(ग) उसकी आँखों से आँसू की धारा बहने लगी।

(घ) ज़मींदार साहब को अपने महल का अहाता उस झोंपड़ी तक बढ़ाने की इच्छा हुई।

(ङ) वह वृद्धा से क्षमा माँगते हैं और उसकी झोंपड़ी वापस दे दी।

उत्तर–(क) वर्तमान काल– वह गिड़गिड़ाकर बोलती है।

भविष्य काल– वह गिडगिड़ाकर बोलेगी।

(ख) वर्तमान काल– श्रीमान् आज्ञा देते हैं।

भविष्य काल– श्रीमान् आज्ञा देंगे।

(ग) वर्तमान काल– उसकी आँखों से आँसू की धारा बहती है।

भविष्य काल– उसकी आँखों से आँसू की धारा बहने लगेगी।

(घ) वर्तमान काल– ज़मींदार साहब को अपने महल का अहाता उस झोंपड़ी तक बढ़ाने की इच्छा होती है।

भविष्य काल– ज़मींदार साहब को अपने महल का अहाता उस झोंपड़ी तक बढ़ाने की इच्छा होगी।

(ङ) वर्तमान काल– वह वृद्धा से क्षमा माँगते हैं और उसकी झोंपड़ी वापस करते हैं।

भविष्य काल– वह वृद्धा से क्षमा माँगेंगे और उसकी झोंपड़ी वापस कर देंगे।

वचन की पहचान

'उनके मन में कुछ दया आ गई।'

'उसकी आँखें खुल गईं।'

ऊपर दिए गए रेखांकित शब्दों में क्या अंतर है और क्यों? आपस में चर्चा करके पता लगाइए।

आपने ध्यान दिया होगा कि शब्द में एक अनुस्वार-भर के अन्तर से उसके अर्थ में अंतर आ जाता है।

नीचे दिए गए रिक्त स्थानों में उपयुक्त शब्द भरिए–

(क) वृद्धा झोंपड़ी के भीतर ....। (गई/गईं)

(ख) वृद्धा गिड़गिड़ाकर ....। (बोली/बोलीं)

(ग) पोती ने खाना-पीना छोड़ दिया ......। (है/हैं)

(घ) उसकी आँखों से आँसू की धारा बहने लगी ....। (थी/थीं)

(ङ) उसने अपनी टोकरी मिट्टी से भर ली और बाहर ले ....। (आई/आईं)

(च) झोंपड़ी में बसी पुरानी यादें वृद्धा को रुला ....। (गई/गईं)

(छ) पाठक देख सकते हैं कि कैसे एक छोटी-सी टोकरी ने बड़े बदलाव ला दिए .....। (है/हैं)

उत्तर– (क) गई (ख) बोली (ग) है (घ) थी (ङ) आई (च) गईं (छ) हैं।

कहानी की रचना

यह सुनकर वृद्धा ने कहा, ''महाराज, नाराज न हों तो...'' इस पंक्ति में लेखक ने जानबूझकर वृद्धा की कही हुई बात को अधूरा छोड़ दिया है। बात को अधूरा छोड़ने के लिए '...' का उपयोग किया गया है। इस प्रकार के वाक्यों और प्रयोगों से कहानी का प्रभाव और बढ़ जाता है। अनेक बार कहानी में नाटकीयता लाने के लिए भी इस प्रकार के प्रयोग किए जाते हैं।

(क) आपको इस कहानी में ऐसी अनेक विशेषताएँ दिखाई देंगी। उन्हें अपने समूह के साथ मिलकर ढूँढ़िए और उनकी सूची बनाइए।

उत्तर– वह गिड़गिड़ाकर बोली, ''महाराज, अब तो झोंपड़ी तुम्हारी ही हो गई है। मैं उसे लेने नहीं आई हूँ। महाराज क्षमा करें तो एक विनती है।''

(नोट–उपर्युक्त उदाहरण के अतिरिक्त पाठ में अन्य कहीं अधूरा वाक्य नहीं जा रहा है।)

(ख) इस कहानी की कुछ विशेषताओं को नीचे दिया गया है। इनके उदाहरण कहानी से चुनकर लिखिए–

उत्तर–

कहानी की विशेषताएँ	कहानी से उदाहरण
1. **प्रश्नोत्तरी शैली**–कहानी में ऐसे प्रश्न हैं जो पाठक को सोचने पर विवश कर देते हैं।	• आपसे तो एक टोकरी भर मिट्टी उठाई नहीं जाती और इस झोंपड़ी में तो हजारों टोकरियाँ मिट्टी पड़ी है। उसका भार आप जन्म-भर कैसे उठा सकेंगे?
2. **वर्णनात्मकता**–लेखक ने जगहों और भावनाओं का ऐसा चित्र खींचा है कि पाठक दृश्य को देख सकता है।	• ज़मींदार जब अनेक प्रयास करने पर भी टोकरी को उठाने में असफल रहे। यह एक वर्णनात्मक दृश्य है।
3. **भावात्मकता**–कहानी में करुणा, पछतावा और प्रेम जैसे गहरे भाव दिखते हैं।	• वृद्धा को अपनी झोंपड़ी से मिट्टी लेते समय पुरानी बातों का स्मरण होना। • वृद्धा की बात सुनने के पश्चात् ज़मींदार साहब को अपनी भूल का पछतावा होना।
4. **संवादात्मकता**–पात्रों के संवादों से कहानी आगे बढ़ती है और प्रभावी बनती है।	• वह गिड़गिड़ाकर बोली, ''महाराज, अब तो झोंपड़ी तुम्हारी ही हो गई है। मैं उसे लेने नहीं आई हूँ। महाराज क्षमा करें तो एक विनती है।'' • वह लज्जित होकर कहने लगे कि, ''नहीं, यह टोकरी हमसे न उठाई जाएगी।''
5. **नाटकीयता**–कुछ दृश्य इतने प्रभावशाली हैं कि वे नाटक जैसे लगते हैं।	• झोंपड़ी हथियाने के लिए ज़मींदार का वकीलों को पैसा खिलाना। • वृद्धा का एक टोकरी मिट्टी माँगना।
6. **चरित्र चित्रण**–पात्रों के गुण, स्वभाव और मन की स्थिति स्पष्ट रूप से दिखती है।	• वृद्धा ने जब से अपने पड़ोसी श्रीमान् की इच्छा सुनी, तब से वह मृतप्राय हो गई। • वृद्धा की बात का भाव समझकर ज़मींदार का घमंड खत्म होना।

शब्दकोश का उपयोग

आप जानते ही हैं कि हम शब्दकोश का प्रयोग करके शब्दों के विषय में अनेक प्रकार की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। नीचे कुछ शब्दों के अनेक अर्थ शब्दकोश से चुनकर दिए गए हैं। इन शब्दों के जो अर्थ इस कहानी के अनुसार सबसे उपयुक्त हैं, उन पर घेरा बनाइए–

वाक्य	रेखांकित शब्द का अर्थ
1. श्रीमान् के सब प्रयत्न निष्फल हुए।	धनी, शोभायुक्त, शोभावान्, संपत्तिशाली, संपन्न, पुरुषों के नाम के पूर्व आदर सूचनार्थ लगाया जाने वाला शब्द।
2. पतोहू भी एक पाँच बरस की कन्या को छोड़कर चल बसी थी।	अविवाहित लड़की, एक राशि का नाम, लड़की, बड़ी इलायची।
3. ज़मींदार साहब को अपने महल का अहाता उस झोंपड़ी तक बढ़ाने की इच्छा हुई।	राजा या रईस आदि के रहने का बहुत बड़ा और बढ़िया मकान, प्रासाद, अंतःपुर, पत्नी, उतरने की जगह।
4. वह तो कई जमाने से वहीं बसी थी।	काल, बहुत अधिक समय, सौभाग्य का समय, संसार, जगत, राज्यकाल, अवधि, युग, कार्यकाल, विलंब, देर, अतिकाल।
5. यही उसकी पोती इस वृद्धाकाल में एकमात्र आधार थी।	सहारा, आलंबन, पात्र(नाटक), नींव, बाँध, नहर, संबंध, बरतन, परिस्थितियाँ, अधिष्ठान, आश्रय देनेवाला, पालन करनेवाला।

उत्तर–1. धनी, संपत्तिशाली, संपन्न सूचक रूप में लगाया जाने वाला शब्द। 2. अविवाहित लड़की, लड़की 3. राजा या रईस आदि के रहने का बहुत बड़ा और बढ़िया मकान। 4. बहुत अधिक समय। 5. सहारा।

भावों की पहचान

''कृतकर्म का पश्चाताप कर उन्होंने वृद्धा से क्षमा माँगी...?

कहानी की इस पंक्ति से कौन–कौन से भाव प्रकट हो रहे हैं? सही पहचाना, इस पंक्ति से पश्चाताप और क्षमा के भाव प्रकट हो रहे हैं। अब नीचे दी गई पंक्तियों में प्रकट हो रहे भावों से उनका मिलान कीजिए।

क्रम पंक्तियाँ	भाववाचक संज्ञा
1. वह लज्जित होकर कहने लगे.... 'नहीं, वह टोकरी हमसे न उठाई जाएगी।'	ममता/स्नेह
2. वृद्धा के उपर्युक्त वचन सुनते ही उनकी आँखें खुल गईं।	दुख/पीड़ा
3. उनके मन में कुछ दया आ गई।	विनम्रता/विनय
4. इससे भरोसा है कि वह रोटी खाने लगेगी।	अहंकार/घमंड
5. महाराज क्षमा करें तो एक विनती है।	बोध/आत्मज्ञान
6. अब यही उसकी पोती इस वृद्धाकाल में एकमात्र आधार थी।	आस्था/विश्वास
7. ज़मींदार साहब धन–मद से गर्वित हो अपना कर्तव्य भूल गए थे।	जुड़ाव/मोह
8. उस झोंपड़ी में उसका मन ऐसा कुछ लग गया था कि बिना मरे वहाँ से वह निकलना ही नहीं चाहती थी।	करुणा/दया

9. जब उसे अपनी पूर्वस्थिति की याद आ जाती तो मारे दुख के फूट-फूटकर रोने लगती थी।	क्रूरता/अन्याय
10. बाल की खाल निकालने वाले वकीलों की थैली गरम कर उन्होंने अदालत से झोंपड़ी पर अपना कब्जा कर लिया।	लज्जा/पछतावा

उत्तर– 1. लज्जा/पछतावा, 2. बोध/आत्मज्ञान, 3. करुणा/दया, 4. आस्था/विश्वास, 5. विनम्रता/विनय, 6. ममता/स्नेह, 7. अहंकार/घमंड, 8. जुड़ाव/मोह, 9. दु:ख/पीड़ा, 10. क्रूरता/अन्याय

वाक्य विस्तार

'वृद्धा पहुँची।'

यह केवल दो शब्दों से बना एक वाक्य है लेकिन हम इस वाक्य को बड़ा भी बना सकते हैं–

'वह वृद्धा हाथ में एक टोकरी लेकर वहाँ पहुँची।'

अब बात कुछ अच्छी तरह समझ में आ रही है। किंतु इसी वाक्य को हम और विस्तार भी दे सकते हैं, जैसे–

'थकी हुई आँखों और काँपते हाथों में टोकरी लिए वृद्धा धीरे-धीरे दरवाजे पर पहुँची।

अब यह वाक्य अनेक अर्थ और भाव व्यक्त कर रहा है। अब इसी प्रकार नीचे दिए गए वाक्यों का कहानी को ध्यान में रखते हुए विस्तार कीजिए। प्रत्येक वाक्य में लगभग 15-20 शब्द हो सकते हैं।

1. एक झोंपड़ी थी।
2. श्रीमान् टहल रहे थे।
3. वह खाने लगेगी।
4. वृद्धा भीतर गई।
5. आगे बढ़े।

उत्तर–1. ज़मींदार के महल के सामने एक विधवा वृद्धा की बहुत पुरानी झोंपड़ी थी।

2. वृद्धा की झोंपड़ी पर कब्जा करने के बाद श्रीमान् उसकी झोंपड़ी के सामने टहल रहे थे।

3. वृद्धा को विश्वास था कि यदि वह अपनी झोंपड़ी की मिट्टी से चूल्हा बनाएगी तो (उसकी पोती) वह खाना खाने लगेगी।

4. टोकरी में मिट्टी भरने के लिए वृद्धा झोंपड़ी के भीतर गई।

5. वृद्धा के अनेक बार प्रार्थना करने पर ज़मींदार मिट्टी की टोकरी को उठाकर वृद्धा के सिर पर रखने के लिए आगे बढ़े।

संवाद फोन पर

(क) कल्पना कीजिए कि वह कहानी आज के समय की है। ज़मींदार वृद्धा की पोती को समझाना चाहता है कि वह जिद छोड़ दे और भोजन कर ले। उसने पोती को फोन किया है। अपनी कल्पना से दोनों की बातचीत लिखिए।

उत्तर– (पोती– फोन की घंटी की आवाज सुनकर फोन उठाती है।)

पोती – हैलो, कौन बोल रहा है?

ज़मींदार – हैलो बेटा! मैं ज़मींदार बोल रहा हूँ।

पोती – ज़मींदार, वहीं ज़मींदार साहब बोल रहे हैं, जिन्होंने धोखे से हमारी झोंपड़ी छीन ली।

ज़मींदार – नहीं बेटा, तुम गलत सोच रही हो। वह मेरी ही जगह है, जहाँ तुम्हारी झोंपड़ी बनी थी।

ज़मींदार – नहीं, मैं झूठ नहीं बोल रहा। अच्छा सुनो बेटा! आज आपकी दादी मेरे पास आई थीं। उन्होंने मुझे बताया कि तुम भोजन नहीं कर रही हो।

पोती – हम्म, मैं तब तक नहीं खाऊँगी। जब तक आप हमारी झोंपड़ी नहीं लौटा देते।

ज़मींदार – यह गलत बात है। किसी की वस्तु पर अपना अधिकार नहीं करते। अत: अब अपनी जिद छोड़कर भोजन कर लो। आपकी दादी आपके लिए बहुत चिंतित हैं। उनकी तो सोचो। अब एक अच्छे बच्चे की तरह भोजन करो और यह जिद छोड़ दो।

पोती – जी, मैं समझ गई।

ज़मींदार – बहुत अच्छा! अब मैं फोन रखता हूँ। ध्यान से भोजन कर लेना।

(**ख**) कल्पना कीजिए कि ज़मींदार और उसको कोई मित्र वृद्धा की झोंपड़ी हथियाने के बारे में मोबाइल पर लिखित संदेशों द्वारा चर्चा कर रहे हैं। मित्र उसे समझा रहा है कि वह झोंपड़ी न हड़पे। उनकी इस लिखित चर्चा को अपनी कल्पना से भाव मुद्रा (इमोजी) के साथ लिखिए।

उदाहरण–

- मित्र–इस विचार को छोड़ दो, तुम्हें आखिर किस बात की कमी है? 😀
- यज़मींदार– 😠 मुझे तुमसे उपदेश नहीं सुनना है।

उत्तर– मित्र– अजी, ज़मींदार साहब! क्या हाल हैं? 😀

ज़मींदार – बढ़िया हैं, 😠 आप बताओ। 😠

मित्र – मैंने सुना है– कि आप अपने सामने वाली झोंपड़ी पर कब्जा करना चाहते हो। 😀

ज़मींदार – सही सुना है, आपने। वह झोंपड़ी मेरे मार्ग की रुकावट है। 😠

मित्र – किंतु वह एक विधवा वृद्धा की झोंपड़ी है। वह बेचारी कहाँ जाएगी। 😀

ज़मींदार – कहीं भी जाए, मुझे क्या? 😠

मित्र – यह उचित नहीं है, मेरी मानो तो आप यह विचार त्याग दो। 😀

ज़मींदार – 😠 अब तुम मुझे उपदेश ना ही दो, तो बेहतर है।

मित्र – किंतु 🙂

ज़मींदार – किंतु परंतु कुछ नहीं, मैंने तय कर लिया है। चलो बाद में बात करते हैं। 😠

पोती की भावनाएँ

''मेरी पोती ने खाना-पीना छोड़ दिया है।''

(**क**) कहानी में एक वृद्धा की पोती एक महत्वपूर्ण पात्र है, भले ही उसका उल्लेख केवल एक–दो पंक्तियों में ही हुआ है। कल्पना कीजिए कि आप ही वह पोती हैं। आपको अपने घर से बहुत प्यार है। अपने घर को बचाने के लिए जिलाधिकारी को एक पत्र लिखिए।

उत्तर– सेवा में,

श्रीमान् जिलाधिकारी महोदय,

ग्वालियर, म.प्र.

विषय– घर पर अनाधिकृत कब्जे के सन्दर्भ में याचिका

महोदय,

मेरा नाम गीता है। मेरा मकान ग्वालियर के बिड़ला नगर क्षेत्र में है। श्रीमान्, मेरे घर के सामने एक धनाढ्य व्यक्ति का बंगला है। उसने धोखे से वकीलों के द्वारा झूठे कागजात तैयार करवा कर हमसे हमारा घर छीनकर, हमें बेघर कर दिया है।

आपसे अनुरोध है कि आप उचित कार्यवाही के माध्यम से हमारे घर को उस व्यक्ति के द्वारा किए गए अनाधि कृत कब्जे से मुक्त कराकर, हमें पुन: दिलाकर न्याय करें।

न्याय की आशा में।

प्रार्थी

गीता कुमारी

बिड़ला नगर,

ग्वालियर (म. प्र.)

(**ख**) मान लीजिए कि वृद्धा की पोती दैनंदिनी (डायरी) लिखा करती थी। कहानी की घटनाओं के आधार पर कल्पना कीजिए कि उसने अपनी डायरी में क्या लिखा होगा? स्वयं को पोती के स्थान पर रखते हुए वह दैनंदिनी लिखिए। उदाहरण के लिए–

मेरी दैनंदिनी

2 मई– आज दादी घर आईं तो बहुत परेशान थीं। मैंने बहुत पूछा। उन्होंने बताया।

उत्तर– 2 मई– आज दादी घर पर आईं तो बहुत परेशान थीं। मैंने बहुत पूछा। उन्होंने बताया कि हमारे घर के सामने रहने वाले ज़मींदार साहब अपनी कोठी का अहाता बढ़ाने के चक्कर में हमसे हमारा घर खाली करवाना चाहते हैं। दादी ने आगे बताया कि उन्होंने उस ज़मींदार को समझाने की बहुत कोशिश की, कि यह घर खाली करके हम कहाँ जाएँगे? इस घर से हमारी बहुत–सी यादें जुड़ी हैं। किंतु वह घमंडी ज़मींदार मानने

को तैयार ही नहीं है। इससे दादी को दो दिन का समय दिया है, मर्जी से घर खाली करने के लिए। यदि नहीं किया तो वह अपने पैसों की ताकत से कानूनी रूप से हमारे घर पर कब्जा कर लेगा। दादी की बात सुनकर मैं भी बहुत परेशान हूँ अब क्या होगा? क्या हमें यह घर खाली करना पड़ेगा? हम कहाँ जाएँगे।

पाठ से आगे

आपकी बात

(क) कहानी में वृद्धा की पोती अपने घर से बहुत प्यार करती थी। आपके घर से अपने लगाव का अनुभव बताइए।

उत्तर— संकेत— ● किसी भी अन्य स्थान पर जाकर अपने घर की बहुत याद आती है।

- अपने घर में एक सुकून और राहत मिलती है।
- दुनिया में सबसे प्यारा अपना घर लगता है।
- घर आकर मैं सारी चिंताओं और परेशानियों से स्वयं को दूर महसूस करता हूँ।

(ख) क्या कभी आपको किसी स्थान, वस्तु या व्यक्ति से इतना लगाव हुआ है कि उसे छोड़ना मुश्किल लगा हो? अपना अनुभव साझा कीजिए।

उत्तर— मुझे अपनी माँ से बहुत लगाव है। इस बात का एहसास मुझे तब हुआ जब मुझे हॉस्टल में रहने के लिए जाना पड़ रहा था। मुझे डर लग रहा था कि मैं वहाँ उनके बिना कैसे रहूँगा। मुझे उनकी आदत है। वह मेरी ताकत है। उनके बिना रहने की कल्पना ही मुश्किल है। मैंने उनसे प्रार्थना भी की मुझे हॉस्टल नहीं जाना, मैं आपके बिना नहीं रह सकता। मैं बहुत रोया भी था, किंतु यह मेरे भविष्य के लिए आवश्यक था, अतः मुझे जाना पड़ा था। वहाँ पहुँचकर भी मैं अपनी माँ को याद करके बहुत रोया।

(ग) कहानी में ज़मींदार अपने किए पर पश्चाताप कर रहा है। क्या आपने कभी किसी को उनके किए पर पछताते हुए देखा है? उस घटना के बारे में बताइए। यह भी बताइए कि उस पश्चाताप का क्या परिणाम निकला?

उत्तर— एक बार मेरे पिताजी ने बड़े भाई को बहुत डाँटा। उनकी डाँट से नाराज होकर भाई ने पिताजी की एक उपयोगी फाइल छिपा दी। जिसका परिणाम यह हुआ कि पिताजी बहुत बड़े घाटे में आ गए और उनके स्वास्थ्य पर इसका विपरीत प्रभाव पड़ा। यह देखकर भाई को बहुत दुख हुआ और अपनी भूल का एहसास हुआ। वह उस फाइल को लेकर तुरंत पिताजी के पास गए और उनसे अपने काम के लिए क्षमा माँगी। फाइल मिलने और अपनी भूल स्वीकार कर लेने के कारण पिताजी ने भाई को क्षमा कर दिया। साथ ही भविष्य में ऐसी गलती न करने की सलाह भी दी।

(घ) क्या कभी ऐसा हुआ कि आपने कोई काम गुस्से या अहंकार में किया हो और बाद में पछताए हों? फिर आपने क्या किया? उस अनुभव से आपने क्या सीखा?

उत्तर— हाँ, एक बार गुस्से में आकर मैंने अपनी कार्य-पुस्तिका फाड़ डाली। जब मेरा गुस्सा शांत हुआ, तब मुझे समझ आया कि मैंने कितनी बड़ी भूल कर दी। अपने गुस्से के कारण मैंने अपना ही नुकसान कर लिया। मैं बहुत पछताया कि मैंने गुस्से में इतनी बड़ी भूल कैसे कर दी। अब मैं इतना सारा कार्य कैसे पूरा कर पाऊँगा। अपनी इस भूल से मैंने यह सीखा कि गुस्से में कभी भी कोई कार्य नहीं करना चाहिए जिससे पछताना पड़े।

न्याय और समता

कहानी में आपने पढ़ा कि एक ज़मींदार ने लालच के कारण एक स्त्री का घर छीन लिया।

(क) क्या आपने किसी के साथ ऐसा अन्याय देखा, पढ़ा या सुना है? उसके बारे में बताइए।

उत्तर— संकेत—अखबार में आए-दिन ऐसी घटनाओं के समाचार छपते रहते हैं। वहाँ से एक खबर छाँटकर लिखें।

(ख) ऐसी स्थितियों से निपटने के लिए आप क्या-क्या कर सकते हैं? आपके आस-पास के लोग क्या-क्या कर सकते हैं?

उत्तर— ऐसी स्थितियों से निपटने के लिए हम पुलिस विभाग में सूचना दे सकते हैं। आस-पास के लोग एकत्रित होकर अनधिकृत कब्जा करने का प्रयास करने वाले व्यक्ति को रोकने का प्रयास कर सकते हैं। पीड़ित व्यक्ति की सहायता कर सकते हैं।

(ग) ''सच्ची शक्ति दया और न्याय में है।'' इस कथन पर अपने विचार लिखिए।

उत्तर– ''सच्ची शक्ति दया और न्याय में है।'' यह कथन एक वास्तविक सच्चाई को प्रकट करता है। इसका अर्थ है कि वास्तविक शक्ति शारीरिक बल, धन अथवा संपदा या सत्ता में नहीं है अपितु दयालुता और न्यायपूर्ण व्यवहार में निहित है। दया हमें दूसरों के प्रति सहानुभूति और करुणा प्रकट करने के लिए प्रेरित करती है, और न्याय हमें निष्पक्ष और ईमानदार व्यवहार करने की प्रेरणा देता है। इन दोनों गुणों के कारण ही समाज मजबूत और सद्भावनापूर्ण, बनता है। अत: हमें दयालुता और न्याय को अपने जीवन का हिस्सा बनाना चाहिए ताकि हम एक बेहतर समाज का निर्माण कर सकें।

आज की पहेली

नीचे दिए गए अक्षरों से सार्थक शब्द बनाइए–

1. ट् क र् ई ओ = टोकरी
2. य आ द = ...
3. ई ल व क् = ...
4. झ् ओ ई प ड़् अं = ...
5. ज द् आ म् ई र अं= ....
6. त् आ इ औ क ल्= ....

उत्तर– 1. टोकरी 2. दया 3. वकील 4. झोंपड़ी 5. ज़मींदार 6. इकलौता

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. माधवराव सप्रे का जन्म किस सन् में हुआ था?
(अ) सन् 1850 (ब) सन् 1871
(स) सन् 1860 (द) सन् 1961

2. ज़मींदार के महल के सामने क्या था?
(अ) बंगला (ब) मंदिर
(स) झोंपड़ी (द) नहर

3. कौन अपना अहाता बढ़ाना चाहता था?
(अ) वृद्धा (ब) पोती
(स) वकील (द) ज़मींदार

4. वृद्धा ज़मींदार से क्या न होने के लिए बोल रही थी?
(अ) नाराज (ब) बेईमान
(स) अव्यावहारिक (द) घमंडी

5. किसकी आँखें खुल गई?
(अ) वृद्धा की (ब) ज़मींदार की
(स) वकील की (द) पोती की

उत्तर– **1.** (ब) **2.** (स) **3.** (द) **4.** (अ) **5.** (ब)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. उसका .... और इकलौता .... भी उसी झोंपड़ी में मर गए थे।

2. एक दिन .... उस .... के आस–पास टहल रहे थे।

3. उसकी आँखों से .... की धारा बहने लगी।

4. उन्होंने अपनी सब .... लगाकर .... को उठाना चाहा।

5. उनके भी मन में कुछ .... आ गई।

उत्तर– **1.** पति, पुत्र **2.** श्रीमान्, झोंपड़ी **3.** आँसू **4.** ताकत, टोकरी **5.** दया

सत्य/असत्य

1. श्रीमान् बहुत दयालु व्यक्ति था। ( )

2. वृद्धा का परिवार बहुत सुखी था। ( )

3. ज़मींदार ने वकीलों को पैसे देकर झूठे कागजात तैयार करवाए। ( )

4. वृद्धा ज़मींदार के पास कुछ रुपए माँगने आई। ( )

5. ज़मींदार वृद्धा की टोकरी स्वयं उठाने लगे।( )

उत्तर– **1.** असत्य **2.** असत्य **3.** सत्य **4.** असत्य **5.** सत्य

सही मिलान

स्तंभ (अ)	स्तंभ (ब)
1. ज़मींदार	(अ) पाँच बरस
2. वृद्धा	(ब) झूठे कागजात
3. पोती	(स) महल
4. वकील	(द) मिट्टी
5. टोकरी	(य) विधवा

उत्तर– **1.** (स) **2.** (य) **3.** (अ) **4.** (ब) **5.** (द)

अतिलघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. झोंपड़ी किसकी थी?

उत्तर– झोंपड़ी एक गरीब अनाथ विधवा वृद्धा की थी।

2. कौन पाँच बरस की कन्या छोड़कर चल बसी?

उत्तर– पतोहू पाँच बरस की कन्या छोड़कर चल बसी।

3. श्रीमान् ने नौकरों को किसे हटाने के लिए कहा?

उत्तर– श्रीमान् ने नौकरों से विधवा वृद्धा को हटाने के लिए कहा।

4. झोंपड़ी के भीतर जाते ही वृद्धा की क्या दशा हुई?

उत्तर– झोंपड़ी के भीतर जाते ही वृद्धा को अपने पुराने दिनों की यादें सताने लगीं।

5. क्या, ज़मींदार ने वृद्धा से मिट्टी ले जाने के लिए मना कर दिया?

उत्तर– नहीं! ज़मींदार ने वृद्धा से मिट्टी ले जाने के लिए मना नहीं किया।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. वृद्धा क्या जानकर मृतप्राय सी क्यों हो गई थी?

उत्तर– वृद्धा श्रीमान् पड़ोसी की इच्छा का हाल जानकर मृतप्राय- सी हो गई क्योंकि श्रीमान् पड़ोसी उससे उसकी एकमात्र संपत्ति उसकी झोंपड़ी छीनना चाहता था।

2. वृद्धा की झोंपड़ी पर कब्जा करने के लिए जमींदार साहब ने क्यों किया?

उत्तर– वृद्धा की झोंपड़ी पर कब्जा करने के लिए ज़मींदार साहब ज़मींदारी चालें चलने लगे। उन्होंने बाल की खाल निकालने वाले वकीलों को पैसा खिलाया और अदालत को झोंपड़ी पर अपना कब्जा कर लिया।

3. ज़मींदार ने जब नौकरों को वृद्धा को वहाँ से हटाने के लिए कहा, तब उसने ज़मींदार से क्या कहा?

उत्तर– ज़मींदार ने जब नौकरों से वृद्धा को वहाँ से हटाने के लिए कहा, तब उसने गिड़गिड़ाकर ज़मींदार से कहा, ''महाराज! अब तो झोंपड़ी तुम्हारी ही हो गई है। मैं उसे लेने नहीं आई हूँ।''

4. विधवा की झोंपड़ी से कौन-सी यादें जुड़ी हुई थीं, जिसके कारण वह झोंपड़ी नहीं छोड़ना चाहती थी?

उत्तर– विधवा की झोंपड़ी से उसके जीने की अच्छी और बुरी सभी तरह की यादें जुड़ी हुई थीं। इसी झोंपड़ी में उसके पति और इकलौते पुत्र की मृत्यु हुई थी। इनके अलावा उसकी पतोहू भी अपनी पाँच वर्ष की बेटी को छोड़कर मृत्यु को प्राप्त हो गई थी। इन्हीं कारणों से वृद्धा अपनी झोंपड़ी छोड़ना नहीं चाहती थी।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. ज़मींदार को विधवा के सामने लज्जित क्यों होना पड़ा?

उत्तर– वृद्धा ने ज़मींदार से टोकरी को उठाकर अपने सिर पर रखवाने के लिए सहायता माँगी। पहले तो ज़मींदार साहब गुस्सा हुए और टोकरी उठाने में ना-नुकर करने लगे। किन्तु जब वृद्धा ने बहुत प्रार्थना की, तब वे स्वयं टोकरी उठाने लगे। लेकिन उन्होंने देखा कि वह अपनी पूरी ताकत लगाकर भी उस टोकरी को उठाना तो दूर हिला भी नहीं पाए। टोकरी न उठा पाने के कारण उन्हें वृद्धा के सामने लज्जित होना पड़ा।

2. इस कहानी का शीर्षक एक टोकरी भर मिट्टी क्यों रखा गया? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– यह कहानी वृद्धा की झोंपड़ी के आस-पास घूमती है। झोंपड़ी कच्ची थी, मिट्टी की बनी हुई थी। झोंपड़ी खाली करने के बाद से वृद्धा की पोती ने खाना-पीना छोड़ दिया था। इसलिए वह ज़मींदार के पास अपनी झोंपड़ी से एक टोकरी मिट्टी माँगने आई थी, जिससे वह उस मिट्टी का चूल्हा बनाकर अपनी पोती को खाना खिला सके। उसे विश्वास था ऐसा करने पर उसकी पोती खाना खाने लगेगी। इसी एक टोकरी मिट्टी पर आधारित कथनों के कारण ही ज़मींदार का हृदय परिवर्तन हुआ, जिसके कारण वृद्धा को उसकी झोंपड़ी वापस मिल पाई। इसलिए यह एक उपयुक्त शीर्षक है।

7 मत बाँधो

अभ्यास-प्रश्नोत्तर

पाठ से

आइए, अब हम इस कविता को थोड़ा और विस्तार से समझते हैं। नीचे दी गई गतिविधियाँ इस कार्य में आपकी सहायता करेंगी।

मेरी समझ से

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उपयुक्त उत्तर के सम्मुख तारा (☆) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।

1. आप इनमें से कविता का मुख्य भाव किसे समझते हैं?

- सपने मात्र कल्पनाएँ हैं
- सपनों को भूल जाना चाहिए
- सपनों की स्वतंत्रता बनी रहनी चाहिए
- सपने देखना अच्छी बात है

उत्तर– ☆ सपनों की स्वतंत्रता बनी रहनी चाहिए।

2. 'मत बाँधो' कविता किसकी स्वतंत्रता की बात करती है?

- प्रेम की
- शिक्षा की
- सपनों की
- अधिकारों की

उत्तर– ☆ सपनों की।

3. ''इन सपनों के पंख न काटो'' पंक्ति में सपनों के 'पंख' होने की कल्पना क्यों की गई है?

- सपने जीवन में कुछ नया करने की प्रेरणा देते हैं
- सपने सफलता की ऊँचाइयों तक ले जाते हैं
- सपने पंखों की तरह उड़ान भर भ्रमण करवाते हैं
- सपने पंखों की तरह कोमल और अनेक प्रकार के होते हैं

उत्तर– ☆ सपने जीवन में कुछ नया करने की प्रेरणा देते हैं।

4. ''स्वर्ग बनाने का फिर कोई शिल्प'' पंक्ति में 'स्वर्ग' से आप क्या समझते हैं?

- जहाँ किसी प्रकार का शारीरिक कष्ट न हो
- जहाँ अतुलनीय धन-संपत्ति हो
- जहाँ परस्पर सहयोग एवं सद्भाव हो
- जहाँ सभी प्राणी एक-दूसरे के प्रति संवेदनशील हों

उत्तर– ☆ जहाँ परस्पर सहयोग एवं सद्भाव हो।

- जहाँ सभी प्राणी एक-दूसरे के प्रति संवेदनशील हों।

5. यदि बीज धूल में गिर जाए तो क्या हो सकता है?

- वह बहुत तेजी से उड़ सकता है
- वह और गहरा हो सकता है
- उसकी उड़ान रुक सकती है
- वह बढ़कर पौधा बन सकता है

उत्तर– ☆ वह बढ़कर पौधा बन सकता है।

(ख) हो सकता है कि आपके समूह के साथियों ने अलग-अलग उत्तर चुने हों। अपने मित्रों के साथ विचार कीजिए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने?

उत्तर– 1. सपनों को स्वतंत्र रखने से वे हमें प्रेरणा देते हैं और जीवन को बेहतर बनाते हैं। सपने हमें नई उम्मीद और कुछ नया करने की ताकत देते हैं।

2. कविता में बार-बार यही बात दोहराई गई है कि हमें सपनों को बाँधना या रोकना नहीं चाहिए।

3. कवयित्री ने सपनों को पंखों से जोड़ा है, क्योंकि आगे बढ़ने में पंख सहायक होते हैं।

4. स्वर्ग से आशय ऐसी दुनिया से है जहाँ हमें लोग एक-दूसरे की सहायता करें और प्रेम से रहें।
5. बीज से वृक्ष बनना तभी संभव है जब बीज मिट्टी तक पहुँचे। इसी प्रकार सपनों को भी बढ़ने से नहीं रोकना चाहिए।

पंक्तियों पर चर्चा

कविता से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपने समूह में साझा कीजिए और लिखिए।

(क) ''सौरभ उड़ जाता है नभ में
फिर वह लौट कहाँ आता है?
बीज धूलि में गिर जाता जो
वह नभ में कब उड़ पाता है?''

उत्तर— इसका अर्थ है कि सुगंध हवा में उड़ जाती है और कभी वापस नहीं आती है। यदि बीज मिट्टी में गिरता है तभी वह बड़ा पेड़ बन सकता है, अर्थात् प्रत्येक वस्तु का अपना स्थान है। वे उस स्थान पर पहुँचकर ही अपना काम पूरा कर पाते हैं। इसीलिए हमें सपनों को भी उनकी जगह और आजादी देनी चाहिए जिससे वे सफल हो सकें।

(ख) ''मुक्त गगन में विचरण कर यह
तारों में फिर मिल जायेगा,
मेघों से रंग औ' किरणों से
दीप्ति लिए भू पर आयेगा।''

उत्तर— इन पंक्तियों का अर्थ है कि सपने खुले आसमान में बादलों और तारों के बीच घूमते हैं। वे बादलों से रंग और सूरज की किरणों से चमक लेकर वापस धरती पर लौटते हैं। अर्थात् सपने हमें नई ऊर्जा और सुंदरता प्रदान करते हैं, जो हमारे जीवन को कामयाब बनाते हैं।

मिलकर करें मिलान

कविता में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे स्तंभ 1 में दी गई हैं। उन पंक्तियों के भाव या संदर्भ स्तंभ 2 में दिए गए हैं। पंक्तियों को उनके सही भाव अथवा संदर्भ से मिलाइए।

स्तंभ 1	स्तंभ 2
1. इन सपनों के पंख न काटो इन सपनों की गति मत बाँधो!	**1.** सपनों के उठने (आरोहण) और उनके व्यवहार में वापस आने (अवरोहण) में बाधा न डालें, क्योंकि स्वतंत्रता ही सपनों को साकार करने की कुंजी है।
2. सपनों में दोनों ही गति हैं उड़कर आँखों में आता है!	**2.** सपनों को ऊँचाइयों तक जाने से मत रोको। उन्हें धरती से बाँधकर मत रखो।
3. इसका आरोहण मत रोको इसका अवरोहण मत बाँधो!	**3.** किसी पक्षी के पंख काट दिए जाएँ तो वह उड़ नहीं सकता, वैसे ही अगर हम किसी के सपनों को बाधित करें तो उसकी कल्पनाशीलता और संभावनाएँ समाप्त हो जाएँगी।
4. नभ तक जाने से मत रोको धरती से इसको मत बाँधो!	**4.** रचनात्मक और स्वतंत्र विचार समाज को सुंदर, समृद्ध और शांतिपूर्ण बना सकता है।
5. स्वर्ग बनाने का फिर कोई शिल्प भूमि को सिखलायेगा!	**5.** सपनों में ऊपर उठने (आरोहण)और नीचे आने (अवरोहण) दोनों की विशेषता होती है। सपना विचार की तरह जन्म लेता है और फिर व्यवहार में पूरा होता है, तभी वह कल्पना से निकलकर सच्चाई बनता है।

उत्तर— 1. (3) 2. (5) 3. (1) 4. (2) 5. (4)

सोच-विचार के लिए

कविता को पुनः पढ़िए, पता लगाइए और लिखिए—

(क) कविता में 'मत बाँधो', 'पंख न काटो' आदि संबोधन किसके लिए किए गए होंगे?

उत्तर— ये संबोधन सपनों के लिए किए गए हैं।

(ख) कविता में सपनों की गति न बाँधने की बात क्यों कही गई होगी?

उत्तर– कविता में सपनों की गति न बाँधने की बात इसलिए कही गई होगी क्योंकि अगर हम अपने सपनों को रोकते हैं, तो वे आँखों में रहकर समय के साथ खो जाएँगे और दुबारा आँखों में लौटकर नहीं आएँगे।

(ग) कविता में सौरभ, बीज, धुआँ, अग्नि जैसे उदाहरणों के माध्यम से सपनों को इनसे भिन्न बताते हुए उसे विशेष बताया गया है। आपकी दृष्टि में इन सबसे अलग सपनों की ओर कौन-सी विशेषताएँ हो सकती हैं?

उत्तर– संकेत– मेरी दृष्टि में सपनों की अलग विशेषताएँ ये हो सकती हैं–

- सौरभ– खुशबू फैलाता है।
- बीज– जमीन में अंकुरित होते हैं
- धुआँ– ऊपर उड़ जाता है।
- अग्नि– धरती पर प्रकाश फैलाती है।

(घ) कविता में 'आरोहण' और 'अवरोहण' दोनों के महत्व की बात की गई है। उदाहरण देकर बताइए कि आपने 'आरोहण' और 'अवरोहण' को कब-कब सार्थक होते देखा?

उत्तर– आरोहण– मेरा एक मित्र वैज्ञानिक बनने का सपना देखता था। उसने मेहनत की और भाभा रिसर्च इंस्टीट्यूट में एडमिशन लिया– यह आरोहण था लेकिन इन सबसे अलग सपनों की विशेषता है कि सपने जीवन को सुंदर बनाकर नए साधनों को आमंत्रित करते हैं। जहाँ उसका सपना ऊँचा उठा और उसे प्रेरणा मिली। इससे उसकी जिंदगी में नई उम्मीद मिली।

अवरोहण– वही दोस्त प्रवेश परीक्षाओं में कई बार असफल भी हुआ, किन्तु उसने अपने इस अवरोहण से अर्थात् नीचे आने (असफलताओं) से हार नहीं मानी। वह फिर से मेहनत करता और सीखता। इस अवरोहण से उसका सपना और मजबूत हुआ। आज वह एक सफल वैज्ञानिक है।

(ङ) ''सपनों में दोनों ही गति है/ उड़कर आँखों में आता है!'' क्या आप सहमत हैं कि सपने 'आँखों में लौटकर' वास्तविकता बन जाते हैं? अपने अनुभव या आस-पास के अनुभवों से कोई उदाहरण दीजिए।

उत्तर– हाँ, मैं पूरी तरह सहमत हूँ कि सपने दोनों गतियाँ रखते हैं। सपने पहले कल्पना में उड़ते हैं, फिर मेहनत से हकीकत बनते हैं और हमें नई चमक देते हैं।

उदाहरण– संकेत–कोई व्यक्ति अपना छोटा-सा व्यवसाय करने का सपना देखता है। आरंभ में उसका यह सपना उसकी कल्पना में ऊँचा उठा, किन्तु वास्तविकता में पैसों की कमी के कारण नीचे आ गया। वह व्यक्ति पुनः प्रयास करता है अपने सपने को पूरा करने का। वह लोन के माध्यम से अपना व्यवसाय खड़ा करता है और अपनी मेहनत के बल पर उसे ऊँचाइयों पर ले जाता है।

शीर्षक

कविता का शीर्षक है 'मत बाँधो'। यदि आपको इस कविता को कोई अन्य नाम देना हो तो क्या नाम देंगे? आपने यह नाम क्यों सोचा? यह भी लिखिए।

उत्तर– मैं इस कविता का नाम 'सपनों की उड़ान' रखूँगा, क्योंकि इस कविता में बार-बार सपनों को न रोकने और न बाँधने की बात कही गई है।

अनुमान और कल्पना से

(क) मान लीजिए आप एक नया संसार बनाना चाहते हैं। उस संसार में आप क्या-क्या रखना चाहेंगे और क्या-क्या नहीं? अपने उत्तर का कारण भी बताइए।

उत्तर– रखना चाहूँगा– मैं अपने संसार में पेड़-पौधे, स्वच्छ वातावरण, सस्ते व समस्त संसाधनों से युक्त अस्पताल, विद्यालय रखूँगा। इन सभी के अतिरिक्त मैं इसमें अपने परिवारीजन, आत्मीयजन और मित्र रखूँगा।

वृक्षों से स्वस्थ एवं स्वच्छ वातावरण मिलेगा, जिससे प्रदूषण दूर होगा। अस्पताल और विद्यालय होने से सभी को अच्छा-सस्ता इलाज और ज्ञान मिल सकेगा। परिवारीजन, आत्मीयजन और मित्रों के बिना तो पूरा संसार ही अधूरा होगा, इसलिए मैं इन्हें भी रखना चाहूँगा।

नहीं रखना चाहूँगा– मैं अपने संसार में प्रदूषण, लड़ाई-झगड़ा, गरीबी और भेदभाव की भावना को नहीं रखना चाहूँगा, क्योंकि इन सभी के कारण मेरे संसार की सुन्दरता और शक्ति नष्ट हो जाएगी। मैं अपने संसार को सुंदर और शांतिपूर्ण बनाए रखना चाहता हूँ।

(ख) कविता में शिल्प और कला के महत्व की बात की गई है। कलाएँ हमारे आस-पास की दुनिया को सुंदर बनाती हैं। आप अपने जीवन को सुंदर बनाने के लिए कौन-सी कला सीखना चाहेंगे? उससे आपका जीवन कैसे सुंदर बनेगा? अनुमान करके बताइए।

उत्तर– संगीत सीखना चाहूँगा। संगीत के माध्यम से मैं अपनी भावनाओं को अच्छे से व्यक्त कर पाऊँगा। यदि मैं अच्छा गाना गाऊँगा तो मेरी प्रशंसा भी होगी, जिससे मुझे खुशी होगी। संगीत से मेरा मन शांत होगा और मेरे जीवन को एक नई दिशा प्रदान करेगा।

(छात्र अपने विचार भी व्यक्त कर सकते हैं।)

(ग) ''सौरभ उड़ जाता है नभ में/ फिर वह लौट कहाँ आता है?'' यदि आपके पास अपने बीते हुए समय में लौटने का अवसर मिले तो आप बीते हुए समय में क्या-क्या परिवर्तन करना चाहेंगे?

उत्तर— यदि मुझे बीते हुए समय में परिवर्तन करने का समय मिले तो मैं सबसे पहले अपनी गलतियों से सुधार करूँगा। अपनी पढ़ाई पर अधिक ध्यान केन्द्रित करूँगा। समय नियोजन करूँगा।

(घ) ''बीज धूलि में गिर जाता जो/वह नभ में कब उड़ पात है?'' यदि सपने बीज की तरह हों तो उन्हें उगने के लिए किन चीजों की आवश्यकता होगी?

(संकेत—धूप अर्थात् मेहनत, पानी अर्थात् लगन आदि।)

उत्तर— यदि सपने बीज की तरह होते तो उन्हें उगने के लिए मेहनत रूपी धूप, लगन रूपी पानी, धैर्य रूपी हवा और उचित मार्गदर्शन जैसी उपजाऊ मिट्टी की आवश्यकता होगी। तभी वह साकार रूप में वृक्ष के जैसे मजबूत बन पाएँगे अर्थात् पूरे हो पाएँगे।

(ङ) ''स्वर्ग बनाने का फिर कोई शिल्प/भूमि को सिखलायेगा!'' यदि अच्छे सपनों या विचारों में स्वर्ग बनाया जा सकता है तो बुरे सपनों अथवा विचारों से क्या होगा? बुरे सपनों या विचारों से कैसे बचा जा सकता है?

उत्तर— बुरे सपनों अथवा विचारों के प्रभाव—लड़ाई-झगड़े की संभावना, गलत मार्ग की ओर ले जाना। बुरी संगत से बचाव, अच्छी पुस्तकों को पढ़ना, गलत शिक्षा देने वाले संग्रहों से दूर रहना, अच्छे विचारों के लिए मन को एकाग्र करना और शांत रहना।

(च) ''इन सपनों के पंख न काटो/इन सपनों की गति मत बाँधो!'' कल्पना कीजिए कि हर किसी को सपने देखने और उन्हें पूरा करने की पूरी स्वतंत्रता मिल जाए, तब दुनिया कैसी होगी? आपके अनुसार उस दुनिया में कौन-सी बातें महत्वपूर्ण होंगी?

उत्तर— यदि सभी को सपने देखने और उन्हें पूरा करने की स्वतंत्रता मिल जाए तो कोई भी निराश नहीं होगा। चारों ओर सकारात्मकता दिखाई देगी। प्रत्येक व्यक्ति प्रसन्न होगा। कहीं भी ईर्ष्या अथवा द्वेष की भावना नहीं होगी। सभी में स्नेह और सहयोग की भावना होगी। वह दुनिया बहुत ही सुंदर होगी।

(छ) ''इन सपनों के पंख न काटो/इन सपनों की गति मत बाँधो!'' आपके विचार से यह सुझाव है? आदेश है? प्रार्थना है? या कुछ और है? यह बात किससे कही जा रही है?

उत्तर— मेरे विचार से यह एक सुझाव है। इन शब्दों के माध्यम से कवयित्री हमें सलाह दे रही है कि हम सपनों को स्वतंत्र रखें। यह बात सब लोगों से कही जा रही है जो सपने देखते हैं, जो सपनों को पूरा करने के लिए देखते हैं और जो उन्हें मात्र एक कल्पना मानते हैं उन सभी से कही जा रही है।

कविता की रचना

- ''सौरभ उड़ जाता है नभ में...''
- ''बीज धूलि में गिर जाता जो...''
- ''अग्नि सदा धरती पर जलती...''

उपर्युक्त पंक्तियों पर ध्यान दीजिए। इन पंक्तियों को पढ़ते समय हमारी आँखों के सामने कुछ चित्र उभर आते हैं। कई बार कवि अपनी बात अथवा मुख्य भाव को समझाने या बताने के लिए उदाहरणों के माध्यम से शब्द-चित्रों की लड़ी-सी लगा देता है, जिससे कविता में विशेष प्रभाव उत्पन्न हो जाता है। इस कविता में भी ऐसी अनेक विशेषताएँ छिपी हैं।

(क) अपने समूह के साथ मिलकर इन विशेषताओं की सूची बनाइए। अपने समूह की सूची को कक्षा में सबके साथ साझा कीजिए।

उत्तर— संकेत— • सपनों के लिए प्रकृति के उदाहरण
- सपनों की आजादी पर विशेष ध्यान
- शब्द चित्र जैसे—''बीज धूलि में गिर जाता जो''
- प्रश्नात्मक शैली का प्रयोग— ''फिर वह लौट कहाँ आता है?''
- पाठकों के लिए उत्साह एवं प्रेरणा।

हमने अपने समूह सूची की सूची कक्षा में सबके साथ साझा की। कक्षा के दूसरे समूहों ने अपनी सूची हमारे साथ साझा की जिससे हमारी समझ और बढ़ी।

(ख) नीचे इस कविता की कुछ विशेषताएँ और वे पंक्तियाँ दी गई हैं जिनमें ये विशेषताएँ समाहित हैं। विशेषताओं का सही पंक्तियों से मिलान कीजिए।

कविता की विशेषताएँ	कविता की पंक्तियाँ
1. एक-दूसरे के विपरीत अर्थ वाले शब्दों का प्रयोग किया गया है।	**1.** वह नभ में कब उड़ पाता है?

2. एक ही शब्द का प्रयोग बार-बार किया गया है।	**2.** इसका आरोहण मत रोको! इसका अवरोहण मत बाँधो!
3. समानार्थी शब्दों का प्रयोग किया गया है।	**3.** स्वर्ग बनाने का फिर कोई शिल्प भूमि को सिखलायेगा!
4. प्रश्न पूछा गया है।	**4.** इन सपनों के पंख न काटो
5. संबोधन का प्रयोग किया गया है।	**5.** नभ तक जाने से मत रोको धरती से इसको मत बाँधो!
6. सपने को मनुष्य की तरह चित्रित किया गया है।	**6.** दीप्ति लिए भू पर आयेगा। स्वर्ग बनाने का फिर कोई शिल्प भूमि को सिखलायेगा!

उत्तर– 1. (2) 2. (4) 3. (6) 4. (1) 5. (5) 6. (3)

शब्दों की बात

''इसका आरोहण मत रोको
इसका अवरोहण मत बाँधो!''

उपर्युक्त पंक्तियों में रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए। 'आरोहण' और 'अवरोहण' दोनों एक-दूसरे के विपरीतार्थक शब्द हैं। आरोहण का अर्थ है–नीचे से ऊपर की ओर जाना या चढ़ना। अवरोहण का अर्थ है–ऊपर से नीचे की ओर आना या उतरना।

(क) नीचे दिए रिक्त स्थान में 'आरोहण' और 'अवरोहण' का उपयुक्त प्रयोग करके वाक्यों को पूरा कीजिए।

- पर्वतारोहियों ने बीस दिन तक पर्वत पर .... कर विजय प्राप्त की।
- नदियाँ विशाल पर्वतों से .... करते हुए सागर में मिल जाती हैं।
- अंकगणित में बड़ी संख्या से छोटी संख्या की ओर लिखने की प्रक्रिया .... क्रम कहलाती है।

इसी प्रकार से 'आरोहण' और अवरोहण' शब्दों के प्रयोग को देखते हुए आप भी कुछ सार्थक वाक्य बनाइए।

उत्तर– ● पर्वतारोहियों ने बीस दिन तक पर्वत पर आरोहण कर विजय प्राप्त की।
● नदियाँ विशाल पर्वतों से अवरोहण करते हुए सागर से मिल जाती हैं।
● अंकगणित में बड़ी संख्या से छोटी संख्या की ओर लिखने की प्रक्रिया अवरोहण क्रम कहलाती है।

अन्य सार्थक वाक्य–

● शेरपाओं ने पर्वत पर आरोहण करके पर्वतारोहियों के लिए भोजन और राहत सामग्री पहुँचाई।
● सूर्य की किरणों का अवरोहण पृथ्वी को प्रकाश और ऊर्जा प्रदान करता है।

(ख) नीचे दी गई कविता की पंक्तियों के रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए–
''वह नभ में कब उड़ पाता है?''
''धूम गगन में मँडराता है।''
'नभ' और 'गगन' समान अर्थ वाले शब्द हैं। रेखांकित शब्दों के समानार्थी शब्दों का प्रयोग करते हुए कुछ नई पंक्तियों की रचना कीजिए और देखिए कि पंक्तियों में लय बनाए रखने के लिए और किन परिवर्तनों की आवश्यकता पड़ती है?

उत्तर– ''वह आसमान में कब उड़ पाता है?''
''धूम अंबर में मँडराता है।''
पंक्तियों की लय बनाए रखने के लिए शब्दों की मात्रा और ध्वनि का ध्यान रखना पड़ता है।

(ग) कविता में 'मत' शब्द के साथ 'बाँधो' क्रिया लगाई गई है। आप 'मत' के साथ कौन-कौन सी क्रियाएँ लगाना चाहेंगे? लिखिए। (संकेत–'मत डरो')

उत्तर– मत डरो। मत रुको। मत झुको। मत लड़ो। मत हारो। मत जाओ

(घ) आपकी भाषा में 'बाँधने के लिए और कौन-कौन सी क्रियाएँ हैं? अपने समूह में चर्चा करके लिखिए और उनसे वाक्य बनाइए। (संकेत– जोड़ना)

उत्तर– बाँधना, जोड़ना, कसना।
वाक्य– (1) मैंने श्याम को रस्सी से बाँध दिया।
(2) राधा ने घास के तिनकों को जोड़कर रस्सी बनाई।
(3) मैंने गाँठों को कस दिया, ताकि वे खुलें नहीं।

(ङ) 'मत' शब्द को उलट कर लिखने से शब्द बनता है 'तम' जिसका अर्थ है 'अँधेरा'। कविता में से कुछ ऐसे और शब्द छाँटिए जिन्हें पलट कर लिखने से अर्थ देने वाले शब्द बनते हैं।

उत्तर– ● जाता = ताजा = हरा-भरा, जो मुरझाया न हो। ● सदा = दास = गुलाम

काल परिवर्तन

''सौरभ उड़ जाता है नभ में''

उपर्युक्त पंक्ति को ध्यान से देखिए। इस पंक्ति की क्रिया 'जाता है' से पता चलता है कि यह परिवर्तन काल में लिखी गई है। यदि हम इसी पंक्ति को भूतकाल और भविष्य काल में लिखें तो यह निम्नलिखित प्रकार से लिखी जाएगी–

भूतकाल– सौरभ उड़ गया है नभ में

भविष्य काल– सौरभ उड़ जाएगा नभ में

कविता में वर्तमान काल में लिखी गई ऐसी अनेक पंक्तियाँ आई हैं। उन पंक्तियों को कविता में से ढूँढ़कर भूतकाल और भविष्य काल में लिखिए।

उत्तर–

- ''बीज धूलि में गिर जाता जो''

भूतकाल– बीज धूलि में गिर गया जो

भविष्य काल– बीज धूलि में गिर जाएगा जो

- ''अग्नि सदा धरती पर जलती''

भूतकाल– अग्नि सदा धरती पर जली

भविष्य काल– अग्नि सदा धरती पर जलेगी

- ''धूम गगन में मँडराता है''

भूतकाल– धूम गगन में मँडराया था।

भविष्य काल– धूम गगन में मँडराएगा।

शब्दकोश से

''स्वर्ग बनाने का फिर कोई शिल्प''

शब्दकोश के अनुसार 'शिल्प' शब्द के निम्नलिखित अर्थ हैं– 1. हाथ से कोई चीज बनाकर तैयार करने का काम– दस्तकारी, कारीगरी या हुनर, जैसे– बरतन बनाना, कपड़े सिलना, गहने गढ़ना आदि। 2. कला संबंधी व्यवसाय। 3. दक्षता, कौशल। 4. निर्माण सर्जन, सृष्टि रचना। 5. आकार, आवृत्ति 6. अनुष्ठान, क्रिया, धार्मिक कृत्य।

अब शब्दकोश से 'शिल्प' शब्द से जुड़े निम्नलिखित शब्दों के अर्थ खोजकर लिखिए–

1. शिल्पकार, शिल्पी, शिल्पजीवी, शिल्पकारक, शिल्पिक या शिल्पकारी 2. शिल्पकला 3. शिल्पकौशल 4. शिल्पगृह या शिल्पगेह 5. शिल्पविद्या 6. शिल्पशाला या शिल्पालय।

उत्तर–1. शिल्पकार, शिल्पी, शिल्पजीवी, शिल्पकारक, शिल्पिक या शिल्पकारी – वह व्यक्ति जो कारीगरी, हुनर या कला का काम करता हो, जैसे– मूर्ति बनाने वाला।

2. शिल्पकला– वह कला जिसमें हाथ से सुंदर और उपयोगी चीजें बनाई जाती हैं।

3. शिल्पकौशल– किसी कला या काम में विशेष निपुणता या दक्षता।

4. शिल्पगृह या शिल्पगेह– वह स्थान या घर जहाँ शिल्प का काम होता है।

5. शिल्पविद्या– शिल्प या कला से संबंधित ज्ञान या शिक्षा।

6. शिल्पशाला या शिल्पालय– वह स्थान जहाँ शिल्प का काम सिखाया जाता है।

पाठ से आगे

आपकी बात

(क) कविता में गति को न बाँधने की बात कही गई है। आप 'बाँधने' का प्रयोग किन-किन स्थितियों या वस्तुओं के लिए करते हैं? बताइए। (संकेत– गाँठ बाँधना)

उत्तर– • गाँठ बाँधना– रस्सी अथवा कपड़े में गाँठ बाँधना

- पशुओं को बाँधना,
- बाल बाँधना
- राखी बाँधना
- चोट पर पट्टी बाँधना

(ख) 'स्वर्ग' शब्द से आशय है 'सुखद स्थान। अर्थात् वह स्थान जहाँ सुख, शांति, समृद्धि और आनंद की अनुभूति हो। अपने घर, आस-पड़ोस और विद्यालय को सुखद स्थान बनाने के लिए आप क्या-क्या प्रयास करेंगे? सूची बनाइए और घर के सदस्यों के साथ साझा कीजिए।

उत्तर– घर– • स्वच्छ रखेंगे।

- परिवार के सदस्यों के साथ समय बिताएँगे।
- कलह के कारणों पर ध्यान नहीं देंगे।
- सभी के साथ प्यार और सम्मानपूर्वक व्यवहार रखेंगे।

पास-पड़ोस– • सहायता करना।

- स्वच्छता।
- विशेष अवसरों पर खुशियाँ बाँटना।
- झगड़ों से बचना।
- दूसरों को सम्मान देना।

विद्यालय– • साफ रखना, कचड़ा न फैलाना।

- सहपाठियों से अनुकूल व्यवहार करना।
- शिक्षकों का सम्मान करना।

(ग) कविता में सपनों की बात की गई है। आपका कौन-सा सपना ऐसा है जो यदि सच हो जाए तो वह दूसरों की सहायता कर सकता है? उसके विषय में बताइए।

उत्तर– संकेत– डॉक्टर या शिक्षक बनना।

- जरूरतमंद और गरीबों का सस्ता और अच्छा इलाज।
- गरीबों को मुफ्त शिक्षा उपलब्ध कराना।

चर्चा-परिचर्चा

''सपनों में दोनों ही गति है/उड़कर आँखों में आता है।'' किसी एक के द्वारा देखा गया सपना बहुत से लोगों का सपना भी बन जाता है, जैसे– हमारे स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा भारत को स्वतंत्र कराने का सपना सभी भारतीयों का सपना बन गया। साथियों से चर्चा कीजिए कि आपके कौन-से ऐसे सपने हैं, जिन्हें पूरा करने के लिए आप

अन्य लोगों को भी जोड़ना चाहेंगे।

उत्तर– संकेत–

- स्वच्छ भारत का सपना
- मुफ्त शिक्षा का सपना
- सस्ती और अच्छी स्वास्थ्य सेवाओं को उपलब्ध कराने का सपना
- किसानों की उन्नति का सपना

मैं अपने इन सपनों को पूरा करने के लिए अपने परिवार और समाज को प्रेरित करूँगा।

सृजन

(क) विराम चिह्न का फेरबदल–

रोको मत, जाने दो

रोको, मत जाने दो

लेखन में विराम चिह्नों का विशेष महत्व होता है। विराम चिह्नों के प्रयोग से वाक्य या पंक्ति का अर्थ स्पष्ट हो जाता है और परिवर्तन भी हो जाता है, जैसे– 'रोको मत, जाने दो' में रोको मत के बाद अल्पविराम चिह्न (,) का प्रयोग किया गया है, जिसका अर्थ है कि बिना रोके जाने दिया जाए। वहीं 'रोको, मत जाने दो' में रोको के बाद अल्पविराम का प्रयोग किया गया है, जिसका अर्थ है कि जाने से रोका जाए। नीचे कुछ चित्र दिए गए हैं। आप किन चित्रों के लिए 'रोको मत, जाने दो' या 'रोको, मत जाने दो' का प्रयोग करेंगे? दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए और इन चित्रों को शीर्षक भी दीजिए।

1.

2.

3.

4.

5.

6.

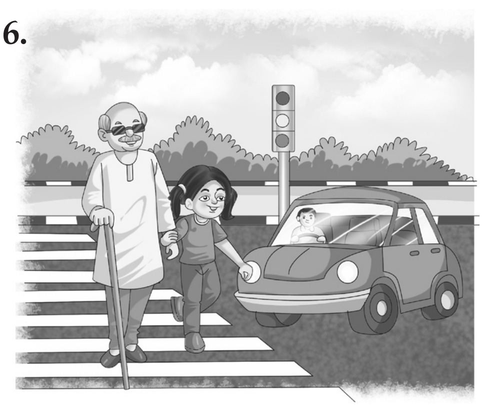

उत्तर– 1. जेब्रा क्रॉसिंग– 'रोको मत, जाने दो'
2. निषिद्ध क्षेत्र– 'रोको, मत जाने दो'
3. विदाई– 'रोको मत, जाने दो'
4. मतदान– 'रोको मत, जाने दो'
5. चौराहा– 'रोको, मत जाने दो'
6. जेब्रा क्रॉसिंग– 'रोको मत, जाने दो'

(ख) कविता आगे बढ़ाएँ
नीचे दी गई पंक्तियों को आगे बढ़ाते हुए अपनी एक कविता तैयार कीजिए।
इन सपनों के पंख न काटो
इन सपनों की गति मत बाँधो।

उत्तर– इन सपनों के पंख न काटो।
इन सपनों की गति मत बाँधो।।
चिड़िया मुक्त गगन में उड़ती।
जीवन में अपने आशा है भरती।।
सपने भी तो हैं चिड़िया जैसे।
उड़ते हैं मन के आकाश में ऐसे।।
दो अपने सपनों को उड़ान।
बन जाएँ ये जीवन सम्मान।।

(ग) खोया-पाया
मान लीजिए आपका सपना कहीं खो गया है। उसके खो जाने की रिपोर्ट तैयार करें। आपको स्कूल प्रशासन को यह रिपोर्ट भेजनी है। इसके लिए स्कूल प्रशासन के नाम एक पत्र लिखिए।

उत्तर– प्रधानाचार्य महोदय
बेसिक शिक्षा विद्यालय
जयपुर (राज.)
विषय– खोए हुए सपने की रिपोर्ट
माननीय महोदय,
मैं कक्षा आठ का छात्र हूँ। आपको सूचित करना चाहता हूँ कि मेरा एक महत्वपूर्ण सपना खो गया है। यह सपना था कि मैं एक शिक्षक बनकर गरीबों को मुफ्त शिक्षा प्रदान करूँ।
सपने का विवरण–
- क्या खोया– मेरा सपना (शिक्षक बनने का)
- कब खोया– बात कुछ दिनों से मुझे लग रहा है कि मेरा सपना मेरे मन से कहीं खो गया है।
- कहाँ खोया– शायद खेल के मैदान, पुस्तकालय अथवा मेरी कक्षा में

विशेष– यह सपना मेरे लिए बहुत प्रेरणादायी था, जो मुझे समाज में गरीब और अशिक्षित लोगों को शिक्षित करने की प्रेरणा देता था।
आपसे अनुरोध है कि इस सपने को ढूँढ़ने में मेरी सहायता करें। यदि यह सपना किसी को मिले तो कृपया मुझे अथवा स्कूल कार्यालय में सूचित करें। मैं अपने सपने को फिर से पाने के लिए बहुत उत्सुक हूँ।
आपके सहयोग का अभिलाषी
धन्यवाद
आपका आज्ञाकारी,
नाम ....
कक्षा– आठ

वाद-विवाद

(क) कक्षा में पाँच-पाँच विद्यार्थियों के समूह बनाकर एक वाद- विवाद गतिविधि का आयोजन कीजिए। इसके लिए विषय है– ''व्यक्ति को बाँध सकते हैं, उसकी कल्पना और विचारों को नहीं।''
समूह 1 – व्यक्ति की कल्पना और विचारों पर नियंत्रण आवश्यक है।
समूह 2 – स्वतंत्र विचार और कल्पना प्रगति के लिए महत्वपूर्ण हैं।

उत्तर– समूह–
- नियंत्रण से ही व्यक्ति गलत और सही का अंतर समझ पाता है। इसलिए व्यक्ति की कल्पना और विचारों पर नियंत्रण आवश्यक है।
- अनियन्त्रित विचार और कल्पना समाज में अशांति फैला सकते हैं।
- बिना नियन्त्रण के लोग गलत कार्यों को करने से भी संकोच नहीं करेंगे, अतः गलत कार्यों पर रोक के लिए विचारों पर नियंत्रण रखना आवश्यक है।
- नियन्त्रण के द्वारा ही परिवार और विद्यालयों में बच्चों को उचित मार्ग-निर्देशन दिया जा सकता है।
- अनियंत्रित विचार समाज की एकता को नष्ट कर सकते हैं।

समूह–

- कल्पना और विचारों को बाँधना गलत है क्योंकि स्वतंत्र विचार और कल्पना प्रगति के लिए बहुत आवश्यक हैं।
- स्वतंत्र विचार समाज को नई दिशा प्रदान करते हैं।
- सपने और स्वतंत्र विचार हमें एक बेहतर इंसान बनाने में सहायता करते हैं।
- किसी व्यक्ति की कल्पना उसे खास बनाती है। अपने कल्पना और विचारों के द्वारा ही व्यक्ति समाज में क्रांतिकारी बदलाव लाने में समर्थ होता है।
- एक स्वतंत्र विचार और कल्पना ही वैज्ञानिक आविष्कारों का आधार बन सकती है और जागरूक समाज का निर्माण कर सकती है।

(ख) विद्यार्थी वाद-विवाद के अनुभवों पर एक अनुच्छेद भी लिख सकते हैं।

उत्तर– आज हमारी कक्षा में ''व्यक्ति को बाँध सकते हैं उसकी कल्पना और विचारों को नहीं'' विषय पर वाद-विवाद हुआ। यह बहुत ही रोमांचक और ज्ञानवर्धक वाद-विवाद था। दोनों पक्षों ने इस कथन के पक्ष और विपक्ष रखे। इसमें पक्ष में रहने वाले ने कहा कि स्वतंत्र विचार और कल्पना समाज को नई दिशा देते हैं तो विपक्ष ने कहा कि विचारों और कल्पनाओं पर नियन्त्रण आवश्यक है, जिससे समाज गलत कार्यों की ओर उन्मुख न हो। दोनों समूहों ने जोरदार तर्क दिए। आज की इस वाद-विवाद प्रतियोगिता से जहाँ मुझे एक ओर विचारों को नियन्त्रण में रखने की सीख मिली, वहीं अपने विचारों से समाज को नई दिशा देने की भी राह दिखाई दी। भविष्य में मैं भी ऐसी गतिविधियों में हिस्सा लेना चाहूँगा।

देखना-सुनना-समझना...

(क) **''धूम गगन में मँडराता है।''**

सुगंध का अनुभव सूँघकर किया जाता है। धुएँ को देखा जा सकता है। वायु का अनुभव स्पर्श द्वारा किया जा सकता है और अनुभवों को बोलकर भी कहा या बताया जा सकता है जैसे कि कोई कमेंट्री कर रहा हो।

जो व्यक्ति देख पाने में सक्षम नहीं हैं, आप उन्हें निम्नलिखित स्थितियों का अनुभव कैसे करवा सकते हैं–

- वर्षा की बूँदों का
- धुएँ के उड़ने का
- खेल के रोमांच का

उत्तर– वर्षा की बूँदों का –

- वर्षा के समय उन्हें बाहर ले जाकर बारिश की बूँदों का उनके हाथ और चेहरे पर स्पर्श कराना।
- बारिश की आवाज सुनाना।

धुएँ के उड़ने का–

- किसी लकड़ी अथवा धूप या अगरबत्ती का धुआँ सुँघाना।
- धुएँ की गर्मी का एहसास कराना।
- यह बताना कि धुआँ हल्का होता है और हवा में ऊपर की ओर उठता है।

खेल के रोमांच का–

- किसी खेल के मैदान पर ले जाना।
- दर्शकों की तालियों और प्रोत्साहन भरी आवाजों को सुनाना।
- खिलाड़ियों की उत्साह से भरी हुई चीखें या तेज आवाजें सुनाना।

(ख) **मूक अभिनय द्वारा कविता का भाव**

विद्यार्थियों के बराबर-बराबर की संख्या में दो दल (टीम) बनाइए। दलों के नाम रखें– कल्पना और अकांक्षा।

'कल्पना' दल से एक प्रतिभागी आगे आए और मूक अभिनय (हाव-भाव या संकेत) के माध्यम से इस कविता की किसी भी पंक्ति का भाव प्रस्तुत करे। 'आकांक्षा' दल के प्रतिभागियों को पहचानकर बताना होगा कि अभिनय में किस पंक्ति की बात की जा रही है। पहचानने की समय सीमा भी निर्धारित की जाए। निर्धारित समय सीमा पर सही उत्तर बताने वाले दल को अंक भी दिए जा सकते हैं। इस तरह से खेल को आगे बढ़ाया जाए।

उत्तर– संकेत–

- 'पंख कटने' वाली पंक्ति पर हाथों को फड़फड़ाना और कैंची की तरह इशारा करना।
- बाँधने वाली पंक्ति और रोकने वाली पंक्ति पर भी इशारा करना।

आपदा प्रबंधन

''अग्नि सदा धरती पर जलती/धूम गगन में मँडराता है!''

आग, बाढ़, भूकंप जैसी आपदाएँ अचानक आ जाती हैं। सही जानकारी से आपदाओं की स्थिति में बचाव संभव हो जाता है।

(क) कक्षा में अपने शिक्षकों के साथ चर्चा कीजिए कि क्या-क्या करेंगे यदि–

- कहीं अचानक आग लग जाए
- आपके क्षेत्र में बाढ़ आ जाए
- भूकंप आ जाए

उत्तर–कहीं अचानक आग लग जाए

- निकास द्वार की ओर जाना।
- साँसों में धुआँ न भरे इसलिए मुँह ढककर नीचे झुककर चलना।
- चिल्लाकर दूसरों को सावधान करना।
- अग्निशामक यंत्र का प्रयोग करना।

आपके क्षेत्र में बाढ़ आ जाए

- ऊँचे स्थान जैसे छतों पर जाना।
- खाद्य पदार्थों और उपयोगी वस्तुओं का संरक्षण करना।
- विद्युत उपकरणों से दूर रहना।
- बचाव दल की सहायता लेना।

भूकंप आ जाए

- किसी खुले स्थान पर जाएँ।
- इमारत के पास न खड़े हों।
- घर के अंदर होने की स्थिति में मेज या मजबूत फर्नीचर के नीचे छिप जाएँ।
- भूकंप रुकने तक बाहर न निकलें।

(ख) ''मैं आपदा के समय क्या करूँगा?''– एक सूची या चित्र आधारित योजना बनाइए।

उत्तर– संकेत– (प्रश्न क में दिए गए नियमों को आधार बनाकर योजना तैयार की जा सकती है।)

चित्र आधारित योजना

- जरूरी नंबर पर फोन करो।
- खिड़कियों को खोलने का प्रयास करो।
- मुँह को रूमाल या कपड़े से ढको।
- निकास द्वार की ओर जाओ।

शिल्प

''स्वर्ग बनाने का फिर कोई शिल्प
भूमि को सिखलायेगा!''

हमारे देश में हजारों वर्षों से अनगिनत शिल्प प्रचलित हैं। उनमें से कुछ के बारे में आप पहले से जानते होंगे। इनके बारे में कक्षा में चर्चा कीजिए।

(क) अपने समूह के साथ मिलकर नीचे दिए गए शिल्प-कार्यों को उनके सही अर्थों या व्याख्या से मिलाइए–

शिल्प-कार्य	अर्थ या व्याख्या
1. काष्ठ शिल्प	1. काँच से झूमर, सजावटी वस्तुएँ और रंगीन खिड़कियाँ आदि बनाना
2. मृत्तिका शिल्प	2. कपड़ों पर कढ़ाई, बुनाई, छपाई, बंधेज आदि सजावटी कार्य
3. धातु शिल्प	3. कागज से खिलौने, सजावट, लिफाफे और पेपर मेशी बनाना
4. काँच शिल्प	4. लकड़ी से वस्तुएँ, खिलौने, मूर्तियाँ आदि बनाना
5. वस्त्र शिल्प	5. मिट्टी से बर्तन, दीये, मूर्तियाँ और सजावटी चीजें बनाना
6. कागज शिल्प	6. ताँबा, पीतल, लोहे जैसी धातुओं से दीपक, मूर्तियाँ, थालियाँ आदि बनाना
7. पत्थर शिल्प	7. पारंपरिक चित्रकलाओं, जैसे मधुबनी, गोंड, वरली आदि से कलाकृतियाँ बनाना
8. चमड़ा शिल्प	8. कपड़ों या सजावट की वस्तुओं में शीशे जोड़ना या जड़ाई करना
9. बाँस और बेंत शिल्प	9. लाख से चूड़ियाँ, खिलौने, डिब्बे और अन्य सजावटी वस्तुएँ बनाना

10. मोती एवं आभूषण शिल्प	**10.** लकड़ी, पत्थर या धातु पर बारीक खुदाई द्वारा डिजाइन बनाना
11. लाख शिल्प	**11.** बाँस और बेंत से टोकरियाँ, कुर्सियाँ, चटाई, पंखे आदि बनाना
12. शीशा शिल्प	**12.** चमड़े से जूते, बेल्ट, बैग और अन्य उपयोगी वस्तुएँ बनाना
13. चित्रकला शिल्प	**13.** संगमरमर या अन्य पत्थरों से मूर्तियाँ बनाना, मंदिरों की सजावट करना आदि
14. नक्काशी शिल्प	**14.** रंग-बिरंगे मोतियों से हार, कंगन, झुमके आदि गहने बनाना

उत्तर– 1. (4) 2. (5) 3. (6) 4. (1) 5. (2) 6. (3) 7. (13) 8. (12) 9. (11) 10. (14) 11. (9) 12. (8) 13. (7) 14. (10)

(ख) अपने विद्यालय या परिवार के साथ हस्तशिल्प से जुड़े किसी स्थान या कार्यशाला का भ्रमण कीजिए और उस हस्तशिल्प के बारे में रिपोर्ट बनाइए।

अथवा

राष्ट्रीय हस्तशिल्प संग्रहालय की नीचे दी गई वेबसाइट में आपको कौन-सा हस्तशिल्प या कलाकृति सबसे अच्छी लगी और क्यों, उसके विषय में लिखिए।

https://nationalcraftsmuseum.nic.in/

उत्तर– रिपोर्ट– मैंने अपने मित्रों के साथ पास के एक हस्तशिल्प कार्यालय का भ्रमण किया, जहाँ मिट्टी के सुंदर बर्तन और खिलौने बनाए जाते थे। यह कार्यशाला बहुत सुंदर थी। वहाँ कारीगर चाक पर मिट्टी रखते फिर चाक घुमाकर मिट्टी को नए-नए आकार दे रहे थे। दूसरे अन्य कारीगर अलग-अलग खिलौने बना रहे थे। कुछ बने हुए बर्तनों और खिलौनों को पकाने की तैयारी कर रहे थे तो कुछ पके हुए खिलौनों में रंग भरकर उनकी सुंदरता को और बढ़ा रहे थे। एक कारीगर ने मुझे चाक चलाना सिखाया। यह एक मुश्किल किंतु मजेदार काम था। मैंने सीखा कि यह एक बहुत ही धैर्य और परिश्रम से सीखे जाने वाला शिल्प है। वहाँ से वापस आते समय मैंने एक मिट्टी का दीपक खरीदा। यह अनुभव मुझे सदैव याद रहेगा।

अथवा

इस वेबसाइट पर मुझे सबसे अच्छी मधुबनी चित्रकला लगी। इसके अंतर्गत बनाए गए चित्र बहुत रंग-बिरंगे और सुंदर हैं। इसकी डिजाइनों में प्रकृति, जानवर और गाँव का जीवन दिखाया जाता है। मधुबनी कला का संबंध बिहार राज्य से है। इसे बनाने में बहुत मेहनत लगती है।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. कवयित्री किसके पंख नहीं काटने के लिए कह रही हैं?
(अ) पक्षियों के (ब) सपनों के
(स) तितलियों के (द) टिड्डों के

2. कौन उड़ जाता है?
(अ) धुआँ (ब) पक्षी
(स) सपना (द) सुगन्ध

3. धूल में कौन गिर जाता है?
(अ) बीज (ब) पक्षी
(स) सपना (द) वृक्ष

4. धुआँ मँड़राता है.......
(अ) गगन में (ब) धरती पर
(स) हवा में (द) कमरे में

5. 'पंख' का पर्यायवाची है....
(अ) पर (ब) पैर
(स) पाँव (द) हाथ

उत्तर– 1. (ब) **2.** (अ) **3.** (अ) **4.** (अ) **5.** (अ)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. .... को रोकना नहीं चाहिए।

2. फूलों की खुशबू हवा में उड़कर .... नहीं आती।

3. वह .... में कब उड़ पाता है?
4. अग्नि सदा .... पर जलती।
5. .... से इसको मत बाँधो।

उत्तर– 1. सपनों 2. वापस 3. नभ 4. धरती 5. धरती

सत्य/असत्य

1. इस कविता की कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान हैं। ( )
2. कवयित्री सपनों को बाँधने से मना कर रही है। ( )
3. आग आसमान में जलती है। ( )
4. सपनों को उड़ने देना चाहिए। ( )
5. बीज मिट्टी में गिरकर वृक्ष बन जाता है। ( )

उत्तर– 1. असत्य 2. सत्य 3. असत्य 4. सत्य 5. सत्य

सही मिलान

स्तंभ (अ)	स्तंभ (ब)
1. सुगंध	(अ) वृक्ष
2. बीज	(ब) उड़ना
3. आग	(स) सपना
4. मत बाँधो	(द) गगन
5. धुआँ	(य) धरती

उत्तर– 1. (ब) 2. (अ) 3. (य) 4. (स) 5. (द)

अतिलघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. क्या उड़कर वापस नहीं आता है?

उत्तर–फूलों की सुगंध उड़कर वापस नहीं आती है।

2. इस कविता का क्या संदेश है?

उत्तर– इस कविता का संदेश है हमें सपनों को रोकना नहीं चाहिए।

3. आग कहाँ जलती है और उसका धुआँ कहाँ उड़ता है?

उत्तर– आग धरती पर जलती है और उसका धुआँ आकाश में उड़ता है।

4. सपनों को रोकने से क्या होगा?

उत्तर– सपनों को रोकने से उनका उद्देश्य पूरा नहीं होगा?

5. 'मत बाँधो' कविता हमें किन्हें स्वतंत्र छोड़ने की प्रेरणा देती है?

उत्तर– 'मत बाँधो' कविता हमें सपनों को स्वतंत्र छोड़ने की प्रेरणा देती है।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. इस कविता में सपनों को स्वतंत्र छोड़ने की बात क्यों कही गई है?

उत्तर– इस कविता में सपनों को स्वतंत्र छोड़ने की बात कही गई है क्योंकि स्वतंत्र रहने पर ही वे ऊँचाइयों तक पहुँचकर हमें नई प्रेरणा देते हैं।

2. कवयित्री ने सुगंध और बीज के माध्यम से क्या समझाया है?

उत्तर– कवयित्री ने खूशबू और बीज के माध्यम से यह समझाया है कि सुगंध हवा में उड़कर वापस नहीं आती है और बीज मिट्टी में गिरकर ही वृक्ष बन सकता है। इसी तरह सपनों को भी खुला अवसर देना चाहिए।

3. आग और धुआँ सपनों किस तरह से संबंधित है? कविता के आधार पर लिखिए।

उत्तर– जिस प्रकार आग धरती पर जलती है और धुआँ आकाश में उठता है, उसी प्रकार सपने धरती से उठकर हमारी आँखों में चमक और प्रेरणा लाते हैं।

4. कविता में सपनों को 'मुक्त गगन' में विचरण करने का क्या महत्व है?

उत्तर– सपनों को 'मुक्त गगन' में विचरण करने से उनकी स्वतंत्रता का महत्व बताया गया है। इससे वे नई ऊँचाइयों तक पहुँचते हैं और हमें प्रेरणा देते हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. 'मत बाँधो' कविता का मुख्य संदेश क्या है?

उत्तर– 'मत बाँधो' कविता का मुख्य संदेश यह है कि हमें अपने विचारों और भावनाओं को खुलकर व्यक्त करना चाहिए, साथ ही दूसरों की सलाह का भी सम्मान करना चाहिए। हमें दूसरों के सपनों के बीच बाधक नहीं बनना चाहिए। यह पाठ हमें सिखाता है कि विचारों का आदान-प्रदान समाज में समझ और सामंजस्य बढ़ाता है।

2. 'मत बाँधो' कविता का समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर– 'मत बाँधो' कविता का समाज पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। यह लोगों को एक साथ लाने, आपसी समझ को बढ़ावा देने और सहिष्णुता को बढ़ाने में मदद करती है। यह कविता समाज में सामंजस्य और सहयोग की भावना को मजबूत करती है।

8 नए मेहमान

अभ्यास-प्रश्नोत्तर

पाठ से

आइए, अब हम इस एकांकी को थोड़ा और विस्तार से समझते हैं। नीचे दी गई गतिविधियाँ इस कार्य में आपकी सहायता करेंगी।

मेरी समझ से

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उपयुक्त उत्तर के सम्मुख तारा (☆) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।

1. आगंतुकों ने विश्वनाथ के बच्चों को 'सीधे लड़के' किस संदर्भ में कहा?
- अतिथियों की सेवा करने के कारण
- किसी तरह का प्रश्न न करने के कारण
- आज्ञाकारिता के भाव के कारण
- गरमी को चुपचाप सहने के कारण

उत्तर— ☆ अतिथियों की सेवा करने के कारण

2. "एक ये पड़ोसी हैं, निर्दयी..." विश्वनाथ ने अपने पड़ोसी को निर्दयी क्यों कहा?
- उन्हें कष्ट में देखकर प्रसन्न होते हैं
- पड़ोसी किसी प्रकार का सहयोग नहीं करते हैं
- लड़ने-झगड़ने के अवसर ढूँढ़ते हैं
- अतिथियों का अपमान करते हैं

उत्तर— ☆ उन्हें कष्ट में देखकर प्रसन्न होते हैं

3. "ईश्वर करें इन दिनों कोई मेहमान न आए।" रेवती इस तरह की कामना क्यों कर रही है?
- मेहमान के ठहरने की उचित व्यवस्था न होने के कारण
- रेवती का स्वास्थ्य कुछ समय से ठीक न होने के कारण
- अतिथियों के आने से घर का कार्य बढ़ जाने के कारण
- उसे अतिथियों का आना-जाना पसंद न होने के कारण

उत्तर— ☆ रेवती का स्वास्थ्य कुछ समय से ठीक न होने के कारण

4. "हे भगवान! कोई मुसीबत न आ जाए।" रेवती कौन-सी मुसीबत नहीं आने के लिए कहती है?
- पानी की कमी होने की
- पड़ोसियों के चिल्लाने की
- मेहमानों के आने की
- गरमी के कारण बीमारी की

उत्तर— ☆ मेहमानों के आने की

5. इस एकांकी के आधार पर बताएँ कि मुख्य रूप से कौन-सी बात किसी रचना को नाटक का रूप देती है?
- संवाद
- कथा
- वर्णन
- मंचन

उत्तर— ☆ संवाद और मंचन

(ख) हो सकता है कि आपके समूह के साथियों ने अलग-अलग उत्तर चुने हों। अब अपने सहपाठियों के साथ चर्चा कीजिए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने?

उत्तर— छात्र स्वयं करें।

पंक्तियों पर चर्चा

पाठ से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपनी कक्षा में साझा कीजिए।

- "पानी पीते-पीते पेट फूला जा रहा है, और प्यास है कि बुझने का नाम नहीं लेती।"

उत्तर— गर्मी के कारण बार-बार प्यास लगना और पानी पीने के बावजूद प्यास न बुझना।

- ''सारे शहर में जैसे आग बरस रही हो''

उत्तर– गर्मी की तीव्रता, जो पूरे शहर को झुलसा रही हो।

- ''यह तो हमारा ही भाग्य है कि चने की तरह भाड़ में भुनते रहते हैं।''

उत्तर– गर्मी के मौसम में असहनीय पीड़ा और कष्ट।

- ''आह, अब जान में जान आई। सचमुच गरमी में पानी ही तो जान है।''

उत्तर– गर्मी में राहत मिलने पर राहत की भावना।

मिलकर करें मिलान

स्तंभ 1 में कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं और स्तंभ 2 में उनसे मिलते-जुलते भाव दिए गए हैं। स्तंभ 1 की पंक्तियों को स्तंभ 2 की उनके सही भाव वाली पंक्तियों से रेखा खींचकर मिलाइए–

क्रम	स्तंभ 1	स्तंभ 2
1.	लाखों के आदमी खाक में मिल गए।	1. भोजन की व्यवस्था कब तक हो जाएगी।
2.	धोती ऐसी चर्रा रही है, जैसे पुरानी हो।	2. पहले अपना ध्यान फिर दूसरा काम
3.	माल-मसाला तो अंटी में है न?	3. बहुत ही समृद्ध व्यक्ति थे पर अब उनके पास कुछ भी नहीं है
4.	खाने में क्या देर-दार है।	4. कपड़ा पसीने से भीगकर पुराने जैसा हो गया है
5.	पहले आत्मा फिर परमात्मा	5. धनराशि सुरक्षित तो है न!

उत्तर– 1. (3) 2. (4) 3. (5) 4. (1) 5. (2)

सोच-विचार के लिए

एकांकी को पुनः पढ़िए, पता लगाइए और लिखिए–

(क) ''शहर में तो ऐसे ही मकान होते हैं'' नन्हेमल का 'ऐसे ही मकान' से क्या आशय है?

उत्तर– नन्हेमल का ऐसे ही मकान से आशय– नन्हेमल शहर के मकानों से परिचित था। उसके अनुसार शहर में मकान आमतौर पर छोटे और तंग होते हैं, जिसमें रहने लायक पर्याप्त जगह और सुविधाएँ नहीं होतीं। ऐसे ही मकान का आशय है कि शहर के मकानों में आँगन, छत या अन्य खुली जगहें कम होती हैं, वे एक-दूसरे से सटे हुए होते हैं।

(ख) पड़ोसी को विश्वनाथ से किस तरह की शिकायत है? आपके विचार से पड़ोसी का व्यवहार उचित है या अनुचित? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर– पड़ोसी को विश्वनाथ से शिकायत है कि विश्वनाथ ने बिना अनुमति के उनकी छत पर गन्दा पानी फैला दिया है। यह एक सामान्य समस्या है, यहाँ पड़ोसी का व्यवहार अनुचित है। कूड़ा फेंकना या गन्दा पानी फैलाना एक स्वस्थ और अच्छे वातावरण के लिए हानिकारक है। पड़ोसी को चाहिए था कि वह विश्वनाथ से इस बारे में बात करता। उससे झगड़ा नहीं करता।

(ग) एकांकी में विश्वनाथ नन्हेमल और बाबूलाल को नहीं जानता है, फिर भी उन्हें अपने घर में आने देता है। क्यों?

उत्तर– एकांकी में विश्वनाथ नन्हेमल और बाबूलाल को नहीं जानता है। वे दोनों अपरिचित हैं और विश्वनाथ को यह भी नहीं पता कि वे उसके घर क्यों आए हैं। फिर भी उन्हें अपने घर आने देता है क्योंकि नन्हेमल और बाबूलाल उसे यह समझाने की कोशिश करते हैं कि वे संपतराम के कहने से आये हैं।

(घ) एकांकी के उन संवादों को ढूँढ़कर लिखिए जिनसे पता चलता है कि बाबूलाल और नन्हेमल विश्वनाथ के परिचित नहीं हैं?

उत्तर– बाबूलाल और नन्हेमल के परिचित न होने के संवाद।

(1) हाँ, पिछले साल मैं लखनऊ जाते हुए दो दिन के लिए जगदीशप्रसाद के पास मुरादाबाद ठहरा था।

(2) हाँ, सेठ जगदीशप्रसाद के यहाँ हमने आपको देखा था। उनकी आटे की मिल है, क्या कहने है उनके बड़े आदमी हैं।

(3) मालूम होता है आपने हमें पहचाना नहीं है।

ये संवाद दर्शाते हैं कि बाबूलाल और नन्हेमल विश्वनाथ को यह याद दिलाने का प्रयास कर रहे हैं कि वे उन्हें जानते हैं लेकिन विश्वनाथ उन्हें पहचान नहीं पा रहे हैं। वास्तव में वे परिचित नहीं हैं।

(ङ) एकांकी के उन वाक्यों को ढूँढ़कर लिखिए जिनसे पता चलता है कि शहर में भीषण गरमी पड़ रही है।

उत्तर– शहर में भीषण गरमी पड़ने वाले संवाद–

(1) ओफ, बड़ी गरमी है! (पंखा जोर-जोर से करने लगता है) इन बन्द मकानों में रहना कितना भयंकर है! मकान है कि भट्‌टी!

(2) पत्ता तक नहीं हिल रहा है जैसे साँस बन्द हो जाएगी। सिर फटा जा रहा है।

(3) पानी पीते-पीते पेट फूलता जा रहा है और प्यास है कि बुझने का नाम नहीं लेती।

(4) आँगन में घड़े में भी तो पानी ठंडा नहीं होता।

(5) बरफ का पानी पीने से क्या फायदा? प्यास जैसी की तैसी, बल्कि दुगुनी लगती है।

(6) मेरे कपड़े निचोड़कर देख लो, एक लोटे से कम पसीना नहीं निकलेगा।

अनुमान और कल्पना से

अपने समूह में मिलकर चर्चा कीजिए–

(क) एकांकी में विश्वनाथ अपनी पत्नी को अतिथियों के लिए भोजन की व्यवस्था करने के लिए कहता है। साथ ही रेवती की अस्वस्थता का विचार करके बाजार से मँगवाने का सुझाव भी देता है। लेकिन उसने स्वयं अतिथियों के लिए भोजन बनाने के विषय में क्यों नहीं सोचा?

उत्तर– एकांकी में विश्वनाथ अपनी पत्नी रेवती को अतिथियों के भोजन की व्यवस्था करने के लिए कहते हैं क्योंकि भारतीय परम्परा के अनुसार खासकर पुराने समय में घर के अतिथियों की देखभाल करना, भोजन बनाना और उनकी आवश्यकताओं का ध्यान रखना महिलाओं की जिम्मेदारी मानी जाती थी। विश्वनाथ के पुरुष होने और पारंपरिक सामाजिक मानदंडों के अनुरूप नहीं है।

वह रेवती के अस्वस्थ होने पर बाजार से भोजन मँगवाने का सुझाव देता है। यह दर्शाता है कि वह अपनी पत्नी की देखभाल करने और मेहमानों को असुविधा न हो, यह सुनिश्चित करने की कोशिश कर रहा है।

विश्वनाथ स्वयं भोजन बनाने के बारे में नहीं सोचता क्योंकि भोजन बनाना उसकी भूमिका में नहीं आता।

(ख) एकांकी में विश्वनाथ का बेटा प्रमोद अतिथियों की पेयजल व्यवस्था करता है और छोटी बहन का भी ध्यान रखता है। प्रमोद को इस तरह के उत्तरदायित्व क्यों दिए गए होंगे?

उत्तर– प्रमोद को उत्तरदायित्व इसलिए दिए गए होंगे क्योंकि वह घर का बड़ा बेटा है और परिवार का सदस्य होने के नाते, वह परिवार की सहायता करना चाहता है। इसके अलावा प्रमोद को उत्तरदायित्व देकर, लेखक ने यह दिखाने की कोशिश की है कि युवा पीढ़ी में भी जिम्मेदारी की भावना होती है और वे अपने घरवालों के लिए कुछ करना चाहते हैं।

(ग) ''कैसी बातें करते हो, भैया! मैं अभी खाना बनाती हूँ'' भीषण गरमी और सिर में दर्द के बावजूद भी रेवती भोजन की व्यवस्था करने के लिए क्यों तैयार हो गई होगी?

उत्तर– क्योंकि आगंतुक अपरिचित नया मेहमान न होकर उसका अपना सगा भाई था।

(घ) एकांकी से गरमी की भीषणता दर्शाने वाली कुछ पंक्तियाँ दी जा रही हैं। अपनी कल्पना और अनुमान से बताइए कि सर्दी और वर्षा की भीषणता के लिए आप इनके स्थान पर क्या-क्या प्रयोग करते हैं? अपने वाक्यों को दिए गए उचित स्थान पर लिखिए–

गरमी की भीषणता दर्शाने वाली पंक्तियाँ	सर्दी की भीषणता दर्शाने वाली पंक्तियाँ	वर्षा की भीषणता दर्शाने वाली पंक्तियाँ
1. यह गरमी में भुन रहा है।	यह सर्दी में जम गया।	यह वर्षा में भीग रहा है।
2. पर बरफ भी कोई कहाँ तक पिए।		
3. सारे शहर में जैसे आग बरस रही हो।		
4. प्यास है कि बुझने का नाम नहीं लेती।		
5. चारों तरफ दीवारें तप रही हैं।		
6. ठंडा-ठंडा पानी पिलाओ दोस्त, प्राण सूखे जा रहे हैं।		

7. सचमुच गरमी में पानी ही तो जान है।
8. यह तो हमारा ही भाग्य है कि चने की तरह भाड़ में भुनते रहते हैं।
9. फिर भी पसीने से नहा गया हूँ।

उत्तर–

गरमी की भीषणता दर्शाने वाली पंक्तियाँ	सर्दी की भीषणता दर्शाने वाली पंक्तियाँ	वर्षा की भीषणता दर्शाने वाली पंक्तियाँ
1. यह गरमी में भुन रहा है।	**1.** यह सर्दी में जम गया।	**1.** यह वर्षा में भीग रहा है।
2. पर बरफ भी कोई कहाँ तक पिए।	**2.** पर आग भी कोई कहाँ तक जलाए।	**2.** पर छत भी कोई कहाँ तक बचाए।
3. सारे शहर में जैसे आग बरस रही हो।	**3.** सारे शहर में जैसे बरफ गिर रही हो।	**3.** सारे शहर में जैसे पानी बरस रहा हो।
4. प्यास है कि बुझने का नाम नहीं लेती।	**4.** सर्दी है कि कम होने का नाम नहीं लेती।	**4.** बारिश है कि रुकने का नाम नहीं लेती।
5. चारों तरफ दीवारें तप रही हैं।	**5.** चारों तरफ बरफ की दीवारें खड़ी हैं।	**5.** चारों तरफ पानी ही पानी है।
6. ठंडा-ठंडा पानी पिलाओ दोस्त, प्राण सूखे जा रहे हैं।	**6.** कंबल में दुबक जाऊँ, ठंड से कँपकँपाते हुए जान निकली जा रही है।	**6.** पानी में भीगकर ठिठुर रहा हूँ बारिश से बचने के लिए कोई सहारा नहीं।
7. सचमुच गरमी में पानी ही तो जान है।	**7.** सर्दी में तो हवा भी बरफ की तरह चुभती है। या सर्दी में तो हड्डियाँ तक जम जाती हैं।	**7.** पानी बरस रहा है जैसे आसमान फट गया है। या पानी ही पानी सब तरफ नदी-नाले उफान पर हैं।
8. यह तो हमारा ही भाग्य है कि चने की तरह भाड़ में भुनते रहते हैं।	**8.** यह तो हमारा भाग्य है कि बर्फ के गोले की तरह जमते रहते हैं।	**8.** यह तो हमारा ही भाग्य है कि पानी में डूबते-उतरते रहते हैं।
9. फिर भी पसीने से नहा गया हूँ।	**9.** फिर भी ठंड से काँप रहा हूँ।	**9.** फिर भी पानी में भीगकर नहा रहा हूँ।

एकांकी की रचना

इस एकांकी के आरंभ में पात्र-परिचय, स्थान, समय और विश्वनाथ और रेवती के घर के विषय में बताया गया है, जैसे कि–

- ''गरमी की ऋतु, रात के आठ बजे का समय। कमरे के पूर्व की ओर दो दरवाजे...''
- विश्वनाथ– उफ्फ, बड़ी गरमी है (पंखा जोर-जोर से करने लगता है।) इन बंद मकानों में रहना कितना भयंकर है। मकान है कि भट्टी!

  (पश्चिम की ओर से एक स्त्री प्रवेश करती है)
- रेवती–(आँचल से मुँह का पसीना पोंछती हुई) पत्ता तक नहीं हिल रहा है। जैसे साँस बंद हो जाएगी। सिर फटा जा रहा है।

एकांकी की इन पंक्तियों को ध्यान से पढ़िए। इन्हें पढ़कर स्पष्ट पता चल रहा है कि पहली पंक्ति समय और स्थान

आदि के विषय में बता रही है। इसे रंगमंच-निर्देश कहते हैं। वहीं दूसरी पंक्तियों से स्पष्ट है कि वे दोनों लोगों द्व ारा कही गई बातें हैं। इन्हें संवाद कहा जाता है। ये 'नए मेहमान' एकांकी का एक अंश है।

एकांकी एक प्रकार का नाटक होता है जिसमें केवल एक ही अंक या भाग होता है। इसमें किसी कहानी या घटना को संक्षेप में दर्शाया जाता है। आप इस एकांकी में ऐसी अनेक विशेषताएँ खोज सकते हैं। (जैसे–इस एकांकी में कुछ संकेत कोष्ठक में दिए गए हैं, पात्र परिचय, अभिनय संकेत, वेशभूषा संबंधी निर्देश आदि।)

(क) अपने समूह में मिलकर इस एकांकी की विशेषताओं की सूची बनाइए।

उत्तर– एकांकी की विशेषताओं की सूची–

(1) एकांकी में केवल एक अंक होता है जो नाटक के एक भाग को दर्शाता है।

(2) एकांकी में संक्षेप में किसी घटना को दर्शाया जाता है, जिसमें घटनाओं के साथ मुख्य पात्रों पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है।

(3) एकांकी में पात्रों की संख्या सीमित होती है, जो कहानी को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

(4) एकांकी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा संवाद होता है, जो पात्रों के बीच होने वाली बातचीत को दर्शाता है।

(5) एकांकी में रंगमंच निर्देश दिए जाते हैं, जो पात्रों की मनोदशा, स्थिति, वातावरण तथा काल को दर्शाते हैं।

(6) एकांकी में अभिनय का महत्वपूर्ण स्थान होता है, जो पात्रों की क्रियाओं तथा भावों को दर्शाता है।

(7) एकांकी में वेशभूषा भी महत्वपूर्ण होती है, जो उनके चरित्र को तथा उनकी स्थिति को दर्शाते हैं।

(ख) आगे कुछ वाक्य दिए गए हैं। एकांकी के बारे में जो वाक्य आपको सही नहीं लग रहे हैं, उनके सामने 'हाँ' लिखिए। जो वाक्य सही लग रहे हैं, उनके सामने 'नहीं' लिखिए।

वाक्य	हाँ/नहीं
1. 'नए मेहमान' एकांकी में पूरी कहानी एक ही स्थान, घर में घटित होती दिखाई गई है।	
2. एकांकी में पात्रों की संख्या बहुत अधिक है।	
3. एकांकी में एक कहानी छिपी है।	
4. एकांकी और कहानी में कोई अंतर नहीं है।	
5. एकांकी में कहानी की घटनाएँ अलग-अलग दिनों या महीनों में हो रही हैं।	
6. एकांकी में कहानी मुख्य रूप से संवादों से आगे बढ़ती है।	
7. एकांकी में पात्रों को अभिनय के लिए निर्देश दिए गए हैं।	

उत्तर– 1. हाँ 2. नहीं 3. हाँ 4. नहीं 5. नहीं 6. हाँ 7. हाँ

अभिनय की बारी

(क) क्या आपने कभी मंच पर कोई एकांकी या नाटक देखा है? टीवी पर फिल्में और ध ारावाहिक तो अवश्य देखें होंगे! अपने अनुभवों से बताइए कि यदि आपको अपने विद्यालय में 'नए मेहमान' एकांकी का मंचन करना हो तो आप क्या-क्या तैयारियाँ करेंगे। (उदाहरण के लिए–इस एकांकी में आप क्या-क्या जोड़ेंगे जिससे यह और अधिक रोचक बने, कौन-से पात्र जोड़ेंगे या पात्रों की वेशभूषा क्या रखेंगे?)

उत्तर– (1) एकांकी में कुछ हास्य-व्यंग्य के दृश्यों को शामिल करेंगे।

(2) नए पात्रों को भी शामिल करेंगे जैसे एक शरारती बच्चे को और उसके संवाद को।

(3) एक मासूम-सी लड़की और उसके लिए कुछ मासूम से दृश्य और संवाद।

(4) पात्रों की वेशभूषा ग्रामीण परिवेश पर आधारित होगी। पात्रों को ग्रामीण परिधान पहनाए जाएँगे।

(नोट– छात्र स्वयं भी कर सकते हैं।)

(ख) अब आपको अपने-अपने समूह में इस एकांकी को प्रस्तुत करने की तैयारी करनी है। इसके लिए आपको यह सोचना है कि कौन किस पात्र का अभिनय करेगा। आपके शिक्षक आपको तैयारी के बाद अभिनय के लिए निर्धारित समय देंगे। (जैसे 10 मिनट या 15 मिनट)।

आपको इतने ही समय में एकांकी प्रस्तुत करनी है। बारी-बारी से प्रत्येक समूह एकांकी प्रस्तुत करेगा।

सुझाव–

- आप एकांकी को जैसा दिया गया है, बिलकुल वैसा भी प्रस्तुत कर सकते हैं या इसमें थोड़ा-बहुत परिवर्तन भी कर सकते हैं।
- एकांकी के लिए आस-पास की वस्तुओं का ही उपयोग कर लेना है, जैसे– कुर्सी, मेज आदि।
- स्थान की कमी हो तो अभिनेता बच्चे अपने स्थान पर खड़े-खड़े भी संवाद बोल सकते हैं।
- आप चाहें तो अपने अभिनय को अपने शिक्षक की सहायता से रिकॉर्ड करके उसे अपने परिवार या संबंधियों के साथ साझा भी कर सकते हैं।

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

भाषा की बात

''सारे शहर में जैसे आग बरस रही हो।''
''चारों तरफ दीवारें तप रही हैं।''
''यह तो हमारा ही भाग्य है कि चने की तरह भाड़ में भुनते रहते हैं।''

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित शब्द गरमी की प्रचंडता को दर्शा रहे हैं कि तापमान अत्यधिक है।

एकांकी में इस प्रकार के और भी प्रयोग हुए हैं। जहाँ शब्दों के माध्यम से विशेष प्रभाव उत्पन्न किया गया है, उन प्रयोगों को छाँटकर अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए।

उत्तर–

(1) पसीना पोंछते-पोंछते हाथ थक गए।
(2) शरीर में जैसे आग निकल रही है।
(3) पानी भी गर्म लग रहा है।
(4) छाँव में भी गर्मी लग रही है।

❖ मुहावरे

''आज दो साल से दिन-रात एक करके ढूँढ़ रहा हूँ।''
''लाखों के आदमी खाक में मिल गए।''

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित वाक्यांश **'रात-दिन एक करना'** तथा **'खाक में मिलना'** मुहावरों का प्रायोगिक रूप है। ये वाक्य में एक विशेष प्रभाव उत्पन्न कर रहे हैं। एकांकी में आए अन्य मुहावरों की पहचान करके लिखिए और उनके अर्थ समझते हुए उनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

उत्तर–(1) चोर छिपे थोड़े रहते हैं–

अर्थ– चोर या अपराधी छिपाये नहीं छिपते, वे कभी न कभी सामने आ ही जाते हैं।

वाक्य प्रयोग–आखिरकार राशन विक्रेता की कालाबाजारी पकड़ी ही गई हैं लोग कहने लगे चोर छिपे ही थोड़े रहते है।

(2) जान में जान आना–

अर्थ– मुसीबत से निकलने पर चिंतामुक्त होना या चैन मिलना।

वाक्य प्रयोग– राम का कीमती सामान खो गया फिर एक दिन अचानक उसे मिल गया तो उसे जान में जान आई।

(3) जी में आना–

अर्थ– मन में विचार आना या इच्छा होना।

वाक्य प्रयोग– नन्हेमल के जी में आया कि किसी को रात में परेशान करने से अच्छा है किसी होटल में रुक जाऊँ।

(4) शक में पड़ना–

अर्थ– संदेह होना या किसी बात का विश्वास न होना

वाक्य प्रयोग– विश्वनाथ को बाबूलाल की बात पर शक होने लगा था क्योंकि वह संपतराम नाम के आदमी को जानता नहीं था।

❖ बात पर बल देना

- ''वह तो कहो, मैं भी ढूँढ़कर ही रहा।''

उपर्युक्त वाक्य से रेखांकित शब्द 'ही' हटाकर पढ़िए–
''वह तो कहो, मैं भी ढूँढ़कर रहा।''

(क) दो-दो के जोड़े में चर्चा कीजिए कि वाक्य में 'ही' के प्रयोग से किस बात को बल मिल रहा था और 'ही' हटा देने से क्या कमी आई?

(ख) नीचे लिखे वाक्यों में ऐसे स्थान पर 'ही' का प्रयोग कीजिए कि वे सामने लिखा अर्थ देने लगें–

1. विश्वनाथ के अतिथि यहाँ रुकेंगे	और किसी के अतिथि नहीं।

2. विश्वनाथ के अतिथि यहाँ रुकेंगे	यहाँ के अतिरिक्त और कहीं नहीं।
3. विश्वनाथ के अतिथि यहाँ रुकेंगे	यहाँ रुकना निश्चित है।

- ''तुम नहाने तो जाओ।''

उपर्युक्त वाक्य में 'तो' का स्थान बदलकर अर्थ में आए परिवर्तन पर ध्यान दें–

''तुम तो नहाने जाओ।''

'' तुम नहाने जाओ तो।''

'ही' और 'तो' के ऐसे और प्रयोग करके वाक्य बनाइए।

उत्तर– (क) 'ही' का प्रयोग वाक्य में किसी विशेष बात पर जोर देने या उसे सीमित करने के लिए किया जाता है। 'ही' हटाने से वाक्य का अर्थ बदल सकता है या उस विशेष बात पर जोर कम हो जाता है।

(1) वाक्य– विश्वनाथ के अतिथि यहाँ रुकेंगे और किसी के अतिथि नहीं।'' 'ही' शब्द का प्रयोग यह दर्शाने के लिए किया गया है कि केवल विश्वनाथ के अतिथि ही यहाँ रुकेंगे और कोई दूसरा नहीं। यह एक विशिष्टता और प्राथमिकता को दर्शाता है।

'ही' हटाने से कमी– 'ही' यदि हटा दिया गया तो वाक्य का अर्थ बदल जाएगा। यह स्पष्ट नहीं होगा कि केवल विश्वनाथ के अतिथि ही रुकेंगे। यह सम्भावना बनी रहेगी कि दूसरों के अतिथि भी यहाँ रुक सकते हैं।

'ही' का उचित प्रयोग– ''विश्वनाथ के अतिथि ही यहाँ रुकेंगे और किसी के अतिथि नहीं।''

(2) वाक्य– ''विश्वनाथ के अतिथि यहाँ रुकेंगे यहाँ के अतिरिक्त और कहीं नहीं।

'ही' के प्रयोग पर बल– 'ही' शब्द का प्रयोग यह दर्शाने के लिए किया गया है कि विश्वनाथ के अतिथि केवल यहाँ रुकेंगे, कहीं और नहीं।

'ही' हटाने से कमी– 'ही' हटाने से यह स्पष्ट नहीं होगा कि अतिथि केवल यहीं रुकेंगे, यह भी सम्भव हो सकता है कि वह कहीं और रुक जायें।

'ही' का उचित प्रयोग– 'विश्वनाथ के अतिथि यहाँ ही रुकेंगे यहाँ के अतिरिक्त और कहीं नहीं।

(ख) यहाँ पर 'ही' का प्रयोग करके वाक्य इस प्रकार होगा–

(1) विश्वनाथ के अतिथि ही यहाँ रुकेंगे और किसी के अतिथि नहीं (इसका अर्थ यह है कि केवल विश्वनाथ के अतिथि ही यहाँ रुकेंगे और कोई नहीं)

(2) विश्वनाथ के अतिथि ही यहाँ रुकेंगे यहाँ के अतिरिक्त और कहीं नहीं। (इसका अर्थ है कि केवल यहाँ पर ही विश्वनाथ के अतिथि रुकेंगे, कहीं और नहीं।)

(3) विश्वनाथ के अतिथि ही यहाँ रुकेंगे, यहाँ रुकना निश्चित है। (इसका अर्थ है कि यहाँ रुकना निश्चित है और किसी और स्थान पर नहीं।)

(3) 'ही' और 'तो' के वाक्य

'ही'

(1) यह पुस्तक ही मेरी पसंदीदा है।
(2) राम ने ही सारा काम किया।
(3) आज ही मुझे यह काम समाप्त करना है।
(4) यह ही है जो मेरी सहायता कर सकता है।
(5) ये ही रास्ता है जो हमें स्कूल तक ले जाएगा।

'तो'

(1) अगर राम मेहनत करेगा तो सफल होगा।
(2) जब मैं छोटा था तो खेला करता था।
(3) अगर वर्षा होगी तो हम घर पर ही रहेंगे।
(4) तुमने तो मुझे समझा ही नहीं।
(5) यह तो होना ही था।

पाठ से आगे

आपकी बात

(क) ''रेवती– ये लोग कौन हैं? जान-पहचान के तो मालूम नहीं पड़ते।

विश्नाथ–क्या पूछ लूँ? दो-तीन बार पूछा, ठीक-ठीक उत्तर ही नहीं देते।''

उपर्युक्त संवाद से पता चलता है कि विश्वनाथ दुविधा की स्थिति में है। क्या आपके सामने कभी कोई ऐसी दुविधापूर्ण स्थिति आई है। जब आपको यह समझने में समय लगा हो कि क्या सही है और क्या गलत? अपने अनुभव साझा कीजिए।

उत्तर— अनुभव— मुझे याद है कि एक बार मैं माँ के पर्स से पैसे चुराते हुए पकड़ा गया। मुझे पता था कि मैंने गलत किया है लेकिन मैं डर गया था और मैंने झूठ बोल दिया कि मैंने पैसे नहीं चुराये। पिताजी ने मुझसे कहा कि अगर मैं सच बोलूँगा तो वह मुझे माफ करेंगे लेकिन अगर झूठ बोलूँगा, तो दण्डित करेंगे। उस समय, मेरे सामने दो रास्ते थे, एक तो सच बोलकर अपनी गलती स्वीकार करूँ और दूसरा झूठ बोलकर अपनी गलती छुपाना। मुझे बहुत डर लग रहा था, लेकिन मैंने सच बोलने का फैसला किया। मैंने अपनी गलती स्वीकार की और पिताजी ने मुझे माफ कर दिया। मुझे उस समय बहुत राहत मिली और मैंने सीखा कि चोरी करना और झूठ बोलना हमेशा गलत होता है। सच बोलने से हमेशा सुकून मिलता है, चाहे उसका परिणाम कुछ भी हो।

(ख) एकांकी से ऐसा लगता है कि नन्हेमल और बाबूलाल सगे संबंधी ही नहीं, अच्छे मित्र भी हैं। आपके अच्छे मित्र कौन-कौन हैं? वे आपको क्यों प्रिय हैं?

उत्तर— हाँ, एकांकी में नन्हेमल और बाबूलाल के बीच जिस तरह का सम्बन्ध दिखाया गया है, उससे पता चलता है कि वे न केवल सगे-सम्बन्धी हैं, बल्कि अच्छे मित्र भी हैं। वे एक-दूसरे के दुख-सुख में साथ रहते हैं तथा एक-दूसरे की सहायता करते हैं। एक-दूसरे पर विश्वास करते हैं। मेरे भी कुछ अच्छे मित्र हैं, जो मुझे बहुत प्रिय हैं। वे मुझे खुशी देते हैं, मेरी सहायता करते हैं तथा मेरे साथ हमेशा खड़े रहते हैं।

मेरे कुछ अच्छे मित्र हैं— अर्पित— अर्पित एक बहुत मिलनसार और सहायता करने वाला व्यक्ति है। वह दूसरों की सहायता के लिए हमेशा तत्पर रहता है। मुझे उसके साथ में बहुत खुशी मिलती है।

अंकित— अंकित बहुत ही बुद्धिमान और समझदार लड़का है। वह हमेशा मुझे सही सलाह देता है और मुसीबत के समय मेरा साथ देता है।

संजना— संजना एक बहुत ही हँसमुख और जिन्दादिल लड़की है। वह हमेशा मुझे हँसाती रहती है और जीवन को सकारात्मक तरीके से देखने के लिए प्रेरित करती है।

(ग) आप अपने किसी संबंधी या मित्र के घर जाने से पहले क्या-क्या तैयारी करते हैं?

उत्तर— हम अपने किसी सम्बन्धी या मित्र के घर जाने से पहले निम्न तैयारी करते हैं—

(1) यात्रा की व्यवस्था करना।

(2) उपहार खरीदना।

(3) मनोरंजन की योजना बनाना।

(4) कुछ खास पकवान या उसकी पसन्द के अनुसार भोजन की व्यवस्था करना।

(5) कपड़े, दवाइयाँ और व्यक्तिगत सामान की व्यवस्था करना।

(6) समय पर पहुँचना।

(घ) विश्वनाथ के पड़ोसी उनका किसी प्रकार से भी सहयोग नहीं करते हैं। आप अपने पड़ोसियों का किस प्रकार से सहयोग करते हैं?

उत्तर— हम अपने पड़ोसियों का सहयोग निम्न प्रकार से करते हैं—

(1) हमारा पड़ोसी कोई चीज माँगता है, तो हम उसे दे देते हैं।

(2) हमारा पड़ोसी अपनी व्यक्तिगत बातें या चीजें हमसे बँटवारा करता है, तो उसे अपने तक ही सीमित रखते हैं।

(3) अगर पड़ोसी कहीं घूमने या काम से चला जाता है तो उनसे फोन पर सलाह करके उनका कोई सामान या कोरियर आदि को रिसीव करके, संभाल कर रखते हैं और उसके वापस आने पर उसे दे देते हैं।

(4) जब भी पड़ोसी मिलता है, तो उससे हँसकर मिलते हैं। पड़ोसी के परिवार का हालचाल पूछते हैं। अगर कोई परेशानी होती है तो दूर करने में सहयोग करते हैं।

(ङ) नन्हेमल और बाबूलाल का व्यवहार सामान्य अतिथियों जैसा नहीं है। आपके अनुसार सामान्य अतिथियों का व्यवहार कैसा होना चाहिए?

उत्तर— एक सामान्य अतिथि का व्यवहार ''अतिथि देवो भव'' (अतिथि भगवान के समान है) की भावना के अनुरूप होना चाहिए। इसका आशय यह है कि अतिथि विनम्र, सम्मानजनक और विचारशील होना चाहिए। उन्हें घर (मेजबान के) के नियमों और रीति-रिवाजों का पालन करना चाहिए और वह दूसरों की बातों को ध्यान से सुनें और उनकी राय का सम्मान करें। यदि सम्भव हो, तो उसके घर के काम में मदद करें। अगर किसी चीज के बारे में अनिश्चित हैं, तो अपने मेजबान से पूछने में संकोच न करें। अपने मेजबान के घर में एक अतिथि के रूप में अपने विवेक का प्रयोग करें।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि एक सामान्य अतिथि का व्यवहार ऐसा होना चाहिए, जो मेजबान को सहज, सम्मानित और आभारी महसूस कराए।

सावधानी और सुरक्षा

(क) विश्वनाथ ने नन्हेमल और बाबूलाल से उनका परिचय नहीं पूछा और उन्हें घर के भीतर ले आए। यदि आप उनके स्थान पर होते तो क्या करते?

उत्तर– विश्वनाथ ने नन्हेमल और बाबूलाल से उनका परिचय नहीं पूछा और उन्हें घर के भीतर ले आया, यह उनकी असावधानी और अज्ञानता को दर्शाता है। अगर हम विश्वनाथ के स्थान पर होते तो एक अनजान व्यक्ति को अपने घर में बिना किसी पूछताछ के आने नहीं देते।

(ख) आपके माता-पिता या अभिभावक की अनुपस्थिति में यदि कोई अपरिचित व्यक्ति आए तो आप क्या-क्या सावधानियाँ बरतेंगे?

उत्तर– माता-पिता या अभिभावक की अनुपस्थिति में यदि कोई अपरिचित व्यक्ति आए तो हमें दरवाजा नहीं खोलना चाहिए और उनसे बात करने के बजाय अपने माता-पिता को फोन करके स्थिति के बारे में बताना चाहिए। यदि माता-पिता से सम्पर्क नहीं कर पाते हैं तो किसी भरोसेमंद पड़ोसी से मदद माँगेंगे। यदि अपरिचित व्यक्ति से खतरा महसूस हुआ तो 100 नम्बर पर पुलिस को फोन करेंगे।

सृजन

(क) आपने यह एकांकी पढ़ी। इस एकांकी में एक कहानी कही गई है। उस कहानी को अपने शब्दों में लिखिए। (जैसे– एक दिन मेरे घर में मेहमान आ गए...)

उत्तर–एक दिन मेरे घर में मेहमान आ गए

मैं अपनी माँ तथा भाई के साथ रहता हूँ। गर्मियों की छुट्टी में मेरी बुआ और फूफाजी अपने बेटे शशांक के साथ हमारे घर रहने आये। घर आते ही फूफा जी मुझसे कहते हैं कि यहाँ तो बहुत गर्मी है। घर में कोई ए.सी. नहीं है क्या? मेरी माँ ने कहा भाई-साहब अभी कुछ दिन पहले ही अपने कमरे में ए.सी. लगवाया है। यह सुनते ही फूफाजी अपने बेटे से बोले कि सारा सामान भाभी के कमरे में ले चलो। यह सुनकर मैं और मेरी माँ चुप रहे क्योंकि हमने सोचा कि कुछ दिनों की तो बात है। इस तरह बुआ और फूफाजी को मेरे घर में रहते हुए एक महीना हो गया। तब मैंने माँ से पूछा कि बुआ-फूफाजी कब जाने वाले हैं। हम कब तक ऐसे ही हॉल में सोकर अपना गुजारा करेंगे। मेरी माँ बोली रिश्तेदारी का मामला है। हम कुछ कह भी तो नहीं सकते। मेरा भाई विवेक बोला वह सब तो ठीक है लेकिन उनका छोटा बेटा सारा दिन ऊधम करता रहता है। कल तो उसने मेरा नया खिलौना बुरी तरह से तोड़ दिया। मुझे इस बात पर बहुत गुस्सा आया और मैंने कहा– तुमने अपना खिलौना क्यों दिया। मेरा भाई विवेक बोला जब से बुआ और फूफाजी आये हैं, तब से कुछ न कुछ खाने की डिमांड करते हैं। जिससे मेरा सारा दिन बाजार जाने में बीत जाता है। मैंने कहा कि मैं अभी जाकर फूफा जी से पूछता हूँ कि वह आखिर कब जायेंगे। मैंने बातों ही बातों में कहा कि एक महीना हो गया है। आपके जॉब की छुट्टियाँ तो खत्म हो गयी होंगी ना। तब फूफाजी बोले मैंने तो जॉब कब की छोड़ दी। अब तो मैं बिजनेस इस शहर में खोलने की सोच रहा हूँ। पहले इस शहर को समझ लूँ, जिसमें दो-तीन महीना लग ही जायेंगे। यह सुनकर मैं समझ गया फूफाजी अभी जाने वाले नहीं हैं। यह बात मैंने माँ और विवेक को बताई। विवेक बोला घी जब सीधी उँगली से नहीं निकलता तो उँगली टेढ़ी करनी पड़ती है। इनके साथ कुछ ऐसा ही करना होगा। आप यह काम अब मुझ पर छोड़ दीजिए। उसी रात बुआ और फूफाजी बाहर लॉन में थे। तभी उनका लड़का शशांक चिल्लाता हुआ उनके पास गया और बोला कि मैंने अभी एक भूत को देखा है। तभी एक भूत वहाँ आ गया और बुआ और फूफाजी को बोला तुम में से कौन पहले मेरा भोजन बनना चाहेगा। भूत को देखकर वह बहुत डर गये और उसी समय घर छोड़कर भाग गए। उनके जाने के बाद विवेक ने अपना भूत का मुखैटा उतारा। बुआ-फूफाजी के जाने के बाद सबने चैन की साँस ली। माँ ने विवेक से कहा– तू बड़ा अच्छा भूत है। यह कहकर सब हँसने लगे।

तार से संदेश

''क्या मेरा तार नहीं मिला?''

रेवती के भाई ने अपने आने की सूचना तार द्वारा भेजी थी। 'तार' संदेश भेजने का एक माध्यम था। जिसके द्वारा शीघ्रता से किसी के पास संदेश भेजा जा सकता था, किंतु अब इसका प्रचलन नहीं है।

टेलीग्राफ

किसी भौतिक वस्तु के विनिमय के बिना ही संदेश को दूर तक संप्रेषित करना टेलीग्राफी कहलाता है। विद्युत धारा की सहायता से, पूर्व निर्धारित संकेतों द्वारा, संवाद एवं समाचारों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजने वाला तथा प्राप्त करने वाला यंत्र तारयंत्र (टेलीग्राफ) कहलाता है। वर्तमान में यह प्रौद्योगिकी अप्रचलित हो गई है।

(क) तार भेजने के आधार पर अनुमान लगाएँ कि यह एकांकी लगभग कितने वर्ष पहले लिखी गई होगी?

उत्तर– नये मेहमान एकांकी लगभग 70-80 साल पहले लिखा गया होगा।

(ख) आजकल संदेश भेजने के कौन-कौन से साधन सुलभ हैं?

उत्तर– आजकल संदेश भेजने के साधन हैं– मोबाइल फोन (एसएमएस, एमएमएस और विभिन्न मैसेजिंग एप्स), ईमेल, सोशल मीडिया और पारंपरिक डाक सेवा (पत्र, पोस्टकार्ड) आदि।

(ग) आप किसी को संदेश भेजने के लिए किस माध्यम का सर्वाधिक उपयोग करते हैं?

उत्तर– हम फोन, ईमेल का प्रयोग करते हैं।

(घ) अपने किसी प्रिय व्यक्ति को एक मित्र लिखकर भारतीय डाक द्वारा भेजिए।

उत्तर– महेश शर्मा
सी-19, सेक्टर-3
पटेल नगर, मध्य प्रदेश
21-07-20--

प्रिय मित्र,
सप्रेम नमस्कार

तुम्हारा पत्र मिला। पढ़कर बहुत खुशी हुई कि निबन्ध-लेखन प्रतियोगिता में तुम अपने जिले में प्रथम आए। तुम्हारा नाम समाचार-पत्र में भी छपा है। मित्र होने के नाते यह मेरे लिए गर्व की बात है। इसके लिए तुम्हें बहुत-बहुत बधाई। मेरे मम्मी-पापा की तरफ से तुम्हें और अंकल-आंटी को बहुत-बहुत बधाई। तुम इसी तरह तरक्की करते रहो।

तुम्हारे उज्ज्वल भविष्य के लिए हम सबकी तरफ से अनेक शुभकामनाएँ।

तुम्हारा मित्र
हर्षित

प्रति
सेवा में
नाम– महेश शर्मा
पिता का नाम– हरीश शर्मा
पता-सी-19, सेक्टर-3
पटेल नगर, मध्य प्रदेश
पिनकोड–

प्रेषक
हर्षित शर्मा
सी-119, सेक्टर-3
जीवन ज्योति कॉलोनी
आदर्श नगर, उत्तर प्रदेश
पिन कोड–

नाप, तौल और मुद्राएँ

''जबकि नत्थामल के यहाँ साढ़े नौ आने गज बिक रही थी।''

उपर्युक्त पंक्ति के रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए। रेखांकित शब्द 'साढ़े नौ', 'आने', 'गज' में 'साढ़े नौ' भारतीय भाषा में अंतर्राष्ट्रीय अंक (9.5) को दर्शा रहा है तो वहीं 'आने' शब्द भारतीय मुद्रा और 'गज' शब्द लंबाई नापने का मापक है।

(क) पता लगाइए कि एक रुपये में कितने आने होते हैं?

उत्तर– एक रुपये में सोलह आने होते हैं क्योंकि 4 आने का मतलब 25 पैसे होता है। इस तरह 16 आने बराबर एक रुपया हो गया।

(ख) चार आने में कितने पैसे होते हैं?

उत्तर– चार आने में 25 पैसा होता है।

(ग) आपके आस-पास गज शब्द का प्रयोग किस संदर्भ में किया जाता है? पता लगाइए और लिखिए।

उत्तर– गज का प्रयोग मुख्य रूप से भूमि की माप के लिए किया जाता है।

(घ) बताइए कि एक गज में कितनी फीट होती हैं?

उत्तर– एक गज में तीन फीट होती हैं।

साझी समझ

भारत में 'अतिथि देवो भव' की परंपरा रही है। आपके घर जब अतिथि आते हैं तो आप उनका अभिवादन कैसे करते हैं, अपनी भाषा में बताइए और अपने सहपाठियों के साथ चर्चा कीजिए कि अतिथियों को आप अपने राज्य, क्षेत्र का कौन-सा पारंपरिक व्यंजन खिलाना चाहते हैं।

उत्तर— भारत में 'अतिथि देवो भव'' की परम्परा रही है जिसका अर्थ है 'अतिथि भगवान के समान हैं। जब घर में अतिथि आते हैं तो उनका अभिवादन ''नमस्ते'' या ''जय सियाराम'', ''जय राधेश्याम'' कहकर किया जाता है।

जब कोई अतिथि हमारे घर आता है तो हम सबसे पहले ''नमस्ते'' या ''राधे-राधे'' कहकर उनका अभिवादन करते हैं। फिर हम उन्हें आदरपूर्वक बैठने के लिए कहते हैं और उनसे कुशल-क्षेम पूछते हैं। उन्हें पानी देते हैं। फिर चाय-नाश्ता कराते हैं। यदि वे भोजन के समय आते हैं तो उन्हें भोजन कराते हैं और उनकी पसंद-नापसंद का ध्यान रखते हैं।

हम अपने मेहमानों को राजस्थान की प्रसिद्ध मावा कचौड़ी खिलायेंगे। इसके अलावा मेहमानों को दाल-बाटी-चूरमा का पारंपरिक व प्रसिद्ध भोजन खिलाएँगे।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. 'नये मेहमान' एकांकी का मुख्य कथानक क्या है?
(अ) बच्चों की परेशानी
(ब) अनचाहे मेहमानों से परेशानी
(स) मकान बदलने की परेशानी
(द) गर्मी से बचाव के उपाय

2. विश्वनाथ के घर का पंखा धीमा क्यों चलता है?
(अ) वह पुराना है
(ब) कम बिजली आती है
(स) पंखा टूटा हुआ है
(द) बच्चे उसे छेड़ देते हैं

3. विश्वनाथ अपने बच्चों को कहाँ सुलाने के लिए कहता है?
(अ) आँगन में
(ब) कमरे में
(स) पड़ोसी की छत पर
(द) बाहर सड़क पर

4. मेहमान किस शहर से आये थे?
(अ) मेरठ (ब) बिजनौर
(स) लखनऊ (द) झाँसी

5. नन्हेमल और बाबूलाल ने यह कैसे सिद्ध किया कि वे विश्वनाथ के परिचित हैं?
(अ) संपतराम का नाम लिया
(ब) चिट्ठी दिखाई
(स) रेल टिकट दिखाया
(द) ईश्वरी प्रसाद का नाम लिया

उत्तर— 1. (ब) **2.** (अ) **3.** (स) **4.** (ब) **5.** (अ)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. इन बन्द मकानों में रहना कितना .... है! मकान हैं कि भट्टी।
2. जाने कब तक इस .... में सड़ना होगा।
3. वे तो हमको .... में देखकर प्रसन्न होते हैं।
4. वैसे भी मैं उसकी छत पर बच्चों का .... सोना पसन्द नहीं करूँगी।
5. सोच लो, शायद वहाँ कोई साहित्यिक .... हो, उसी ने इन्हें भेजा हो।

उत्तर— 1. भयंकर **2.** जेलखाने **3.** मुसीबत **4.** अकेला **5.** मित्र

सत्य/असत्य

1. मकान एक साधारण गृहस्थ का है। ( )
2. विश्वनाथ की उम्र चालीस साल है। ( )
3. आँगन में घड़े में भी तो पानी ठंडा नहीं होता। ( )
4. नन्हेमल और बाबूलाल दोनों विश्वनाथ के परिचित मेहमान हैं। ( )
5. भाई के आने पर रेवती खाना बनाती है। ( )

उत्तर– **1.** सत्य **2.** असत्य **3.** सत्य **4.** असत्य **5.** सत्य

सही मिलान

स्तंभ (अ)	स्तंभ (ब)
1. पूर्व की ओर	**(अ)** बाहर आने-जाने के लिए
2. दक्षिण का द्वार	**(ब)** एक मेज
3. पश्चिम का द्वार	**(स)** एक पलंग
4. उत्तर की ओर	**(द)** दो दरवाजे
5. पश्चिम द्वार के पास	**(य)** भीतर खुलता है

उत्तर– 1. (द) **2.** (अ) **3.** (य) **4.** (ब) **5.** (स)

अतिलघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. 'नए मेहमान' एकांकी का मुख्य पात्र कौन है?

उत्तर–'नये मेहमान' एकांकी का मुख्य पात्र विश्वनाथ है।

2. 'नए मेहमान' किसकी रचना है?

उत्तर– 'नए मेहमान' उदयशंकर भट्ट की रचना है।

3. 'नए मेहमान' एकांकी में किस समस्या पर प्रकाश डाला गया है?

उत्तर– 'नये मेहमान' कहानी में मकान की समस्या पर प्रकाश डाला गया है।

4. रेवती को खाना बनाने में परेशानी क्यों हो रही थी?

उत्तर– रेवती को खाना बनाने में परेशानी इसलिए हो रही थी क्योंकि वह गर्मी से परेशान थी।

5. विश्वनाथ मेहमानों के प्रति कैसा व्यवहार करता है?

उत्तर– विश्वनाथ मेहमानों के प्रति विनम्र और मेहमान नबाज व्यवहार करता है।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. गर्मी के कारण दुखी विश्वनाथ और रेवती के संवाद को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर– गर्मी के कारण दुखी विश्वनाथ कहता है कि बड़ी गर्मी है। बन्द कमरों में रहना कठिन है। मकान भट्टी बना हुआ है। रेवती कहती है कि पत्ता तक भी नहीं हिल रहा। घड़े का पानी ठंडा नहीं होता। वह घर को जेलखाना बताती है। पति से बरफ लाने को कहती है। विश्वनाथ कहता है कि नया मकान मिलता नहीं है। छत को पड़ोसी छूने तक नहीं देता। दोनों आँगन में सोने के लिए बहस के साथ आशंकित हैं कि इस गर्मी में कोई मेहमान न आ जाये, इससे उनके लिए अनेक चिन्ताएँ और मुसीबतें खड़ी हो जायें।

2. नन्हेमल और बाबूलाल स्टेशन से सीधे विश्वनाथ के घर क्यों पहुँचे?

उत्तर– नन्हेमल और बाबूलाल स्टेशन से सीधे विश्वनाथ के घर पहुँचे हैं क्योंकि संपतराम ने कहा था कि स्टेशन से उतरकर सीधे रेलवे रोड चले जाना, वहाँ कृष्णा गली में वह रहते हैं। अत: उन्होंने वैसा ही किया और बिना नाम पूछे दरवाजा खटखटा दिया। विश्वनाथ ने दरवाजा खोला तो वे लोग उनके पीछे-पीछे घर में घुस आये।

3. नन्हेमल और बाबूलाल के सही स्थान पर न पहुँचने का भेद कब खुलता है?

उत्तर– नन्हेमल और बाबूलाल से विश्वनाथ पूछता है कि आपको जिसके यहाँ जाना है, उसका नाम संपतराम ने तो बताया होगा। तब वे दोनों कविराज का नाम बताते हैं। इस पर विश्वनाथ कहता है कि मैं कविराज नहीं हूँ, कहीं आप कविराज रामलाल वैद्य के यहाँ तो नहीं आये हैं। एक साथ दोनों चिल्लाते हैं, हाँ वही तो। हम कविराज रामलाल वैद्य के यहाँ आये हैं। इस प्रकार सही स्थान पर न पहुँचने का भेद खुल जाता है।

4. रेवती के विचारों में आगंतुक के आते ही क्या परिवर्तन हुआ और क्यों?

उत्तर– रेवती के विचारों में आगंतुक के आते ही परिवर्तन हुआ क्योंकि आगंतुक अपरिचित नया मेहमान न होकर उसका अपना सगा भाई था। रेवती के चेहरे पर भाई को देखते ही खुशी छा जाती है। वह भाई से कपड़े उतारने के लिए कहती है। पंखा झलने लगती है और प्रमोद से ठंडा पानी पिलाने के लिए कहती है। हलवाई के यहाँ से मिठाई लाने को कहती है। तेज गर्मी होने पर भी भाई के लिए खाना बनाने जाती है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. एकांकी के तत्वों के आधार पर 'नये मेहमान' की समीक्षा कीजिए।

उत्तर– उदयशंकर भट्ट का 'नये मेहमान' एक यथार्थवादी एकांकी है, जिसमें आवास समस्या को प्रधान रखा गया है। एकांकी के निम्नलिखित छ: तत्व होते हैं। उनके आधार पर 'नये मेहमान' की समीक्षा इस प्रकार है–

(1) **कथावस्तु–** 'नये मेहमान' एकांकी की कथावस्तु पूर्णतः शृंखलाबद्ध है। प्रत्येक घटना क्रमबद्धता के धागे में पिरोई गई है। विश्वनाथ की संकोची प्रकृति, रेवती का मेहमान देखकर नाक-भौं सिकोड़ना, नये मेहमानों की बेहयाई के त्रिकोण में हास्य-विनोद के साथ कथा आगे बढ़ती है। संकलनत्रय का एकांकी में पूर्ण निर्वाह हुआ है। पूरी एकांकी एक कमरे में घटित है। पूरे समय कौतूहल बना रहता है। कथानक सामाजिक है, जिसमें मध्यम वर्ग की आवास समस्या को उठाया गया है।

(2) **पात्र या चरित्र-चित्रण–** एकांकी की दृष्टि से पात्रों की संख्या सही है। मुख्य तीन पुरुष पात्र तथा एक नारी पात्र है। प्रथम गृहस्वामी विश्वनाथ अपनी विनम्रता और उदारता के कारण कष्ट उठाता है। अन्य दो पुरुष पात्र नन्हेमल और बाबूलाल हैं। दोनों बेशर्म और वाचाल हैं। उन्हें दूसरों की परेशानी की कोई चिन्ता नहीं। बिना सही पते के अपरिचित व्यक्ति के मेहमान बन जाते हैं। एक विदूषक के समान उनका चरित्र होता है। रेवती अकेली नारी पात्र है जो पतिव्रता, तुनकमिजाजी, अच्छी गृहिणी के साथ अनुदार व अंधविश्वासी विचारधारा की है। उसके साथ उसके दो बच्चे हैं– प्रमोद और किरण। अन्त में एक अन्य पुरुष पात्र आता है जो रेवती का भाई है तथा वास्तव में मेहमान है। इसे आगंतुक के नाम से सम्बोधित किया गया है।

(3) **संवाद–** एकांकी में प्राण संवाद होते हैं, जो कलेवर को सौंदर्य प्रदान कर आकार देते हैं। संवाद छोटे-छोटे हैं परन्तु सारगर्भित हैं जो काव्य का-सा स्वाद व आनन्द देते हैं।

उदाहरणार्थ– बाबूलाल– उतना ही मैं भी (दोनों गटगट पानी पीते हैं।)

किरण– (विश्वनाथ से धीरे से) फिर खाना।

विश्वनाथ (इशारे से) ठहर जा जरा।

नन्हेमल– कितने सीधे लड़के हैं।

बाबूलाल– शहर के हैं न।

(4) **देशकाल तथा वातावरण–** एकांकी में महानगरों के मध्यम वर्ग की आवास समस्या को दिखाया गया है। उनके अपने बैठने-सोने को तो जगह होती नहीं, उस पर मेहमानों का सत्कार कैसे करें? तंग गलियों में सटे मकान की छतों के पास-पास होने से पड़ोसियों के बीच झगड़ने का दृश्य है। नलों में पानी न आना। भीषण गरमी का समय है।

(5) **भाषा-शैली–** 'नये मेहमान' एकांकी की भाषा साधारण खड़ी बोली है, जिसमें बोलचाल के शब्द हैं, जैसे 'कुर्सी' इधर खिसका दो। संस्कृत के तत्सम शब्द क्षमा, मित्र, साहित्यिक उर्दू के शब्द भी हैं जरा, खूब, तारीफ। ''चने की तरह भाड़ में भुनना, रात-दिन एक करके'' जैसे मुहावरों का प्रयोग है। भाषा में प्रवाह के साथ बोधगम्यता है। शैली सरल तथा साधारण है। कहीं भी क्लिष्टता देखने को नहीं मिलती है।

(6) **अभिनेयता–** एकांकी में अभिनेयता प्राण है। यह एकांकी प्रहसन की श्रेणी में सहज भाव से आ जाता है। यह एकांकी मंचन की दृष्टि से सफल है। पात्रों की संख्या का कम होना, सरल भाषा, वाक्य छोटे-छोटे होना, हास्य-व्यंग्य विनोद का होना इस एकांकी की अभिनेयता की नींव है। इसका अभिनय और प्रसारण दोनों ही सफलतापूर्वक किये जा सकते हैं।

(7) **उद्देश्य–** बड़े नगरों की आवास-समस्या को सहज रूप से उजागर करना इस एकांकी का उद्देश्य है। गरमी से त्रस्त रेवती कहती है– ''जाने कब तक इस जेलखाने में सड़ना पड़ेगा।'' उधर विश्वनाथ भी परेशान है, क्योंकि कोई नया मकान मिल नहीं रहा है। इस समस्या का समाधान लेखक ने नहीं बताया है। व्यंग्य-विनोद का सहारा एकांकी को रोचक बनाने के लिए किया गया है। बड़े नगरों में छोटे-से घर में मेहमानों का आना एक समस्या है। इसी उद्देश्य को चित्रित करने में एकांकीकार सफल हुआ है।

2. 'नये मेहमान' एकांकी के मुख्य पात्र विश्वनाथ का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर– 'नए मेहमान' एकांकी का मुख्य पात्र विश्वनाथ बड़े नगरों में रहने वाले मध्यवर्गीय समाज का प्रतिनिधित्व करता है। उनके चरित्र की निम्न विशेषताएँ हैं–

(1) **उदार व्यक्ति–** विश्वनाथ एक उदार व्यक्ति है। वह नौकरी करके अपने सीमित साधनों से अपने परिवार का भरण-पोषण कर रहा है। वह उन सभी समस्याओं से त्रस्त है, जो बड़े नगरों में सीमित साधनों वाले व्यक्तियों को सहन करनी पड़ती हैं, परन्तु वह उन सबको सरलता के साथ सहता है। वह अपनी पत्नी रेवती एवं बच्चों के सुख-दुःख का पूरा ध्यान रखता है और अपने अपरिचित मेहमानों के आ जाने पर भी झुँझलाता नहीं है।

(2) **आवास की समस्या से पीड़ित–** बड़े नगर में आवास की समस्या से विश्वनाथ दुखी है। वह किराये पर छोटा-सा मकान लेकर अपने परिवार के साथ रहता

है। वह दो साल से हवादार, खुले और अच्छे मकान की तलाश में है। वह पड़ोसी के दुर्व्यवहार को सहन करता हुआ संघर्षशील व्यक्ति की तरह अपना जीवन व्यतीत कर रहा है। आवास की समस्या पर प्रकाश डालते हुए विश्वनाथ कहता है– ''मकान मिलता ही नहीं। आज दो साल से दिन-रात एक करके ढूँढ़ रहा हूँ।'' ''एक ये पड़ोसी हैं, निर्दयी, जो खाली छत पड़ी रहने पर भी बच्चों के लिए खाट नहीं बिछाने देते।''

(3) **अतिथि-सत्कार करने वाला–** अतिथियों के प्रति विश्वनाथ के हृदय में सेवाभाव है। अपने सीमित साधनों में भी वह अतिथियों की सेवा करने का भाव रखता है। वह अपरिचित अतिथियों को भी प्रेम से बैठाता है, बरफ मँगाकर ठंडा पानी पिलाता है, स्नान की व्यवस्था करता है और अपनी पत्नी से खाना बनाने के लिए कहता है।

(4) **विनम्र एवं संकोची–** विश्वनाथ विनम्र एवं संकोची स्वभाव का है। इस कारण देर रात आए अपरिचित अतिथियों से वह उनका स्पष्ट परिचय भी नहीं पूछ पाता और सेवा में लग जाता है। पड़ोसी के निर्दयी और अशिष्ट व्यवहार पर भी वह उनसे कुछ नहीं कहता और क्षमा माँगते हुए कहता है– ''अनजान आदमी से गलती हो ही जाती है। उसे क्षमा कर देना चाहिए। कल से ऐसा नहीं होगा।''

(5) **समझौता-प्रिय–** परिस्थितियों से समझौता करना विश्वनाथ अच्छी तरह जानता है। नए मेहमानों के आने पर जब उसकी पत्नी रेवती सिर दर्द के कारण खाना बनाने में असमर्थता प्रकट करती है तो वह उससे कुछ कहे बिना बाजार से खाना लाने को तैयार हो जाता है, अपनी पत्नी से मेहमानों की चिन्ता करता हुआ कहता है– ''क्या कहेंगे कि रातभर भूखा मारा, बाजार से कुछ मँगा दो न।''

इस प्रकार हम देखते हैं कि विश्वनाथ एक आदर्श पति, समझौता करने वाला व्यक्ति है। वह अपने अतिथियों का सम्मान अपरिचित होने पर भी करता है। उसके माध्यम से उदयशंकर भट्ट जी ने मध्यवर्गीय पुरुष का सही चित्रण किया है।

9 आदमी का अनुपात

अभ्यास-प्रश्नोत्तर

पाठ से

आइए, अब हम इस कविता को थोड़ा और विस्तार से समझते हैं। नीचे दी गई गतिविधियाँ इस कार्य में आपकी सहायता करेंगी।

मेरी समझ से

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उपयुक्त उत्तर के सम्मुख तारा (☆) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।

(1) कविता के अनुसार ब्रह्मांड में मानव का स्थान कैसा है?

- पृथ्वी पर सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण
- ब्रह्मांड की तुलना में अत्यंत सूक्ष्म
- सूर्य, चंद्र आदि सभी नक्षत्रों से बड़ा
- समस्त प्रकृति पर शासन करने वाला

उत्तर– ☆ ब्रह्मांड की तुलना में अत्यन्त सूक्ष्म।

(2) कविता में मुख्य रूप से किन दो वस्तुओं के अनुपात को दिखाया गया है?

- पृथ्वी और सूर्य
- देश और नगर
- घर और कमरा
- मानव और ब्रह्मांड

उत्तर– ☆ मानव और ब्रह्मांड

(3) कविता के अनुसार मानव किन भावों और कार्यों में लिप्त रहता है?

- त्याग, ज्ञान और प्रेम में
- सेवा और परोपकार में
- ईर्ष्या, अहं, स्वार्थ, घृणा में

- उदारता, धर्म और न्याय में

उत्तर– ☆ ईर्ष्या, अहं, स्वार्थ, घृणा में

(4) कविता के अनुसार मानव का सबसे बड़ा दोष क्या है?

- वह अपनी सीमाओं और दुर्बलताओं को नहीं समझता।
- वह दूसरों पर शासन स्थापित करना चाहता है।
- वह प्रकृति के साथ तालमेल नहीं बिठा पाता है।
- वह अपने छोटेपन को भूल अहंकारी हो जाता है।

उत्तर– ☆ वह अपने छोटेपन को भूल अहंकारी हो जाता है।

(ख) हो सकता है कि आपके समूह के साथियों ने अलग-अलग उत्तर चुने हों। अपने मित्रों के साथ विचार कीजिए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुनें?

उत्तर–(1) "ब्रह्मांड की तुलना में अत्यन्त सूक्ष्म है" यह उत्तर इसलिए चुना क्योंकि ब्रह्मांड की विशालता में व्यक्ति का अस्तित्व अत्यन्त छोटा और नगण्य है। सूर्य, चन्द्रमा और अन्य नक्षत्रों या ग्रहों की तुलना में व्यक्ति का कोई विशेष महत्व नहीं है।

(2) 'मानव और ब्रह्मांड' यह उत्तर मैंने इसलिए चुना है क्योंकि यह कविता मानव और ब्रह्मांड के बीच अनुपात को दिखा रही है, जहाँ मानव एक छोटा-सा प्राणी है जो ब्रह्मांड में मौजूद है, जबकि ब्रह्मांड एक विशाल और रहस्यमय स्थान है।

(3) ईर्ष्या, अहं, स्वार्थ, घृणा में, यह उत्तर इसलिए चुना क्योंकि व्यक्ति अपनी सीमाओं को नहीं पहचानता और हमेशा अपने अहं में दूसरों पर हावी होने की कोशिश करता है।

(4) वह अपने छोटेपन को भूल अहंकारी हो जाता है, यह उत्तर इसलिए चुना क्योंकि कविता में व्यक्ति की अज्ञानता और अहंकार को उसका सबसे बड़ा दोष बताया गया है।

पंक्तियों पर चर्चा

नीचे दी गई पंक्तियों को ध्यानपूर्वक पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। अपने समूह में इनके अर्थ पर चर्चा कीजिए और लिखिए–

(क) "अनगिन नक्षत्रों में/पृथ्वी एक छोटी/करोड़ों में एक ही।"

उत्तर– इसका अर्थ है ब्रह्मांड में असंख्य तारे हैं और उनमें से प्रत्येक एक अद्वितीय स्थान रखता है। पृथ्वी, इन असंख्य तारों के बीच, एक छोटी-सी जगह है और करोड़ों नक्षत्रों (ग्रहों) में से एक है। यह पंक्ति ब्रह्मांड की विशालता और पृथ्वी की लघुता को व्यक्त करती है।

(ख) "संख्यातीत शंख सी दीवारें उठाता है/अपने को दूजे का स्वामी बताता है।"

उत्तर– इसका अर्थ है कि व्यक्ति अपनी ईर्ष्या, अहंकार, स्वार्थ, घृणा और अविश्वास के कारण अपने चारों ओर 'संख्यातीत' शंख सी दीवारें बनाता है, जो उसे दूसरों से अलग करती हैं और अपने को दूजे का (दूसरे का) स्वामी बनाता है।

(ग) "देशों की कौन कहे/एक कमरे में/दो दुनिया रचाता है।"

उत्तर– इसका अर्थ यह है कि जब एक कमरे में ही दो व्यक्ति अलग-अलग दुनिया बसा सकते हैं, तो देशों की तो बात ही क्या। यह पंक्ति व्यक्ति की अलगाव और आपसी समझ को बताती है।

मिलकर करें मिलान

नीचे दो स्तंभ दिए गए हैं। अपने समूह में चर्चा करके स्तंभ 1 की पंक्तियों का मिलान स्तंभ 2 में दिए गए सही अर्थ से कीजिए।

स्तंभ 1	स्तंभ 2
1. संख्यातीत शंख सी दीवारें	**1.** ब्रह्मांड की विशालता का प्रतीक
2. पृथ्वी एक छोटी, करोड़ों में एक	**2.** आदमी के संकुचित होने का प्रतीक
3. ईर्ष्या, अहं, स्वार्थ, घृणा	**3.** मनुष्य द्वारा खींची गई कृत्रिम सीमाएँ
4. दो व्यक्ति कमरे में / कमरे से छोटे	**4.** सीमित स्थान में भी और अलगाव की प्रवृत्ति

5. परिधि नभ गंगा की	**5.** पृथ्वी की अल्पता और अनोखेपन की ओर संकेत
6. एक कमरे में दो दुनिया रचाता	**6.** मनुष्य की नकारात्मक भावनाएँ

उत्तर— 1. (3) 2. (5) 3. (6) 4. (4) 5. (1) 6. (2)

अनुपात

इस कविता में 'मानव' और 'ब्रह्मांड' के उदाहरण द्वारा व्यक्ति के अल्पत्व और सृष्टि की विशालता के अनुपात को दिखाया गया है। अपने साथियों के साथ मिलकर विचार कीजिए कि मानव को ब्रह्मांड जैसा विस्तार पाने के लिए इनमें से किन-किन गुणों या मूल्यों की आवश्यकता होगी? आपने ये गुण क्यों चुने, यह भी साझा कीजिए।

उत्तर— कविता में 'मानव' और 'ब्रह्मांड' के अनुपात का अर्थ है व्यक्ति के सीमित दायरे और ब्रह्मांड की असीम विशालता के बीच का अंतर। मानव को ब्रह्मांड जैसा विस्तार पाने के लिए उसे 1. विशालता, 2. सहअस्तित्व, 3. सौहार्द, 4. विविधता 5. सहनशीलता जैसे गुणों को अपनाना होगा। ये गुण इसलिए चुने गए हैं क्योंकि ये ब्रह्मांड की प्रकृति के अनुरूप हैं, जो विभिन्नताओं, सह-अस्तित्व और विशालता का प्रतीक हैं।

सोच-विचार के लिए

कविता को पुनः ध्यान से पढ़िए, पता लगाइए और लिखिए।

(क) कविता के अनुसार मानव किन कारणों से स्वयं को सीमाओं में बाँधता चला जाता है?

उत्तर— कविता के अनुसार मानव ईर्ष्या, अहंकार, स्वार्थ, घृणा और अविश्वास जैसी भावनाओं के कारण स्वयं को सीमाओं में बाँधता चला जाता है।

(ख) यदि आपको इस कविता की एक पंक्ति को दीवार पर लिखना हो, जो आपको प्रतिदिन प्रेरित करे तो आप कौन-सी पंक्ति चुनेंगे और क्यों?

उत्तर— ''करोड़ों में एक है, सबको समेटे है'' हम यह पंक्ति चुनेंगे क्योंकि पृथ्वी एक छोटा ग्रह है, लेकिन अपने आप में एक अद्वितीय और महत्वपूर्ण स्थान रखती है, जो सभी जीवन को समाहित किए हुए है। अर्थात पृथ्वी सभी जीवित प्राणियों को आश्रय देती है। यह हमें प्रेरणा देती है कि हमें भी पृथ्वी की तरह उदारवादी होना चाहिए।

(ग) कवि ने मानव की सीमाओं और कमियों की ओर ध्यान दिलाया है, लेकिन कहीं भी क्रोध नहीं दिखाया। आपको इस कविता का भाव कैसा लगा— व्यंग्य, करुणा, चिंता या कुछ और? क्यों?

उत्तर— इस कविता का भाव करुणा और चिन्ता लगा। क्योंकि कवि मानव की सीमाओं और कमियों को उजागर करते हुए क्रोधित नहीं, बल्कि एक गहरी सहानुभूति और चिन्ता व्यक्त करता है। वह यह बताने की कोशिश करता है कि व्यक्ति अपनी सीमाओं और कमजोरियों के बावजूद, दूसरों के प्रति सहानुभूति और प्रेम रख सकता है। कवि का उद्देश्य व्यक्ति को अपनी कमियों को स्वीकार करने और एक बेहतर व्यक्ति बनाने के लिए प्रेरित करना है।

(घ) आपके अनुसार 'दीवारें उठाना' केवल ईंट-पत्थर से जुड़ा काम है या कुछ और भी हो सकता है? अपने विचारानुसार समझाइए।

उत्तर— 'दीवारें उठाना' केवल ईंट-पत्थर से बनी दीवारों का प्रतीक नहीं है बल्कि यह अलगाव, अविश्वास और विभाजन का भी प्रतीक है। यह उन बाधाओं को दिखाता है जो व्यक्ति ने अपने और दूसरों के बीच में खड़ी कर रखी हैं। इन दीवारों में जाति, धर्म और भाषा, इसके

अतिरिक्त सामाजिक, आर्थिक स्थितियाँ भी शामिल हो सकती हैं। कवि चाहते हैं कि व्यक्ति इन दीवारों को तोड़कर एक-दूसरे के करीब आयें।

(ङ) मानवता के विकास में सहयोग, समर्पण और सहिष्णुता जैसी सकारात्मक प्रवृत्तियाँ ईर्ष्या, अहं, स्वार्थ और घृणा जैसी नकारात्मक प्रवृत्तियों से कहीं अधिक प्रभावी हैं। उदाहरण देकर बताइए कि सहिष्णुता या सहयोग के कारण समाज में कैसे परिवर्तन आए हैं?

उत्तर– हाँ! यह सही है कि मानवता के विकास में सहयोग, समर्पण और सहिष्णुता जैसी सकारात्मक प्रवृत्तियाँ ईर्ष्या, अहंकार, स्वार्थ और घृणा जैसी नकारात्मक प्रवृत्तियों से कहीं अधिक प्रभावी हैं। इन सकारात्मक प्रवृत्तियों के कारण समाज में कई सकारात्मक परिवर्तन आये हैं। उदाहरण-सहिष्णुता- भारत जैसे देश में, जहाँ विभिन्न धर्मों और संस्कृतियों के लोग रहते हैं, सहिष्णुता ही है जो उन्हें एक साथ रहने और एक-दूसरे को समझने में मदद करती है।

उदाहरण– सहयोग– बाढ़ या भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदाओं के दौरान लोग एकजुट होकर एक-दूसरे की मदद करते हैं, जिससे बाढ़ या भूकंप जैसे संकट का सामना करना आसान हो जाता है।

अनुमान और कल्पना

अपने समूह में मिलकर चर्चा कीजिए–

(क) मान लीजिए कि आप एक दिन के लिए पूरे ब्रह्मांड को नियंत्रित कर सकते हैं। अब आप मानव की कौन-कौन सी आदतों को बदलना चाहेंगे? क्यों?

उत्तर– हम व्यक्ति की निम्नलिखित आदतें बदलना चाहेंगे जो निम्न हैं–

(1) **झूठ–** झूठ बोलने के कई परिणाम हो सकते हैं जिनमें विश्वास खोना, रिश्तों में दरार, नैतिक पतन और मनोवैज्ञानिक समस्यायें शामिल हैं। झूठ बोलने से न केवल दूसरों को नुकसान होता है, बल्कि यह बोलने वाले के जीवन को भी नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

(2) **तुलना करने की आदत–** अपने आप की दूसरों से तुलना नहीं करनी चाहिए क्योंकि हर व्यक्ति के जीवन में अपनी-अपनी धारणाएँ, जीवन-शैली और कार्य करने की क्षमताएँ अलग-अलग होती हैं।

(3) **नकारात्मक सोच–** निराशा से जूझ रहे व्यक्ति के लिए सकारात्मक सोच रखना मुश्किल होता है, इसलिए नकारात्मक सोच की आदत को बदलना चाहूँगा।

(ख) यदि आप अंतरिक्ष यात्री बन जाएँ और ब्रह्मांड के किसी दूसरे भाग में जाएँ तो आप किस स्थान (कमरा, घर, नगर आदि) को सबसे अधिक याद करेंगे और क्यों?

उत्तर– यदि मैं अंतरिक्ष यात्री बनकर दूसरे ब्रह्मांड में जाता हूँ तो मुझे सबसे ज्यादा अपना 'कमरा' याद आएगा। इसका कारण यह है कि कमरा एक ऐसी जगह होती है, जहाँ व्यक्ति आराम करता है। अपनी व्यक्तिगत वस्तुओं को रखता है और अपनी निजता का आनंद लेता है।

या

यदि मैं अंतरिक्ष यात्री बनकर दूसरे ब्रह्मांड में जाता हूँ, तो मुझे सबसे ज्यादा अपना घर याद आएगा। इसका कारण यह है कि घर एक ऐसी जगह है जहाँ व्यक्ति अपने आपको सुरक्षित महसूस करता है, जहाँ उसके परिवार के लोग मिल-जुलकर रहते हैं।

या

यदि मैं अंतरिक्ष यात्री बनकर दूसरे ब्रह्मांड में जाता हूँ, तो मुझे सबसे ज्यादा 'नगर' याद आएगा। इसका कारण यह है कि नगर ऐसी जगह है जहाँ व्यक्ति सामाजिक गतिविधियों में भाग ले सकता है और जहाँ वह अपने मित्रों, रिश्तेदारों तथा सहकर्मियों से मिल सकता है।

(ग) मान लीजिए कि एक बच्चा या बच्ची कविता में उल्लिखित सभी सीमाओं को पार कर सकता या सकती है– वह कहाँ तक जाएगा या जाएगी और क्या देखेगा या देखेगी? एक कल्पनात्मक यात्रा-वृत्तांत लिखिए।

उत्तर– एक कल्पनात्मक यात्रा-वृत्तांत– यह एक बच्ची की अंतरिक्ष-यात्रा की काल्पनिक कहानी है जो इस प्रकार है– एक नन्हीं-सी जिज्ञासु बच्ची जिसका नाम 'आकांक्षा' था। वह हमेशा ग्रहों तथा तारों के बारे में जानने के लिए उत्सुक रहती थी। एक दिन उसने एक जादुई रॉकेट देखा जो उसके घर के पीछे उड़ रहा था। आकांक्षा ने बिना सोचे-समझे उस पर चढ़ने का फैसला किया। रॉकेट उसे अंतरिक्ष में ले गया, जहाँ उसने

उल्कापिंडों को देखा, ग्रहों को छुआ, और एक सुन्दर, नीली पृथ्वी को देखा। उसने अंतरिक्ष में कई अद्‌भुत चीजें देखीं और अंत में सुरक्षित रूप से अपने घर वापस आ गयी। इस यात्रा ने आकांक्षा को हमेशा याद दिलाया कि हमें अपनी काल्पनिक जिज्ञासा को नहीं छोड़ना चाहिए, क्योंकि सपने सच्ची लगन के द्वारा सच होते हैं।

(घ) इस कविता को पढ़ने के बाद, आप स्वयं को ब्रह्मांड के अनुपात में कैसा अनुभव करते हैं? एक अनुच्छेद लिखिए– "मैं ब्रह्मांड में एक... हूँ।"

उत्तर– 'मैं ब्रह्मांड में एक साथ हूँ' का मतलब है कि आप ब्रह्मांड का ही एक हिस्सा हैं और ब्रह्मांड आपके अन्दर भी है। यह एक आध्यात्मिक और दार्शनिक अवधारणा है जो बताती है कि हम सभी एक-दूसरे से और ब्रह्मांड की हर चीज से जुड़े हुए हैं। तारे, ग्रह और चन्द्रमा, सभी एक ही मूल तत्वों से बने हैं। जिनसे हम भी बने हैं। जब आप अपनी जागरूकता में प्रकृति का अनुभव करते हैं तो आप ब्रह्मांड के साथ अपनी एकता को महसूस करते हैं। आप किसी भी तरह से ब्रह्मांड से अलग नहीं हैं, बल्कि इसका एक अभिन्न अंग है। व्यक्ति का मन इतना विशाल और शक्तिशाली है कि वह पूरे ब्रह्मांड को अपने अंदर समा सकता है। संक्षेप में ''मैं ब्रह्मांड में एक साथ हूँ'' का अर्थ है कि हम सभी एक विशाल, आपस में जुड़े हुए ब्रह्मांड का हिस्सा हैं, और हमारे अन्दर और बाहर, सब कुछ आपस में एक-दूसरे से जुड़ा हुआ है।

(ङ) मान लीजिए कि किसी दूसरे संसार से आपके पास संदेश आया है कि उसे पृथ्वी के किसी व्यक्ति की आवश्यकता है। आप किसे भेजना चाहेंगे और क्यों?

उत्तर– हम ऐसे व्यक्ति को भेजना चाहेंगे जो सबसे अधिक अनुकूलनीय, जिज्ञासु और सहानुभूतिपूर्ण हो, साथ ही वह दूसरे संसार के बारे में जानने की गहरी इच्छा रखता हो, ताकि वह दूसरे संसार के लोगों के साथ संवाद स्थापित कर सके और उनकी संस्कृति और सभ्यता का ज्ञान हासिल कर उनकी आवश्यकताओं को समझ सके।

(च) कविता में "ईर्ष्या, अहं, स्वार्थ" जैसी प्रवृत्तियों की चर्चा की गई है। कल्पना कीजिए कि एक दिन के लिए ये भाव सभी व्यक्तियों में समाप्त हो जाएँ तो उससे समाज में क्या-क्या परिवर्तन होगा?

उत्तर– ईर्ष्या, अहं, स्वार्थ जैसी प्रवृत्तियाँ एक दिन के लिए सभी व्यक्तियों में समाप्त हो जाएँ तो समाज में निम्न परिवर्तन होगा–

(1) लोग एक-दूसरे की मदद करने और साथ मिलकर काम करने के लिए प्रेरित होंगे। इससे सामाजिक सहयोग और सहानुभूति की भावना बढ़ेगी।

(2) समाज में सद्‌भाव और शान्ति का माहौल बनेगा।

(3) संघर्षों को बातचीत और समझदारी से सुलझाने की कोशिश करेंगे।

(4) लोग दूसरों की सफलता और खुशियों में अपनी सफलता और खुशी महसूस करेंगे।

(5) लोग ईमानदारी, न्याय, दया और करुणा जैसे नैतिक मूल्यों को महत्व देंगे।

(छ) यदि आपको इस कविता का एक पोस्टर बनाना हो जिसमें इसके मूल भाव– 'विराटता और लघुता' तथा 'मनुष्य का भ्रम' – दर्शाया जाए तो आप क्या चित्र, प्रतीक और शब्द उपयोग करेंगे? संक्षेप में बताइए।

उत्तर– आदमी का अनुपात कविता का पोस्टर बनाने के लिए 'विराटता और लघुता' तथा 'मनुष्य का भ्रम' के चित्र, प्रतीक तथा शब्दों का उपयोग दर्शाने के लिए चित्रों में ब्रह्मांड की विशालता के प्रतीक तारे, नक्षत्रों के चित्र तथा लघुता के लिए पृथ्वी के नगरों, पहाड़ों, नदियों के चित्र। मनुष्य का भ्रम दर्शाने के लिए मनुष्य को भ्रमित करने वाले चित्र प्रतीक के रूप तथा शब्दों के रूप में इनके बारे में कुछ शब्द लिखकर जैसे– आकाश में तारे चमक रहे हैं। या पहाड़ों से छोटी-छोटी नदियाँ निकल रही हैं।

शब्द से जुड़े शब्द

नीचे दिए गए रिक्त स्थानों में 'सृष्टि' से जुड़े शब्द अपने समूह में चर्चा करके लिखिए–

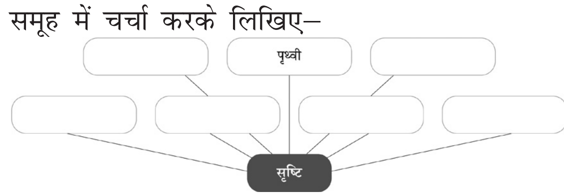

उत्तर– सृष्टि से जुड़े शब्दों पर चर्चा–

(1) पृथ्वी जगत् या संसार को संदर्भित करती है जिसमें सभी जीवित और निर्जीव वस्तुएँ शामिल हैं।

(2) ब्रह्मांड– ब्रह्मांड सृष्टि का सबसे व्यापक शब्द है जिसमें सब कुछ शामिल है– तारे, ग्रह, आकाशगंगाएँ और अन्य खगोलीय वस्तुएँ।

(3) प्रकृति– यह सृष्टि के प्राकृतिक घटकों को दर्शाता है; जैसे– पेड़, नदियाँ, पहाड़ और जीव-जन्तु।

(4) संसार– यह भी सृष्टि को संदर्भित करता है, लेकिन इसका उपयोग अक्सर मानव-जीवन और अनुभवों के सन्दर्भ में किया जाता है।

(5) कुदरत– यह सृष्टि के प्राकृतिक घटकों को दर्शाता है; जैसे– प्रकृति।

(6) निर्माण– यह कुछ बनाने या बनाने की प्रक्रिया को दर्शाता है।

(7) अखिल– यह सम्पूर्ण या सब कुछ को दर्शाता है।

सृजन

(क) कविता में कमरे से लेकर ब्रह्मांड तक का विस्तार दिखाया गया है। इस क्रम को अपनी तरह से एक रेखाचित्र, सीढ़ी या 'मानसिक-चित्रण' (माइंड-मैप) द्वारा प्रदर्शित कीजिए। प्रत्येक स्तर पर कुछ विशेषताएँ लिखिए, जैसे– पास-पड़ोस की एक विशेष बात, नगर का कोई स्थान, देश की विविधता आदि। उसके नीचे एक पंक्ति में इस प्रश्न का उत्तर लिखिए– 'मैं इस चित्र में कहाँ हूँ और क्यों?'

उत्तर– कविता में कमरे से लेकर ब्रह्मांड तक के विस्तार को एक मानसिक-चित्रण के रूप में दर्शाने के लिए एक सीढ़ी या रेखाचित्र का प्रयोग किया जा सकता है। प्रत्येक स्तर पर विशिष्ट विशेषताओं को लिखा जा सकता है, जैसे–मानसिक चित्रण (रेखाचित्र)।

(1) कमरा– यह कविता की शुरुआत है।

विशेषताएँ–

(अ) चारों तरफ की दीवारें, खिड़की, दरवाजा, फर्नीचर।

(ब) कमरे का रंग, प्रकाश और ध्वनि।

(स) एक विशेष वस्तु जैसे एक किताब, एक पौधा, एक शीशा।

(द) पास-पड़ोसी की विशेष बात– जैसे एक पड़ोसी का घर, एक पेड़, एक नदी।

(2) घर– यह कमरे से बड़ी एक इमारत है।

विशेषताएँ–

(अ) घर का डिजाइन, बालकनी, बगीचा।

(ब) परिवार के सदस्य।

(स) घर का प्रकार; जैसे– बंगला, कोठी, अपार्टमेंट।

(द) नगर का कोई स्थान जैसे– एक स्कूल, एक पार्क, एक बाजार।

(3) मुहल्ला– विशेषताएँ–

(अ) मुहल्ले के लोग, उनकी जीवन-शैली, उनकी गतिविधियाँ।

(ब) सड़कें, गलियाँ और चौराहे।

(स) दुकानें, होटल, रेस्तरां, सब्जी मंडी और अन्य सार्वजनिक स्थान।

(द) नगर का विशिष्ट स्थान; जैसे– एक मन्दिर, एक मस्जिद, एक गुरुद्वारा, एक चर्च।

(4) नगर– विशेषताएँ–

(अ) विभिन्न मुहल्ले, बस्तियाँ और क्षेत्र।

(ब) नगरीय जीवन, परिवहन और बुनियादी ढाँचा।

(स) ऐतिहासिक इमारतें, स्मारक और सांस्कृतिक केन्द्र।

(द) नगर की विविधता; जैसे– विभिन्न जातियों, धर्मों तथा भाषाओं के लोग।

(5) प्रदेश– विशेषताएँ–

(अ) शहर, गाँव तथा विभिन्न जिले।

(ब) कृषि, उद्योग तथा व्यापार।

(स) प्राकृतिक दृश्य, पहाड़, जंगल और नदियाँ।

(द) प्रदेश की विविधता; जैसे– परम्पराएँ, विभिन्न संस्कृतियाँ और कला रूप।

(6) देश– विशेषताएँ–

(अ) विभिन्न प्रदेश, केन्द्र शासित प्रदेश और क्षेत्र।

(ब) ऐतिहासिक स्थल, राष्ट्रीय प्रतीक और स्मारक।

(स) पृथ्वी का प्राकृतिक वातावरण और जलवायु क्षेत्र।

(7) पृथ्वी– विशेषताएँ–

(अ) मानव जाति, सभ्यता और इतिहास

(ब) वायुमंडल, महासागर और महाद्वीप

(स) पृथ्वी का प्राकृतिक वातावरण और जलवायु क्षेत्र

(8) सौर मंडल– विशेषताएँ–

(अ) ग्रह, उपग्रह, सूर्य, चन्द्र।

(ब) सौरमंडल की संरचना, गति और ऊर्जा

(9) आकाश गंगा– विशेषताएँ–

(अ) आकाशगंगा की संरचना और गति।

(ब) असंख्य तारे, ग्रह और बादल।

(10) ब्रह्मांड– सबसे अन्तिम एवं सबसे बड़ा स्तर विशेषताएँ–

(अ) ब्रह्मांड की उत्पत्ति और विकास।

(ब) ब्रह्मांड की अनंतता और उसका रहस्य।

(स) असंख्य तारे, ग्रह और आकाशगंगाएँ।

यह रेखाचित्र एक मानसिक चित्रण के रूप में कविता में वर्णित ''कमरा से ब्रह्मांड तक'' के विस्तार को दर्शाने में सहायता करता है। प्रत्येक स्तर पर विशिष्ट विशेषताओं को शामिल करने से पाठक/श्रोता कविता में वर्णित अनुभव को बेहतर तरीके से समझ सकता है।

''मैं इस चित्र में कहाँ हूँ और क्यों?'' इसका उत्तर एक पंक्ति में यह है कि मैं पृथ्वी के चित्र में हूँ क्योंकि मैं पृथ्वी के दृश्य का हिस्सा हूँ।

(ख) अगर इसी कविता की तरह कोई कहानी लिखनी हो जिसका नाम हो 'ब्रह्मांड में मानव' तो उसको आरंभ कैसे करेंगे? कुछ वाक्य लिखिए।

उत्तर–ब्रह्मांड में मानव

(1) मनुष्य ब्रह्मांड का एक हिस्सा है, जो असंख्य तारों, ग्रहों और आकाशगंगाओं से भरे विशाल स्थान में निवास करता है।

(2) मनुष्य भौतिक रूप से ब्रह्मांड का हिस्सा है।

(3) कुछ विद्वानों का मानना है कि मानव शरीर और ब्रह्मांड के बीच एक गहरा सम्बन्ध है।

(4) ब्रह्मांड में मनुष्य की वास्तविक स्थिति भी एक रहस्य है, यह स्पष्ट नहीं है कि क्या मनुष्य ब्रह्मांड में एकमात्र बुद्धिमान प्राणी है या क्या बुद्धिमान प्रजातियाँ भी हैं।

(5) ब्रह्मांड के संरक्षक के रूप में मनुष्य को देखा जा सकता है और उन्हें अपने कार्यों की जिम्मेदारी लेनी चाहिए विशेष तौर पर ग्रह पृथ्वी पर।

(ग) 'एक कमरे में दो दुनिया रचाता है' पंक्ति को ध्यान से पढ़िए। अगर आपसे कहा जाए कि आप एक ऐसी दुनिया बनाइए जिसमें कोई दीवार न हो तो वह कैसी होगी? उसका वर्णन कीजिए।

उत्तर– ऐसी दुनिया में लोग एक-दूसरे के घरों में बिना रोक-टोक के आते-जाते हैं और मिलकर खाना खाते हैं तथा खुशी-खुशी रहते हैं, बच्चों की गलती पर कोई भी उन्हें डाँट सकता है। सभी एक-दूसरे के सुख-दुख में शामिल होते हैं तथा वहाँ ऊँच-नीच, अमीर-गरीब का कोई बन्धन नहीं है। सभी लोग बड़े-बूढ़ों का आदर करते हुए उनकी मदद के लिए तैयार रहते हैं। अर्थात् वह दुनिया ऐसी होगी जहाँ कोई सीमाएँ नहीं और न ऊँच-नीच, अमीर-गरीब का भेद। सब मिलकर रहते होंगे, एक-दूसरे की मदद करते होंगे तथा खुशहाल जीवन जीते होंगे।

(घ) एक चित्र शृंखला बनाइए जिसमें ये क्रम दिखे–

आदमी → कमरा → घर → पड़ोसी क्षेत्र → नगर → देश → पृथ्वी → ब्रह्मांड

प्रत्येक चित्र में आकार का अनुपात दिखाया जाए, जिससे यह स्पष्ट हो कि आदमी कितना छोटा है।

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

कविता की रचना

'दो व्यक्ति कमरे में
कमरे से छोटे–

इन पंक्तियों में '–' चिह्न पर ध्यान दीजिए। क्या आपने इस चिह्न को पहले कहीं देखा है? इस चिह्न को 'निदेशक चिह्न' कहते हैं। यह एक प्रकार का विराम चिह्न है जो किसी बात को आगे बढ़ाने या स्पष्ट करने के लिए उपयोग होता है। यह किसी विषय की अतिरिक्त जानकारी, जैसे– व्याख्या, उदाहरण या उद्धरण देने के लिए उपयोग होता है। इस कविता में इस चिह्न का प्रयोग एक ठहराव, सोच का संकेत और आगे आने वाले महत्वपूर्ण विचार की ओर पाठक का ध्यान आकर्षित करने के लिए किया गया है। यह संकेत देता है कि अब कुछ ऐसा कहा जाने वाला है जो पाठक को सोचने पर विवश करेगा।

इस कविता में ऐसी अनेक विशेषताएँ छिपी हैं, जैसे– अधिकतर पंक्तियों का अंतिम शब्द 'में' है, बहुत छोटी-छोटी पंक्तियाँ हैं आदि।

(क) अपने समूह के साथ मिलकर कविता की अन्य विशेषताओं की सूची बनाइए। अपने समूह की सूची को कक्षा में सबके साथ साझा कीजिए।

उत्तर– कविता की अन्य विशेषताएँ–

(1) **छोटी पंक्तियाँ–** कविता में पंक्तियाँ बहुत छोटी हैं, जो एक विशेष लय और प्रवाह उत्पन्न करती हैं।

(2) **अंतिम शब्द 'में'–** अधिकतर पंक्तियों का अन्तिम शब्द 'में' है जो एक विशेष लय और तुकबन्दी बनाता है।

(3) **एकल-शब्द पंक्तियाँ–** कुछ पंक्तियाँ केवल एक शब्द की हैं, जो मजबूत प्रभाव उत्पन्न करती हैं और पाठक को रुकने और सोचने पर मजबूर करती हैं।

(4) **लय और ताल–** कविता में स्पष्ट लय और ताल है, जो उसे पढ़ने और याद रखने में आसान बनाती है।

(5) **ध्वन्यात्मकता–** कविता में ध्वन्यात्मकता का उपयोग किया गया है, जैसे कि शब्दों का पुनरावर्तन, जो कविता को और अधिक आकर्षक बनाता है।

(6) **भावनात्मकता–** कविता भावात्मकता से भरी हुई है, जो पाठक की भावनाओं को महसूस करने और उनसे जुड़ने के लिए प्रेरित करती है।

(7) **प्रतीकात्मक भाषा–** कविता प्रतीकात्मक भाषा का उपयोग करती है, जो छिपे हुए अर्थों और विचारों को व्यक्त करती है।

(समूह में इन विशेषताओं पर चर्चा करके और कक्षा में शिक्षक और छात्रों के साथ साझा करें।)

(ख) नीचे इस कविता की कुछ विशेषताएँ और वे पंक्तियाँ दी गई हैं जिनमें ये विशेषताएँ झलकती हैं। विशेषताओं का सही पंक्तियों से मिलान कीजिए–

क्रम कविता की विशेषताएँ	कविता की पंक्तियाँ
1. सरल वाक्य के शब्दों को विशेष क्रम में लगाया गया है।	**1.** संख्यातीत शंख सी दीवारें उठाता है
2. मुहावरे का प्रयोग किया गया है।	**2.** कमरा है घर में, घर है मोहल्ले में, मोहल्ला नगर में...
3. छोटे से बड़े की ओर विस्तार देने के लिए शब्दों को दोहराया गया है।	**3.** देशों की कौन कहे, एक कमरे में दो दुनिया रचाता है।
4. प्रश्न शैली में व्यंग्य किया गया है।	**4.** कमरा है घर में
5. अतिशयोक्ति से भरा कथन है (बढ़ा-चढ़ा कर कहना)।	**5.** यह है अनुपात आदमी का विराट से
6. मानव के अहंकार पर तीखा व्यंग्य किया गया है।	**6.** अपने को दूजे का स्वामी बताता है

उत्तर– 1. (4) 2. (6) 3. (2) 4. (3) 5. (1) 6. (5)

कविता का सौंदर्य

नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपने समूह में मिलकर खोजिए। इन प्रश्नों से आप कविता का आनंद और अच्छी तरह से ले सकेंगे।

(क) कविता में अलग-अलग प्रकार से ब्रह्मांड की विशालता को व्यक्त किया गया है। उसकी पहचान कीजिए।

(ख) "संख्यातीत शंख सी दीवारें उठाता है"
"अपने को दूजे का स्वामी बताता है"
"एक कमरे में
दो दुनिया रचाता है"

कविता में ये सारी क्रियाएँ मनुष्य के लिए आई हैं। आप अपने अनुसार कविता में नई क्रियाओं का प्रयोग करके कविता की रचना कीजिए।

उत्तर– (क) कविता में ब्रह्मांड की विशालता को व्यक्त करने वाली पंक्तियाँ हैं–

(1) ''संख्यातीत शंख की दीवारें उठाता है'' – यह पंक्ति ब्रह्मांड की विशालता को बताती हैं, जहाँ शंखों की संख्या अनगिनत वस्तुएँ और संरचनाएँ।

(2) ''अपने को दूजे का स्वामी बताता है'' यह पंक्ति व्यक्ति के अहंकार और स्वयं को ब्रह्मांड का स्वामी मानने की प्रवृत्ति को बताता है, जो ब्रह्मांड की विशालता के सामने व्यक्ति की तुच्छता को दिखाती है।

(3) ''एक कमरे में दो दुनिया रचाता है''– यह पंक्ति व्यक्ति की कल्पनाशीलता और सृजनशीलता को बताती है, जो एक छोटे से स्थान में भी विशाल दुनिया की कल्पना कर सकता है।

(ख) कविता में नई क्रियाओं का प्रयोग करके कविता की रचना–

''अग्नि-सा तेज

हवा-सा मौन
एक तारा सा
अनंत में खो जाता है।
अपने को,
अनंत का हिस्सा कहता है।
एक समुद्र में
असंख्य लहरें बनाता है।''

व्याख्या– इस कविता में 'अग्नि-सा तेज' व्यक्ति के उत्साह और ऊर्जा को दिखाता है, 'हवा-सा मौन' उसकी विनम्रता और 'एक तारा सा, अनंत में खो जाता है'' तारे के अस्तित्व की क्षणभंगुरता को। ''अपने को अनंत का हिस्सा कहता है'' यह व्यक्ति की ब्रह्मांड के साथ एकता की भावना को दिखाता है। ''एक समुद्र में असंख्य लहरें बनाता है।'' यह व्यक्ति की रचनात्मकता और प्रभावशीलता को दिखाता है।

आपके शब्द

"सबको समेटे है
परिधि नभ गंगा की"

आपने 'आकाशगंगा' शब्द सुना और पढ़ा होगा। लेकिन कविता में 'नभ गंगा' जैसे शब्दों का प्रयोग किया गया है। यह शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है।

आप भी अपने समूह में मिलकर इसी प्रकार दो शब्दों को मिलाकर नए शब्द बनाइए।

उत्तर– (1) गंगाजल, (2) नवजीवन

आपके प्रश्न

"हर ब्रह्मांड में
कितनी ही पृथ्वियाँ
कितनी ही भूमियाँ
कितनी ही सृष्टियाँ"

क्या आपके मस्तिष्क में कभी इस प्रकार के प्रश्न आते हैं? अवश्य आते होंगे। अपने समूह के साथ मिलकर अपने मन में आने वाले प्रश्नों की सूची बनाइए। अपने शिक्षक, इंटरनेट और पुस्तकालय की सहायता से इन प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़ने का प्रयास कीजिए।

उत्तर–मन में आने वाले कुछ संभावित प्रश्न–

(1) ब्रह्मांड कितना बड़ा होगा?

(2) क्या हमारे ब्रह्मांड के अतिरिक्त भी कोई अन्य ब्रह्मांड है?

(3) सृष्टि की शुरुआत कैसे और कब से हुई?

(4) सृष्टि का उद्देश्य क्या है?

(5) क्या ब्रह्मांड का कोई अन्त है?

(6) क्या पृथ्वी के अतिरिक्त अन्य किसी और ग्रह पर जीवन है?

(7) क्या समय अनंत है?

(8) क्या कोई शक्ति है जो ब्रह्मांड में सभी चीजों को नियन्त्रित करती है?

(9) क्या मृत्यु के बाद भी जीवन है?

(10) क्या जीवन का कोई अन्त है?

उत्तर खोजने के लिए सुझाव– आप शिक्षक, इंटरनेट तथा पुस्तकालय की सहायता लें।)

विशेषण और विशेष्य

"पृथ्वी एक छोटी"

यहाँ 'छोटी' शब्द 'पृथ्वी' की विशेषता बता रहा है अर्थात् 'छोटी' 'विशेषण' है। 'पृथ्वी' एक संज्ञा शब्द है जिसकी विशेषता बताई जा रही है। अर्थात् 'पृथ्वी' 'विशेष्य' शब्द है।

अब आप नीचे दी गई पंक्तियों में विशेषण और विशेष्य शब्दों को पहचानकर लिखिए –

पंक्ति	विशेषण	विशेष्य
1. दो व्यक्ति कमरे में	दो	व्यक्ति
2. अनगिनत नक्षत्रों में		
3. लाखों ब्रह्मांडों में		
4. अपना एक ब्रह्मांड		
5. संख्यातीत शंख सी		
6. एक कमरे में		
7. दो दुनिया रचाता है		

उत्तर–

पंक्ति	विशेषण	विशेष्य
1. दो व्यक्ति कमरे में	दो	व्यक्ति
2. अनगिनत नक्षत्रों में	अनगिनत	नक्षत्रों
3. लाखों ब्रह्मांडों में	लाखों	ब्रह्मांडों
4. अपना एक ब्रह्मांड	एक	ब्रह्मांड

5. संख्यातीत शंख सी	संख्यातीत	शंख
6. एक कमरे में	एक	कमरे
7. दो दुनिया रचाता है	दो	दुनिया

पाठ से आगे

आपकी बात

(क) कोई ऐसी स्थिति बताइए जहाँ 'अनुपात' बिगड़ गया हो – जैसे काम का बोझ अधिक और समय कम।

उत्तर–हाँ! ऐसी कई स्थितियाँ हैं जहाँ 'अनुपात' बिगाड़ जाता है, खासकर जब काम का बोझ अधिक हो और समय कम। जैसे– जब एक शिक्षक को बहुत सारे विद्यार्थियों को संभालना पड़ता है, जिससे उसे व्यक्तिगत रूप से हर विद्यार्थी पर ध्यान देने में मुश्किल होती है।

(ख) आप अपने परिवार, विद्यालय या मोहल्ले में 'विराटता' (विशाल दृष्टिकोण) कैसे ला सकते हैं? कुछ उपाय सोचकर लिखिए। (संकेत – किसी को अनदेखा न करना, सबकी सहायता करना आदि)

उत्तर– परिवार, विद्यालय और मोहल्ले में 'विराटता' (विशाल दृष्टिकोण) लाने के लिए हमें सामूहिक रूप से एक-दूसरे के प्रति सहानुभूति, सम्मान का भाव तथा समझदारी विकसित करनी होगी। हमें सहिष्णुता, सकारात्मक सोच तथा खुले संवाद को बढ़ावा देना होगा।

परिवार में विराटता लाने के उपाय– परिवार के सभी सदस्य आपस में एक-दूसरे के दृष्टिकोणों तथा मतों का सम्मान करें। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी राय व्यक्त करने और अपनी मान्यताओं का पालन करने की आजादी होनी चाहिए।

सकारात्मक सोच– परिवार के सभी सदस्य समस्याओं को चुनौती के रूप में देखें और सकारात्मक समाधान खोजने पर अपना ध्यान लगायें।

खुला संवाद– परिवार के सदस्यों को अपनी भावनाओं और विचारों को खुलकर व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करें। एक-दूसरे की बात ध्यान से सुनें और उसकी बात को समझने की कोशिश करें।

एक-दूसरे का समर्थन– परिवार के सदस्य एक-दूसरे की ताकत और कमजोरियों को समझें और एक-दूसरे को प्रेरित करें।

सामूहिक गतिविधियाँ– परिवार के सदस्य एक साथ मिलकर भोजन, खेल तथा अन्य गतिविधियों में भाग लें, जिससे आपसी प्रेम तथा समझ बढ़े।

विद्यालय में विराटता लाने के उपाय–

समावेशी शिक्षा– सभी बच्चों को स्कूल में समान अवसर मिलें, चाहे उनकी पृष्ठभूमि कुछ भी हो।

समस्या-समाधान कौशल– बच्चों को समस्या-समाधान कौशल सिखाएँ और उन्हें समस्याओं का सामना करने के लिए तैयार करें।

सामुदायिक सेवा– बच्चों को सामुदायिक सेवा गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें, जिससे बच्चों में समाज के प्रति जिम्मेदारी का अहसास हो।

नेतृत्व का अवसर– बच्चों में नेतृत्व करने के अवसर प्रदान करें, जिससे वे आत्मविश्वास और जिम्मेदारी की भावना जागृत कर सकें।

सहिष्णुता और सम्मान– बच्चों को विभिन्न सांस्कृतियों, धर्मों और दृष्टिकोणों के प्रति सहिष्णु और सम्मानजनक बनने के लिए प्रोत्साहित करें।

मोहल्ले में विराटता लाने के उपाय–

सद्भाव एवं सहयोग– मोहल्ले के लोगों को एक-दूसरे के साथ सद्भाव और सहयोग से रहने के लिए प्रोत्साहित करें।

स्वच्छता एवं सुरक्षा– मोहल्ले को स्वच्छ और सुन्दर बनाने के लिए एक-साथ मिलजुल कर काम करें तथा मोहल्ले में सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए एक-दूसरे का सहयोग करें।

साझा त्योहार एवं उत्सव– मोहल्ले के सभी लोगों को एक-साथ मिलकर त्योहारों और उत्सवों को मनाने के लिए प्रोत्साहित करें।

सांस्कृतिक आदान-प्रदान– मोहल्ले में रहने वाले विभिन्न संस्कृतियों के लोगों को एक-दूसरे के पास लाने के लिए सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों का आयोजन करें।

इन उपायों को अपनाकर हम अपने परिवारों, विद्यालयों और मोहल्लों में विराटता (विशाल दृष्टिकोण) ला सकते हैं।

(ग) 'करोड़ों में एक ही पृथ्वी' – इस पंक्ति को पढ़कर आपके मन में क्या भाव आता है? आप इस अनोखी पृथ्वी को सुरक्षित रखने के लिए क्या-क्या करेंगे?

उत्तर– 'करोड़ों में एक ही पृथ्वी' यह पंक्ति सुनकर मन में पृथ्वी के प्रति जिम्मेदारी तथा प्रशंसा का भाव आता है। यह पंक्ति हमें याद दिलाती है कि हमारी पृथ्वी कितनी अनमोल और अनोखी है और हमें इसे सुरक्षित रखना चाहिए। यह एक ऐसा ग्रह है जिस पर जीवन सम्भव है और हमें इसकी रक्षा अपने आने वाली पीढ़ियों के लिए करनी होगी।

हम इस अनोखी पृथ्वी को सुरक्षित रखने के लिए निम्न उपाय करेंगे–

(1) स्थायी जीवन-शैली– हम ऐसी जीवन शैली अपनाने की कोशिश करेंगे जो पर्यावरण के लिए कम हानिकारक हो।

(2) प्रदूषण कम करना– हम प्लास्टिक का कम उपयोग करके रिसायकल करने और कचरा कम करने की कोशिश करेंगे। हम सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करने या प्रदूषण रहित वाहन का प्रयोग करेंगे।

(3) पेड़ लगाना– हम पर्यावरण को शुद्ध करने के लिए अधिक से अधिक पेड़ लगाने की कोशिश करेंगे।

(4) **पानी बचाना–** हम पानी का उपयोग सही काम के लिए करेंगे, फालतू में पानी बर्बाद नहीं करेंगे। हम अपने नल से बेकार पानी को नहीं बहने देंगे, नल को बन्द करके पानी की बर्बादी को रोकेंगे।

(5) जागरूकता फैलाना– हम अपने दोस्तों और परिवार को पृथ्वी को बचाने के महत्व के बारे में जागरूक करेंगे।

(घ) कविता हमें 'अपने को दूसरों का स्वामी बताने' के प्रति सचेत करती है। आप अपने किन-किन गुणों को प्रबल करेंगे ताकि आप में ऐसा भाव न आए?

उत्तर– हम अपने अन्दर सहानुभूति, ईमानदारी, धैर्य, अनुकूलनशीलता, सीखने की इच्छा तथा दृढ़ता जैसे गुणों को प्रबल करेंगे ताकि हममें ऐसे भाव न आयें।

(ङ) अपने जीवन में ऐसी तीन 'दीवारों' के विषय में सोचिए जो आपने स्वयं खड़ी की हैं (जैसे– डर, संकोच आदि। फिर एक योजना बनाइए कि आप उन्हें कैसे तोड़ेंगे? क्या समाज में भी ऐसी दीवारें होती हैं? उन्हें गिराने में हम कैसे सहायता कर सकते हैं?

उत्तर– हममें अपने अन्दर के डर और संकोच को दूर करने के लिए उसे समझना और फिर इसका सामना करना जरूरी है। डर और संकोच को भगाने की बजाय, इसे स्वीकार करें और धीरे-धीरे इसके साथ काम करें।

डर और संकोच को समझने के लिए–

अपने डर और संकोच को पहचानें– हम यह जानने की कोशिश करें कि हमको किस चीज से डर और संकोच लगता है और यह डर और संकोच क्यों है?

अपने डर व संकोच के बारे में लिखें– हम अपने डर व संकोच को शब्दों में व्यक्त करने से हमको इसे बेहतर तरीके से समझने में मदद मिल सकती है।

अपने डर और संकोच को चुनौती दें– क्या आपके डर और संकोच में कोई सच्चाई है? क्या वे वास्तविक हैं?

डर व संकोच के चरम परिणाम की कल्पना करें– क्या होगा यदि आपका बुरा डर व संकोच सच हो जाए? क्या डर और संकोच के साथ जी सकते हैं।

डर और संकोच को तोड़ने के उपाय

(1) धीरे-धीरे शुरुआत करें और धीरे-धीरे अपने डर व संकोच के पास जाएँ।

(2) जब आपको डर व संकोच महसूस हो तो गहरी साँस लें और धीरे-धीरे साँस छोड़ें।

(3) अपनी सोच को सकारात्मक दिशा में मोड़ने की कोशिश करें।

(4) अपनी उपलब्धियों को याद करके स्वयं को प्रोत्साहित करें।

(5) किसी भरोसेमन्द व्यक्ति से अपने डर व संकोच के बारे में बात करें।

(6) यदि आवश्यक हो तो मनोचिकित्सक से सलाह लें।

(7) पर्याप्त नींद लें।

संख्यातीत शंख

'संख्यातीत शंख सी दीवारें उठाता है'

शंख का अर्थ है – 100 पद्म की संख्या।

नीचे भारतीय संख्या प्रणाली एक तालिका के रूप में दी गई है।

हिंदी	संख्या	गणितीय संख्या
एक (इकाई)	1	10^0
दस (दहाई)	10	10^1
सौ (सैकड़ा)	100	10^2
सहस्र (हजार)	1,000	10^3
दस हजार	10,000	10^4
लाख	1,00,000	10^5
दस लाख	10,00,000	10^6
करोड़	1,00,00,000	10^7
दस करोड़	10,00,00,000	10^8
अरब	1,00,00,00,000	10^9
दस अरब	10,00,00,00,000	10^{10}
खरब	1,00,00,00,00,000	10^{11}
दस खरब	10,00,00,00,00,000	10^{12}
नील	1,00,00,00,00,00,000	10^{13}
दस नील	10,00,00,00,00,00,000	10^{14}
पद्म	1,00,00,00,00,00,00,000	10^{15}
दस पद्म	10,00,00,00,00,00,00,000	10^{16}
शंख	1,00,00,00,00,00,00,00,000	10^{17}
दस शंख	10,00,00,00,00,00,00,00,000	10^{18}
महाशंख	1,00,00,00,00,00,00,00,00,000	10^{19}

तालिका के आधार पर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर खोजिए–

1. जिस संख्या में 15 शून्य होते हैं, उसे क्या कहते हैं?

उत्तर– जिस संख्या में 15 शून्य होते हैं, उसे पद्म कहते हैं।

2. महाशंख में कितने शून्य होते हैं?

उत्तर– महाशंख में 19 शून्य होते हैं।

3. एक लाख में कितने हजार होते हैं?

उत्तर– एक लाख में 100 हजार होते हैं।

4. उपर्युक्त तालिका के अनुसार सबसे छोटी और सबसे बड़ी संख्या कौन-सी है?

उत्तर– सबसे छोटी संख्या एक तथा सबसे बड़ी संख्या महाशंख है।

5. दस करोड़ और एक अरब को जोड़ने पर कौन-सी संख्या आएगी?

उत्तर– दस करोड़ और एक अरब को जोड़ने पर 1 अरब 10 करोड़ होता है।

समावेशन और समानता

जैसे पृथ्वी अनगिनत नक्षत्रों में एक छोटा-सा ग्रह है, वैसे ही प्रत्येक व्यक्ति, चाहे वह विशेष आवश्यकता वाला हो या न हो, समाज का एक महत्वपूर्ण भाग है।

एक समूह चर्चा आयोजित करें जिसमें सभी मानवों के लिए समान अवसरों की आवश्यकता पर बल दिया जाए। (भले ही उनका जेंडर, आय, मत, विश्वास, शारीरिक

रूप, रंग या आकार-प्रकार आदि कैसा भी हो)

उत्तर–हम एक समूह चर्चा आयोजित करें जिसमें सभी व्यक्तियों के लिए समान अवसरों की आवश्यकता पर बल दिया जाए, चाहे जेंडर, आय, मत, विश्वास, शारीरिक रूप, रंग या आकार-प्रकार कुछ भी हो।

समूह चर्चा का उद्देश्य– समूह चर्चा का मुख्य उद्देश्य यह है कि हम सभी इस बात पर एक मत हों कि हर व्यक्ति, चाहे वह किसी भी पृष्ठभूमि से हो, समाज में समान अवसर पाने का हकदार है। हमें यह समझना होगा कि प्रत्येक व्यक्ति का अपना एक विशिष्ट गुण होता है और हमें उनके गुणों का सम्मान करना चाहिए।

चर्चा के बिन्दु–

(1) समानता का अर्थ– हमें सबसे पहले समानता का मतलब स्पष्ट करना होगा। समानता का मतलब यह नहीं है कि हम सभी को एक जैसा बना दें बल्कि इसका मतलब है कि सभी व्यक्तियों को समान अवसर प्रदान किया जाए जिससे वे अपनी क्षमतानुसार विकसित हो सकें।

(2) समान अवसर– हम शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और अन्य क्षेत्रों में सभी के लिए समान अवसर सुनिश्चित करें।

(3) जागरूकता– हमें समाज में जागरूकता फैलाने की जरूरत है जिससे लोग समानता और समावेशन के महत्व को समझ सकें।

(4) सामुदायिक भागीदारी– हम समुदाय के सभी लोगों को समान अवसरों की प्राप्ति में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें।

(5) विशेष आवश्यकताओं वाले व्यक्तियों के लिए– हमें विशेष आवश्यकताओं वाले व्यक्तियों के लिए विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। उनको समाज की मुख्यधारा में शामिल करने के लिए हमको उनकी आवश्यकताओं के अनुसार सुविधाएँ और सहायता प्रदान करनी होगी।

(6) भेदभाव का उन्मूलन– हमको समाज में रहने वाले सभी प्रकार के भेदभाव जैसे लिंग, जाति, धर्म, रूप, रंग आदि को समाप्त करने की जरूरत है।

(7) कानून और नीतियाँ– हमको ऐसे कानून और नीतियाँ बनाने की जरूरत है जो समानता और समावेशन को बढ़ावा दें।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. कविता के अनुसार दो व्यक्ति कहाँ रहते हैं?
(अ) मुहल्ले में (ब) एक कमरे में
(स) पृथ्वी पर (द) ब्रह्मांड में

2. कविता में व्यक्ति की तुलना किससे की गई है?
(अ) विराट दृष्टि से (ब) प्रकृति से
(स) पृथ्वी से (द) देवों से

3. कविता में 'संख्यातीत शंख की दीवारें' किस बात को बताती हैं?
(अ) विज्ञान को
(ब) सीमा और विभाजन को
(स) ज्ञान को (द) सृजन को

4. 'अपने को दूजे का स्वामी बताता है' से कवि का क्या आशय है?
(अ) प्रेमभाव व्यक्त करना
(ब) जिम्मेदारी निभाना
(स) स्वामित्व की झूठी भावना
(द) अहं की भावना

5. कविता का मुख्य संदेश क्या है?
(अ) धार्मिकता
(ब) वैज्ञानिक उन्नति
(स) प्रेम और धर्म
(द) व्यक्ति की सीमितता और उसका अहंकार

उत्तर– 1. (ब) **2.** (अ) **3.** (ब) **4.** (स) **5.** (द)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. .... व्यक्ति कमरे, कमरे से छोटे–
2. .... है मुहल्ले में मुहल्ला नगर में,
3. .... नक्षत्रों में पृथ्वी एक छोटी,
4. .... ब्रह्मांडों में अपना एक ब्रह्मांड,

5. एक कमरे में दो .... रचाता है।

उत्तर– **1.** दो **2.** घर **3.** अनगिनत **4.** लाखों **5.** दुनिया।

सत्य/असत्य

1. कविता की शुरुआत ही 'दो व्यक्ति कमरे में' पंक्ति से होती है। ( )
2. पूरी कविता में व्यक्ति की स्थिति को सूक्ष्म सृष्टि के अनुपात में दिखाया गया है। ( )
3. आदमी अपनी सीमाओं को स्वयं बनाता है। ( )
4. व्यक्ति स्वयं को दूसरों का स्वामी मानकर विभाजन और संघर्ष को जन्म देता है। ( )
5. 'विराट' शब्द ब्रह्मांड की लघुता के लिए प्रयुक्त हुआ है। ( )

उत्तर– **1.** सत्य **2.** असत्य **3.** सत्य **4.** सत्य **5.** असत्य

सही मिलान

स्तंभ (अ)	स्तंभ (ब)
1. व्यक्ति अपनी विराटता के बीच भी	**(अ)** स्वामी मानता है
2. सृष्टि के अनुपात में दिखाया गया है	**(ब)** एक सूक्ष्म तत्व है
3. व्यक्ति अपने को दूसरों का	**(स)** ब्रह्मांड
4. व्यक्ति	**(द)** ब्रह्मांड, पृथ्वी, नक्षत्र
5. लाखों में से एक	**(य)** सीमित दायरे में है

उत्तर– **1.** (य) **2.** (द) **3.** (अ) **4.** (ब) **5.** (स)

अतिलघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. कमरे से छोटे होने का क्या आशय है?

उत्तर– कमरे से छोटे होने का आशय व्यक्ति की मानसिक संकीर्णता से है।

2. व्यक्ति की स्थिति को किसके अनुपात में दिखाया गया है?

उत्तर– व्यक्ति की स्थिति को विराट सृष्टि के अनुपात में दिखाया गया है।

3. व्यक्ति स्वयं को दूसरों का स्वामी बताकर किसको जन्म देता है?

उत्तर– व्यक्ति स्वयं को दूसरों का स्वामी बताकर विभाजन और संघर्ष को जन्म देता है।

4. व्यक्ति का सबसे बड़ा दोष क्या है?

उत्तर– व्यक्ति का सबसे बड़ा दोष है कि इतना सूक्ष्म होते हुए भी व्यक्ति दूसरों पर अधिकार जताने की कोशिश करता है।

5. व्यक्ति की सोच किसका प्रमाण है?

उत्तर– व्यक्ति की सोच संकीर्णता का प्रमाण है।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. कविता में 'कमरा' किस चीज का प्रतीक है?

उत्तर– कविता में 'कमरा' व्यक्ति के निजी संसार, उसकी सोच, उसकी भावनाओं और उसके अनुभवों का प्रतीक है। यह एक ऐसी जगह है जहाँ व्यक्ति अपने आप में रहता है और अपने तरीके से दुनिया को देखता है।

2. कवि ने 'आदमी का अनुपात' कविता में क्या संदेश दिया है?

उत्तर– कवि ने 'आदमी का अनुपात' कविता में व्यक्ति और ब्रह्मांड के विशाल स्वरूप के बीच के अन्तर को दिखाया है। उन्होंने बताया है कि कैसे दो व्यक्तियों के लिए एक छोटा-सा कमरा भी अपने-अपने छोटे-छोटे संसार रच सकता है, जबकि वह कमरा पूरे घर में सबसे छोटा है।

3. कविता में 'सृष्टि' शब्द का क्या अर्थ है?

उत्तर– कविता में 'सृष्टि' शब्द का अर्थ वह सब कुछ जो मौजूद है, ब्रह्मांड, प्रकृति और व्यक्ति के अतिरिक्त अन्य सभी चीजें। यह एक विशाल और असीम परिदृश्य है, जिसके सामने व्यक्ति का स्वयं का संसार बहुत छोटा है।

4. कविता में 'आदमी और अनुपात' शब्दों का महत्व क्या है?

उत्तर– कविता में 'आदमी' शब्द व्यक्ति का प्रतीक है, जो आसपास की दुनिया को अपनी नजर से देखता है और अपने अनुसार ही उसे परिभाषित करता है। 'अनुपात' शब्द का प्रयोग यह दिखाने के लिए किया गया है कि व्यक्ति की दुनिया चाहे कितनी भी बड़ी क्यों न हो जाये वह हमेशा सृष्टि के विराट परिप्रेक्ष्य में छोटी ही मानी जाती है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. 'आदमी का अनुपात' कविता की काव्यगत विशेषताएँ बताइए।

उत्तर– 'आदमी का अनुपात' कविता की काव्यगत विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

(1) सामाजिक यथार्थ– 'आदमी का अनुपात' में कवि ने सामाजिक विषमताओं और व्यक्ति के संघर्ष को दिखाया है।

(2) विराटता और लघुता का भाव– कविता में कवि ने व्यक्ति की तुलना ब्रह्मांड से करके विराटता और लघुता के भाव को उभारा है। व्यक्ति, जो अपने आपको बहुत बड़ा मानता है, वास्तव में ब्रह्मांड के सामने वह बहुत छोटा है।

(3) व्यक्ति के दुर्गुण– कवि ने कविता में व्यक्ति के दुर्गुणों (अहंकार, स्वार्थ और ईर्ष्या) पर प्रकाश डाला है। ये दुर्गुण व्यक्ति को ब्रह्मांड के साथ अपने सम्बन्ध को समझने से रोकते हैं।

(4) अंतर्विरोध– कवि ने कविता में एक ओर ब्रह्मांड की विराटता का भाव दिखाया है, तो दूसरी ओर व्यक्ति के दुर्गुणों को बताया है। यह अंतर्विरोध कविता को और अधिक प्रभावशाली बनाता है।

(5) प्रतीकात्मक भाषा और शैली– कवि ने कविता में प्रतीकात्मक भाषा और रूपकों का प्रयोग किया है, जैसे कमरे को घर, घर को मुहल्ला और मुहल्ले को नगर, नगर को प्रदेश आदि के रूप में प्रस्तुत करना। ये प्रतीक व्यक्ति के जीवन के विभिन्न पहलुओं को दिखाते हैं। कविता की भाषा सरल और सहज है, लेकिन गहरे अर्थों को व्यक्त करने में सक्षम है।

(6) अलंकार– कविता में रूपक और मानवीयकरण जैसे अलंकारों का प्रयोग हुआ है।

निष्कर्ष– 'आदमी का अनुपात' कविता एक महत्वपूर्ण कविता है, जो व्यक्ति को उसके वास्तविक स्थान का बोध कराती है। कवि ने कविता में व्यक्ति की महानता और दुर्बलता दोनों को दिखाया है। यह कविता व्यक्ति को ब्रह्मांड के साथ अपने सम्बन्ध को समझने के लिए प्रोत्साहित करती है।

2. 'आदमी का अनुपात' कविता में कवि ने कितनी जटिलताओं को दिखाया है?

उत्तर– 'आदमी का अनुपात' कविता में कवि ने मानव-स्वभाव की जटिलताओं को दिखाया है। कवि के अनुसार व्यक्ति ईर्ष्या, अहंकार, स्वार्थ, घृणा और अविश्वास जैसी भावनाओं में घिरा रहता है और इन भावनाओं के कारण वह स्वयं को दूसरों से श्रेष्ठ दिखाने का प्रयास करता है, यहाँ तक कि देशों के स्तर पर भी कवि यह भी दिखाता है कि व्यक्ति एक ही कमरे में दो दुनिया बनाने की कोशिश करता है, जो उसके आंतरिक विरोधाभासों को दिखाती है।

कवि ने इस कविता के माध्यम से न केवल व्यक्ति के स्वभाव की विसंगतियों को उजागर किया है, बल्कि ब्रह्मांड की विशालता के सामने व्यक्ति की नगण्यता को भी दिखाया है।

10 तरुण के स्वप्न

अभ्यास-प्रश्नोत्तर

पाठ से

आइए, अब हम इस पाठ पर विस्तार से चर्चा करें। आगे दी गई गतिविधियाँ इस कार्य में आपकी सहायता करेंगी।

मेरी समझ से

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उपयुक्त उत्तर के सम्मुख तारा (☆) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।

1. ''उनके स्वप्न के उत्तराधिकारी आज <u>हम</u> हैं।'' इस कथन में रेखांकित शब्द 'हम' किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?

- सुभाषचंद्र बोस के लिए
- देश के तरुण वर्ग के लिए
- चित्तरंजन दास के लिए
- भारतवासियों के लिए

उत्तर– ☆ देश के तरुण वर्ग के लिए

2. स्वाधीन राष्ट्र का स्वप्न साकार होगा?

- आर्थिक असमानता से
- स्त्री-पुरुष के भिन्न अधिकारों से
- श्रम और कर्म की मर्यादा से
- जातिभेद से

उत्तर– ☆ श्रम और कर्म की मर्यादा से

3. ''उनके स्वप्न के <u>उत्तराधिकारी</u> आज हम हैं।" 'उत्तराधिकारी' होने से क्या अभिप्राय है?

- हमें उनके स्वप्नों को सँजोकर रखना है
- हमें भी उनकी तरह स्वप्न देखने का अधिकार है
- उनके स्वप्नों को पूरा करने के लिए हमें ही कर्म करना है।
- उनके स्वप्नों पर चर्चा करने का दायित्व हमारा ही है

उत्तर– ☆ उनके स्वप्नों को पूरा करने के लिए हमें ही कर्म करना है।

4. जब प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षा और उन्नति का समान अवसर प्राप्त होगा तब–

- राष्ट्र की श्रम-शक्ति बढ़ेगी
- तरुणों का साहस बढ़ेगा
- राष्ट्र स्वाधीन बनेगा
- राष्ट्र स्वप्नदर्शी होगा

उत्तर– ☆ राष्ट्र की श्रम-शक्ति बढ़ेगी

(ख) हो सकता है कि आपके समूह के साथियों ने अलग-अलग उत्तर चुने हों। अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने?

उत्तर–(1) ''उनके स्वप्न के उत्तराधिकारी आज <u>हम</u> हैं'' इस कथन में रेखांकित शब्द ''हम'' से देश के तरुण वर्ग (युवा पीढ़ी) का बोध होता है। 'हम' शब्द से उस व्यक्ति के स्वप्नों को आगे बढ़ाने वाले युवा वर्ग का। इसलिए सही उत्तर 'देश के तरुण वर्ग के लिए' है।

(2) ''स्वाधीन राष्ट्र का स्वप्न साकार होगा। श्रम और कर्म की मर्यादा से'' यह कथन बिल्कुल सही है। इसका मतलब यह है कि एक स्वतन्त्र राष्ट्र का स्वप्न, जिसमें सभी लोग समान रूप से समृद्ध और खुशहाल हों, तभी साकार हो सकता है जब लोग अपने श्रम और कर्म के प्रति समर्पित रहें और उनमें मर्यादा हो अर्थात् श्रम और कर्म के प्रति ईमानदारी, लगन और निष्ठा हो।

(3) ''उनके स्वप्न के 'उत्तराधिकारी' आज हम हैं'' उत्तराधिकारी होने से अभिप्राय यह है कि उन लोगों के स्वप्न को साकार करने के लिए उत्तराधिकारी आज हम हैं, उनके द्वारा देखे गये लक्ष्यों, आदर्शों को आगे बढ़ाना और पूरा करना अब हमारी जिम्मेदारी है।

(4) जब प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षा और उन्नति का समान अवसर प्राप्त हो तब राष्ट्र की श्रम-शक्ति बढ़ेगी। यह सही उत्तर है क्योंकि शिक्षा और उन्नति का समान अवसर दोनों ही किसी भी राष्ट्र की प्रगति के लिए महत्वपूर्ण कारक हैं।

मिलकर करें मिलान

नीचे स्तंभ 1 में पाठ में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं और स्तंभ 2 में उन पंक्तियों से संबंधित भाव-विचार दिए गए हैं। स्तंभ 1 में दी गई पंक्तियों को स्तंभ 2 में दिए गए भाव-विचार से सही मिलान कीजिए।

क्रम	स्तंभ 1	स्तंभ 2
1.	"इसी स्वप्न की प्रेरणा से हम उठते हैं, बैठते हैं, चलते हैं, फिरते हैं और लिखते हैं, भाषण देते हैं, काम-काज करते हैं।"	1. समाज में सभी व्यक्तियों को सभी तरह की स्वतंत्रता हो और उस पर किसी तरह का बंधन या सामाजिक दबाव न हो।
2.	"जो राष्ट्र हमारे स्वदेशी समाज के यंत्र के रूप में काम करेगा, सर्वोपरि वह समाज और राष्ट्र भारतवासियों का अभाव मिटाएगा।"	2. हमारी समूची दिनचर्या और आचार-विचार इसी लक्ष्य (स्वप्न) की प्राप्ति पर केन्द्रित हैं।
3.	"उस समाज में व्यक्ति सब दृष्टियों से मुक्त हो तथा समाज के दबाव से वह मरे नहीं।"	3. जिस देश की योजनाएँ हमारे अपने समाज को ध्यान में रखकर बनाई जाएँगी, उस देश में किसी भी प्रकार का अभाव नहीं होगा।

उत्तर– 1. (2) 2. (3) 3. (1)

पंक्तियों पर चर्चा

पाठ से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपनी कक्षा में साझा कीजिए।

(क) "उस समाज में अर्थ की विषमता न हो।"

उत्तर– 'उस समाज में अर्थ की विषमता न हो' का अर्थ समाज में धन का असमान वितरण नहीं होना चाहिए, सबके पास समान अवसर और संसाधन होने चाहिए।

(ख) "वही स्वप्न उनकी शक्ति का उत्स बना और उनके आनंद का निर्झर रहा।"

उत्तर– ''वही स्वप्न उनकी शक्ति का उत्स बना और उनके आनंद का निर्झर रहा'' का अर्थ है कि एक साझा स्वप्न लोगों को एकजुट करता है और उन्हें खुशी और शक्ति प्रदान करता है।

(ग) "उस समाज में व्यक्ति सब दृष्टियों से मुक्त हो।"

उत्तर–'उस समाज में व्यक्ति सब दृष्टियों से मुक्त हो' का अर्थ है कि समाज में व्यक्ति को हर तरह की गुलामी, भेदभाव और सामाजिक बंधनों से मुक्त होना चाहिए।

इन पंक्तियों पर कक्षा में चर्चा करते हुए हम निम्नलिखित पहलुओं पर विचार कर सकते हैं–

(1) विषमता– विषमता का अर्थ है कि धन, शक्ति, अवसर आदि में असमानता। हमें अपने समाज में विषमता को कम करने या खत्म करने का प्रयास किया जाना चाहिए। हमें अपने समाज में विषमता को कम करने के लिए गरीब और वंचित लोगों की मदद करनी चाहिए।

(2) स्वप्नों की भूमिका– लोगों को स्वप्न प्रेरित करते हैं और उन्हें आगे बढ़ने की शक्ति देते हैं। एक साझा स्वप्न लोगों को एकजुट कर सकता है। हम अपने स्वप्न पूरा करने के लिए कड़ी मेहनत कर सकते हैं।

(3) स्वतन्त्रता का महत्व– स्वतन्त्रता का अर्थ है अपने विचारों और कार्यों पर नियन्त्रण रखना और दूसरों के द्वारा बनाये गये नियमों या सीमाओं से मुक्त होना। एक स्वतन्त्र व्यक्ति अपने जीवन को अपने तरीके से जी सकता है और अपने स्वप्नों को पूरा कर सकता है। हम सभी को समान रूप से महत्व दें, चाहे उसकी सामाजिक स्थिति कुछ भी हो। हम अपने समाज में स्वतन्त्रता को बढ़ावा देने के लिए आवाज उठा सकते हैं।

सोच-विचार के लिए

अब आप इस पाठ को पुनः पढ़िए और निम्नलिखित के विषय में पता लगाकर लिखिए–

(क) नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने किस प्रकार के राष्ट्र निर्माण का स्वप्न देखा था?

उत्तर– नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने एक ऐसे राष्ट्र का स्वप्न देखा, जो स्वतन्त्र, शक्तिशाली और आत्मनिर्भर हो, जहाँ हर नागरिक को समान अवसर मिले।

(ख) नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने किस लक्ष्य की प्राप्ति को अपने जीवन की सार्थकता के रूप में देखा?

उत्तर– नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने भारत को स्वतन्त्रता दिलाना और एक मजबूत, आत्मनिर्भर राष्ट्र का निर्माण करना अपने जीवन का परम लक्ष्य माना। उन्होंने इसे अपने जीवन की सार्थकता के रूप में देखा।

(ग) ''आलसी तथा अकर्मण्य के लिए कोई स्थान नहीं रहेगा'' सुभाषचन्द्र बोस ने ऐसा क्यों कहा होगा?

उत्तर– ''आलसी और अकर्मण्य के लिए कोई स्थान नहीं रहेगा'' सुभाषचन्द्र बोस ने ऐसा इसलिए कहा होगा क्योंकि उनका मानना था कि स्वतन्त्रता प्राप्ति और राष्ट्र निर्माण के लिए सभी लोगों को सक्रिय, समर्पित और परिश्रमी होने की आवश्यकता है। आलसी और अकर्मण्य लोग राष्ट्र के निर्माण और विकास में योगदान नहीं करते।

(घ) नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के लक्ष्यों या ध्येय को पूरा करने के लिए आज की युवा पीढ़ी क्या-क्या कर सकती है?

उत्तर– नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए आज की युवा पीढ़ी निम्नलिखित कार्य कर सकती है–

(1) अपने देश के प्रति देशभक्ति की भावना को जागृत कर उसे अपने कार्यों में प्रदर्शित करके।

(2) अपने देश के प्रति प्रेम और निष्ठा की भावना को अपने मन में जागृत करके।

(3) अपने लक्ष्यों को पाने के लिए आत्मविश्वास बनाये रखना और कभी हार न मानना।

(4) अपने स्वप्न साकार करने के लिए कड़ी मेहनत करना और कभी भी आलस्य न करना।

(5) शिक्षा प्राप्त करना और अपने कौशल को विकसित करना जिससे देश के विकास में योगदान दिया जा सके।

(6) अपने देश और समाज के लिए समर्पित रहना तथा निस्वार्थ भाव से देश व समाज की सेवा करना।

(7) समाज में गरीब व पिछड़े लोगों की मदद करना तथा उनके जीवन में सकारात्मक बदलाव लाना।

अनुमान और कल्पना से

(क) "उस समाज में व्यक्ति सब दृष्टियों से मुक्त हो," सुभाषचंद्र बोस ने किन-किन दृष्टियों से मुक्ति की बात की होगी?

उत्तर– सुभाषचन्द्र बोस ने सामाजिक बन्धन, राजनीतिक बन्धन तथा आर्थिक बन्धन से मुक्ति की बात की होगी।

(ख) "उस समाज में नारी मुक्त होकर समाज एवं राष्ट्र के पुरुषों की तरह समान अधिकार का उपभोग करे," सुभाषचंद्र बोस को अपने भाषण में नारी के लिए समान अधिकारों की बात क्यों कहनी पड़ी?

उत्तर– सुभाषचन्द्र बोस का मानना था कि एक स्वतन्त्र राष्ट्र के निर्माण में नारियों की भूमिका पुरुषों के समान होनी चाहिए तथा नारियों को शिक्षा, रोजगार और सामाजिक रूप से सक्षम होना चाहिए, इससे वे राष्ट्र के विकास में समान रूप से अपना योगदान कर सकें।

(ग) आपके विचार से हमारे समाज में और कौन-कौन से लोग हैं जिन्हें विशेष अधिकार दिए जाने की आवश्यकता है?

उत्तर– मेरे विचार से निम्नलिखित लोगों को विशेष अधिकार दिए जाने की आवश्यकता है– (1) शारीरिक रूप से विकलांग, (2) सामाजिक रूप से पिछड़े वर्ग, (3) बुजुर्गों को, (4) बाल-मजदूरी करने वाले बच्चों को, (5) ट्रांसजेंडर समुदाय को।

(घ) सुभाषचन्द्र बोस देश के समस्त युवा वर्ग को संबोधित करते हुए कहते हैं–"हे मेरे तरुण भाइयो!" उनका संबोधन केवल 'भाइयो' शब्द तक ही क्यों सीमित रहा होगा?

उत्तर– सुभाषचन्द्र बोस का सम्बोधन ''हे मेरे तरुण भाइयो!'' केवल ''भाइयो'' तक सीमित इसलिए रहा होगा क्योंकि ''तरुण'' शब्द का प्रयोग उन्होंने युवा वर्ग को विशेष रूप से सम्बोधित करने के लिए किया था। ''भाइयो'' शब्द का प्रयोग एक व्यापक संबोधन है जो सभी पुरुषों के लिए उपयोग किया जा सकता है। नेताजी का मानना था कि देश को स्वतन्त्र कराने के लिए सभी को मिलकर काम करना होगा। इसलिए ''भाइयो'' शब्द का उपयोग एक प्रतीकात्मक और भावात्मक अपील थी, जिसका उद्देश्य युवाओं को एक साथ लाना था।

(ङ) ''यह स्वप्न मैं तुम्हें उपहारस्वरूप देता हूँ– स्वीकार करो।'' सुभाषचन्द्र बोस के इस आह्वान पर श्रोताओं (युवा वर्ग) की क्या प्रतिक्रिया रही होगी?

उत्तर– सुभाषचन्द्र बोस के आह्वान पर श्रोताओं (युवा वर्ग) की निम्नलिखित प्रतिक्रिया रही होगी–

(1) युवा वर्ग पहले से ही देश की स्वतन्त्रता के लिए उत्साहित था, इस आह्वान से और भी प्रेरित हुआ होगा।

(2) युवा वर्ग ने स्वतन्त्रता और समानता के लिए संघर्ष करने का संकल्प लिया होगा।

(3) युवा वर्ग को अपने देश के प्रति एक बड़ी जिम्मेदारी का आह्वान हुआ होगा।

(4) युवा वर्ग नेताजी के स्वप्नों को साकार करने के लिए प्रतिबद्ध हुआ होगा।

शीर्षक

(क) आपने नेताजी सुभाषचंद्र बोस के भाषण का एक अंश पढ़ा है, इसे 'तरुण के स्वप्न' शीर्षक दिया गया है। अपने समूह में चर्चा करके लिखिए कि यह शीर्षक क्यों दिया गया होगा?

उत्तर– नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के भाषण का शीर्षक 'तरुण के स्वप्न' इसलिए दिया गया होगा क्योंकि यह भाषण विशेष रूप से युवा पीढ़ी को संबोधित था। इस भाषण में युवाओं से नेताजी ने देश के लिए स्वप्न देखने और उन स्वप्नों को साकार करने के लिए कड़ी मेहनत करने का आह्वान किया था। उन्होंने देश के भविष्य को आकार देने की क्षमता युवाओं में देखी और उन्हें स्वतन्त्रता संग्राम में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया।

(ख) यदि आपको भाषण के इस अंश को कोई अन्य

नाम देना हो तो क्या नाम देंगे? आपने यह नाम क्यों सोचा? यह भी लिखिए।

उत्तर– नेताजी के भाषण के इस अंश को हम 'युवाओं के लिए आह्वान' नाम देना चाहेंगे क्योंकि 'तरुण के स्वप्न' वाक्यांश नेताजी के उस भाषण का हिस्सा है जिसमें उन्होंने युवाओं से स्वतन्त्रता संग्राम में शामिल होने तथा देश के लिए बलिदान देने का आह्वान किया था। 'युवाओं के लिए आह्वान' नाम भाषण के मुख्य उद्देश्य को दर्शाता है, जो युवाओं को प्रेरित करता है।

(ग) सुभाषचंद्र बोस ने अपने समय की स्थितियों या समस्याओं को अपने संबोधन में स्थान दिया है। यदि आपको अपनी कक्षा को संबोधित करने का अवसर मिले तो आप किन-किन विषयों को अपने उद्बोधन में सम्मिलित करेंगे और उसका क्या शीर्षक रखेंगे?

उत्तर– यदि कक्षा को सम्बोधित करने का अवसर मिले तो ''देश का भविष्य, हमारी युवा पीढ़ी'' शीर्षक रखना चाहूँगा। इसमें निम्नलिखित विषयों को उद्बोधन में सम्मिलित करूँगा।

(1) शिक्षा– शिक्षा के महत्व, ज्ञान के निरन्तर संचय तथा कड़ी मेहनत पर जोर दूँगा।

(2) सपनों को साकार करना– छात्रों को अपने सपनों को साकर करने के लिए प्रेरित करूँगा। उन्हें अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए दृढ़ संकल्पित रहने के लिए, कड़ी मेहनत करने, कभी हार न मानने के लिए प्रोत्साहित करूँगा।

(3) कौशल-विकास– भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए छात्रों को आवश्यक कौशल, जैसे कि डिजिटल साक्षरता, समस्या-समाधान तथा रचनात्मकता विकसित करने के लिए प्रेरित करूँगा।

(4) सामाजिक जिम्मेदारी– छात्रों को दूसरों की मदद करने, पर्यावरण की सुरक्षा करने तथा समाज के प्रति सकारात्मक बदलाव लाने के लिए प्रेरित करूँगा।

(5) राष्ट्रीय गौरव की भावना– राष्ट्रीय गौरव की भावना छात्रों में जगाऊँगा, उन्हें अपने देश के इतिहास, मूल्यों तथा संस्कृति के बारे में शिक्षित करूँगा तथा उन्हें देशभक्त तथा एक जिम्मेदार नागरिक बनाने के लिए प्रेरित करूँगा।

भाषा की बात

(क) सुभाषचंद्र बोस ने अपने भाषण में संख्या, संगठन या भाव आदि का बोध कराने वाले शब्दों के साथ उनकी विशेषता अथवा गुण बताने वाले शब्दों का प्रयोग किया है। उनके भाषण से विशेषता अथवा गुण बताने वाले शब्द को ढूँढ़कर दिए गए शब्द समूह को पूरा कीजिए।

अखंड	सत्य		जीवन
	समाज		शक्ति
	राष्ट्र		आनंद

उत्तर–

अखंड	सत्य	संगठित	जीवन
आदर्श	समाज	असीम	शक्ति
स्वतंत्र	राष्ट्र	अपार	आनंद

(ख) सुभाषचंद्र बोस ने तो उपर्युक्त विशेषताओं के साथ इन शब्दों को रखा है। आप किन विशेषताओं के साथ इन उपर्युक्त शब्दों को रखना चाहेंगे और क्यों? लिखिए।

उत्तर– हाँ, हम इन विशेषताओं के साथ इन उपर्युक्त शब्दों को रखना चाहेंगे क्योंकि–

(1) अखंड सत्य– हमें अपने लक्ष्य के प्रति अखंड सत्य के साथ आगे बढ़ना होगा।

(2) आदर्श समाज– हमें एक आदर्श समाज का निर्माण करना होगा, जो एक-दूसरे की परवाह करता हो।

(3) स्वतन्त्र राष्ट्र– हमें एक स्वतन्त्र राष्ट्र का निर्माण करना है जहाँ प्रत्येक व्यक्ति स्वतन्त्र हो।

(4) संगठित जीवन– हमें अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एक संगठित जीवन जीना होगा।

(5) असीम शक्ति– हमारे पास शक्ति है, जिसका उपयोग हमें देश के गौरव को बनाये रखने के लिए करना चाहिए।

(6) अपार आनंद– हमें अपार आनंद की तलाश करनी चाहिए, जो हमें अपने जीवन को सार्थक बनाने में मदद करेगा।

विपरीतार्थक शब्द और उनके प्रयोग

(क) "और उस पर एक स्वाधीन राष्ट्र" इस

वाक्यांश में रेखांकित 'स्वाधीन' शब्द का विपरीत अर्थ देने वाला शब्द है– 'पराधीन'। इसी प्रकार के कुछ विपरीतार्थक शब्द आगे दिए गए हैं, लेकिन वे आमने-सामने नहीं हैं। रेखाएँ खींचकर विपरीतार्थक शब्दों के सही जोड़ बनाइए–

स्तंभ 1	स्तंभ 2
1. स्वीकार	**1.** कर्मण्य / कर्मठ
2. सार्थक	**2.** विपन्न
3. विषमता	**3.** अस्वीकार
4. क्षुद्र	**4.** जीवन
5. संपन्न	**5.** निरर्थक
6. अकर्मण्य	**6.** समानता
7. मरण	**7.** विशाल / वृहत / विराट / महान

उत्तर– 1. (3) 2. (5) 3. (6) 4. (7) 5. (2) 6. (1) 7. (4)

(ख) अब स्तंभ 1 और स्तंभ 2 के सभी शब्दों के दिए गए उदाहरण के अनुसार वाक्य बनाकर लिखिए, जैसे– "समाज की उन्नति अकर्मण्य नहीं अपितु कर्मण्य व्यक्तियों पर निर्भर है।"

उत्तर–(1) स्वीकार – अस्वीकार = हमने प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया, परन्तु उसने अस्वीकार कर दिया।

(2) सार्थक – निरर्थक = सार्थक बातें करो, निरर्थक बातों में समय न गँवाओ।

(3) विषमता – समानता = समाज में विषमता नहीं होनी चाहिए, हमें समानता के सिद्धान्त का पालन करना चाहिए।

(4) क्षुद्र – विशाल/वृहत/विराट/महान = हमें क्षुद्र बातों से बचना चाहिए, हमें तो महान बातें करनी चाहिए।

(5) सम्पन्न – विपन्न = धनी व्यक्ति हमेशा सम्पन्न रहता है, जबकि गरीब व्यक्ति विपन्न रहता है।

(6) अकर्मण्य – कर्मण्य/कर्मठ = देश सेवा का कार्य अकर्मण्य व्यक्ति द्वारा नहीं, बल्कि कर्मण्य/कर्मठ व्यक्ति द्वारा किया जा सकता है।

(7) मरण – जीवन = हर किसी को मरण का स्वाद चखना है, इसलिए जीवन में अच्छे कर्म करने चाहिए।

पाठ से आगे

आपकी बात

(क) आपने सुभाषचंद्र बोस के स्वप्न के बारे में जाना। आप अपने विद्यालय, राज्य और देश के बारे में कैसे स्वप्न देखते हैं? लिखिए।

उत्तर– विद्यालय, राज्य और देश के बारे में स्वप्न।

(1) विद्यालय– मेरा स्वप्न है कि मेरा विद्यालय ऐसा हो, जहाँ शिक्षा के साथ-साथ छात्रों को उनके सपनों को साकार करने के लिए प्रेरित करे। हर छात्र अपनी प्रतिभा को पहचान करके उसे विकसित कर सके। सभी को समान अवसर मिले। सभी मिलजुल कर सीखें, सिखाएँ और एक-दूसरे का सम्मान करें।

(2) राज्य– मेरा स्वप्न है कि मेरा राज्य विकास और खुशहाली की राह पर तेजी से आगे बढ़े। सभी लोगों को शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के समान अवसर मिलें। हमारा राज्य एक स्वच्छ, न्यायपूर्ण तथा सुरक्षित स्थान बने, जहाँ हर व्यक्ति गर्व के साथ जी सके।

(3) देश– मेरा स्वप्न है कि मेरा देश भारत एक मजबूत, समृद्ध और न्यायप्रिय राष्ट्र बने। जहाँ गरीबी, अशिक्षा और असमानता जैसी समस्याएँ जड़ से खत्म हो जाएँ। जहाँ विज्ञान, कला और संस्कृति का विकास हो और जहाँ हर नागरिक को गर्व हो कि वह भारतीय है।

(ख) हमें बड़े संघर्षों के बाद स्वतंत्रता मिली है। अपनी इस स्वतंत्रता को बनाए रखने के लिए हम अपने स्तर पर क्या-क्या कर सकते हैं? लिखिए।

उत्तर– हम अपनी इस स्वतन्त्रता को बनाए रखने के लिए अपने स्तर पर निम्नलिखित कार्य कर सकते हैं–

(1) हम शिक्षा प्राप्त करके दूसरों को भी शिक्षित कर सकते हैं।

(2) हमें अपने कर्तव्यों और अधिकारों के बारे में जागरूक होना चाहिए।

(3) हमें संविधान में दिए मूल्यों जैसे कि समानता, न्याय और स्वतन्त्रता का पालन करना चाहिए।

(4) हमें भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठानी चाहिए और इसे जड़ से खत्म करने के लिए प्रयास करना चाहिए।

(5) हमें सहिष्णुता और सद्भाव की भावना को बढ़ावा देना चाहिए।
(6) हमें विभिन्न संस्कृतियों का सम्मान करना चाहिए और एक-दूसरे के साथ मिलजुलकर रहना चाहिए।
(7) हमें अपने देश से प्रेम करना चाहिए तथा उसकी प्रगति में योगदान देना चाहिए।

मिलान कीजिए

(क) नीचे स्तंभ 1 में स्वतंत्रता सेनानियों से संबंधित कुछ तथ्य दिए गए हैं और स्तंभ 2 में स्वतंत्रता सेनानियों के नाम दिए गए हैं। तथ्यों का स्वतंत्रता सेनानियों के नाम से रेखा खींचकर सही मिलान कीजिए। इसके लिए आप अपने शिक्षकों, अभिभावकों और पुस्तकालय तथा इंटरनेट की सहायता ले सकते हैं।

क्रम स्तंभ 1	स्तंभ 2
1. 8 अप्रैल, 1929 को 'सेंट्रल असेंबली' में बम फेंकने वाले क्रांतिकारी, 'शहीद-ए-आज़म' के नाम से जाने जाते हैं।	**1.** सरदार वल्लभभाई पटेल
2. 'स्वराज पार्टी' के संस्थापकों में से एक, सुभाषचंद्र बोस के राजनीतिक गुरु कहे जाते हैं।	**2.** महात्मा गाँधी
3. जेल में क्रांतिकारियों के साथ राजबंदियों के समान व्यवहार न होने के कारण क्रांतिकारियों ने 13 जुलाई 1929 में भूख हड़ताल शुरू कर दी। अनशन के तिरसठवें दिन जेल में इनका देहांत हो गया।	**3.** चंद्रशेखर आजाद
4. इनके जन्म दिवस पर 'अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस' मनाया जाता है।	**4.** चित्तरंजन दास
5. नर्मदा नदी के तट पर इनकी एक विशाल प्रतिमा स्थापित है। जिसे 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' कहा जाता है।	**5.** जतिन दास
6. 1921 में असहयोग आंदोलन में गिरफ्तार होने पर न्यायाधीश ने इनसे पिता का नाम पूछा तो इन्होंने कहा– "मेरा नाम आजाद है, पिता का नाम स्वतंत्रता और पता कारावास है।"	**6.** भगत सिंह

उत्तर– 1. (6) 2. (4) 3. (5) 4. (2) 5. (1) 6. (3)

(ख) इनमें से एक स्वतंत्रता सेनानी का नाम 'तरुण के स्वप्न' पाठ में भी आया है। उसे पहचान कर लिखिए।

उत्तर– 'तरुण के स्वप्न' पाठ में स्वतन्त्रता सेनानी चित्तरंजन दास का नाम आया है।

सर्वांगीण स्वाधीन संपन्न समाज के लिए प्रयास

नेताजी सुभाषचंद्र बोस और अन्य स्वतंत्रता सेनानियों ने स्वाधीन संपन्न समाज की स्थापना के लिए अपने समय में अनेक प्रयास किए। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात इस दिशा में क्या-क्या उल्लेखनीय प्रयत्न किए गए हैं? अपनी सामाजिक अध्ययन की पाठ्यपुस्तक, अपने अनुभव एवं पुस्तकालय की सहायता से लिखिए।

उत्तर– स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात इस दिशा में निम्नलिखित प्रयास किये गये हैं, जो निम्न हैं–
(1) स्वतन्त्रता के बाद सबसे महत्वपूर्ण प्रयास संविधान का निर्माण था, जो सभी नागरिकों को समानता, न्याय तथा स्वतन्त्रता का अधिकार देता है।
(2) भारत ने एक लोकतांत्रिक और धर्मनिरपेक्ष गणराज्य की स्थापना की, जहाँ लोगों द्वारा सरकार चुनी जाती है।
(3) यहाँ सभी धर्मों के लोगों को समान अधिकार दिए गए हैं।
(4) शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार के लिए कई योजनाएँ शुरू की गईं।
(5) सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने के लिए आरक्षण नीतियों को लागू किया गया, इससे पिछड़े वर्गों को भी समाज की मुख्यधारा में शामिल किया जा सके।

(6) योजनाबद्ध आर्थिक विकास के माध्यम से गरीबी और बेरोजगारी को कम करने का प्रयास किया गया।

(7) विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति की।

(8) भारत ने गुट निरपेक्षता की नीति का पालन करते हुए दुनिया भर के देशों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बनाए रखने का प्रयास किया।

स्त्री सशक्तीकरण

(क) सुभाषचंद्र बोस ने स्त्रियों के लिए समान अधिकार की बात की है। अपने अनुभवों के आधार पर बताइए कि उन्हें कौन-कौन से विशेषाधिकार राज्य की ओर से दिए गए हैं?

उत्तर–स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान महिलाओं को राज्य की ओर से विशेष अधिकार नहीं दिए गए थे, लेकिन उन्होंने आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभाकर सामाजिक तथा राजनीतिक चेतना में बदलाव लाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। स्वतन्त्रता के बाद महिलाओं को मताधिकार, समानता का अधिकार, शिक्षा का अधिकार, सम्पत्ति का अधिकार और कार्यस्थल पर उत्पीड़न से सुरक्षा जैसे अधिकार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त महिलाओं को पंचायत और नगर पालिकाओं जैसे स्थानीय निकायों में आरक्षण भी दिया गया है। जिससे वे समाज में समान भागीदार बन सकें।

(ख) सुभाषचंद्र बोस ने 'आजाद हिंद फौज' का नेतृत्व किया था। उसमें एक टुकड़ी स्त्रियों की भी थी। उस टुकड़ी का नाम पता लगाकर लिखिए। उस टुकड़ी की भूमिका क्या थी? यह भी बताइए।

उत्तर– सुभाषचन्द्र बोस ने 'आजाद हिन्द फौज' का नेतृत्व किया था, उसमें एक टुकड़ी स्त्रियों की थी, उस टुकड़ी का नाम 'रानी झाँसी रेजीमेंट' था। इस रेजीमेंट की भूमिका मुख्य रूप से युद्ध में भाग लेना, युद्ध के मैदान में चिकित्सा की सहायता प्रदान करना और प्रचार गतिविधियों में शामिल होना था। यह रेजीमेंट स्वतन्त्रता संग्राम में महिलाओं का एक महत्वपूर्ण प्रतीक बन गई थी।

आपके प्रिय स्वतंत्रता सेनानी

आप किस स्वतंत्रता सेनानी के कार्यों व विचारों से प्रभावित हैं? कारण सहित लिखिए और अभिनय (रोल प्ले) करते हुए उनके विचारों को कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर– हम स्वतन्त्रता सेनानी भगतसिंह के कार्यों और विचारों से प्रभावित हैं, क्योंकि–

(1) भगतसिंह ने व्यक्तिगत लाभ की बजाय देश की स्वतन्त्रता के लिए काम किया। उन्होंने अपने जीवन का बलिदान देकर, देश के लिए अपनी जान न्योछावर कर दी।

(2) भगतसिंह ने अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई में कभी हार नहीं मानी। उन्होंने अपने जीवन की परवाह किए बिना, अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए संघर्ष किया।

(3) भगतसिंह की क्रान्तिकारी विचारधारा ने हमें अन्याय के खिलाफ लड़ने और अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा दी है।

(नोट– छात्र स्वयं भी कर सकते हैं।)

"तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।"

ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संघर्ष में 1944 में सुभाषचंद्र बोस ने "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।" नारे के माध्यम से आह्वान किया था। स्वाधीनता संग्राम के दौरान और भी बहुत से नारे दिए गए। ये नारे स्वतंत्रता सेनानियों के अदम्य साहस, निर्भीकता और देश-प्रेम को दर्शाते हैं।

नीचे स्तंभ 1 में कुछ नारे दिए गए हैं। नारों के सामने लिखिए कि यह किसके द्वारा दिया गया? आप पुस्तकालय या इंटरनेट की सहायता भी ले सकते हैं।

नारा	स्वतंत्रता सेनानी
स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है।	
करो या मरो	
मैं आजाद हूँ, आजाद रहूँगा और आजाद ही मरूँगा	
इंकलाब जिंदाबाद, साम्राज्यवाद मुर्दाबाद	
पूर्ण स्वराज	

उत्तर—

नारा	स्वतंत्रता सेनानी
स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है।	बाल गंगाधर तिलक
करो या मरो	महात्मा गाँधी
मैं आजाद हूँ, आजाद रहूँगा और आजाद ही मरूँगा	चन्द्रशेखर आजाद
इंकलाब जिंदाबाद, साम्राज्यवाद मुर्दाबाद	भगतसिंह और उनके साथियों द्वारा
पूर्ण स्वराज	पं. जवाहरलाल नेहरू

परियोजना कार्य

आप सभी राज्यों के स्वतंत्रता सेनानियों के विषय में पढ़कर उनमें से 10 महिला एवं 10 पुरुष स्वतंत्रता सेनानियों के चित्रों का संग्रह करके एक संग्रहिका तैयार कीजिए। चित्रों के नीचे उनके विशेष योगदान के बारे में एक-दो वाक्य भी लिखिए। अपनी संग्रहिका तैयार करते समय ध्यान रखिए कि आप किसी भी राज्य से एक से अधिक व्यक्ति न चुनें।

उत्तर—10 महिला स्वतन्त्रता सेनानी—

(1) रानी लक्ष्मीबाई (मध्य प्रदेश)— झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई सन् 1857 के विद्रोह में ब्रिटिश सेना के खिलाफ बहादुरी से लड़ी थीं।

(2) सरोजिनी नायडू (उत्तर प्रदेश)— 'भारत की कोकिला' के नाम से प्रसिद्ध, वह एक कवयित्री, स्वतन्त्रता सेनानी तथा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की पहली महिला अध्यक्ष थीं।

(3) कस्तूरबा गाँधी (गुजरात)— महात्मा गाँधी की पत्नी,उन्होंने भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया और महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए काम किया।

(4) अंजुमन आरा बेगम (बिहार)— एक स्वतन्त्रता सेनानी और सामाजिक कार्यकर्ता, जिन्होंने महिलाओं के अधिकारों के लिए संघर्ष किया।

(5) दुर्गावती देशमुख (आन्ध्र प्रदेश)— स्वतन्त्रता सेनानी, वकील, समाज सुधारक, जिन्होंने महिलाओं के अधिकारों और शिक्षा के लिए काम किया।

(6) मातंगिनी हाजरा (पश्चिमी बंगाल)— 73 वर्षीय बुजुर्ग महिला जिन्होंने 'भारत छोड़ो आन्दोलन' में भाग लिया और गोली लगने के बावजूद तिरंगा फहराते हुए शहीद हो गईं।

(7) कनकलता बरुआ (असम)— सन् 1942 में 17 साल की उम्र में 'भारत छोड़ो आन्दोलन' में भाग लेते हुए शहीद हो गई।

(8) अरुणा आसफ अली (दिल्ली)— सन् 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा गोवातिया टैंक मैदान में झंडा फहराया। वह दिल्ली की पहली महिला महापौर भी बनी।

(9) भीकाजी कामा (महाराष्ट्र)— भीकाजी कामा ने सन् 1907 में जर्मनी के स्टटगार्ड में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन में भारत का पहला झंडा फहराया, जो कि भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम का एक महत्वपूर्ण प्रतीक बन गया।

(10) अंजना देवी चौधरी (राजस्थान)— यह राम नारायण चौधरी की पत्नी थीं तथा वह राजस्थान की पहली महिला थीं, जिन्हें स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान गिरफ्तार किया गया था।

10 पुरुष स्वतन्त्रता सेनानी

(1) सरदार वल्लभभाई पटेल (गुजरात)— एक प्रमुख स्वतन्त्रता सेनानी और भारत के पहले गृहमन्त्री थे, जिन्होंने रियासतों के एकीकरण की भूमिका निभाई।

(2) बाल गंगाधर तिलक (महाराष्ट्र)— ''स्वराज मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा'' का नारा दिया और भारतीय स्वतन्त्रता सेनानियों को प्रेरित किया।

(3) भगतसिंह (पंजाब)— एक क्रांतिकारी। सन् 1931 में शहीद हुए, इन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ सशस्त्र संघर्ष किया।

(4) सुभाषचन्द्र बोस (पश्चिम बंगाल)— ''दिल्ली चलो'' और ''तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा'' जैसे नारों के साथ उन्होंने आजाद हिन्द फौज का नेतृत्व किया।

(5) चन्द्रशेखर आजाद (मध्य प्रदेश)– चन्द्रशेखर आजाद ने भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान युवाओं के एक समूह को संगठित किया और उसका नेतृत्व किया।

(6) मंगल पांडे (उत्तर प्रदेश)– 1857 के विद्रोह के एक प्रमुख नेता, जिन्होंने ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी के खिलाफ आवाज उठाई।

(7) अमरचन्द्र बांठिया (राजस्थान)– इन्होंने सन् 1857 के विद्रोह में भाग लिया। इन्हें राजस्थान का पहला शहीद माना जाता है जिन्हें ''राजस्थान का मंगल पांडे'' भी कहा जाता है।

(8) गोविन्द बल्लभ पंत (अल्मोड़ा)– उन्होंने ''कुली बेगार'' प्रथा के खिलाफ आवाज उठाई और ''सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा नारा दिया।

(9) डॉ. अनुग्रह नारायण सिंह (बिहार)– स्वतन्त्रता सेनानी शिक्षक तथा राजनीतिज्ञ बिहार के पहले उपमुख्य मन्त्री सह वित्त मन्त्री थे।

(10) रणवीर सिंह हुडा (हरियाणा)– भारतीय स्वतन्त्रता सेनानी, सांसद और प्रशासक थे। उन्हें गरीब, पिछड़े लोगों और किसानों के हितों के लिए लड़ने के लिए जाना जाता है।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. नेताजी ने किस नेता को अपने स्वप्न का प्रेरणा-स्रोत माना?
(अ) चन्द्रशेखर आजाद को
(ब) बाल गंगाधर तिलक को
(स) चित्तरंजन दास को
(द) भगतसिंह को

2. नेताजी किस प्रकार के समाज का स्वप्न देखते थे?
(अ) आर्थिक रूप से समृद्ध समाज का
(ब) समाजवादी समाज का
(स) धार्मिक समाज का
(द) सर्वांगीण स्वाधीन तथा सम्पन्न समाज का

3. नेताजी के अनुसार समाज में नारी को क्या मिलना चाहिए?
(अ) सीमित अधिकार
(ब) समान अधिकार
(स) करुणा
(द) सहानुभूति

4. नेताजी ने अपने स्वप्न को क्या कहा?
(अ) युवा विचार
(ब) भ्रम
(स) नित्य एवं अखंड सत्य
(द) कल्पना

5. नेताजी के अनुसार किस प्रकार के राष्ट्र की स्थापना होनी चाहिए?
(अ) समाजीकरण राष्ट्र की
(ब) स्वदेशी समाज पर आधारित राष्ट्र
(स) धार्मिक राष्ट्र
(द) राजशाही राष्ट्र

उत्तर– 1. (स) **2.** (द) **3.** (ब) **4.** (स) **5.** (ब)

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. हमारे नेता .... ने भी एक स्वप्न देखा था।
2. उनके स्वप्न के .... आज हम हैं।
3. उस समाज में व्यक्ति सब .... से मुक्त हो।
4. वह राष्ट्र किसी भी .... प्रभाव से हर प्रकार से मुक्त रहेगा।
5. .... वह समाज और राष्ट्र भारतवासियों का अभाव मिटाएगा।

उत्तर– 1. स्वर्गीय दीनबन्धु चित्तरंजन दास **2.** उत्तराधिकारी **3.** दृष्टियों **4.** विजातीय **5.** सर्वोपरि।

सत्य/असत्य

1. 'तरुण के स्वप्न' पाठ में नेताजी के समाज और राष्ट्र के स्वप्न का वर्णन किया गया है। ( )

2. नेताजी ने महात्मा गांधी के स्वप्न को अपनी प्रेरणा बताया है। ( )
3. देशबन्धु का स्वप्न ही उनकी शक्ति और आनंद का स्रोत बना। ( )
4. नेताजी ने अनुसार अकर्मण्य लोगों के लिए आदर्श समाज में कोई स्थान नहीं। ( )
5. नेताजी ने नारी मुक्ति तथा समान अधिकार की बात की है। ( )

उत्तर– 1. सत्य 2. असत्य 3. सत्य 4. सत्य 5. सत्य

सही मिलान

स्तंभ (अ)		स्तंभ (ब)
1. नेताजी का स्वप्न	(अ)	समान अधिकार
2. समाज में स्थान नहीं होना चाहिए	(ब)	नित्य और अखंड सत्य
3. नारी ने समाज में मिलना चाहिए	(स)	युवा वर्ग को
4. नेताजी ने स्वप्न को कहा	(द)	आलसी और अकर्मण्य लोगों का
5. नेताजी समाज को सौंपते हैं	(य)	सर्वांगीण स्वाधीन और सम्पन्न समाज का

उत्तर– 1. (य) 2. (द) 3. (अ) 4. (ब) 5. (स)

अतिलघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. नेताजी कैसे राष्ट्र की कल्पना करते हैं?

उत्तर–नेताजी स्वाधीन और सम्पन्न राष्ट्र की कल्पना करते हैं।

2. सुभाषचन्द्र बोस युवाओं को किसके लिए प्रेरित करते हैं?

उत्तर– सुभाषचन्द्र बोस युवाओं को देश के विकास तथा स्वतन्त्रता के लिए प्रेरित करते हैं।

3. नेताजी युवाओं से क्या आह्वान करते हैं?

उत्तर– नेताजी युवाओं से आह्वान करते हैं कि वे अपने स्वप्न को साकार करने के लिए कड़ी मेहनत करें।

4. नेताजी ने किस बात पर जोर दिया है?

उत्तर– नेताजी ने युवाओं में आत्मविश्वास, देशभक्ति और कर्मठता की भावना जगाने पर जोर दिया है।

5. 'तरुण के स्वप्न' पाठ का मुख्य उद्‌देश्य क्या है?

उत्तर– 'तरुण के स्वप्न' पाठ का मुख्य उद्‌देश्य युवाओं को प्रेरित करना और उनमें देश के प्रति समर्पण तथा कर्तव्य की भावना जगाना है।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. सुभाषचद्र बोस ने युवाओं को 'स्वप्न' देखने को क्यों कहा?

उत्तर– सुभाषचन्द्र बोस ने युवाओं को 'स्वप्न' देखने के लिए इसलिए कहा, क्योंकि स्वप्न ही हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं और उन्हें साकार करने के लिए हमें प्रयास करने की शक्ति देते हैं।

2. सुभाषचन्द्र बोस युवाओं को क्या मानते थे?

उत्तर– सुभाषचन्द्र बोस युवाओं को देश का भविष्य मानते थे और उन्हें देश के नेतृत्व के लिए तैयार रहने को कहते थे।

3. सुभाषचन्द्र बोस ने युवाओं को किस बात के लिए तैयार रहने को कहा?

उत्तर– सुभाषचन्द्र बोस युवाओं को देश की स्वतन्त्रता और विकास के लिए हर प्रकार के बलिदान देने के लिए तैयार रहने को कहते थे।

4. 'तरुण के स्वप्न' पाठ से हमें क्या सीख मिलती है?

उत्तर– 'तरुण के स्वप्न' पाठ से हमें यह सीख मिलती है कि हमें अपने देश के लिए हमेशा तत्पर रहना चाहिए और देश की स्वतन्त्रता और विकास के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. ''तरुण के स्वप्न'' पाठ में सुभाषचन्द्र बोस ने युवाओं को क्या संदेश दिया है?

उत्तर– ''तरुण के स्वप्न'' पाठ में सुभाषचन्द्र बोस ने युवाओं को देश के प्रति कर्तव्यों और स्वतन्त्रता संग्राम में सक्रिय भूमिका निभाने का संदेश दिया है। उन्होंने युवाओं

से निस्वार्थ भाव से देश की सेवा करने तथा इसे गुलामी से मुक्त कराने का आह्वान किया है। उन्होंने युवाओं में देशभक्ति, त्याग और बलिदान की भावना जगाने का प्रयास किया है।

2. नेताजी ने देश की स्वतन्त्रता के लिए युवाओं को किस तरह तैयार रहने की बात कही है?

उत्तर– नेताजी ने देश की स्वतन्त्रता के लिए युवाओं को शारीरिक और मानसिक रूप से मजबूत बनने, देश के इतिहास और संस्कृति को जानने और देश के लिए मर मिटने को तैयार रहने की बात कही है। उन्होंने युवाओं को संगठित होकर देश के काम करने, देश की स्वतन्त्रता के लिए प्रेरित किया।